Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान-सार

[मूल अरबी (नागरी लिपि) सहित]

विनोबा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस्लाम की आध्यात्मिक शिक्षा क्या है, वह चुन-चुनकर हमने रख दी है, सब धर्मवालों के सामने और कुल दुनिया के सामने। ....

.........मेरी जिन्दगी के कुल काम दिलों को जोड़ने के एकमात्र उद्देश्य से प्रेरित हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन में वही प्रेरणा है।

—वीनोबा

अरबी भाषा को नागरी में शास्त्रीय ढंग से लिखने का यह प्रथम प्रयास है। इसमें न केवल उच्चारित शब्दों की ही ओर ध्यान दिया गया है, अपितु शब्द के प्रत्येक अक्षर को लिप्यन्तरित किया गया है। मूल और अनुवाद एक दूसरे के सम्मुख होने के कारण अध्ययन के लिए सुविधा प्राप्त होती है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान-सार

[मूल अरबी—(नागरी लिपि)—सहित]

विनोबा

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक : मंत्री, सर्व सेवा संघ,
राजघाट, वाराणसी
संस्करण : प्रथम
कुल प्रतियाँ : १,०००; अप्रैल, १९६६
मुद्रक : नरेन्द्र भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस,
गायघाट, वाराणसी
मूल्य : ६ रुपया
१५ शि०
२·४० डा०

अनुवादक : अच्युतभाई देशपाण्डे

Title : QURĀN SĀR (Hindi) Arabic in Nagari
Compiler : Vinoba
Subject : Religion
Publisher : Secretary, Sarva Seva Sangh, Rajghat, Varanasi
Edition : First
Copies : 1,000; April '66
Price : Rs. 6
Sh. 15
$ 2·40

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशकीय

"इस्लाम की आध्यात्मिक शिक्षा क्या है, वह चुन-चुनकर हमने रख दी है सब धर्मवालों के सामने और कुल दुनिया के सामने।······"

यह है आचार्य विनोबा भावे का कथन 'रुहुल्-कुरान' प्रस्तुत करते हुए। अब वह ग्रंथ नागरी लिपि में हिन्दी अनुवाद के साथ कुरान-सार के नाम से प्रशाशित हो रहा है।

कुरान-शरीफ की कुल ६२३७ आयतों (वचनों) में से १०६५ आयतें 'कुरान-सार' में उद्धृत की गयी हैं। ग्रन्थ ९ खण्डों, ३० अध्यायों, ९० प्रकरणों और ४०० परिच्छेदों में विभाजित है। कौन आयत किस सूरह् (प्रकरण) की है, उसका संदर्भ यथास्थान दे दिया गया है। परिच्छेद सं० १६८, २०४ और २८६ के अतिरिक्त सभी आयतें क्रम के अनुसार ही ली गयी हैं।

इस ग्रन्थ में कुरान-शरीफ से निम्नलिखित सूरह् (प्रकरण) संपूर्ण लिये गये हैं :

१, ९२, ९३, ९४, ९७, ९९, १०१, १०२, १०३, १०४, १०७, ११२, ११३, ११४।

निम्नलिखित आयतें (वचन) पूर्ण एक रुकूअ् (पैरा) की हैं।

ऊपर के अंक आयतों के और नीचे के सूरह् के हैं :

२६१–२६६ / २, २८४–२८६ / २, २३–३० / १७, ३५–४० / २४, ७६–८२ / २८, १२–१९ / ३१, ८–११ / ६३

पूर्ण सूरह् या रुकूअ् के अन्त में ऐन् का चिह्न लगा दिया गया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह 'कुरान-सार प्रस्तुत करने में प्रामाणिक उर्दू और अंग्रेजी अनुवादों तथा भाष्यों का लाभ तो उठाया ही गया है, उन समालोचनाओं और सूचनाओं का भी लाभ उठाया गया है जो भारत और पाकिस्तान के पत्र-पत्रिकाओं ने 'रूहुल्-कुरान' और 'दि एसेंस ऑफ कुरान' के सम्बन्ध में की हैं।

अरबी भाषा को नागरी में शास्त्रीय ढंग से लिखने का यह प्रथम प्रयास है। इसमें न केवल उच्चारित शब्दों की ही ओर ध्यान दिया है, अपितु शब्द के प्रत्येक अक्षर को लिप्यन्तरित किया गया है। मूल और अनुवाद एक दूसरे के सम्मुख होने के कारण अध्ययन के लिए सुविधा प्राप्त होती है। कुरान-सार के अरबी का एक शब्दकोश भी प्रकाशित किया जा रहा है। किसी भाषा की उच्चारण-पद्धति उस भाषा के विद्वानों से ही जान लेना आवश्यक है और धर्म-ग्रंथों की तो संथा ही लेने की रीति है। फिर भी विशिष्ट अक्षरों के ध्वनिस्थान तथा कुरानसार की नागरी अरबी तथा कुरान शरीफ (अरबी) पढ़ने के विशेष नियम हमने इस ग्रंथ के अन्त में जोड़े हैं, उन्हें समझकर ही उनके अनुसार पाठक मूल पुस्तक पढ़ें। धार्मिक ग्रंथों का वाचन शुद्ध ही होना चाहिए, यह उचित आग्रह यहाँ ध्यान में रखना आवश्यक है।

इस ग्रन्थ के प्रणयन में हमें अनेक मित्रों का विविध रूपों में सहयोग मिला है। उन सबके प्रति हम अपना आभार व्यक्त करते हैं।

हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक दिलों को जोड़ने के अपने पवित्र लक्ष्य को पूरा करने में अवश्य ही सफल होगी।

ईदुल् अद्ज़्हा (य्)

२–४–६६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संकेत

अरबीपठन और उच्चारण के नियम पुस्तक के अन्त में दिये जा रहे हैं। संकेतों के विषय में कुछ जानकारी यहाँ दी जा रही है।

१–नुक्ता : इसकी सहायता लेकर पंद्रह नये अक्षर बनाये गये हैं।

२–ॢ ॖ ये दो दीर्घ मात्राएं और नयी बनानी पड़ीं। ये दोनों ह को लगती हैं। दूसरी व को और पहली य को भी लगती है। इनके सिवा इनका और कहीं प्रयोग नहीं होता।

३–ˈ : प्लुत या अति दीर्घ उच्चारण सुझानेवाला संकेत।

४–( ) कोष्ठक : इसके अन्दर के हलन्त अक्षर व्याकरण और अनुवाद की सुविधा के लिए दिये गये हैं। आयत् पढ़ते समय उन्हें नहीं पढ़ना चाहिए। उन्हें छोड़कर ही आयत पढ़ी जाय।

५–विराम-चिह्न : अर्थात् ठहरने का आदेश देनेवाले चिह्न :

O,०, तोय्, ज, वकफः, स्, म्, स्वल्, क़िफ़्,

(त़ स़ का दस पाइंट, समयाभाव के कारण उपलब्ध न होने से तोय्, ख़्वात् आदि लिखना पड़ा)।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६–न ठहरने का आदेश देनेवाले चिह्न :
ला, स्वात्, ज़, स्वली, क़ ।

७–जहाँ एक से अधिक हों वहाँ अन्तिम संकेत का आदेश मानकर पढ़ा जाय ।

८–जहाँ ठहरना आवश्यक हो वहाँ के शब्द का अन्तिम अक्षर स्वरान्त हो तो भी उसे हलन्त पढ़ा जाय । यह अन्तिम अक्षर यदि न् हो तो उसे न पढ़कर उसके पूर्व के अक्षर को वह स्वरयुक्त हो तो भी हलन्त पढ़ा जाय । त का हलन्त ह् होता है । त और त एक ही वर्ण के दो रूप हैं ।

९–शब्द का अन्तिम अक्षर अकारान्त हो तो उसका उच्चारण भारत की दक्षिण की भाषाओं या उड़िया भाषा की पद्धति के अनुसार किया जाय । हिन्दी आदि भाषा की भाँति हलन्त जैसा नहीं । उ० इय्याक, इय्याक ही पढ़ा जाय इय्याक् नहीं । रैब को रैब पढ़े रैब् नहीं–जैसे गोविंद का उच्चारण गोविंद है गोविंद् नहीं । एकाक्षरी शब्द अलबत्ता उसके आगे आनेवाले अक्षर से मिलाकर ही पढ़े जाते हैं, इसलिए उनके लिए उपर्युक्त नियम लागू नहीं । उ० व ला, व मा वगैरह ।

●

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रस्तावना

साइन्स ने दुनिया छोटी बनायी और वह सब मानवों को नजदीक लाना चाहता है। ऐसी हालत में मानव-समाज फिर्कों में बँटा रहे, हर जमाअत अपने को ऊँचा समझे और दूसरों को नीचा समझे, यह कैसे चलेगा? हमें एक-दूसरों को ठीक से समझना होगा। एक-दूसरों का गुण ग्रहण करना होगा। यह किताब उस दिशा में एक छोटा-सा प्रयत्न है।

इसी उद्देश्य से 'धम्मपद' की पुनर्रचना मैंने की थी। और गीता के बारे में मेरे विचार गीता-प्रवचनों के जरिये लोगों के सामने पेश किये थे।

वरसों से भूदान के निमित्त मेरी पदयात्रा चल रही है, जिसका एकमात्र उद्देश्य दिलों को जोड़ने का रहा है। बल्कि मेरी जिन्दगी के कुल काम दिलों को जोड़ने के एकमात्र उद्देश्य से प्रेरित हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन में वही प्रेरणा है। मैं आशा करता हूँ, परमात्मा की कृपा से वह सफल होगी।*

मैत्री आश्रम

(असम प्रदेश)

७-३-'६२

विनोबा का जय जगत्

* 'दि एसेन्स ऑफ कुरान' के लिए दी हुई हिन्दी प्रस्तावना।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मराठी संस्करण की प्रस्तावना

[विनोबाजी ने हिन्दी अनुवाद की तरह मराठी अनुवाद की भी एक विशेष प्रस्तावना लिखी। हिन्दी पाठकों के लिए भी वह लाभदायी होगी।]

इधर पाकिस्तान-यात्रा की हमारी तैयारी चल रही थी, उधर काशी में कुरान का अंग्रेजी संस्करण मुद्रणमुक्त होकर प्रकाशन के मार्ग पर था। समाचार-पत्र में उसका समाचार दिया गया। उतने समाचार पर कराची के पत्रों ने कोलाहल मचाया। अन्यत्र भी इसकी अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिध्वनि उठी। ग्रन्थ प्रकाशित होने के पूर्व ही उसका दुनियाभर में प्रकाशन हुआ। हमारी आशादेवी नें कहा : "अमेरिका की रूढ़ भाषा में कहा जाय, तो कुरान-सार का 'दस लाख डालर प्रचार' हुआ।" यही विश्रुत ग्रन्थ अब मराठी में प्रकाशित हो रहा है।

इसमें मेरा क्या है ? इसके सारे वचन पैगंबर-दृष्ट हैं। अनुवाद श्री अच्युतराव देशपाण्डे कर्तृक है। प्रकाशन ग्राम-सेवा-मण्डल का है। इसे जोड़ी हुई प्रारम्भ की अनुक्रमणिका मात्र मेरी कही जायगी।

वचनों का चयन, उनकी भाग-अध्याय-प्रकरण-परिच्छेदयुक्त रचना और उन सबके मराठी शीर्षक, इतना काम मैंने किया है। वह इस अनुक्रमणिका में एकदम देखने को मिलेगा। इसके अतिरिक्त भाग-प्रकरण-निर्देशक संस्कृत श्लोक, जो अनुक्रमणिका के बाद दिये हैं, मेरे हैं। उन श्लोकों के सहारे संपूर्ण ग्रन्थ स्मृतिपट पर अंकित हो सकेगा। अखिल भारतीय उपयोग के लिए संस्कृत रचना की गयी, वरना वह भी सहज ही मराठी में होती।

इस पुस्तक में (हमने जो शीर्षक दिये हैं, उनमें से) कुछ शीर्षक संस्कृत में दीख पड़ते हैं। वे समन्वय की दिशा सुझानेवाले हैं। एक जमाने में प्रस्थान-त्रयी का समन्वय कर अपना काम निभा, पर अब सर्वधर्म-समन्वय करने की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आवश्यकता उत्पन्न हुई है। यह कार्य करते समय गौण-मुख्य-विवेकपूर्वक धर्मग्रन्थों से चयन करना होगा। धर्मग्रन्थ से चयन करना ही गलत है—ऐसी 'सनातनी' (कट्टर) वृत्ति अलबत्ता छोड़ देनी होगी। कुरान-सार के विषय में ऐसी 'सनातनी वृत्ति' मुसलमानों ने नहीं दिखायी, यह बहुत सन्तोष की बात है। समन्वय के लिए धर्म-विचारों का महत्तम समापवर्तक निकालना होगा। वैसा निकालने से शुद्ध अध्यात्म हाथ आयेगा और विज्ञान-युग में वही काम आयेगा।

अब इन संस्कृत शीर्षकों में से कुछ हम देख लें :

'तज्जलान्' (६४) जगदुत्पत्तिस्थितिलयकारी ब्रह्म-सामर्थ्य दर्शाने के लिए उपनिषदों ने यह एक सांकेतिक शब्द प्रयुक्त किया है (छांदोग्य० ३.१४.१) 'तज्ज + तल्ल + तदन' ऐसी उसकी निरुक्ति भाष्यकार करते हैं।

'दृष्टेः द्रष्टा' (३४) दृष्टि का जो द्रष्टा, श्रुति का श्रोता, मति का मन्ता, विज्ञाति का विज्ञाता, इस प्रकार परमात्म-वर्णन श्रुति ने किया है (बृहदारण्यक ३.४.२)। कुरान का वाक्य उसका स्मरण करा देता है।

'लोहित-शुक्ल-कृष्ण-वर्णाः' (६१) श्वेताश्वतरोपनिषद् में ईश्वर की प्रकृति तिरंगी वर्णित है (श्वे० ४.५)। ईश्वर अनेक रंग निर्माण करता है, ऐसा लाक्षणिक भाषा में सृष्टि-वैचित्र्य का वर्णन कर उपनिषद् में बताये हुए ही तीन रंग कुरान में निर्दिष्ट हैं। उक्त उपनिषद्-वाक्य में सांख्यों द्वारा सत्त्व-रजस्-तमो-मयी प्रकृति का निर्देश कल्पित है।

'यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः' (६९) परमेश्वर जिस भक्त का वरण करता है, उसे उसकी लब्धि होती है। ऐसे अर्थ का उपनिषद् में यह एक ही एक वाक्य है (कठ० १.२.२३)। उपनिषद् की ब्रह्मविद्या की सामान्य सरणी से वह वाक्य अलग पड़नेवाला है, अतः आचार्य (शंकराचार्य) ने उसके अर्थ में थोड़ा फरक किया है। ईश्वरकृत भक्त-वरण कुरान की एक प्रिय कल्पना है।

'कौषीतकी उपनिषद्' ऐसा एक सांकेतिक शीर्षक आया है (७१)। कौषीतकी उपनिषद् में निम्न वचन है :

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एष हि एव एनं साधु कारयति तं यं एभ्यो लोकेभ्यः उन्निनीषते, एष उ एव एनम् असाधु कर्म कारयति तं यम् अधो निनीषते (३.८)

अर्थ : परमेश्वर उससे अच्छा काम कराता है, जिसकी वह उन्नति चाहता है और उससे बुरा काम कराता है, जिसकी वह अवनति चाहता है। यह भी उपनिषद् का अद्वितीय वाक्य है। जीव के स्वतंत्र कर्तृत्व को इसमें लेशमात्र भी अवकाश नहीं रखा है। सारा बोझ ईश्वर के सिर पर डाल दिया है। इस पर भाष्यकार कहते हैं—'**कुर्वन्तं हि तम् ईश्वरः कारयति।**' जीव करता है, उससे ईश्वर कराता है। कर्तृत्व से ईश्वर को बचाने के लिए भाष्यकार को ऐसी युक्ति प्रयुक्त करनी पड़ी। ऐसे ही अर्थ का '**भ्रामयन् सर्वभूतानि**' आदि गीता-वाक्य प्रसिद्ध ही है। उस पर गीताई चिंतनिकाकार टिप्पणी देता है :

ईश्वर कहता है : "तू करना चाहता है, वैसे मैं कराता हूँ"—यह कह-कर ईश्वर ने छुटकारा पा लिया।

इसे कहना चाहिए : "तू करायेगा, वैसा ही मैं करूँगा।" तो, वह छूट जायगा।

(गी० चिं० अ० १८ श्लो० ६० टि० ४)

भाष्यकार को जिस विचार ने कठिनाई में डाला और जिसमें से गीताई चिंतनिकाकार ने किसी तरह भाग निकलने का रास्ता ढूँढ़ निकाला, वह आत्यंतिक शरणागति का विचार भारत के 'मार्जारपंथी' भक्ति-मार्ग की और उसी प्रकार कुरान की कोण-शिला है।

× × ×

संस्कृत शीर्षकों की चर्चा हम यहाँ समाप्त करें और जिस मूलभूत कल्पना (विचार) ने मुहम्मद पैगंबर साहब की प्रतिभा को प्रभावित किया है और जिसका वर्णन उनकी वाणी में समुद्र जैसा ज्वार लाता है, जितना दूसरे किसी वर्णन में नहीं आता, वह ध्यान में लेकर यह प्रस्तावना समाप्त करें।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौन-सी है वह मूलभूत कल्पना। वह है : ईश्वर का अद्वितीय एकत्व। इस्लाम यानी एकेश्वर-शरणता, ऐसी इस्लाम की संक्षेप में व्याख्या की जाती है। पर ध्यान में रखने की बात यह है कि सारा वैदिक भक्ति-मार्ग एकेश्वर-निष्ठा पर ही खड़ा है। **'एकमेवाद्वितीयं'** जैसे वाक्य निर्गुण ब्रह्मपरक हैं, कहकर छोड़ दिये जायँ और सगुण-परमेश्वर-विषयक वाक्य ही विचार में लिये जायँ, तो भी एकेश्वरनिष्ठा-प्रतिपादक वाक्य वेद से गीता भागवत तक सैकड़ों दिखाये जा सकते हैं। पर भक्ति के लिए ईश्वर का एकत्व सुभीते का होने पर भी एकत्व संख्या से ईश्वर को निबद्ध करना यानी ईश्वर को मर्यादा में बाँधने जैसा ही हो जाता है, ऐसा वैदिक तत्त्वज्ञान कहता है। तदनुसार ईश्वर एक है, अनेक है, असंख्येय है, शून्य है और अनंत है, ऐसा विष्णुसहस्रनाम कहता है। ईश्वर अनेक हैं, ऐसा नहीं, **ईश्वर अनेक है**, इतना अलबत्ता भूलना नहीं चाहिए।

पर यह भी भाषा का खेल हुआ। 'मन-वाचातीत तेरा यह स्वरूप' वहाँ किस शब्द का क्या आग्रह रखें? अतः जैसा कि तुकाराम महाराज कहते हैं कि इस विट्ठल को (ईश्वर को) जो-जो भी कहें, वह सभी शोभा देता है—यही यथार्थ है।

अन्त में छोटे-से श्वेताश्वतरोपनिषद् से एकेश्वरप्रतिपादक कुछ वचन यहाँ उद्धृत किये जाते हैं। साधक उनका चिंतन करें।

१. **कालात्मयुक्तानि अधितिष्ठत्येकः** (१.३)
२. **ईशते देव एकः** (१.१०)
३. **एष ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः** (२.१६)
४. **यो देवो अग्नौ यो अप्सु** (२.१७)
५. **य एको जालवान्** (३.१)
६. **एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः** (३.२)
७. **द्यावाभूमी जनयन् देव एकः** (३.३)
८. **विश्वस्यैकं परिवेष्टितारम् ईशं तं ज्ञात्वा अमृता भवन्ति** (३.७)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

९. दिवि तिष्ठत्येकः (३.९)
१०. य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगात् (४.१)
११. यो योनिं योनिम् अधितिष्ठत्येकः (४.११)
१२. स कारणं करणाधिपाधिपो
न चास्य कश्चित् जनिता न चाधिपः (६.९)
१३. स्वभावतो देव एकः स्वमावृणोत् (६.१०)
१४. एको देवः सर्वभूतेषु गूढः (६.११)
१५. एको वशी निष्क्रियाणां बहूनाम् (६.१३)
१६. एको बहूनां यो विदधाति कामान् (६.१३)
१७. एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये (६.१५)

भूदान-यात्रा
(मध्यप्रदेश)
१४-१२-'६३

—विनोबा का जय जगत्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्डों की रचना

कुरान-सार के खण्डों का जो अनुक्रम निश्चित किया गया है, वह सूरह् बक़्र की प्रारम्भिक पाँच आयतों (वचनों) के क्रम के समान है। इस क्रम को स्मरण में रखने के लिए हम यहाँ विनोबाजी द्वारा रचित एक संस्कृत श्लोक दे रहे हैं :

आरम्भे तदनुध्यानं भक्त्या भक्तैर्निषेवितम्।
धर्मनीती मनुष्याणां प्रेषितैर्गूढशोधनम्॥

प्रारम्भ[1] में मैं उस ईश्वर[2] का ध्यान करता हूँ, जिसकी भक्ति[3] कर भक्तों[4] ने जीवन-साफल्य पाया है।

जिसने धर्म[5] एवं नीति[6] की मानव[7] को शिक्षा दी है और प्रेषितों[8] के द्वारा गूढ़-शोधन[9] करवाया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विषय-सूची

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान-सार के खण्ड तथा प्रकरणों के नाम कंठ करने के लिए निम्नलिखित श्लोक सहायक सिद्ध होंगे। यह संस्कृत-रचना विनोबाजी की है :

[१]आरम्भे, [२]तदनुध्यानं, [३]भक्त्या, [४]भक्तैर्निषेवितम् ।
[५]धर्म[६]नीती, [७]मनुष्याणां, [८]प्रेषिते[९]गूढशोधनम् ॥

१ [१]सप्तकं, [२]सारतत्त्वं च, [३]सारल्येन समर्पितम्,
पुस्तकेऽस्मिं[४]स्ततो भक्त्या शुचिर्भूत्वा पठेदिदम् ।

२ [५]एक एवा[६]द्वितीयश्च, [७]प्रकाशो, [८]ज्ञानमेव च,
[९]दयालुर्, [१०]दानवान्, [११]कर्ता, [१२]सुरूपः, [१३]सुप्रकेतनः ।
[१४]सर्वशक्तिः, [१५]स्वतंत्रेच्छो, [१६]मनोवाचामगोचरः,
[१७]नामभिर्घोषित[१८]श्चाविः, [१९]प्रार्थनीयः पुनः पुनः ।

३ [२०]उपासनोपदिष्टेयं, [२१]या धृता भौतिकैरपि,
[२२]निष्ठा, [२३]त्याग[२४]स्तपश्चर्या, [२५]धैर्यं मद्भक्तिलक्षणम् ।
[२६]सत्संगः, [२७]क्षणिको भावो, [२८]वैराग्यं च तदुद्भवम् ।

४ [२९]लक्षण्याः, [३०]प्रार्थनावन्तो, [३१]नैष्ठिका, [३२]धैर्यशालिनः,
[३३]अहिंसका ये मद्भक्ता, [३४]मद्दूतैरभिरक्षिताः ।
[३५]नास्तिका, [३६]भ्रान्त-चित्तास्तु, [३७]मोघा, [३८]निरयगामिनः ।

५ [३९]धर्म-निष्ठा, [४०]सहिष्णुत्वं, [४१]लोकसंग्रह-योजना ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६ [४२]सत्य-धीरो, [४३]वदेद् वाक्यं सत्यं, [४४]शिव[४५]मनिंदनम्,
[४६]न्यायं रक्षेत्, [४७]परं न्यायात् करुणैव गरीयसी ।
[४८]अहिंसायां दृढश्रद्धा, [४९]स्नेहेन सहजीवनम्,
[५०]पापैरसहकारश्च, [५१]प्रतीकारश्च संयतः ।
[५२]अस्वादो, [५३]वासनाशुद्धि[५४]रस्तेयं [५५]मित-संग्रहः
[५६]दानं, [५७]शिवानुसन्धानं, [५८]नीति[५९]राचार-पालनम् ।

७ [६०]वैशेष्येऽपि मनुष्याणां, [६१]दौर्बल्यं, [६२]पाप-वश्यता,
[६३]निर्मातरि कृतघ्नत्वं, [६४]नास्तिकास्तिकयोर्भिदा ।

८ [६५]साधारणा, [६६]मनुष्यास्तु, [६७]धीरा ये, [६८]तत्स्मृतिः शुभा,
[६९–७०]अत्र प्रकाशिताः केचित्, [७१]सन्त्यन्येऽप्यप्रकाशिताः ।
[७२]प्रातिभं, [७३]चेश्वरादेशो, [७४]घोषणा, [७५]गुण-संश्रयः,
[७६]कार्यं पञ्चविधं यस्य, [७७]स चाशीर्वादमर्हति ।

९ [७८]विश्वं, [७९]जीवं, [८०]परात्मानं, नैव तर्केण योजयेत्,
[८१]श्रद्दधानः संविधानं, [८२]विपाकं, [८३]मरणोत्तरम् ।
[८४]समुत्तिष्ठ, [८५]दिनं पश्य, [८६]विविच्य विविधा गतीः,
[८७]तुष्टात्मन् प्रविशोद्यानं, [८८]प्राप्नुहि प्रेम चैश्वरम् ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान-सार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

۱- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

۲- اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

۳- الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

۴ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝

۵- اِيَّاكَ نَعْبُدُ

وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝

۶- اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝

۷- صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड १

ग्रन्थारम्भ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

: १ :

1. १ बिस्मि (अ्) ल्लाहि (अ्ल्) र् रह़्मानि (अ्ल्)-
र्रह़ीमि०

२ अल् ह़म्दु लिल्लाहि रब्बि (अ्) ल् अ़ालमीन ०ला

३ (अ्ल्) र् रह़्मानि (अ्ल्) र् रह़ीमि ०ला

४ मालिकि यौमि (अ्ल्) द्दीनि ०तोय्

५ इय्याक नअ़्बुदु व इय्याक नस्तअ़ीनु ०तोय्

६ इह्दि न (अ् अ्ल्) स् सिरात़ (अ्) ल्
मुस्तक़ीम ०ला

७ सिरात़ (अ्) ल् लज़ीन अन्अ़म्त अ़लैहिम् ० ला
ग़ैरि (अ्) ल् मग़्दूबि अ़लैहिम्
व ल (अ् अ्ल्) द्द़ाल्लीन ०अैन्

१.१–७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१ मंगलाचरण

१ मंगलाचरण

१ अल्फ़ातिहा

१ प्रारम्भ करता हूँ परमात्मा के नाम से, जो परम कृपालु, अतीव करुणावान् है।

२ प्रत्येक स्तुति परमात्मा के ही लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

३ परम कृपालु, अतीव करुणावान्,

४ अन्तिम दिन का स्वामी।

५ हे परमात्मन्, तेरी ही हम भक्ति करते हैं और तुझसे ही याचना करते हैं।

६ हमें सीधा रास्ता दिखा।

७ रास्ता उन लोगों का, जिनके ऊपर तूने दया की है; न कि उनका, जिन पर तेरा प्रकोप हुआ और न उनका, जो भ्रमित हुए।

१.१–७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

2. १ अलिफ़् लाम् मीम् ०[ज]

२ ज़ालिक(अ्)ल् किताबु ला रैब[ज़ख़्ली] फ़ीहि[ज] हुद (न् य्)ल्लिल् मुत्तक़ीन ०[ला]

३ (अ्) ल् लज़ीन युअ्मिनून बि(अ्)ल् ग़ैबि व युक़ीमून(अ् ल्) स्सलात व मिम्मा रज़क़्ना-हुम् युन्फ़िक़ून ०[ला]

४ व(अ्)ल् लज़ीन युअ्मिनून बिमा उन्ज़िल इलैक व मा उन्ज़िल मिन् क़ब्लिक[ज] व बि(अ्)ल् आख़िरति हुम् यूक़िनून०[तीय]

५ उ(व्)लाअिक अला(य्)हुद(न्य्)म्मिन (न्)-र्रब्बिहिम्[क] व उलाअिक हुमु (अ्)ल् मुफ़्लिहून०

२.१–५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ ग्रन्थ-गौरव

२ ग्रन्थ-प्रकाश

२ ग्रन्थ कल्याणमार्गियों के लिए

१ अलिफ् लाम् मीम् ।

२ यह वह ग्रन्थ है, जिसमें कोई सन्देह नहीं। कल्याणमार्गियों का मार्गदर्शक है।

३ जो अव्यक्त पर श्रद्धा रखते हैं और प्रार्थना की प्रतिष्ठापना करते हैं और हमने* जो कुछ उन्हें दिया है, उसमें से हमारी राह में खर्च करते हैं।

४ और श्रद्धा रखते हैं उस पर, जो तुझ † पर उतारा गया और तुझसे पहले उतारा गया और अन्तिम (न्याय) पर विश्वास रखते हैं।

५ ये लोग अपने प्रभु के दिखाये मार्ग पर हैं और यही लोग सफल हैं।

२.१-५

---

* हम, मैं = परमात्मा। † तू = मुहम्मद।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

3. १ हुव(अ्)ल् लज़ी अन्ज़ल अलैक(अ्)ल् किताब मिन्हु आयातुम् मुह्कमातुन् हुन्न उम्मु(अ्)ल् किताबि व अुखरु मुतशाबिहातुन्^तोय फ़ अम्म-(अ्)(अ्)ल्लजीन फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैगुन् फ़ यत्तबिअ़ून मा तशाबह सिन्हु(अ्) ब्तिग़ा·अ (अ्)ल् फ़ित्नत्नि व (अ्)ब्तिग़ा·अतअ़्वीलिह्^ज व मा यअ़्लमु तअ़्वीलहू इल्ल(अ्) (अ्)ल्लाहु^म...........

३.७

4. १ अल्लजीन यस्तमिअ़ून(अ्)ल् क़ौल फ़ यत्तबिअ़ून अह्सनहू^तोय उ(व्) लाअिक (अ्)-ल्लज़ीन हदाहुमु(अ्)ल्लाहु व उ(व्)लाअिक हुम् उ(व्)लु (व् अ् अ्)ल् अल्बाबि ०

३९.१८

5. १ कल्ला इन्नहा तज्किरतुन्०^ज
२ फ़ मन् शा·अ जकरहू ०^म

८०.११-१२

6. १ ....ल तुबय्यिनुन्नहू लि(ल्)न्नासि व ला तक्तुमूनहू^ज............

३.१८७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ दुहरे वचन (मौलिक तथा लाक्षणिक)

१ वही है, जिसने तुझ पर ग्रन्थ उतारा। उसमें कुछ वचन स्पष्ट हैं, वे ही ग्रन्थ का मूल हैं और दूसरे लाक्षणिक हैं। सो जिनके दिलों में कुटिलता है, वे भ्रम फैलाने के लिए और यथार्थता की टोह लगाने के लिए लाक्षणिक वचनों के पीछे पड़ते हैं। वस्तुत: इनकी यथार्थता परमात्मा के सिवा कोई नहीं जानता।····

३.७

४ सर्वोत्तम सार ग्रहण करें

१ जो लोग इन वचनों को सुनते हैं और उनमें से सर्वोत्तम पर चलते हैं, उन्हींको परमात्मा ने मार्ग दिखाया है और वे ही लोग बुद्धिमान् हैं।

३९.१८

५ खुला बोध

१ निस्सन्देह यह एक सदुपदेश है,
२ जो चाहे, उसको विचारे।

८०.११-१२

६ शास्त्र प्रकट करना होता है, छिपाना नहीं

१ लोगों के लिए तुम इस ग्रन्थ को अवश्य प्रकट करोगे, इसे छिपाओगे नहीं।

३.१८७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

7. १ व लौ जअल्नाहु क़ुर्आनन् अअ्जमिय्य (न् अ्)-
ल्ल क़ालू (अ्) लौ ला फ़ुस्सिलत् आयातुहू^{तोय}
ऽअ अअ्जमिय्यु (न्) ँव्व अरबिय्युन्^{तोय} क़ुल् हुव
लिल्लज़ीन आमनू (अ्) हुदँ (य्) व्व शिफ़ा ऽउन्^{तोय}
....

४१.४४

8. १ व ल क़द् यस्सर्न (अ् अ्) ल् क़ुर्आन लि (ल्)-
ज़्ज़िक्रि फ़हल् मि (न्) म्मुद्दकिरिन्O

५४.१७

9. १ फ़ ला उक़्सिमु बि मा तुब्सिरून O^{ला}
२ व मा ला तुब्सिरून O^{ला}
३ इन्नहू ल क़ौलु रसूलिन् करीमि (न्) O^{ज़ ला}
४ ँव्व मा हुव बि क़ौलि शाअिरिन् ^{तोय} क़लील (न्)-
म्मा तु (व्) ऽअ्मिनून O^{ला}
५ व ला बि क़ौलि काहिनिन्^{तोय} क़लील (न्) म्मा
तज़क्करूनO^{तोय}
६ तन्ज़ीलु (न्) म्मि (न्) र् रब्बि (अ्) ल् आलमीनO

६९.३८–४३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ ग्रन्थ-स्वरूप

७ ग्रन्थ--मातृभाषा में

१ यदि हम इसे अरबी के अतिरिक्त अन्य भाषा का कुरान बनाते, तो कहते कि इसके वचन खोलकर क्यों नहीं समझाये गये ? यह क्या ? परायी भाषा और अरबी लोग ! कह : यह श्रद्धा-वानों के लिए प्रबोधन एवं शमन है।.........

४१.४४

८ सरल कुरान

१ हमने कुरान को समझने के लिए सरल बनाया है, तो है कोई सोचनेवाला ?

५४.१७

९ कवि का शब्द नहीं

१ कसम खाता हूँ [गवाही है] उस चीज की, जो तुम देखते हो
२ और उस चीज की, जो तुम नहीं देखते
३ कि यह कुरान माननीय दूत का कथन है।
४ किसी कवि का कहना नहीं, किन्तु तुम लोग कम ही श्रद्धा रखते हो।
५ और न यह किसी दैवज्ञ की बात है, किन्तु तुम कम ही ध्यान देते हो।
६ यह उतारा हुआ है, विश्व-प्रभु का।

६९.३८–४३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

10. १ अल्लाहु नज़्ज़ल अह्सन (अ्) ल् ह़दीसि किताब (न्) म्मुतशाबिह (न्) म्मसानिय क़ स्वली तक़्-शअ़िर्रु मिन्हु जुलूदु (अ्) ल्लजीन यख़्शौन रब्बहुम्^ज॰ सुम्म तलीनु जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला जिक्रि (अ्) ल्लाहि तोय ....

३९.२३

11. १ व ल क़द् आतय्नाक सब्अ़ (न्अ्) म्मिन (अ्) ल् मसानी व (अ्) ल् क़ुर्आन (अ्) ल् अ़जीम०

१५.८७

12. १ इन्नहू ल क़ुर्आनुन् करीमुन् ०ला
२ ल्ला यमस्सुहू इल्ल (अ् अ्) ल् मुतह्हरून ०तोय

५६.७७,७९

13. १ फ़ इजा क़रअ्त (अ्) ल् क़ुर्आन फ़ (अ्)-स्तअ़िज बि (अ्) ल्लाहि मिन (अ् ल्) श्शैतानि-(अ्ल्) र्रजीमि०

१६.९८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१० हृदय को सन्तोष देनेवाला

१ परमात्मा ने सर्वोत्तम कथन अर्थात् ऐसा ग्रन्थ उतारा, जो परस्पर मिलता-जुलता एवं दुहराये जानेवाला है। जिससे उनके शरीर थर्रा उठते हैं, जो अपने प्रभु से डरते हैं। फिर उनके शरीर और उनके अन्तःकरण ईश्वर-स्मरण से मृदु होते हैं।

३९.२३

११ आवर्तनीय अल्फ़ातिहा

१ निस्सन्देह हमने तुम्हें दुहराये जानेवाले सात वचन दिये और महान् कुरान दिया।

१५.८७

४ पठन-विधि

१२ शुचिर्भूत होकर

१ निस्सन्देह यह आदरणीय कुरान है।

....

२ इसे वही स्पर्श करते हैं, जो शुचिर्भूत होते हैं।

५६.७७,७९

१३ ईश्वराश्रयेण पठितव्यम्

१ जब तू कुरान पढ़ने लगे, तो परमात्मा की शरण माँग, बहिष्कृत शैतान से बचने के लिए।

१६.९८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड २

ईश्वर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

14. १ क़ुल् हुव(अ्)ल्लाहु अह़दुन् O[ज़]
२ अल्लाहु(अ् ल्)स़्स़मदु O[ज़]
३ लम् यलिद् O[ला] व लम् यूलद् O[ला]
४ व लम् यकु(न्)ल्लहू कुफ़ुवन्(अ्)अह़दुन् O[अ]
११२.१–४

15. १ क़ालु(व्अ् अ्)त्तख़ज(अ् ल्)र्रह़्मानु वलदन्-(अ्)O[तोय्]
२ लक़द् जि·अ्तुम् शय्·अन्(अ्) इद्दन् (अ्) O[ला]
३ तकादु(अ् ल्)स्समावातु यतफ़त़्तर्न मिन्हु व तन्शक़्क़ु (अ्) ल् अर्ज़ु व तख़िर्रु (अ्) ल् जिबालु हद्दन्(अ्) O[ला]
४ अन् दऔ(अ्)लि(ल्)र्रह़्मानि वलदन् (अ्)[ज़]
५ व मा यंबग़ी लि(ल्)र् रह़्मानि अँय्यत्तख़िज वलदन्(अ्) O[तोय्]
१९.८८–९२

16. १ व(अ्) स़्स़ाफ़्फ़ाति स़फ़्फ़न्(अ्) O[ला]
२ फ़ (अल्) ज़्ज़ाजिराति ज़ज़्रन्(अ्) O[ला]

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ एक

५ एक एवाद्वितीयः

१४ ईश्वर एक है

१ कह : ईश्वर एक है ।
२ ईश्वर निरपेक्ष है ।
३ वह न जनिता है, न जन्य ।
४ और न कोई उसके समान है ।

११२.१–४

१५ ईश्वर को पुत्र होना शोभा नहीं देता

१ लोग कहते हैं कि ईश्वर को पुत्र है ।
२ तुम एक भयंकर बात कह रहे हो ।
३ जिससे आकाश फट जायँ और पृथ्वी खण्ड-खण्ड हो जाय और पर्वत चूर-चूर होकर गिर जायँ,
४ कि ये लोग कहते हैं कि परमात्मा को पुत्र है
५ और कृपालु को यह शोभा नहीं देता कि वह किसीको पुत्र माने ।

१९.८८–९२

१६ भक्तवृन्दों की सौगन्ध

१ गणसज्जित,
२ विद्रावक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ फ़ (अल्) त्तालियाति ज़िक्रन् (अ्) O[ला]
४ इन्न इलाहकुम् ल वाहिदुन् O[तोय]
५ रब्बु (अल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्ज़ि व
मा बैनहुमा व रब्बु (अ्) ल् मशारिक़ि O[तोय]

३७.१–५

17. १ व इज़् क़ाल (अ्) ल्लाहु या ईसा (य् अ्) ब्न
मर्यम अ अन्त क़ुल्त लि (ल्) न्नासि (अ्)-
त्तख़िज़ूनी व उम्मिय इलाहैनि मिन् दूनि-
(अ्) ल्लाहि [तोय] क़ाल सुब्हानक मा यकूनु ली
अन् अक़ूल मा लैस ली[क़] बिहक़्क़िन् [तोय] इन् कुन्तु
क़ुल्तुहू फ़क़द् अलिम्तहू [तोय] तअ्लमु मा फ़ी
नफ़्सी व ला अअ्लमु मा फ़ी नफ़्सिक [तोय] इन्नक
अन्त अल्लामु (अ्) ल् ग़ुयूबि O
२ मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्तनी बिही अनि-
(अ्) अ्बुदु (व्अ्) (अ्) ल्लाह रब्बी व रब्बकुम्[ज]
व कुन्तु अलैहिम् शहीद (न्अ्) म्मा दुम्तु
फ़ीहिम्[ज] फ़ लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्त अन्त (अल्)-
र्रक़ीब अलैहिम् [तोय] व अन्त अला (य्) कुल्लि
शय्इन् शहीदुन् O
३ इन् तुअज़्ज़िब्हुम् फ़ इन्नहुम् इबादुक[ज] व इन्
तग़्फ़िर् लहुम् फ़ इन्नक अन्त (अ्) ल् अज़ीज़ु-
(अ्) ल् हकीमु O

५.११९–१२१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ तथा स्मरण-पठनशीलों की सौगन्ध।
४ निस्सन्देह तुम्हारा भजनीय एक है।
५ वह प्रभु है, आकाश एवं पृथ्वी का और उनमें जो वस्तुएँ हैं, उन सबका और उदय-स्थलों का।

३७.१–५

१७ यीशु की साक्ष्य

१ जब परमात्मा कहेगा : हे मरियम के बेटे यीशु, क्या तूने लोगों को कहा था कि मुझे और मेरी माँ को परमात्मा के अतिरिक्त दो उपास्य मानो। (यीशु) कहेगा : तू पवित्र है, मेरे लिए शोभनीय नहीं कि वह बात कहूँ, जिसका मुझे अधिकार नहीं। यदि मैंने कहा होगा, तो तू उसे अवश्य जानता होगा। तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है और जो कुछ तेरे मन में है, वह मैं नहीं जानता। निस्सन्देह तू ही अव्यक्त का ज्ञाता है।
२ तूने मुझे जो आज्ञा दी, केवल वही मैंने उनसे कही कि परमात्मा की भक्ति करो, जो मेरा प्रभु है और तुम्हारा प्रभु है और जब तक मैं उनके बीच रहा, उनका साक्षी रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उनका निरीक्षक था और तू ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी है।

३ यदि तू उनको दण्ड दे, तो वे तेरे दास ही हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो निःसंशय तू ही सर्वजित् और सर्वविद् है।

५.११९–१२१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

18. १ याँ अह्ल (अ्)ल् किताबि ला तग़्लू (अ्)
फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू (अ्)अ़ल(य्)ल्लाहि
इल्ल(अ्)ल् ह़क़्क़ तोय इन्न म(अ् अ्)ल् मसीहु
अ़ीस (य् अ्)ब्नु मर्यम रसूलु(अ्)ल्लाहि व
कलिमतुहु ज़् अल्क़ाहा इला (य्) मर्यम व
रूहु (न्) म् मिन्हु ज़् फ़ आमिनू (अ्)
बि(अ्)ल्लाहि व रुसुलिही ज़क़फ़ व ला तक़ूलू-
(अ्) सलासतुन् तोय इन्तहू (अ्) ख़ैर (न्अ्)-
ल्ल कुम् तोय इन्नम (अ् अ्)ल्लाहु इलाहुँव्वाह़िदुन् तोय
सुब्ह़ानहु अँय्यकून लहु वलदुन् म लहु मा फ़ि(य्)-
(अल्)स्समावाति व मा फ़ि(य् अ्)ल् अर्द़ि तोय
व कफ़ा(य्) बि(अ्)ल्लाहि वकीलन् (अ्)०
४.१७१

19. १ व कज़ालिक नुरी इब्राहीम मलकूत (अल्)-
स्समावाति व(अ्) ल् अर्द़ि व लि यकून मिन-
(अ्)ल् मूक़िनीन०
२ फ़लम्मा जन्न अ़लैहि (अ्) ल् लैलु रआ
कौकबन् (अ्) ज़् क़ाल हाजा रब्बी ज़् फ़ लम्मा
अफ़ल क़ाल ला उह़िब्बु(अ्)ल् आफ़िलीन०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१८ अ-त्री

१ हे ग्रन्थवन्तो, अपने धर्म के विषय में अत्युक्ति न करो और परमात्मा के विषय में सत्य के अतिरिक्त कुछ मत कहो। निस्सन्देह, यीशु ख्रीष्ट मरियम का बेटा परमात्मा का प्रेषित है और उसका शब्द है, जिसे उसने मरियम की ओर भेजा और परमात्मा की ओर से संचरित प्राण है। सो परमात्मा और उसके प्रेषितों पर श्रद्धा रखो और न कहो कि 'तीन' हैं। इससे परावृत्त हो जाओ। तुम्हारे लिए ठीक होगा। निस्सन्देह परमात्मा ही एकमेव भजनीय है। वह पवित्र है, इससे परे है कि उसको पुत्र हो। उसीका है, जो कुछ पृथ्वी एवं आकाशों में है। और रक्षण में परमात्मा पूर्ण समर्थ है।

४.१७१

१९ न तत्र सूर्यो भाति

१ हम इब्राहीम को इसी प्रकार आकाशों एवं पृथ्वी का अपना आधिपत्य दिखाने लगे, जिससे वह विश्वास करनेवालों में से हो जाय।

२ फिर जब उस पर रात्रि ने अंधकार फैलाया, तो उसने एक तारा देखा। बोला : यह है मेरा प्रभु ! फिर जब वह अस्त हो गया, तो बोला : मैं डूबनेवालों को पसन्द नहीं करता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ फ़लम्मा रअ(अ्)ल् क़मर बाज़िग़न्(अ्)क़ाल
हाजा रब्बीज़ फ़लम्मा अफ़ल क़ाल लइन्(न्)
ल्लम् यह्दिनी रब्बी ल अकूनन्न मिन (अ्) ल्
क़ौमि (अल्) द्दाल्लीन०

४ फ़ लम्मा रअ (अ्ल्) श्शम्स बाज़िग़तन्
क़ाल हाजा रब्बी हाजा अक्बरुज़ फ़लम्मा
अफ़लत् क़ाल या क़ौमि इन्नी बरीउ(न्)म्मिम्मा
तुश्रिकून०

५ इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लजी फ़तर(अल्)-
स्समावाति व (अ्) ल् अर्द़ हनीफ़ँव्व मा
अना मिन (अ्)ल् मुश्रिकीन०ज़

६.७५-७९

20. १ ....ला तस्जुदू (अ्)लि(ल्) श्शम्सि
व ला लिल् क़मरि व (अ्)स्जुदू (अ्) लिल्ला
हि (अ्) ल्लजी ख़लक़ हुन्न इन कुन्तुम् ईयाहु
तअ्बुदून०

४१.३७

21. १ म(अअ्)त्तख़ज(अ्)ल्लाहु मिँव्वलदिँव्व मा
कान मअ़हू मिन् इलाहिन् इज(न्अ्)ल्ल जहब
कुल्लु इलाहि (न्)म्बिमा ख़लक़ व लअ़ला
बअ्ज़ुहुम् अ़ला(य्) बअ्दिन् तोय सुब्हान(अ्)
-ल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून०ला

२३.९१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ फिर जब चमकता हुआ चन्द्रमा देखा तो कहा, यह है मेरा प्रभु ! फिर जब वह लुप्त हो गया, तो कहा, यदि मेरा प्रभु मुझे मार्ग न दिखाये, तो निश्चय ही मैं भ्रमितों में से हो जाऊँगा।

४ फिर जब उसने दीप्तिमान् सूर्य को देखा, तो कहने लगा : यह है मेरा प्रभु ! यह सबसे प्रचण्ड है। फिर जब वह अस्तंगत हुआ, तो बोल उठा : हे मेरे लोगो ! जिन्हें तुम (ईश्वर का) भागीदार ठहराते हो, उनसे मैं मुक्त हूँ।

५ निश्चय ही मैंने एकाग्र हो अपना मुख उसीकी ओर मोड़ दिया है, जिसने आकाश एवं भूमि बनायी है और मैं विभक्तों में से नहीं हूँ। ६.७५–७९

२० सूर्य-चन्द्र-निर्माता को प्रणिपात करो

१ प्रणिपात न करो सूर्य को और न चन्द्र को, अपितु प्रणिपात करो परमात्मा को, जिसने उन्हें उत्पन्न किया; यदि तुम परमात्मा की ही भक्ति करते हो।

४१.३७

६ देवता-निषेध

२१ यदि अनेक देवता होते

१ परमात्मा ने किसीको पुत्र नहीं ठहराया और न उसके साथ कोई अन्य भजनीय है, यदि ऐसा होता, तो प्रत्येक भजनीय देवता अपनी निर्मित वस्तु पृथक् कर ले जाता और एक-दूसरे पर आक्रमण कर देता। परमात्मा उनकी कथित बातों से बहुत निराला है।

२३.९१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

22. १ ज़रब (अ्) ल्लाहु मसल (न्अ्) र्रजुलन्-(अ्) फ़ीहि शुरकाअु मुतशाकिसून व रजुलन्-(अ्) सलम (न् अ्) लि रजुलिन् तोय हल् यस्तवियानि मसलन् तोय अल् ह़म्दु लिल्लाहि ज बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून ०

३९.९२

23. १ मसलु (अ्) ल्लजीन (अ्) त्तख़ज़ू मिन् दूनि-(अ्) ल्लाहि औलियाअ कमसलि (अ्) ल् अ़न्कबूति ख़लीज इत्तख़जत् बैतन् तोय व इन्न औहन (अ्) ल् बुयूति ल बैतु (अ्) ल् अ़न्क-बूतिम लौ कानू (अ्) यअ़्लमून०

२९.४१

24. १ अला लिल्लाहि (अ्ल्) द्दीनु (अ्) ल् ख़ालिसु तोय व (अ्) ल्लजीन (अ्) त्तख़ज़ू (अ्) मिन् दूनिहि औलियाअम मा नअ़्बुदु हुम् इल्ला लियुक़र्रिबू-ना इल (य् अ्) ल्लाहि ज़ुल्फ़ा (य्) तोय इन्न-(अ्) ल्लाह यह़्कुमु बैनहुम् फ़ी माहुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ून तोय इन्न (अ्) ल्लाह ला यह्दी मन् हुव काजिबुन् कफ़्फ़ारुन्०

३९.३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२२ अनेक मालिकों का गुलाम

१ परमात्मा ने एक दृष्टान्त दिया कि एक मनुष्य है, जिसके कई झगड़ालू मालिक हैं और एक मनुष्य पूरा एक का ही है। क्या दृष्टान्त में दोनों एक समान हैं ? सारी स्तुति परमात्मा के लिए है, किन्तु बहुत-से लोग समझते नहीं।

३९.२९

२३ मकड़ी का घर

१ जिन लोगों ने परमात्मा के अतिरिक्त अन्य संरक्षक चुने हैं, उन लोगों की उपमा मकड़ी की-सी है। उसने एक घर बना लिया, किन्तु इस बात में सन्देह नहीं कि सब घरों में कमजोर घर मकड़ी का घर है। अरे, यदि ये लोग समझते !

२९.४१

२४ विभक्ति और उसका समर्थन

१ स्मरण रखो, शुद्ध भक्ति परमात्मा के ही लिए है और जिन लोगों ने परमात्मा के अतिरिक्त और संरक्षक बना रखे हैं (और कहते हैं कि) हम तो उनकी भक्ति केवल इस कारण करते हैं कि वे हमें परमात्मा के समीप पहुँचा दें। निस्सन्देह परमात्मा उनके बीच उस वस्तु के सम्बन्ध में निर्णय कर देगा, जिसके विषय में वे विरोध कर रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि परमात्मा उसको मार्ग नहीं दिखाता, जो झूठा और सत्यद्रोही है।

३९.३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

25. १ क़ुल् हल् मिन् शुरकांअि कु(म्) म्मँय्यब्द(व्)-
अु(अ्)(अ्)ल् ख़ल्क़ सुम्म युअ़ीदुहू तोय क़ुलि-
(अ्) ल्लाहु यब्द(व्) अु (अ्) (अ्)ल् ख़ल्क़
सुम्म युअ़ीदुहू फ़ अन्ना(य्) तु(व्) अ्फ़कूनO
२ क़ुल् हल् मिन् शुरकांअि कु(म्) म्मँय्यह्दी'
इल (य् अ्) ल् हक़्क़ि तोय क़ुलि (अ्)ल्लाहु
यह्दी लिल् हक़्क़ि तोय अ फ़ मँय्यह्दी' इल(य्) (अ्)-
ल् हक़्क़ि अहक़्क़ु अँय्युत्तबअ़ अम्म (न्)ल्ला
यहिद्दी' इल्ला अँय्युह्दा (य्)ज फ़ मा लकुम् क़फ़
कैफ़ तह्कुमूनO

१०.३४-३५

26. १ यां अय्युह (अ् अल्) न्नासु ड़ुरिब मसलुन्
फ़(अ्)स्तमिअ़ू (अ्)लहू तोय इन्न (अ्)ल्लजीन
तद्अ़ून मिन् दूनि (अ्)ल्लाहि लँय्यख़्लुक़ू-
(अ्)ज़ुबाब(न् अ्)ँव्व ल वि(अ्)ज् तमअ़ू(अ्)
लहू तोय व इँय्यस्लुब्हुमु (अल्) ज़ुज़ुबाबु
शय्अ(न्)ल्ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु तोय ड़अ़ुफ़-
(अल्)त्तालिबु व(अ्)ल् मत्लूबुO

२२.७३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२५ परमात्मा की दोनों शक्तियाँ देवता में नहीं

१ पूछ : तुम्हारे भागीदारों में ऐसा कोई है, जो पहली बार उत्पन्न करता है, फिर दोबारा उत्पन्न करता है ? कह : परमात्मा पहली बार उत्पन्न करता है, फिर दोबारा उत्पन्न करता है, तो तुम कहाँ उलटे फिरे जाते हो !

२ पूछ : तुम्हारे भागीदारों में कोई ऐसा है, जो सत्य का मार्ग दिखाये ? कह दे : परमात्मा सत्य का मार्ग दिखलाता है। फिर जो सत्य का मार्ग दिखलाता है, वह अनुसरण करने के अधिक योग्य है या वह कि जो बिना बतलाये स्वयं ही मार्ग न पाये ? तो तुमको हुआ क्या है ? कैसा निर्णय करते हो ?

१०.३४-३५

२६ देवता मक्खी भी नहीं उड़ा सकते

१ लोगो, एक दृष्टान्त दिया जाता है, उसे कान लगाकर सुनो। परमात्मा के अतिरिक्त तुम जिन्हें पुकारते हो, वे कदापि एक मक्खी भी नहीं बना सकेंगे, यद्यपि उसके लिए सब इकट्ठा हो जायँ; और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले जाय, तो वे उसको उससे छुड़ा नहीं सकते। कैसे दुर्बल हैं ये याचक तथा याच्य !

२२.७३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

27. १ अल्लाहु नूरु (अ् ल्)स्समावाति व (अ्)ल्
अर्ज़ि[तोय] मसलु नूरिही क मिश्का(व्)तिन्
फ़ीहा मिस्बाहुन् [तोय] अल् मिस्बाहु फ़ी
ज़ुजाजतिन् [तोय] अ(ल्)ज़्ज़ुजाजतु क अन्नहा
कौकबुन् दुर्रिय्युँय्यूक़दु मिन् शजरति (न्)म्-
मुबारकतिन् ज़ैतूनति(न्)ल्ला शर्क़िय्यति-
ँव्व ला ग़र्बिय्यति(न्)[ला] ँयकादु ज़ैतुहा युज़ी'अु
व लौ लम् तम्सस्हु नारुन् [तोय] नूरुन् अ़ला(य्)
नूरिन्[तोय] यह्दि(य् अ्) ल्लाहु लि नूरिही
मँय्यशा'अु[तोय] व यज़्रिबु (अ्)ल्लाहु (अ्)ल्
अम्साल लि(ल्) न्नासि[तोय] व(अ्)ल्लाहु
बि कुल्लि शय्अिन् अ़लीमुन्O[ला]
२ फ़ी बुयूतिन् अज़िन (अ्)ल्लाहु अन् तुर्फ़अ़
व युज्कर फ़ीह (अ् अ्)स्मुहु[ला] युसब्बिहु लहु
फ़ीहा बि(अ्)ल् ग़ुदुव्वि व (अ्)ल् आसालिO[ला]
३ रिजालु(न्)[ला] ल्ला तुल्हीहिम् तिजारतुँव्व
ला बय्अुन् अ़न् ज़िक्रि (अ्)ल्लाहि व इक़ामि
(अ्ल्)स्सला(व्)ति व ईता'अि(अ्ल्)ज़्ज़का-
(व्)ति[स्वा][ला] यख़ाफ़ून यौमन् ततक़ल्लबु फ़ीहि
-(अ्)ल् क़ुलूबु व (अ्)ल् अब्सारु O[क़ला]

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ ज्ञानमय

७ परमात्मा प्रकाश-स्वरूप

२७ ईश्वरीय प्रकाश

१ परमात्मा आकाशों एवं भूमि का प्रकाश है, इस प्रकाश का दृष्टान्त ऐसा है कि जैसे एक आला है, उसमें एक दीपक है, दीपक शीशे में है। शीशा मानो एक चमकता हुआ तारा है, (दीपक) प्रज्वलित किया जाता है मंगलप्रद वृक्ष अर्थात् जैतून से, जो न पौर्वात्य है, न पाश्चिमात्य। निकट है कि उसका तेल प्रज्वलित हो जाय, चाहे उसे अग्नि न छुए। प्रकाश पर प्रकाश। परमात्मा जिसको चाहता है, अपने प्रकाश का मार्ग दिखलाता है और परमात्मा लोगों के लिए दृष्टान्तों का वर्णन करता है और परमात्मा सर्वज्ञ है।

२ (यह दीपक ऐसे) घरों में (है), जिनको ऊँचा करने की और जिनमें परमात्मा के नाम-स्मरण की परमात्मा ने आज्ञा दी है। वहाँ प्रातः-सायं उसका स्मरण करते हैं।

३ वे लोग, जिन्हें ईश्वर-स्मरण, नियमित प्रार्थना तथा नित्य दान से न व्यापार असावधान करता है, न क्रय-विक्रय; वे उस दिन से डरते हैं, जिस दिन हृदय और आँखें उलटायी जायँगी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ लि यज्ज़ियहुमु (अ्) ल्लाहु अह्सन मा अ़मिलू
-(अ्) व यज़ीदहु (म्) म्मिन् फ़द्लिही तोय व
(अ्) ल्लाहु यर्ज़ुक़ु म (न्) य्यशा·अु बिग़ैरि
ह़िसाबिन्O

५ व (अ्) ल्लज़ीन कफ़रू (अ्) अअ़्मालुहुम्
कसराबि (न्) म् बि क़ीअ़तिँ य्यह्सबुहु (अल्)-
ज़्ज़म्आनु मा·अन् तोय ह़त्ता इज़ा जा·अहु लम्
यजिद्हु शय्·अ (न्) व्व वजद (अ्) ल्लाह
अ़िन्दहू फ़वफ़्फ़ाहु ह़िसाबहू तोय व (अ्) ल्लाहु
सरीअ़ु (अ्) ल् ह़िसाबि Oला

६ औ क ज़ुलुमातिन् फ़ी बह्रि (न्) ल्लुज्जीयि (न्)
य्यग़्शाहु मौजु (न्) म्मिन् फ़ौक़िही मौजु (न्)-
म्मिन् फ़ौक़िही सह़ाबुन् तोय ज़ुलुमातु (न्) स्-
बअ़्ज़ुहा फ़ौक़ बअ़्ज़िन् तोय इज़ा अख़्रज यदहू लम्
यकद् यराहा तोय व म (न्) ल्लम् यज्अ़लि
-(अ्) ल्लाहु लहू नूरन् फ़ मा लहू मि (न्) न्नूरिन्O ऐन

२४.३५–४०

28. १ अला इन्नहुम् यस्नून सुदूरहुम् लि यस्तख़्फ़ू-
(अ्) मिन्हु तोय अला ह़ीन यस्तग़्शून स़ियाबहुम् ला
यअ़्लमु मा युसिर्रून व मा युअ़्लिनून तोय इन्नहू
अ़लीमु (न्) म् बिज़ाति (अल्) स्सुदूरिO

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ जिससे कि परमात्मा उन्हें उनके कर्मों का उत्तम-से-उत्तम प्रतिफल (बदला) दे और अपने वैभव में से उनको विपुलता दे। और परमात्मा जिसे चाहता है, अगणित देता है।

५ और जो लोग श्रद्धाहीन हैं, उनकी कृतियाँ ऐसी हैं, जैसे अरण्य में मृगजल, जिसे प्यासा पानी समझता है। यहाँ तक कि जब वह उसके पास आता है, तो कुछ नहीं पाता और पाता है ईश्वर को अपने पास। फिर उसने उसका लेखा पूरा कर दिया और ईश्वर शीघ्र हिसाब लेनेवाला है।

६ या जैसे अन्धकार एक गहन सागर में, जिस पर छायी हुई है लहर, उस लहर पर एक और लहर और लहर पर मेघ। अन्धकार पर अन्धकार ! अपना हाथ जब बाहर निकालता है, तो देख नहीं पाता। और जिसे परमात्मा ने प्रकाश नहीं दिया, उसके लिए कोई प्रकाश ही नहीं।

२४.३५-४०

८ सर्वज्ञ

२८ ईश्वर सर्वहृदय-साक्षी—वरुण

१ सावधान ! वे अपने वक्षस्थल को सिकोड़ते हैं, जिससे कि परमात्मा से छुपायें। सुनो, जिस समय वे अपने कपड़े ओढ़ते हैं, ईश्वर जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। निस्सन्देह वह अन्तःकरण के रहस्यों से अभिज्ञ है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व मा मिन् दाब्बतिन् फ़ि(य् अ्)ल् अर्द्दि इल्ला
अ़ल (य् अ्) ल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ़्लमु
मुस्तक़र्रहा व मुस्तौदअ़हा^तोय कुल्लुन् फ़ी
किताबि (न्) म्मुबीनिन्O

३ व हुव (अ्)ल्लज़ी ख़लक़ (अ्ल्)स्समावाति
व (अ्)ल् अर्द्ज़ फ़ी सित्तति अय्यामि(न्)ँव्व
कान अ़र्शुहू अ़ल(य् अ्)ल् मांअ्इ लि यब्लुव
-कुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़मलन्^तोय व लअिन्
क़ुल्त इन्नकु(म्) म्मब्अ़ूसून मि(न्)म् बअ़्दि
(अ्)ल् मौति ल यक़ूलन्न (अ्)ल्लज़ीन कफ़रू
(अ्) इन् हाज़ा इल्ला सिह्रु (न्)म्मुबीनुन्O
११.५–७

29. १ व मा तकूनु फ़ी शअ़्नि(न्)ँव्व मा तत्लू (अ्)
मिन्हु मिन् क़ुर्आनि(न्)ँव्व ला तअ़्मलून
मिन् अ़मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन्-
(अ्) इज़् तुफ़ीज़ून फ़ीहि^तोय व मा यअ़्ज़ुबु
अ(न्)र्रब्बिक मि (न्)म्मिसक़ालि ज़र्रतिन्
फ़ि(य् अ्)ल् अर्द्ज़ि व ला फ़ि(य्) (अ्ल्)स्समांअ्इ
व ला असग़र मिन् ज़ालिक व ला अक्बर इल्ला
फ़ी किताबि (न्)म्मुबीनिन्O

१०.६१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ भूमि पर चलनेवाला कोई ऐसा नहीं, जिसकी जीविका ईश्वर के अधीन न हो। वह जानता है उसके निवास का स्थान और उसके विश्राम का स्थान। सब बातें उस स्पष्ट ग्रन्थ में उपस्थित हैं।

३ और वही है, जिसने छह दिन में आकाशों और भूमि को उत्पन्न किया और उसका सिंहासन जल पर था (और है) जिससे कि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें से कौन अच्छा काम करता है और यदि तू (मुहम्मद) कहे कि मृत्यु के पश्चात् निश्चय ही तुम उठाये जाओगे, तो वे लोग, जो श्रद्धाहीन हैं, अवश्य कहेंगे कि यह तो खुला जादू है।

११.५–७

२९ सर्व-कर्म-साक्षी

१ और तू किसी भी स्थिति में हो। और तू कुरान का कोई पाठ करता हो। और तुम लोग कोई काम करते हो, हम तुम्हारे पास अवश्य उपस्थित होते हैं, जब कि तुम उसमें व्यस्त होते हो। और तेरे प्रभु से कणभर भी कोई वस्तु नहीं छिपती, न भूमि में, न आकाश में। उससे न कोई छोटी, न कोई बड़ी वस्तु है, जो उस स्पष्ट ग्रन्थ में नहीं है।

१०.६१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

30. १ व अिन्दहू मफ़ातिहु (अ्) ल् ग़ैबि ला यअ्लमुहा
इल्ला हुव^तोय^ व यअ्लमु मा फ़ि (य्) (अ्) ल् बर्रि
व (अ्) ल् बह्रि^तोय^ व मा तुस्क़ुतु मि (न्)-
ँव्वरक़तिन् इल्ला यअ्लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी
ज़ुलुमाति (अ्) ल् अर्द्दि व ला रत्बि (न्) ँव्व ला
याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबि (न्) म्मुबीनिन्O
६.५९

31. १ इन्न (अ्) ल्लाह अिन्दहू अिल्मु (अ्ल्) स्साअति^ज^
व युनज़्ज़िलु (अ्) ल् ग़ैस^ज^ व यअ्लमु मा फ़ि
(अ्) ल् अर्हामि^तोय^ व मा तद्री नफ़्सु (न्) म्मा
ज़ा तक्सिबु ग़दन् (अ्)^तोय^ व मा तद्री नफ़्सु
(न्) म् बि अय्यि अर्द्दिन् तमूतु^तोय^ इन्नल्लाह
अलीमुन् ख़बीरुन्O
३१.३४

32. १ अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व
मा तग़ीद्दु (अ्) ल् अर्हामु व मा तज़दादु (न्)^तोय^
व कुल्लु शय्अिन् अिन्दहु बि मिक़्दारिन्O
२ आलिमु (अ्) ल् ग़ैबि व (अ्ल्) श्शहादति
-(अ्) ल् कबीरु (अ्) ल् मुतआलिO
३ सवाअु (न्) म्मिन्कुम् मन् असर्र (अ्) ल् क़ौल
व मन् जहर बिही व मन् हुव मुस्तख़्फ़ि (न्) म्
बि (अ्) ल्लैलि व सारिबु (न्) म् बि (अ्ल्) न्नहारिO
१३.८–१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३० परमात्मा के पास अव्यक्त की कुंजियाँ

१ और उसीके पास अव्यक्त की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। और वह जानता है, जो कुछ पृथ्वी और समुद्र में है। और कोई पत्ता नहीं झड़ता, पर वह उसे जानता है। बीज का कोई दाना भूमि के अँधेरे गर्भ में नहीं गिरता और न कोई हरी वस्तु, न कोई सूखी वस्तु ऐसी है, जो स्पष्ट ग्रन्थ में विद्यमान् नहीं है।

६.५९

३१ ईश्वर पञ्चज्ञ

१ निस्सन्देह अन्तिम दिन (पुनरुत्थान) का ज्ञान ईश्वर को ही है। वही मेंह बरसाता है और माता के गर्भ में जो कुछ है, उसे वही जानता है। कोई प्राणी नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस भूमि में मरेगा। निस्सन्देह ईश्वर ही सर्वज्ञ है, सर्वविद् है।

३१.३४

३२ ईश्वर गर्भज्ञ

१ ईश्वर जानता है, जो प्रत्येक नारी के गर्भ में है और जो कुछ गर्भों में न्यूनाधिक होता है। प्रत्येक वस्तु उसके पास एक परिमाण से है।

२ वह अव्यक्त व्यक्त का ज्ञाता, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोच्च है।

३ तुममें जो चुपके से कहे या पुकारकर कहे और जो रात को छिप जाय और जो दिन में चले-फिरे, सब (उसके लिए) बराबर है।

१३.८-१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

33. १ व ल क़द् ख़लक़्न (अ्) (अ्) ल् इन्सान व नअ़्लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू[खलीज] व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन् ह़ब्लि (अ्) ल् वरीदि०

५०.१६

34. १ ला तुद्रिकुहु (अ्) ल् अब्स़ारु[न] व हुव युद्रिकु (अ्) ल् अब्स़ारन्[न] व हुव (अल्)-ल्लतीफ़ु (अ्) ल् ख़बीरु ०

६.१०३

35. १ हुव (अ्) ल् अव्वलु व (अ्) ल् आख़िरु व (अल्)-ज़्ज़ाहिरु व (अ्) ल् बात़िनु[न] व हुव बिकुल्लि शय्इन् अ़लीमुन्०

५७.३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३३ **कण्ठ-शिरा से भी निकट**

१ हमने मनुष्य को उत्पन्न किया। उसके मन में जो विचार आते रहते हैं, उन्हें हम जानते हैं और हम उससे उसकी कण्ठ-शिरा से भी अधिक निकट हैं।

५०.१६

३४ **दृष्टे : द्रष्टा**

१ उसे दृष्टि नहीं पाती, पर वह दृष्टि को पा लेता है। वह सूक्ष्मदर्शी, सावधान है।

६.१०३

३५ **आदि-अन्त, प्रकट-अप्रकट**

१ वही है आदि, वही है अन्त, वही है प्रकट, वही है अप्रकट। वह वस्तुमात्र का ज्ञाता है।

५७.३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

36. १ इन्नहू हुव युब्दि(य्)ॳु व युॳीदु ०^ज़
२ व हुव(अ्)ल् ग़फ़ूरु (अ्)ल् वदूदु ०^ला
३ जु(अ्)ल् ॳर्शि(अ्) ल् मजीदु ०^ला
४ फ़ॳ्ॳालु(न्) ल्लिमा युरीदु ०^तोय्

८५.१३–१६

37. १ युरीदु(अ्)ल्लाहु लि युबय्यिन लकुम् व यह्दिय-कुम् सुनन(अ्)ल्लज़ीन मिन् क़ब्लिकुम् व यतूब ॳलैकुम्^तोय् व(अ्)ल्लाहु ॳलीमुन् हकीमुन्०
२ व(अ्)ल्लाहु युरीदु अ(न्)ँय्यतूब ॳलैकुम्^क़फ़ व युरीदु (अ्) ल्लज़ीन यत्तबिॳून (अ्ल्)-श्शहवाति अन् तमीलू मैलन्(अ्)ॳज़ीमन्(अ्)०
३ युरीदु(अ्)ल्लाहु अ(न्)ँय्युख़फ़्फ़िफ़ ॳन्कुम्^ज़ व ख़ुलिक़(अ्)ल् इन्सानु ज़ॳीफ़न्(अ्)०

४.२६–२८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ दयामय

१ दयालु

३६ ईश्वर का गुण-गौरव

१ निस्सन्देह वही पहली बार उत्पन्न करता है और वही दूसरी बार उत्पन्न करेगा।

२ वही क्षमावान्, प्रेममय,

३ सिंहासनाधिष्ठित कीर्तिमान् है।

४ जो चाहता है, सो करता है।

८५.१३–१६

३७ ईश्वर तुम्हारा भार हलका करना चाहता है

१ परमात्मा चाहता है कि तुम्हारे लिए प्रशस्त करे और तुम्हें दिखाये उन लोगों का मार्ग, जो तुमसे पूर्व थे और तुम्हें क्षमा करे। परमात्मा सर्वज्ञ तथा सर्वविद् है।

२ परमात्मा चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और वासना के अनुगामी चाहते हैं कि तुम मार्ग से बहुत दूर जा पड़ो।

३ परमात्मा चाहता है कि तुम्हारा बोझ हलका करे, कारण कि मनुष्य अशक्त निर्माण किया गया है।

४.२६–२८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

38. १ व इजा जा'अक (अ्)ल्लजीन यु(व्)'अ्मिनून
बि आयातिना फ़ क़ुल् सलामुन् अ़लैकुम् कतब
रब्बुकुम् अ़ला(य्)नफ़्सिहि(अ्ल्) र्रह्मतल्ला
अन्नहू मन् अ़मिल मिन्कुम् सू'अ (न् अ्) म्-
बि जहालतिन् सुम्म ताब मि(न्)म् बअ़्दिही
व अस्लह् फ़ अन्नहू ग़फ़ूरु(न्) र्रहीमुन्O
६.५४

39. १ व इन्न रब्बक ल जू मग़्फ़िरति(न्)ल्लि न्नासि
अ़ला(य्) ज़ुल्मिहिम्ज व इन्न रब्बक ल
शदीदु(अ्)ल् अ़िक़ाबिO
१३.६

40. १ इन्न म(अ्ल्)त्तौबतु अ़ल(य्अ्)ल्लाहि लिल्ल-
जीन यअ़्मलून (अ्ल्)स्सू'अ बिजहालतिन्
सुम्म यतूबून मिन् क़रीबिन् फ़ उ(व्)लां'अ़िक
यतूबु(अ्)ल्लाहु अ़लैहिम्तोय व कान (अ्)ल्लाहु
अ़लीमन् हकीमन्O
२ व लैसति(अ्ल्) त्तौबतु लिल्लजीन यअ़्मलून
(अ्ल्) स्सय्यिआतिज हत्ता इजा हद़र अहदहुमु-
(अ्)ल् मौतु क़ाल इन्नी तुब्तु(अ्)ल् 'आन व

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३८ दया-दक्ष

१ जब तेरे पास हमारे वचनों को माननेवाले लोग आयें, तो तू कह दे, तुम पर सलाम हो (तुम्हें शान्ति एवं शरणता मिले)। तुम्हारे प्रभु ने करुणा को अपना जिम्मा माना है कि तुममें से जो कोई अज्ञान से बुरा काम करे, फिर पश्चात्ताप करे और अपना सुधार करे, तो वह परमात्मा क्षमावान्, करुणावान् है।

६.५४

३९ ईश्वर दयालु और कठोर

१ निस्सन्देह प्रभु लोगों को उनके अत्याचारों के होते हुए क्षमा करनेवाला है और यह भी निश्चित है कि प्रभु कठोर दण्ड देनेवाला है।

१३.६

४० ईश्वर की क्षमा की मर्यादाएँ

१ ईश्वर उन्हीं लोगों के पश्चात्ताप की स्वीकृति करता है, जो अज्ञान से दुष्कर्म करते हैं, फिर शीघ्र पश्चात्ताप करते हैं। ऐसे ही लोगों को वह क्षमा करता है। परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

२ और उन लोगों के पश्चात्ताप की स्वीकृति नहीं होती, जो दुष्कर्म करते हैं। यहाँ तक कि जब उनमें से किसीके आगे मृत्यु आ जाती है, तो वह कहता है कि अब मैंने पश्चात्ताप किया। और ऐसों के भी पश्चात्ताप स्वीकृत नहीं होते,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ल(अ् अ्)ल्लजीन यमूतून व हुम् कुफ़्फ़ारुन्तोय
उ(व्)लाअिक अअ्तद्ना लहुम् अजाबन्(अ्)
अलीमन् (अ्)०

४.१७–१८

41. १ इन्न(अ्) ल्लाह ला यग़्फ़िरु अ(न्) य्युश्रक
बिहि व यग़्फ़िरु मा दून जालिक लिम (न्)-
य्यशाअु व म(न्) य्युश्रिक् बि(अ्)ल्लाहि फ़
क़दि(अ्)फ़्तरा(य्) इस्मन्(अ्) अजीमन् (अ्)०

४.४८

42. १ अ(ल्) र्रह्मानु ०ला
२ अल्लम(अ्)ल् क़ुर्आन ०तोय
३ ख़लक़(अ्)ल् इन्सान ०ला
४ अल्लमहु(अ्)ल् बयान०
५ अ(ल्)श्शम्सु व(अ्)ल् क़मरु बि हुस्बानि-
(न्)ख़ात
६ व्व(अ्ल्) न्नज्मु व(अ्ल्) श्शजरु यस्जु-
दानि०
७ व (अ्ल्) स्समाअ रफ़अहा व वदअ-
(अ्)ल् मीज़ान०
८ अ ल्ला तत्ग़ौ फ़ि (अ्) ल् मीज़ानि०
९ व अक़ीमु(व्अ्) (अ्) ल् वज़्न बि (अ्) ल्
क़िस्ति व ला तुख़्सिरु(व् अ्) (अ्)ल् मीज़ान०
१० व (अ्) ल् अर्द़ वद़अहा लिल् अनामि०ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो श्रद्धाहीन स्थिति में मरते हैं। ऐसे लोगों के लिए हमने एक भयानक दण्ड प्रस्तुत रखा है।

४.१७–१८

४१ अक्षमा का विषय

१ निस्सन्देह परमात्मा इस बात को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसीको भागीदार किया जाय। इसके अतिरिक्त अन्य दोषों को वह क्षमा करेगा, जिसके लिए वह चाहे। और जो परमात्मा के साथ भागीदार ठहराये, उसने निश्चय ही महान् दोष की बात की।

४.४८

१० ईश्वरीय देनें

४२ आध्यात्मिक, नैतिक तथा भौतिक देनें

१ कृपालु ने
२ सिखाया कुरान।
३ निर्माण किया मनुष्य।
४ उसको बोलना सिखाया।
५ सूर्य-चन्द्र नियम-परायण हैं।
६ तारे और वृक्ष प्रणिपात करते हैं।
७ आकाश को ऊँचा किया और तुला रखी
८ कि तौल में अतिक्रम न करो।
९ और न्याय से सीधी तौल तौलो और तौल में न्यूनता न करो।
१० भूमि बनायी प्रजा के लिए।

५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

११ फ़ी हा फ़ाकिहतु (न्) खातला ँव (अल्) न्नख़्लु
जातु (अ्) ल् अक्मामिO खली

१२ व (अ्) ल् हूब्बु जु (व् अ्) ल् अ़स्फ़ि व
(अल्) र्रैहूानुO ज.

१३ फ़ बि अय्यि आलांञि रब्बिकुमा तुकज्ज़िबानिO
५५.१–१३

43. १ अल्लाहु (अ्) ल्लजी ख़लक़ (अल्) स्समावाति
व (अ्) ल् अर्द़ व अनज़ल् मिन (अल्)-
स्समांञि मांअन् फ़ अख़्रज बिहॖी मिन (अल्)-
स्समराति रिज़्क़ (न्) ल्लकुम् ज. व
सख़्ख़र लकुमु (अ्) ल् फ़ुल्क लि तज्रिय
फ़ि (अ्) ल् बह्रि बि अम्रिहॖी ज. व सख़्ख़र
लकुमु (अ्) ल् अन्हारO ज.

२ व सख़्ख़र लकुमु (अल्) श्शम्स व (अ्) ल्
क़मर दांञिबैनि ज. व सख़्ख़र लकुमु (अल्)-
ल्लैल व (अल्) न्नहारO ज.

३ व आताकु (म्) म्मिन् कुल्लि मा सअल्तुमूहु तोय
व इन् तअुद्दू (अ्) निअ़्मत (अ्) ल्लाहि ला
तुह्सूहा तोय
१४.३२–३४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

११ उसमें फल हैं तथा आवरणाच्छादित फलोंवाली खजूरें हैं।

१२ और धान्य है भूसीवाला और सुवासित फूल।

१३ तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपकारों और चमत्कृतियों को मुकरोगे ?

५५.१–१३

४३ माँगा, सो सब दिया

१ ईश्वर वह है, जिसने आकाशों एवं भूमि को उत्पन्न किया। आकाश से पानी उतारा, फिर उससे तुम्हारे लिए फल उगाये, जो तुम्हारा खाद्य है; नौकाओं को तुम्हारे अधिकार में कर दिया कि परमात्मा की आज्ञा से वे समुद्र में चलें और नदियों को तुम्हारी सेवा में लगाया।

२ और लगाया तुम्हारी सेवा में सूर्य और चन्द्र को, जो कि सतत चले जा रहे हैं। रात्रि को और दिन को भी तुम्हारी सेवा पर नियुक्त किया।

३ और वह सब तुम्हें दिया, जो तुमने माँगा। यदि तुम ईश्वर की देनों को गिनना चाहो, तो गिन नहीं सकते।

१४.३२–३४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

44. १ क़ुल् अर-अैतुम् इन् जअ़ल (अ्) ल्लाहु अ़लैकुमु-
(अ्) ल्लैल सर्मदन् (अ्) इला (य्) यौमि-
(अ्) ल् क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरु (अ्)-
ल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाअ़िन् तोय अ फ़ ला
तस्मअ़ून०

२ क़ुल् अर-अैतुम् इन् जअ़ल (अ्) ल्लाहु अ़लैकुमु-
(अ्ल्) न्नहार सर्मदन् (अ्) इला (य्)
यौमि (अ्) ल् क़ियामति मन् इलाहुन्
ग़ैरु (अ्) ल्लाहि यअ्तीकुम् बि लैलिन् तस्कुनून
फ़ीहि तोय अ फ़ ला तुब्सिरून०

३ व मि (न्) र्रह़्मतिहीं जअ़ल लकुमु (अ्)-
ल्लैल व (अ्ल्) न्नहार लि तस्कुनू (अ्)
फ़ीहि व लि तब्तग़ू (अ्) मिन् फ़ज़्लिहीं व
लअ़ल्लकुम् तश्कुरून०

२८.७१–७३

45. १ फ़ल् यन्ज़ुरि (अ्) ल् इन्सानु इला (य्)
तअ़ामिहीं०ला

२ अन्ना सबब्न (अ्) (अ्) ल् माअ सब्बन् (अ्) ०ला

३ सुम्म शक़क़्न (अ्) (अ्) ल् अर्ज़ शक़्क़न् (अ्) ०ला

४ फ़ अ (न्) म्बत्ना फ़ीहा ह़ब्ब (न् अ्) ०ला

५ व्व अ़िनब (न् अ्) व्व क़ज़्ब (न् अ्) ०ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४४ द्वन्द्व-निर्माण दया

१ कह : देखो तो यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिन तक तुम पर सदा के लिए रात्रि कर दे, तो ईश्वर के अतिरिक्त कौन अधिकारी है कि तुम्हारे पास कहीं से दिन ले आये ? फिर क्या तुम सुनते नहीं ?

२ कह : देखो तो, यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिन तक तुम पर सदा के लिए दिन कर दे, तो ईश्वर के अतिरिक्त कौन अधिकारी है कि जो तुम्हारे पास ऐसी रात्रि ले आये कि जिसमें तुम विश्राम पाओ ? फिर क्या तुम सोचते नहीं ?

३ और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए उसने रात-दिन बनाये कि उसमें विश्राम करो और उसका कृपा-वैभव चाहो, जिससे कि तुम कृतज्ञ रहो ।

२८.७१–७३

४५ मनुष्य का अन्न

१ मनुष्य अपने अन्न की ओर देखे

२ कि हमने ऊपर से खूब पानी बरसाया,

३ फिर हमने विशेष प्रकार से जमीन चीरी,

४ उसमें अनाज उगाया

५ और अंगूर और सब्जियाँ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६ ँव्व ज़ैतून (न् अ्) ँव्व नख़्ल (न् अ्)०ला
७ ँव्व ह़दाइक़ ग़ुल्ब (न् अ्) ०ला
८ ँव्व फ़ाकिहत(त्) (अ्) ँ व्व अब्ब(न् अ्)०ला
९ म्मताअ (न् अ्) ल्लकुम् व लि अन्आमि-
कुम्०तोय

८०.२४–३२

46. १ व इन्न लकुम् फ़ि (य्)(अ्) ल् अन्आमि ल
इब्रतन् तोय नुस्क़ीकु(म्) म्मिम्मा फ़ी
बुतूनिही मि(न्)म् बैनि फ़र्सि (न्) ँव्व
दमि (न्) ल्लबनन् (अ्) ख़ालिसन् (अ्)
साइग़ (न् अ्) ल्लि (ल्) श्शारिबीन०
२ व मिन् समराति (अ् ल्) न्नख़ीलि व (अ्)-
ल् अअ्नाबि तत्तख़िज़ून मिन्हु सकर-
(न्अ्) ँव्व रिज़्क़न्(अ्) ह़सनन् तोय इन्न फ़ी
ज़ालिक ल आयत (न्) ल्लि क़ौमि (न्)ँ
य्यअ्क़िलून०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६ और जैतून और खजूरें

७ और घने बाग

८ और फल तथा चारा उगाया

९ तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिए।

८०.२४–३२

४६ दूध, द्राक्ष, मधु

१ निस्सन्देह तुम्हारे लिए चौपायों में भी शिक्षण है——उनके पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में से शुद्ध दूध, जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट है, हम तुम्हें पिलाते हैं——

२ और खजूर और द्राक्ष के फलों में भी। जिससे तुम लोग मद्य और उत्तम खाद्य बनाते हो। इनमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो समझ रखते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व औहा (य्) रब्बुक इल (य्) (अ् ल्) न्नह्लि
अनि (अ्) त्तख़िजी मिन (अ्) ल् जिबालि
बुयूत (न्) व्व मिन (अल्) श्शजरि व
मिम्मा यअ्रिशूनO[ला]

४ सुम्म कुली मिन् कुल्लि (अ्ल्) स्समराति
फ़ (अ्) स्लुकी सुबुल रब्बिकि जुलुलन् (अ्)[तोय]
यख़्रुजु मि (न्) म् बुतूनिहा शराबु (न्)-
म् मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ा·अु (न्)-
ल्लि (ल्) न्नासि[तोय] इन्न फ़ी जालिक लआया[त]-
(न्) ल्लि क़ौमि (न्) य्यतफ़क्करूनO

१६.६६–६९

47. १ युअ्ति (अ्) ल् हिकमत म (न्) य्यशा·अु[ज]
व म (न) य्युअ्त (अ्) ल् हिक्मत फ़ क़द्
ऊतिय ख़ैरन् कसीरन्[तोय] व मा यज्जक्करु
इल्ला उ (व्) लु (व् अ्) (अ्) ल् अल्बाबिO

२.२६९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ तेरे प्रभु ने मधुमक्खी के मन में यह बात डाली कि पर्वतों में, वृक्षों में और जहाँ ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बाँधते हैं, उन स्थानों में घर बना ले।

४ फिर सब फलों में से खा और अपने प्रभु के सुलभ किये हुए मार्गों पर चलती रह। उनके पेट से रंगबिरंगा पेय निकलता है, जिससे लोगों के लिए आरोग्य-लाभ है। निस्सन्देह इसमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो सोचते हैं।

१६.६६–६९

४७ बुद्धि सर्वोत्तम देन

१ वह जिसे चाहता है, बुद्धि देता है और जिसे बुद्धि दी गयी, महत्तम कल्याण दिया गया और बुद्धिमान् सदुपदेश मानते हैं।

२.२६९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

48. १ अम् मन् ख़लक़ (अ्ल्) स्समावाति व-
(अ्) ल् अर्द़ व अन्ज़ल लकु (म्) म्मिन (अ्ल्)-
स्समाअि माअन् फ़ अ (न्) म्बत्ना
बिहीं ह़दाअिक़ ज़ात बह्जतिन् मा कान
लकुम् अन्तु (न्) म्बितू (अ्) शजरहा तोय
अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि तोय बल
हुम् क़ौमु (न्) य्यअ्दिलून ० तोय
२ अम् मन् जअल (अ्) ल् अर्द़ क़रार (न्अ) व्व
जअल ख़िलालहा अन्हार (न् अ्) व्व जअल
लहा रवासिय व जअल बैन (अ्) ल् बह्रैनि
ह़ाजिज़न् तोय अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि तोय
बल् अकसरु हुम ला यअ्लमून ० तोय
३ अम् म (न) य्युजीबु (अ्) ल् मुद़्तर्र इजा
दआहु व यक्शिफ़ु (अ्ल्) स्सूअ व यज्अलुकुम्
ख़ुलफ़ाअ (अ्) ल् अर्द़ि तोय अ इलाहु
(न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि तोय क़लील (न्) म्मा
तजक्करून ० तोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६ कर्ता

११ सृष्टिकर्ता

४८ केन पंचक

१ भला किसने निर्माण किया आकाशों को और भूमि को और तुम्हारे लिए पानी उतारा, फिर उससे सुन्दर बाग उगाये तथा उनमें वृक्ष उगाये। इन वृक्षों को उगाने की सामर्थ्य तुममें नहीं थी। क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोई और नियन्ता है ? कोई नहीं। पर, वे ऐसे लोग हैं कि मुँह मोड़ लेते हैं।

२ अथवा किसने भूमि को स्थल बनाया और उसके बीच में नदियाँ बनायीं। और उसके लिए पर्वत बनाये और दो समुद्रों के बीच सीमा-रेखा रखी। क्या है ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य नियन्ता ? कोई नहीं, पर इनमें अधिकतर लोग समझते नहीं।

३ भला कौन सुनता है आर्त की, जब वह उसे पुकारता है तथा संकट दूर कर देता है और तुम्हें भूमि पर विश्वस्त बनाता है ? क्या ईश्वर के साथ कोई अन्य नियन्ता है ? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ अम् म(न्)ँय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमाति (अ्) ल् बर्रि व (अ्) ल् बह्रि व म (न्) ँय्युर्सिलु-(अ् ल्) र्रियाह् बुश्र (न्) म् बैन यदय् रह्मतिहि॰ तोय़ अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि तोय़ तआल (य् अ्) ल्लाहु अम्मा युश्रिकून O तोय़

५ अम् म(न्)ँय्यब्द(व्)अु (अ्) (अ्) ल् ख़ल्क़ सुम्म युऔदुहू व म (न्)ँय्यर्ज़ुक़ुकु(म्)-म्मिन (अ् ल्) स्समांअि व (अ्) ल् अर्द्दि तोय़ अ इलाहु (न्) म्मअ (अ्) ल्लाहि तोय़ क़ुल् हातू(अ्) बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीनO

२७.६०-६४

49. १ अल् ह़म्दु लिल्लाहि फ़ातिरि (अ्ल्) स्समावाति व (अ्)ल् अर्द्दि जाअिलि (अ्)ल् मलांअिकति रुसुलन् (अ्) उ (व्) ली अज्-निह़ति (न्) म्मस्ना (य्) व सुलास व रुबाअ तोय़ यज़ीदु फ़ि (य् अ्) ल् ख़ल्क़ि मा यशांअु तोय़ इन्न (अ्) ल्लाह अला (य्) कुल्लि शय्अिन् क़दीरुन् O ३५.१

50. १ इन्न(अ्)ल्लाह फ़ालिक़ु (अ्) ल् ह़ब्बि व (ल्) न्नवा (य्) तोय़ युख़्रिजु (अ्) ल् ह़य्य मिन (अ्)ल् मय्यिति व मुख़्रिजु (अ्)ल् मय्यिति मिन (अ्) ल् ह़य्यि तोय़ जालिकुमु-(अ्)ल्लाहु फ़ अन्ना(य्) तु(व्)अफ़कून O

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ अथवा कौन है, जो तुम्हें भूमि एवं सागर के अन्धकार में मार्ग दिखलाता है, और कौन भेजता है वायु को अपनी कृपा के आगे, मांगल्यवाहक बनाकर, क्या कोई और नियन्ता है ईश्वर के अतिरिक्त ? ईश्वर उच्च तथा श्रेष्ठ है उस चीज से, जिसे वे भागीदार ठहराते हैं।

५ भला कौन पहली वार पैदा करता है फिर दोबारा करेगा, और कौन तुम्हें आकाश से और भूमि से जीविका देता है ? क्या है और कोई नियन्ता ईश्वर के अतिरिक्त ? कह : यदि तुम सच्चे हो, तो प्रमाण ले आओ।

२७.६०–६४

४९ देवदूत-निर्माता

१ स्तुति सब ईश्वर के ही लिए है, जो आकाशों तथा भूमि का उत्पन्न करनेवाला एवं देवदूतों को सन्देश-वाहक बनानेवाला है, जो दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पंखोंवाले हैं। उत्पत्ति में वह जो चाहता है, सो बढ़ा देता है। निस्सन्देह ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

३५.१

५० विकास-कर्ता

१ निस्सन्देह, ईश्वर धान्य-बीज और गुठली का भेदन (कर उसे अंकुरित) करता है, जीवित को मृत से निकालता है। वह मृत को जीवित से निकालनेवाला है। यह है ईश्वर ! फिर तुम किधर बहके जा रहे हो ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ फ़ालिक़ु(अ्)ल् इस्बाहि् ज व जअ़ल (अ्)-
ल्लैल सकन (न्)ँव्व (अ् ल्) श्शम्स व
(अ्) ल् क़मर हुस्बानन् (अ्) तोय़ ज़ालिक
तक़दीरु (अ्) ल् अज़ीज़ि(अ्)ल् अ़लीमि o
३ व हुव(अ्)ल्लज़ी जअ़ल लकुमु (अ्ल्)-
न्नुजूम लि तह्तदू(अ्) बिहा फ़ी ज़ुलुमाति-
(अ्) ल् बर्रि व (अ्) ल् बह्रि तोय़ क़द्
फ़स्सल्न(अ्अ्) ल् आयाति लि क़ौमि(न्)-
ँय्यअ़्लमून o
४ व हुव (अ्) ल्लज़ी अनशअकुम्मि (न्)-
न्नफ़्सि (न्)ँव्वाहि्दतिन् फ़ मुस्तक़र्रु (न्)ँव्व
मुस्तौदअ़ुन् तोय़ क़द् फ़स्सल्न(अ्)ल् आयाति लि
क़ौमि(न्)ँय्यफ़्क़हून o
५ व हुव(अ्)ल्लज़ी अन्ज़ल मिन (अ्ल्)-
स्समाअि माअन् ज़ फ़ अख़्रजना बिही नबात
कुल्लि शय्अिन् फ़ अख़्रजना मिन्हु
ख़ज़िर (न्अ्) न्नुख़्रिजु मिन्हु हब्ब (न्)-
म्मुतराकिबन् (अ्) ज़ व मिन (अ्ल्)-
न्नख़्लि मिन् तल्अ़िहा क़िन्वानुन् दानियतु-
(न्)ँव्व जन्नाति (न्) म्मिन् अअ़्नाबि(न्)ँव्व
(अ्ल्) ज़्ज़ैतून व(अ्ल्) र्रुम्मान मुश्तबिह(न्)-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ वह उषा की किरणों को प्रस्फुटित करता है। उसीने रात बनायी है विश्राम के लिए और सूर्य-चन्द्र गणित के लिए। सर्वजित् सर्वज्ञ का यह माप है।

३ और वही है, जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये, जिससे तुम उनके द्वारा भूमि एवं सागर के अन्धकार में मार्ग प्राप्त करो। निस्सन्देह हमने बुद्धिमानों के लिए विस्तार के साथ संकेतों का वर्णन किया है।

४ और वही है, जिसने तुम सबको एक जीव से निर्माण किया, फिर एक ठहरने का स्थान है और एक सौंपने का स्थान है। निश्चय ही हमने उन लोगों के लिए, जो सोचते हैं, संकेतों का स्पष्ट रूप से विवेचन किया है।

५ और वही है, जिसने आकाश से पानी उतारा और फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार की वनस्पति उत्पन्न की। फिर उससे हरे कोंपल उगाये, जिससे हम ऊपर-नीचे चढ़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से फलों के गुच्छे, जो झुके होते हैं और द्राक्ष के उद्यान और जैतून और अनार, जो परस्पर मिलते-जुलते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ँव्व ग़ैर मुतशाबिहिन् तोय उन्ज़ुरू (अ्)
इला (य्) समरिहू इज़ा असमर व यन्अिहि तोय
इन्न फ़ी ज़ालिकुम् ल आयाति लिल क़ौमि-
(न्) ँय्यु (व्) ·अ्मिनून०

६.९५-९९

51. १ क़ुल् अ ·अिन्नकुम् ल तक्फ़ुरून बि (अ्) ल्लज़ी
ख़लक़ (अ्) ल् अर्ज़ फ़ी यौमैनि व तज्अलून
लहू अन्दादन् तोय ज़ालिक रब्बु (अ्) ल्
आलमीन० ज

२ व जअल फ़ीहा रवासिय मिन् फ़ौक़िहा व
बारक फ़ीहा व क़द्दर फ़ीहा अक़्वातहा फ़ी
अर्बअति अय्यामिन् तोय सवाअ (न्) लिल-
(ल्) स्सा·अिलीन०

३ सुम्म (अ्) स्तवा (य्) इल (य् अ् ल्) स्समा·अि
व हिय दुख़ानुन् फ़ क़ाल लहा व लिल्
अर्ज़ि (अ्) ·अ्तिया तौअन् (अ्) औ कर्हन्-
(अ्) तोय क़ालता अतैना ता·अिअीन०

४ फ़ क़ज़ाहुन्न सब्अ समावातिन् फ़ी यौमैनि व
औहा (य्) फ़ी कुल्लि समा·अिन् अम्रहा तोय
व ज़य्यन्न (अ्) (अल्) स्समा·अ (अल्)-
दुन्या बि मसाबीह क़स्वली व हिफ़्ज़न् (अ्) तोय
ज़ालिक तक़्दीरु (अ्) ल् अज़ीज़ि (अ्) ल्
अलीम०

४१.९-१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और अलग भी हैं, उत्पन्न किये। उसके फल की ओर देखो जब वह फलता है और उसके पकने को देखो, निस्सन्देह इसमें संकेत हैं उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते हैं।

६.९५–९९

५१ सर्जन का समय-पत्रक

१ कह : क्या तुम उस ईश्वर का इनकार करते हो, जिसने दो दिन में भूमि निर्माण की और किसीको उसके समकक्ष बनाते हो? यह है सारे विश्व का प्रभु!

२ और उसीने भूमि के ऊपर पर्वत रखे और भूमि में विपुलता रखी। उसने चार दिन में उसके उत्पादन की योजना निश्चित की, जिससे कि माँगनेवालों को पूरा-पूरा मिले।

३ फिर आकाश की ओर ध्यान दिया और वह आकाश धुआँ था। फिर उससे और भूमि से कहा : तुम दोनों आओ, प्रसन्नतापूर्वक या खिन्न होकर। दोनों बोले : हम आये प्रसन्नता से।

४ सो दो दिन में उन्हें सात आकाश बना दिये और प्रत्येक आकाश में उसकी आज्ञा उतारी और निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और सुरक्षित कर दिया। यह उस सर्वजित् सर्वज्ञ की योजना है।

४१.९–१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

52. १ अ फ़ र·अैतु(म्) म्मा तह्रुसूनO

२ ·अ अन्तुम् तज़्र·अूनहू अम् नह्नु ज़्ज़ारिअ़्नO

३ लौ नशा·अु ल जअ़ल्नाहु हुतामन् फ़ज़ल्तुम् तफ़क्कहून O

४ इन्ना ल मुग़्रमून O

५ बल् नह्नु मह्रूमून O

६ अफ़ र·अैतुमु (अ्)ल् मा·अ (अ्) ल्लज़ी तश्रबूनO

७ ·अ अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिन (अ्) ल् मुज़्नि अम् नह्नु (अ्) ल् मुन्ज़िलून O

८ लौ नशा·अु जअ़ल्नाहु उजाजन् फ़ लौ ला तश्कुरून O

९ अ फ़ र·अैतुमु(अ्ल्)न्नार(अ्)ल्लती तूरूनOगोय

१० ·अ अन्तुम् अन्शअ्तुम् शजरतहा अम् नह्नु-(अ्) ल् मुन्शि·अून O

११ नह्नु जअ़ल्नाहा तज्किरत (न्)ँव मताअ़-(न्)ल्लिल् मुक़्वीन O

१२ फ़ सब्बिह् बि (अ्) स्मि रब्बिक (अ्) ल् अ़ज़ीमि Oऐन्

५६.६३–७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५२ तेजोबन्न-निर्माता

१ तो क्या तुमने सोचा उस पर, जो तुम बोते हो ?

२ क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगानेवाले ?

३ यदि हम चाहते, तो उसको चूर-चूर कर देते, फिर तुम बातें बनाते रह जाते

४ कि हम पर तो दण्ड पड़ा

५ अपितु हम वंचित कर दिये गये !

६ क्या तुमने विचार किया जल पर, जिसे तुम पीते हो ?

७ उसे मेघ से हमने उतारा या तुम हो उतारनेवाले ?

८ यदि हम चाहते तो उसे खारा कर देते, फिर तुम क्यों नहीं कृतज्ञ होते ?

९ क्या तुमने विचार किया अग्नि पर, जिसे तुम सुलगाते हो ?

१० क्या उसके लिए वृक्ष तुमने उत्पन्न किया या हम हैं उत्पन्न करनेवाले ?

११ हमने ही बनाया उस वृक्ष को, उपदेश और प्रवासियों के लाभ के लिए।

१२ सो तू अपने परम प्रभु के नाम का जप कर, जयजयकार कर।

५६.६३–७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

53. १ अव लम् यरौ इल (य्) (अल्) त्तैरि फ़ौक़
हुम् साफ़्फ़ाति (न्) ँव्व यक़्बिद्नम्र्तोय
मा युम्सिकुहुन्न इल्ल (अ्) (अल्) र्रह्मानुतोय
इन्नहू बि कुल्लि शय्अि (न्) म्बसीरुन् o

६७.१९

54. १ तबारक (अ्) ल्लज़ी बि यदिहि (अ्) ल्
मुल्कुज्र व हुव अला (य्) कुल्लि शय्अिन्
क़दीरु नि oला
२ (अ्) ल्लज़ी ख़लक़ (अ्) ल् मौत व (अ्) ल्
ह़या (व्) त लि यब्लुवकुम् अय्युकुम् अह़्सनु
अमलन् (अ्) तोय व हुव (अ्) ल् अज़ीज़ुल्
ग़फ़ूरु oला
३ (अ्) ल्लज़ी ख़लक़ सब्अ समावातिन् तिबाक़न्-
(अ्) तोय मा तरा (य्) फ़ी ख़ल्क़ि (अल्)-
र्रह्मानि मिन् तफ़ावुतिन्तोय फ़ (अ्) र्जिअि-
(अ्) ल् बसर ला हल तरा (य्) मिन् फ़ुतूरिन् o
४ सुम्म (अ्) र्जिअि (अ्) ल् बसर कर्रतैनि
यन्क़लिब् इलैक (अ्) ल् बसरु ख़ासिअ
(न् अ्) ँव्व हुव ह़सीरुन् o

६७.१-४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५३ विश्वाधार [पक्षी का दृष्टान्त]

१ क्या उन लोगों ने अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखा पंख फैलाते हुए और कभी समेट लेते हुए ? उनको कोई नहीं थाम रखता, अतिरिक्त कृपालु के। निस्सन्देह वह प्रत्येक वस्तु का द्रष्टा है।

६७.१९

१२ ईश्वर की सुन्दर रचना

५४ व्यवस्थित रचना

१ मंगलप्रद है वह, जिसके हाथ में अधिसत्ता है और वह सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ जिसने मृत्यु एवं जीवन का निर्माण किया कि तुम्हारी परीक्षा करे कि कृति में कौन तुममें से अधिक अच्छ है। वह सर्वजित् एवं क्षमावान् है।

३ जिसने तह पर तह सात आकाश बनाये। तू कृपालु की रचना में कोई न्यूनता नहीं देखेगा। फिर दोबारा दृष्टि डाल, तुझे कहीं दरार दीखती है ?

४ फिर बार-बार दृष्टि डाल, तेरी दृष्टि लौट आयेगी, खिसियानी-सी होकर और थकी हुई।

६७.१-४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

55. १ अ लम् नज्अलि (अ्)ल् अर्द़ मिहाद-(न् अ्) ०ला
२ व्व (अ्)ल् जिबाल औताद (न् अ्) ०स्वात् ला
३ व्व ख़लक़्नाकुम् अज़्वाज (न् अ्) ०ला
४ व्व जअ़ल्ना नौमकुम् सुबात (न् अ्) ०ला
५ व्व जअ़ल्न (अ्अ्) ल्लैल लिबास (न् अ्) ०ला
६ व्व जअ़ल्न (अ्) (अ्ल्) न्नहार मअ़ाशन् (अ्) ०स्वात्

७८.६-११

56. १ अ फ़ ला यन्ज़ुरून इल (य्) (अ्)ल् इबिलि कैफ़ ख़ुलिक़त् ०वक़्फ़:
२ व इल (य्) (अ्ल्) स्समाअि कैफ़ रुफ़िअ़त् ०वक़्फ़:
३ व इल (य्) (अ्)ल् जिबालि कैफ़ नुसिबत् ०वक़्फ़:
४ व इल (य्) (अ्)ल् अर्द़ि कैफ़ सुतिहूत् ०वक़्फ़:

८८.१७-२०

57. १ इन्ना ज़य्यन्न (अ्ल्) स्समाअ (अ्ल्)द्दुन्या बि ज़ीनति (न्) नि (अ्) ल् कवाकिबि ०ला
२ व हिफ़्ज़ (न्) म्मिन् कुल्लि शैत़ानि (न्)-म्मारिदिन् ०ज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५५ प्रभुनिर्मित सुन्दर जगत्

१ क्या हमने भूमि को बिछौना नहीं बनाया

२ और पर्वतों को मेखें।

३ और हमने तुम्हें युगल-युगल उत्पन्न किया।

४ और हमने तुम्हारी निद्रा को विश्राम का साधन बनाया।

५ और रात्रि की यवनिका बनायी।

६ और दिन उपार्जन के लिए बनाया।

७८.६–११

५६ ऊँट आदि सृष्टि-चमत्कार

१ क्या वे ऊँटों की ओर नहीं देखते कि वे कैसे बनाये गये !

२ और आकाश की ओर कि वह कैसे ऊँचा किया गया

३ और पर्वत की ओर कि वे कैसे गाड़े गये !

४ और भूमि की ओर कि वह कैसे बिछायी गयी !

८८.१७–२०

५७ गूढ़ में मस्तिष्क न लड़ाओ

१ हमने निकटतम आकाश को तारिकाओं से विभूषित किया

२ और उसे प्रत्येक विद्रोही शैतान से सुरक्षित किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ ला यस्सम्मअ़ून इल (अ्)ल् मलइ (अ्)ल् अअ़्ला (य्) व युक़्ज़फ़ून मिन् कुल्लि जानिबिन् ०[रुकूअ]

४ दुहूर(न्) (अ्)ँव्व लहुम् अ़जाबु (न्अ्)-ँव्वासिबुन् ०[ला]

५ इल्ला मन् ख़तिफ़ (अ्)ल् ख़त्फ़त फ़ अत्बअ़हु शिहाबुन् साक़िबुन् ०

३७.६–१०

58. १ व फ़ि(अ्)ल् अर्ज़ि क़ितअ़ु(न्)म्मुत जावि-रातु(न्) ँव्व जन्नातु(न्)म्मिन् अअ़्नाबि(न्) ँव्व ज़रअ़ु(न्) ँव्व नख़ीलुन् स़िन्वानु(न्) ँव्व ग़ैरु स़िन्वानि(न्) ँय्युस्क़ा(य्) बि माअि(न्)-ँव्वाह़िदिन् [क़िफ़] ँव्व नुफ़द़्द़िलु बअ़्द़हा अ़ला(य्) बअ़्द़िन् फ़ि(य्) (अ्)ल् अकुलि [तोय] इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति (न्)लिल क़ौमि (न्) ँय्यअ़्क़िलून०

१३.४

59. १ व मिन् आयातिही अन् ख़लक़ कु(म्)म्मिन् तुराबिन् सुम्म इज़ा अन्तुम् बशरुन् तन्तशिरून०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ वे उस उच्च सभा की ओर कान नहीं लगा सकते; और उन्हें
खदेड़ने के लिए सभी ओर से उन पर अंगारे फेंके जाते हैं।
४ और उनके लिए नित्य दण्ड है।
५ किन्तु जो झप से उचक ले, उसके पीछे, एक वेधक ज्वाला
लगती है।

३७.६–१०

१३ ईश्वरीय संकेत

५८ एक जल से विविध फल

१ भूमि में पास-पास कई खण्ड हैं, द्राक्ष के उद्यान हैं, कृषि है तथा खजूर के वृक्ष हैं, जिनमें एक की जड़ दूसरे से मिली हुई है, और कुछ बिनमिली अकेली ही हैं। एक ही पानी सबको दिया जाता है। और हम फलों में किसीको किसीसे बढ़ा देते हैं। निस्सन्देह इसमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो बुद्धि रखते हैं।

१३.४

५९ ईश्वरीय चिह्न

१ उसके चिह्नों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर अब तुम मनुष्य हो कि भूमि पर सब ओर फैल पड़े हो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व मिन् आयातिही अन् ख़लक़ लकु(म्)म्मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाज (न् अ्)लिल तस्कुनू-(अ्)इलैहा व जअ़ल बैन कु(म्)म्मवद्दत-(न्)व्व रह्मतन् तोय इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति (न्)लिल क़ौमि(न्)य्यतफ़क्करून ०

३ व मिन् आयातिही ख़ल्क़ु(अ्ल्) स्समावाति व(अ्)ल् अर्द्रि व (अ्) ख़्तिलाफ़ु अल्सिनतिकुम् व अल्वानिकुम् तोय इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति(न्)लिलल् आ़लिमीन ०

४ व मिन् आयातिही मनामुकुम् बि(अ्)ल्लैलि व(अ्ल्) न्नहारि व (अ)बितग़ा(व)अु कु(म्)म्मिन् फ़द्लिही तोय इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति(न्)लिल क़ौमि (न्)य्यसमअ़ुन०

५ व मिन् आयातिही युरीकुमु(अ्)ल् बर्क़ ख़ौफ़ (न्)व्व तमअ़(न्अ्)व्व युनज़्ज़िलु मिन-(अ्ल्)स्समाअि माअन् फ़ युह्यी बिहि(अ्)ल् अर्द्र बअ़्द मौतिहा तोय इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति(न्)लिल क़ौमि(न्) य्यअ़्क़िलून ०

६ व मिन् आयातिही अन् तक़ूम(अ्ल्) स्समाअु व(अ्)ल् अर्द्रु बि अम्रिही तोय सुम्म इज़ा दआ़कुम् दअ़्वत(न्) क़स्ली म्मिन (अ्) ल् अर्द्रि क़स्ली इज़ा अन्तुम् तख़्रुजून ०

३०.२०–२५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ और उसके चिह्नों में से यह है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति में से युगल बनाये कि उनके पास तुम्हें विश्राम मिले। और तुम्हारे बीच प्रीति और करुणा निर्माण की। निस्सन्देह इसमें चिन्तन करनेवालों के लिए संकेत हैं।

३ और उसके चिह्नों में से है आकाशों और भूमि की रचना और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का भिन्न-भिन्न होना। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए संकेत हैं।

४ और उसके चिह्नों में से है तुम्हारा रात में और दिन में सोना और तुम्हारा उसके कृपा-वैभव को ढूँढ़ना। निस्सन्देह इसमें संकेत हैं उनके लिए, जो सुनते हैं।

५ और उसके चिह्नों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखलाता है, (जिससे) डर भी (होता है) और आशा भी। वह आकाश से पानी उतारता है, फिर उस पानी से भूमि को उसके मरने के पश्चात् जीवित करता है। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए संकेत हैं।

६ और उसके चिह्नों में से यह है कि उसकी आज्ञा से भूमि एवं आकाश स्थिर है। फिर वह जब तुम्हें पुकारकर जमीन में से बुलायेगा, तो तुम उसी समय निकल पड़ोगे।

३०.२०–२५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

60. १ अ लम् तर इला (य्) रब्बिक कैफ़ मद्द (अल्) ज़्ज़िल्लज व लौ शाअ ल जअलहू साकिनन् ज सुम्म जअल्न (अश् ल्) श्शम्स अलैहि दलीलन् Oला

२ सुम्म क़बद्नाहु इलैना क़ब्ज़ (न् अ्) य्यसीरन् O

२५.४५–४६

61. १ अ लम् तर अन्न (ल्) ल्लाह अन्ज़ल मिन् (अल्) स्समाअि माअन् ज फ़ अख़्रज्ना बिही समराति (न्) म्मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा तोय व मिन (अ्) ल् जिबालि जुदद (न्) म्बीद्व (न्)-व्व हुमरु (न्) म्मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूदुन् O

२ व मिन (अल्) न्नासि व (अल्) द्दवाब्बि व (अ्) ल् अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालिक तोय इन्नमा यख़्श (य् अ्) ल्लाह मिन् अिबादिहि (अ्) ल् अुलमा (व्) अु (अ्) तोय इन्न-(अ्) ल्लाह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूरुन् O

३५.२७–२८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६० ईश्वर छाया करनेवाला

१ क्या तूने अपने प्रभु की ओर दृष्टि नहीं की कि उसने छाँह कैसे फैला रखी है, और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर रखता। फिर हमने सूर्य को उसका पथ-प्रदर्शक बनाया।

२ फिर हमने उस छाँह को अपनी ओर शनैः शनैः समेट लिया।

२५.४५-४६

६१ ईश्वर नाना रंग निर्माता--लोहित-शुक्ल-कृष्णवर्णाः

१ क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाश से पानी उतारा और फिर उससे हमने विविध रंग के फल उपजाये, और पर्वतों में धारियाँ हैं श्वेत श्याम रतनार।

२ और इसी प्रकार मनुष्यों में, वन्य पशुओं में और चौपायों में भी कई प्रकार के रंग हैं। ईश्वर से उसके दासों में वही डरते हैं, जो जानते हैं। निस्सन्देह ईश्वर सर्वशक्तिमान् एवं क्षमावान् है।

३५.२७-२८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

62. १ क़ु(ल्)लिल मनि(अ्)ल् अरदु व मन् फ़ी-
हा इन् कुन्तुम् तअ्लमून O
२ सयक़ूलून लिल्लाहि^तोय क़ुल् अ फ़ ला
तजक्करून O
३ क़ुल् म(न्)र्रब्बु (अ्ल्) स्समावाति (अ्ल्)-
स्सब्अि व रब्बु(अ्)ल् अर्शि(अ्) ल् अज़ीमिO
४ सयक़ूलून लिल्लाहि ^तोय क़ुल् अ फ़ ला तत्तक़ून O
५ क़ुल् म(न्)म् बि यदिहि मलकूतु कुल्लि शय्अि-
(न्)ँव्व हुव युजीरु व ला युजारु अलैहि
इन कुन्तुम् तअ्लमून O
६ सयक़ूलून लिल्लाहि ^तोय क़ुल फ़ अन्ना (य्)
तुस्हरून O

२३.८४-८९

63. १ व मा क़दरु (व्) (अ् अ्) ल्लाह हक़्क़
क़द्रिहि ^क़रवली व(अ्)ल् अर्दु जमीअन्(अ्)
क़ब्ज़तुहु यौम (अ्) ल् क़ियामति व(अ्ल्)-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७ सर्वशक्ति

१४ सर्वशक्तिमान्

६२ सर्वाधिपति

१ कह : किसने रची है भूमि और जो-जो उसमें है, यदि तुम जानते हो ?

२ वे अवश्य कहेंगे कि ईश्वर ने, तो कह : फिर तुम सोचते नहीं ?

३ कह : कौन है सातों आकाशों का प्रभु और महान् सिंहासन का स्वामी ?

४ वे अवश्य कहेंगे : सब ईश्वर का है। कह : फिर तुम क्यों नहीं डरते ?

५ कह : किसके हाथों में प्रत्येक वस्तु की अधिसत्ता है, और कौन संरक्षण देता है और किसके विरोध में संरक्षण नहीं दिया जा सकता, यदि तुम जानते हो ?

६ वे अवश्य कहेंगे कि यह सब ईश्वर का है, तो कह : फिर तुम पर क्या जादू आ पड़ता है ?

२३.८४–८९

६३ प्रलयकारी

१ और वे नहीं समझते ईश्वर को, जितना कि वह है। पुनरुत्थान के दिन सारी भूमि उसकी एक मुट्ठी में होगी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्समावातु मतवीयातु (न्) म्बि यमीनिह्री तोय
सुब्हानहु व तआला(य्) अम्मा युश्रिकून ०
३९.६७

64. १ सब्बिहि(अ्)स्म रब्बिक(अ्)ल् अअ्ल(य्)० ला
२ (अ्)ल्लजी ख़लक़ फ़ सव्वा (य्) ० स्वातला
३ व(अ्)ल्लजी क़द्दर फ़ हदा(य्) ० स्वातला
४ व(अ्)ल्लजी अख़्रज(अ्)ल् मर्आ(य्)० स्वातला
५ फ़ जअलहु ग़ुसाअन् अह्वा(य्) ० तोय
८७.१–५

65. १ अव लम् यर(अ्)ल् इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मि(न्) न्नुत्फ़तिन् फ़ इजा हुव ख़सीमु(न्) म्मुबीनुन् ०
२ व ज़रब लना मसल(न्) व्व नसिय ख़ल्क़हु तोय क़ाल म(न्) य्युह्यि(अ्)ल् अिज़ाम व हिय रमीमुन् ०
३ क़ुल् युह्यीह(अ्अ्) ल्लजी अन्शअहा अव्वल मर्रतिन् तोय व हुव बि कुल्लि ख़ल्क़िन् अलीमुनि ० ला
४ (अ्)ल्लजी जअल ल कु(म्) म्मिन (अ्ल्) श्शजरि(अ्)ल् अख़्ज़रि नारन्(अ्) फ़ इजा अन्तु(म्) म्मिन्हु तूक़िदून ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटा होगा। वह पवित्र, निराला है एवं सर्वोच्च है उससे, जिसे वे भागीदार ठहराते हैं।

३९.६७

६४ तज्जलान्

१ श्रेष्ठतम प्रभु के नाम का जप कर, जयजयकार कर।
२ जिसने रचा, फिर सँवारा।
३ जिसने परिमाण बनाया, फिर मार्ग दिखलाया
४ तथा जिसने चारा उगाया
५ और फिर उसे काला कूड़ा कर डाला।

८७.१–५

६५ पुनरुत्थान-समर्थ

१ मनुष्य ने सोचा नहीं कि हमने उसे एक बीज बिन्दु से निर्माण किया, सो एकाएक वह स्पष्ट झगड़ालू हो गया
२ और हमारे विषय में अदभुत बातें बोलने लगा और अपनी उत्पत्ति भूल गया। कहता है कि कौन जीवित करेगा हड्डियों को, जो गल गयी हों ?
३ कह: उनको वह जीवित करेगा, जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया और वह सब प्रकार उत्पन्न करना जानता है।
४ जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से अग्नि का निर्माण किया, फिर अब तुम उससे आग सुलगाते हो ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ अव लैस(अ्)ल्लज़ी ख़लक़(अ्ल्) स्समावाति
व(अ्)ल् अर्द्ध बि क़ादिरिन् अ़ला (य्)
अ(न्) ँय्यख़्लुक़ मिस्लहुम् तोय़ बला (य्)क़
व हुव (अ्) ल् ख़ल्लाक़ु(अ्)ल् अ़लीमु ०
६ इन्न मा अम्रुहू इज़ा अराद शय्अन् अ(न्)-
ँय्यक़ूल लहू कुन् फ़ यकूनु ०
७ फ़ सुब्हान(अ्) ल्लज़ी बियदिहीं मलकूतु
कुल्लि शय्इ(न्)ँव्व इलैहि तुर्जऊन ०
३६.७७–८३

66. १ लिल्ला हि मुल्कु(अ्ल्)स्समावाति व(अ्)ल्
अर्दि तोय़ यख़्लुक़ु मा यशा·अु तोय़ यहबु लिम-
(न्)ँय्यशा·अु इनास(न्) (अ्)ँव्व यहबु लिम-
(न्)ँय्यशा·अु(अ्ल्) ज़्ज़ुकूर ०ला
२ औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक्रान(न्अ्)ँव्व इनासन् ज
व यज्अ़लु म(न्)ँय्यशा·अु अ़क़ीमन् तोय़
इन्नहू अ़लीमुन् क़दीरुन् ० ४२.४९–५०

67. १ क़ुलि(अ्ल्)ल्लाहुम्म मालिक(अ्)ल् मुल्कि
तु(व्)·अ्ति(य्) (अ्) ल् मुल्क मन् तशा·अु
व तन्ज़िअु (अ्)ल् मुल्क मिम्मन् तशा·अु ज
व तुइज़्ज़ु मन् तशा·अु व तुज़िल्लु मन् तशा·अु
बि यदिक(अ्)ल् ख़ैरु तोय़ इन्नक अ़ला(य्)कुल्लि
शय्इन् क़दीरुन् ० ३.२६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ क्या वह, जिसने आकाशों एवं भूमि का निर्माण किया, इस बात में सक्षम नहीं कि उन जैसों को उत्पन्न करे ? क्यों नहीं ? और वही है सृष्टिकर्ता सर्वज्ञ ।

६ उसकी आज्ञा यही है कि जब किसी वस्तु का संकल्प करता है, तो उससे कहता है : 'हो जाओ', सो वह हो जाती है ।

७ तो पावन है वह, जिसके हाथ में सर्व वस्तु की अधिसत्ता है और उसकी ओर तुम सबको लौटकर जाना है ।

३६.७७-८३

१५ इच्छा-समर्थ—ईश्वरीय इच्छा सार्वभौम

६६ कन्या-पुत्रदाता

१ ईश्वर की अधिसत्ता है, आकाशों में और भूमि में । जो चाहता है सो उत्पन्न करता है, जिसे चाहता है पुत्री देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है ।

२ या दोनों देता है, पुत्र और पुत्रियाँ; और जिसे चाहता है, निस्सन्तान रख देता है । निस्सन्देह वह ज्ञाता है, समर्थ है ।

४२.४९-५०

६७ 'कल्याण तेरे हाथ'—ईश-स्तवन

१ कह : हे ईश्वर ! अधिसत्ता के स्वामी, तू जिसे चाहे सत्ता दे और जिससे चाहे सत्ता छीन ले और जिसे चाहे प्रतिष्ठा दे और जिसे चाहे अप्रतिष्ठा दे । सर्व कल्याण तेरे हाथ में है । निस्सन्देह तू सर्व-कर्म-समर्थ है ।

३.२६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

68. १ व रब्बुक यख़्लुक़ु मा यशा·अु व यख़्तारु तोय मा कान लहुमु(अ्)ल् ख़ियरतु तोय सुब्हान(अ्)-ल्लाहि व तआला(य्)अम्मा युश्‌रिकून ○

२८.६८

69. १ ···क़ुल् इन्न(अ्)ल् फ़ज़्ल बि यदि(अ्)ल्लाहि ज
यु(व्)·अ्तीहि म (न्)ँय्यशा·अुतोय व (अ्)-ल्लाहु वासिअुन् अलीमुन् ○ ज

२ यख़्तस्सु बिरह्‌मतिही म (न्)ँय्यशा·अु व (अ्)ल्लाहु ज़ु (व्)(अ्)ल् फ़ज़्लि(अ्) ल् अज़ीमि ○

३.७३-७४

70. १ व मा कान लि नफ़्सिन् अन् तु(व्)·अ्मिन इल्ला बि इज़्नि(अ्) ल्लाहि तोय व यज्‌अलु-(अ्ल्)र्‌रिज्स अल(य्)(अ्) ल् लज़ीन ला यअ्क़िलून ○

१०.१००

71. १ फ़ म(न्)ँय्युरिदि (अ्) ल्लाहु अ (न्)-ँय्यह्‌दियहु यश्‌रह् सद्‌रहु लिल् इस्लामि ज व म(न्)ँय्युरिद् अ्(न्)ँय्युज़िल्लहु यज्‌अल् सद्रहु ज़य्यिक़न् (अ्) हरजन् (अ्) क अन्न मा यस्सअ्अदु फ़ि(अ्ल्)स्समा·अि तोय क ज़ालिक यज्‌अलु(अ्)ल्लाहु (अ्ल्) र्‌रिज्स अल (य्)-ल्लज़ीन ला यु(व्)·अ्मिनून ○

६.१२५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६८ ईश्वरभिन्न जीव-स्वातन्त्र्य नहीं

१ तेरा प्रभु जिसे चाहता है उत्पन्न करता है और चुन लेता है। उन (जीवों) को लेशमात्र अधिकार नहीं। ईश्वर पवित्र है तथा उन (लोगों) की वि-भक्ति से ऊँचा है।

२८.६८

६९ यमेव एष वृणुते तेन लभ्यः

१ ......कह : वैभव निश्चय ही ईश्वर के हाथ में है, जिसे चाहे दे। ईश्वर सर्वव्यापक है, सर्वज्ञ है।

२ जिसे चाहता है, अपनी कृपा के लिए चुन लेता है। ईश्वर महान् वैभवशाली है।

३.७३-७४

७० ईश्वर की अनुज्ञा बिना श्रद्धा नहीं

१ किसी व्यक्ति के लिए संभव नहीं कि ईश्वर की अनुज्ञा के बिना श्रद्धा रखे और वह (अश्रद्धा का) अशुचित्व देता है उन लोगों को, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

१०.१००

७१ कौषीतकी उपनिषद्--प्रभु-कृपा की महत्ता

१ जिसे ईश्वर ऋजुमार्ग दिखाना चाहता है, उसके हृदय को खोल देता है अपनी शरणता के लिए और जिसे मार्ग-भ्रष्ट रखना चाहता है, उसके लिए उसके हृदय को बहुत ही संकुचित कर देता है, मानो वह मनुष्य बलपूर्वक आकाश पर चढ़ता है। इस प्रकार ईश्वर श्रद्धा न रखनेवालों को अपयश देता है। ६.१२५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

72. १ अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवज़ अल् हय्यु (अ्)-
ल् क़य्यूमुज़ ला तअ्ख़ुज़ुहू सिनतु (न्) व्व
ला नौमुन्तोय़ लहू मा फ़ि (अल्) स्समावाति
व मा फ़ि (अ्) ल् अर्द़ितोय़ मन् ज (अ् अ्) ल्लज़ी
यश्फ़अ़ु अ़िन्दहू इल्ला बिइज़्निही तोय़ यअ़्लमु
मा बैन ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ज़ व ला
युहीतून बिशय्अि (न्) म्मिन् अ़िल्मिही इल्ला
बि मा शा·अज़ वसि·अ कुर्सीयुहु (अल्) स्समावाति
व (अ्) ल् अर्द़ज़ व ला य (व्) ·ऊदुहू ह़िफ़्ज़ुहुमा
व हुव (अ्) ल् ·अलीयु (अ्) ल् अ़ज़ीमु O

२.२५५

73. १ क़ु (ल्) ल्लौ कान (अ्) ल् बह़्रु मिदाद (न् अ्)-
लि्ल कलिमाति रब्बी ल नफ़िद (अ्) ल्
बह़्रु क़ब्ल अन् तन्फ़द कलिमातु रब्बी व
लौ जि·अ्ना बिमिस्लिही मददन् (अ्) O

१८.१९०

74. १ व लौ अन्न मा फ़ि (अ्) ल् अर्द़ि मिन् शजरतिन्
अक़्लामु (न्) व्व (अ्) ल् बह़्रु यमुद्दुहू
मि (न्) म्बअ़्दिही सब्अ़तु अब्हुरि (न्) म्मा
नफ़िदत् कलिमातु (अ्) ल्लाहि तोय़ इन्न (अ्)
ल्लाह अ़ज़ीज़ुन् ह़कीमुन् O

३१.२७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१६ अवर्णनीय–महान्

७२ ईश्वरीय सिंहासन

१ ईश्वर ! उसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नहीं । शाश्वत, स्थिर, उसे न ऊँघ आती है न नींद, उसीका है जो कुछ आकाशों में और भूमि में है। उसके पास उसकी अनुज्ञा के बिना कौन सिफारिश कर सकता है ? वह जानता है, जो कुछ उन लोगों के आगे है और जो कुछ उन लोगों के पीछे है और वे लोग उसके ज्ञान में से किसी अंश को अपनी परिधि में नहीं ला सकते, सिवा इसके कि जो वह चाहे । उसके सिंहासन ने आकाशों एवं भूमि को व्याप्त कर लिया है और उन दोनों की सार-सँभाल उसको थकाती नहीं । और वह श्रेष्ठतम है, महत्तम है।

२.२५५

७३ ईश्वर के वर्णन को स्याही अपर्याप्त

१ कह : मेरे प्रभु की बातें लिखने के लिए यदि समुद्र स्याही हो, तो मेरे प्रभु के गुण का वर्णन समाप्त होने के पूर्व समुद्र समाप्त हो जाय, यद्यपि हम वैसे ही दूसरे समुद्र भी उसकी सहायता के लिए ले आयें ।

१८.१०९

७४ असितगिरिसमं स्यात्······

१ भूमि में जितने भी वृक्ष हैं, यदि वे लेखनी बन जायँ तथा समुद्र (स्याही हो जायँ), उसके अतिरिक्त सात समुद्र और साथ हो जायँ, तो भी ईश्वर की बातों का वर्णन पूरा नहीं होगा। निस्सन्देह परमात्मा सर्वजित्, सर्वविद् है।

३१.२७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

75. १ ला यस्तवी असहाबु (अल्) न्नारि व असहाबु (अ) ल्जन्नति तोय असहाबु (अ) ल् जन्नति हुमु (अ) ल् फ़ाअिज़ून ०

२ लौ अन्ज़ल्ना हाज (अ) ल् क़ुर्आन अला (य्) जबलि (न्) ल्ल रऐतहु खाशिअ (न्)-म्मुतसद्दिअ (न्अ) म्मिन् खश्यति (अ)-ल्लाहि तोय व तिल्क (अ) ल् अम्सालु नद्रिबुहा लि (ल्) न्नासि लअल्ल हुम् यतफ़क्करून ०

३ हुव (अ) ल्लाहु (अ) ल्लजी ला इलाह इल्ला हुव ज अालिमु (अ) ल् ग़ैबि व (अ) श्शहादति ज हुव र्रह्मानु (अल्) र्रहीमु ०

४ हुव (अ) ल्लाहु (अ) ल्लजी ला इलाह इल्ला हुव ज अल् मलिकु (अ) ल् क़ुद्दूसु (अल्)-स्सलामु (अ) ल् मुअ्मिनु (अ) ल् मुहैमिनु (अ) ल् अज़ीज़ु (अ) ल् जब्बारु (अ) ल् मुतकब्बिरु तोय सुब्हान (अ) ल्लाहि अम्मा युश्रिकून ०

५ हुव (अ) ल्लाहु (अ) ल् खालिक़ु (अ) ल् बारि-(य्) अु (अ) ल् मुसव्विरु लहु (अ) ल् अस्मा अु-(अ) ल्हुस्ना (य्) तोय युसब्बिहु लहू मा फ़ि (अल्)-स्समावाति व (अ) ल् अर्द्रि ज व हुव (अ)-ल् अज़ीज़ु (अ) ल् हकीमु ०

५९.२०–२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८ नाम-स्मरण

१७ ईश्वर का नाम

७५ ईश्वर के लिए सुन्दर नाम

१ नरक के भागी और स्वर्ग के भागी समान नहीं हो सकते। जो स्वर्ग-प्राप्ति के अधिकारी हैं, वे विजयी हैं।

२ यदि हम इस कुरान को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तू देखता कि वह ईश्वर के डर से दब जाता, फट जाता। हम ये दृष्टान्त लोगों के लिए उपस्थित करते हैं कि वे सोचें।

३ वही ईश्वर है, जिसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नहीं। अव्यक्त-व्यक्त का ज्ञाता, वह बहुत कृपालु और अतीव करुणावान् है।

४ वही ईश्वर है, जिसके अतिरिक्त अन्य कोई नियन्ता नहीं। वह सर्वसत्ताधीश है, पवित्रतम है। शरण्य, शान्तिदाता, संरक्षक, सर्वजित्, बलवान् एवं महत्तम है। ईश्वर पवित्र है, निराला है उससे, जिसे ये भागीदार ठहराते हैं।

५ वही ईश्वर है, कर्ता, भर्ता, स्वरूपदाता, सारे सुन्दर नाम उसीके लिए हैं। आकाशों में और भूमि में जो हैं, वे उसका जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और वही सर्वजित्, सर्वविद् है।

५९.२०–२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

76. १ व वाअ़द्ना मूसा (य्) सलासीन लैलत (न्) ँव्व अत्मम्नाहा बिअ़श्रिन् फ़ तम्म मीक़ातु रब्बिही अर्बअ़ीन लैलतन् ज व क़ाल मूसा (य्) लि अख़ीहि हारून (अ) ख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ़् सबील (अ्) ल् मुफ़्सिदीन ०

२ व लम्मा जा'अ मूसा (य्) लि मीक़ातिना व कल्लमहू रब्बुहू ला क़ाल रब्बि अरिनी' अन्ज़ुर् इलैक तोय क़ाल लन् तरानी व लाकिनि-(अ्) न्ज़ुर् इल (य्) (अ्) ल् जबलि फ़ इनि-(अ्) स्तक़र्र मकानहू फ़ सौफ़ तरानी ज फ़ लम्मा तजल्ला (य्) रब्बुहू लिल् जबलि जअ़लहू दक्क (न्अ्) ँव्व ख़र्र मूसा (य्) सअ़िक़न् (अ्) ज फ़ लम्मा अफ़ाक़ क़ाल सुब्हानक तुब्तु इलैक व अना अव्वलु (अ्) ल् मु'अ्मिनीन ०

३ क़ाल या मूसा (य्) इन्नि (य्) (अ्) स्तफ़ैतुक अ़ल (य्) (अ्ल्) न्नासि बि रिसालाती व बि कलामी जस्ली फ़ख़ुज़् मा आतैतुक व कु (न्)-म् मिन (अ्ल्) श्शाकिरीन ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

९ साक्षात्कार

१८ साक्षात्कार

७६ मूसा को साक्षात्कार--प्रभु बोले

१ हमने मूसा को तीस रात्रियों का अभिवचन दिया तथा उनमें और दस बढ़ाकर पूरा किया । फिर जब उसके प्रभु की चालीस रात्रियाँ पूरी हुईं और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि तू समाज में मेरा स्थान ग्रहण कर, कार्य को सँवारता रह और उपद्रवियों के मार्ग का अनुसरण न कर ।

२ और जब मूसा हमारे अभिवचन की अवधि पर पहुँचा, तो प्रभु ने उससे बात की । तब मूसा बोला : हे मेरे प्रभु, तू मुझे अपना दर्शन दे कि मैं तुझे देखूँ । कहा : तू मुझे कदापि नहीं देख सकेगा, किन्तु तू पर्वत की ओर देख, यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा, तो अवश्य ही तू मुझे देख सकेगा । फिर जब उसके प्रभु ने पर्वत पर अपना तेज प्रकट किया, तो उस (तेज) ने पर्वत को चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा । फिर जब होश में आया, तो बोला : पवित्रतम है तू, तेरा जयजयकार है ! मैं पश्चात्तापदग्ध होकर तेरी ओर आया हूँ एवं मैं सर्वप्रथम श्रद्धालु हूँ ।

३ कहा : हे मूसा ! अपने सन्देशों के साथ और अपने वार्तालाप के साथ मैंने तुझे लोगों पर विशेषता प्रदान की । सो जो कुछ मैंने तुझे दिया, ले ले और कृतज्ञों में से हो जा ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ व कतब्ना लहू फ़ि(अ्)ल् अल्वाहि मिन् कुल्लि शय्‌इ(न्) म्मौइज़त(न्) व्व तफ़्सील(न्)-ल्लि कुल्लि शय्इन् ज. फ़ ख़ुज़्हा बि क़ुव्वति-(न्) व्वअ्मुर् क़ौमक यअ्ख़ुज़ू (अ्) बि अह्सनिहा तोय.........

७.१४२–१४५

77. १ व हल् अताक ह़दीसु मूसा(य्) ०म.

२ इज् रआ नारन् फ़ क़ाल लि अह्लिहि(अ्)म्-कुसू(अ्)इन्नी आनस्तु नार(न्) ल्लअ़ल्ली आतीकु(म्)म्मिन्हा बि क़बसिन् औ अजिदु अ़ल(य्) (अ्ल्)न्नारि हुदन्(य्) ०

३ फ़ लम्मा अताहा नूदिय या मूसा(य्) ०

४ इन्नी अना रब्बुक फ़ख़्लअ़् नअ़्लैक ज. इन्नक बि(अ्)ल् वादि(अ्)ल् मुक़द्दसि तुवन्(य्) ०तोय

५ व अन(अ्) (अ्)ख़्तर्तुक फ़(अ्)स्तमिअ़् लि मा यूहा(य्) ०

६ इन्न नी अन(अ्) (अ्)ल्लाहु ला इलाह इल्ला अना फ़(अ्)अ़्बुद्नी ला व अक़िमि(अ्ल्)-स्सलात लि जिक्री ०

२०.९–१४

78. १ व(अ्ल्)न्नज्मि इजा हवा(य्) ०ला

२ मा ज़ल्ल साह़िबुकुम् व मा ग़वा (य्) ०ज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ हमने मूसा को पाटियों पर प्रत्येक प्रकार का उपदेश और प्रत्येक वस्तु का विस्तृत वर्णन लिख दिया। कहा : उनको दृढ़ता से थाम ले और अपने समाज को आज्ञा दे कि उसके उत्तम सार को ग्रहण कर उस पर दृढ़ रहे......।

७.१४२-१४५

७७ मूसा को साक्षात्कार--अग्नि-ज्योति-दर्शन

१ क्या तेरे पास मूसा की कथा पहुँची ?

२ जब उसने एक आग देखी, तो अपने घरवालों से कहा : ठहरो, निश्चय ही मैंने एक आग देखी है, कदाचित् मैं उसमें से तुम्हारे पास एक अंगारा ले आऊँ या आग के पास पहुँचकर रास्ते का पता पाऊँ।

३ फिर वह जब उसके पास पहुँचा, तो आवाज दी गयी : "मूसा !

४ निस्सन्देह मैं तेरा प्रभु हूँ, सो अपनी जूतियाँ उतार डाल। तू पुण्यक्षेत्र तवा में है।

५ और मैंने तुझे निर्वाचित कर लिया है, सो जो कुछ प्रज्ञान दिया जाता है, वह सुन।

६ निस्सन्देह मैं जो हूँ, परमात्मा हूँ। मेरे अतिरिक्त अन्य कोई भजनीय नहीं। सो मेरी भक्ति कर तथा मेरे स्मरण के लिए नित्य-नियमित प्रार्थना कर।"

२०.९-१४

७८ महम्मद को साक्षात्कार

१ शपथ है तारे की, जब कि वह नीचे झुके।

२ तुम्हारा यह साथी न बहका, न मार्गच्युत हुआ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व मा यन्तिक़ु अ़नि(अ्)ल् हवा (य्) ०तोय़
४ इन् हुव इल्ला वह्यु(न्)ँय्यूहा(य्)०ला
५ अ़ल्लमहू शदीदु(अ)ल् क़ुवा(य्)०ला
६ ज़ू मिर्‌रतिन् तोय़ फ़(अ्)स्तवा(य्)०ला
७ व हुव बि(अ्)ल् अ़ुफ़ुक़ि-
(अ्)ल् अअ्‌ला(य्) ०तोय़
८ सुम्म दना फ़ तदल्ला(य्)०ला
९ फ़ कान क़ाब क़ौसैनि औ अद्‌ना(य्) ०ज़
१० फ़ औहा इला(य्)अ़ब्दिही मा औहा(य्)०तोय़
११ मा कज़ब(अ्)ल् फ़ु(व्)आदु मा रआ(य्)०
१२ अ फ़ तुमारूनहू अ़ला(य्)मा यरा(य्) ०
१३ व लक़द् रआहु नज़्लतन् अुख़्रा(य्) ०ला
१४ अ़िन्द सिद्रति(अ्)ल् मुन्तहा(य्) ०
१५ अ़िन्दहा जन्नतु(अ्)ल् मअ्‌वा(य्) ०
१६ इज़् यग़्शा(य्) (अ्ल्)स्सिद्रत मा यग़्शा(य्)०
१७ मा ज़ाग़(अ्)ल् बसरु व मा तग़ा (य्)०
१८ लक़द् रआ(य्)मिन् आयाति रब्बिहि-
(अ्)ल् कुबरा(य्) ० ५३.१-१८

79. १ व मा कान लि बशरिन् अ(न्)ँय्युकल्लिमहु
(अ्)ल्लाहु इल्ला वह्यन्(अ्) औ मि(न्)-
ँव्वरा(य्)अि हिजाबिन् औ युर्‌सिल रसूलन्-
(अ्)फ़ यूहिय बि इज़्निही मा यशाअु तोय़
इन्नहू अ़लीमुन् हकीमुन् ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ और न वह वासना से बोलता है।
४ यह तो ईश्वरीय ज्ञान है, जो भेजा जाता है।
५ यह उस बलशाली शक्तिमान् ने उसको सिखाया है।
६ वह शक्तिमान् पूर्ण रूप से प्रकट हुआ
७ और वह आकाश के उच्च क्षितिज पर था।
८ फिर वह समीप हुआ, फिर और उतर आया।
९ फिर दो धनुष का अन्तर रह गया अथवा उससे भी निकट आया,
१० फिर उसने अपने इस दास की ओर ईश्वरीय ज्ञान भेजा। जो भेजा, सो ईश्वरीय ज्ञान ही था।
११ जो देखा, उसे हृदय ने मिथ्या नहीं (देखा)।
१२ तो उसने जो देखा, उस पर अब तुम उससे झगड़ते हो ?
१३ और उसने उसे और भी एक बार उतरते हुए देखा है।
१४ अन्तिम सीमावर्ती बदरी-वृक्ष के समीप,
१५ —उसके पास सुख से रहने का स्वर्ग है—
१६ जब वह बदरी-वृक्ष तेजोवेष्टित था, सतत तेजोवेष्टित था।
१७ उस समय दृष्टि न तो हटी और न उसने अधिक धृष्टता की,
१८ निश्चय ही उसने अपने प्रभु के महान् संकेत देखे।

५३.१–१८

७९ त्रिविध साक्षात्कार

१ किसी मानव पर यह अनुग्रह नहीं होता कि ईश्वर उससे वार्तालाप करे, सिवा कि (१) प्रज्ञान द्वारा (२) आवरण की ओट से या (३) प्रेषित भेजकर जो कि पहुँचाये, परमात्मा की आज्ञा से, वह सन्देश जो परमात्मा चाहे। निश्चय ही वह सर्वोच्च, सर्वविद् है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व कज़ालिक औहैना इलैक रूह(न्)म्मिन् अम्रिना ^तोय^ मा कुन्त तद्री म(अ्) (अ्)ल् किताबु व ल(अ्) (अ्)ल् ईमानु व लाकिन् जअ़ल्नाहु नूर(नअ्)न्नह्दी बिही म(न्)न्नशाअु मिन् अ़िबादिना^तोय^ व इन्नक ल तह्दी इला(य्) स़िराति(न्)म्मुस्तक़ीमिन् o^ला^
३ स़िराति (अ्)ल्लाहि (अ्)ल्लज़ी लहु मा फ़ि (अल्) स्समावाति व मा फ़ि(अ्)ल् अर्द़ि ^तोय^ अला इल(य्) (अ्)ल्लाहि तस़ीरु (अ्)ल् अुमूरु o ४२.५१–५३

80. १ इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलति(अ्)-ल् क़द्रि o^जस्वली^
२ व मा अद्राक मा लैलतु(अ्) ल्क़द्रि o^तोय^
३ लैलतु(अ्)ल् क़द्रि o^ला^ ख़ैरु(न्)म्मिन् अल्फ़ि शह्रिन् o^तोय^
४ तनज़्ज़लु(अ्)ल् मलाअिकतु व (अ्) रूहु फ़ीहा बि इज़्नि रब्बिहिम् ^ज्^ मिन् कुल्लि अम्रिन्o^ला^
५ सलामुन् ^किफ़्^ हिय हत्ता(य्) मत्लअि (अ्)ल् फ़ज्रि o^ऐन्^ ९७.१–५

81. १ फ़तआल(य्) (अ्) ल्लाहु (अ्) ल् मलिकु-(अ्)ल् हक़्क़ु ^ज्^ व ला तअ़्जल बि(अ्)ल् क़ुर्आनि मिन् क़ब्लि अ(न्) य्युक़्द़ा(य्) इलैक वह्युहु^ज्^ व क़ु(ल्) र्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मन् (अ्)o २०.११४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अपनी आज्ञा से प्रज्ञान भेजा। तू नहीं जानता था कि ग्रन्थ क्या है और श्रद्धा क्या है, किन्तु हमने उसे एक ऐसा प्रकाश बनाया, जिसके द्वारा अपने दासों में से हम जिसे चाहते हैं, मार्ग दिखाते हैं और निःसंशय तू लोगों को सीधा मार्ग दिखलाता है।

३ उस ईश्वर का मार्ग जिसके लिए है, जो कुछ कि आकाशों में है और जो कुछ भूमि में है। सावधान ! ईश्वर की ओर ही सब कार्य प्रवृत्त होंगे।

४२.५१–५३

८० ज्ञान की एक रात्रि = सहस्र मास का जीवन

१ हमने उसे (कुरान को) मंगलप्रद रात्रि में उतारा।

२ और तूने क्या जाना कि मंगलप्रद रात्रि क्या है ?

३ वह रात्रि सहस्र मासों से उत्तम है।

४ इस रात्रि में देवदूत और जीव अपने प्रभु की आज्ञा से प्रत्येक कार्य के लिए उतरते हैं।

५ शांतिदात्री, करुणामयी है वह रात्रि, अरुणोदय तक।

९७.१–५

८१ ज्ञान-प्राप्ति के लिए शीघ्रता न कर

१ ईश्वर ! परमोच्चपदप्रतिष्ठित वस्तुतः राजराजेश्वर है ! और तू कुरान के साथ शीघ्रता न कर, जब तक उसका उतरना पूरा न हो चुके और कह : हे प्रभु ! मुझे ज्ञान-वृद्ध कर।

२०.११४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

82. १ ·····फ़ातिर (अ्ल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्द्रिक्र अन्त वलिय्यी फ़ि (अ्ल्) द्दुन्या व (अ्) ल् आख़िरतिॣ तवफ़्फ़नी मुस्लिम-(न्अ्)ॅव्व अल्हि़क़्नी बि (अ्ल्) स्सालिह़ीनO

१२.१०१

83. १······रब्बि औज़िअ्नी' अन् अश्कुर निअ्मतक (अ्)ल्लती' अन्अ्म्त अ़लय्य व अ़ला(य्) वालिदय्य व अन् अअ्मल स़ालिह़न्(अ्) तर्द़ाहु व अद्ख़िलनी बि रह़्मतिक फ़ी अ़िबादिक (अ्ल्) स़्स़ालिह़ीनO

२७.१९

84. १ क़ुल अअ़ूज़ु बि रब्बि (अ्)ल् फ़लक़ि Oला
२ मिन् शर्रि मा ख़लक़ Oला
३ व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा वक़ब Oला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१० प्रार्थना

१९ प्रार्थना

८२ शरणता

१ ···आकाशों तथा भूमि के स्रष्टा ! तू ही इहलोक एवं परलोक में मेरा संरक्षक मित्र है । मुझे शरणावस्था में मृत्यु दे और मुझे सन्तों में सम्मिलित कर ।

१२.१०१

८३ कृतज्ञता

१ ···हे मेरे प्रभु ! मुझे ऐसी शक्ति दे कि मैं तेरे दयापूर्ण वरदानों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ, जो वरदान तूने मुझे और मेरे माता-पिता को प्रदान किये हैं और मैं वह सत्कृत्य करूँ, जो तुझे भाये तथा मुझे अपनी कृपा से अपने पुण्यचरित दासों में प्रविष्ट कर ।

२७.१९

८४ संकट-मोचन

१ कह : उषा के प्रभु का मैं आश्रय लेता हूँ बचने के लिए
२ प्रत्येक वस्तु की दुष्टता से जो उसने बनायी ।
३ और अन्धकार की दुष्टता से, जब कि वह छा जाय ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ व मिन् शर्रि (अ्ल्) न्नफ़्फ़ासाति फ़ि (अ्) ल् अ्क़दि ०ल

५ व मिन् शर्रि ह़ासिदिन् इजा ह़सद ०ऐन्

११३.१–५

85. १ क़ुल् अअ़ूजु बि रब्बि (अ्ल्) न्नासि ०ला

२ मलिकि (अ्ल्) न्नासि ०ला

३ इलाहि (अ्ल्) न्नासि ०ला

४ मिन् शर्रि (अ्) ल् वस्वासि ० ला (अ्) ल् ख़न्नासि ०स्वातला

५ (अ्) ल्लजी युवस्विसु फ़ी सुदूरि (अ्ल्)-न्नासि ०ला

६ मिन (अ्) ल् जिन्नति व (अ्ल्) न्नासि ०ऐन

११४.१–६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ और उनकी दुष्टता से, जो ग्रन्थियों में फूँकती हैं।
५ और ईर्ष्यालु की दुष्टता से, जब कि वे ईर्ष्या करें।

११३.१–५

८५ विकार-मोचन

१ मैं आश्रय माँगता हूँ, मानवों के प्रभु का।
२ मानवों के सत्ताधीश का।
३ मानवों के भजनीय का, जिससे कि बचूँ;
४ कुप्रेरणा करनेवाले पीछे हट जानेवाले की दुष्टता से।
५ जो मानवों के हृदय में विकार डालता है।
६ वह जिनों में से हो या मनुष्यों में से।

११४.१–६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ३

भक्ति-रहस्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

86. १ या अय्यु ह(अ्) (अ्)ल् मुद्दस्सिरु O^ला

२ क़ुम् फ़ अन्ज़िर् O^स्वातला

३ व रब्बक फ़ कब्बिर् O^स्वातला

४ व सियाबक फ़ तह्हिर् O^स्वातला

५ व(अल्) र्रुज्ज़ फ़(अ्)ह्जुर् O^स्वातला

६ व ला तम्नुन् तस्तक्सिरु O^स्वातला

७ व लि रब्बिक फ़ (अ्)स्बिर् O^तोय

७४.१–७

87. १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल् मुज़्ज़म्मिलु O^ला

२ क़ुमि (अ्) ल्लैल इल्ला क़लीलन् O^ला

३ निस्फ़हू अवि (अ्) न्क़ुस् मिन्हु क़लीलन् (अ्) O^ला

४ औ ज़िद् अलैहि व रत्तिलि(अ्)ल् क़ुर्आन तर्तीलन् (अ्) O^तोय

५ इन्ना सनुल्क़ी अलैक क़ौलन् (अ्) सक़ीलन् (अ्) O

६ इन्न नाशिअत (अल्) ल्लैलि हिय अशद्दु वत्अ(न्) ँव्व अक़्वमु क़ीलन् (अ्) O^तोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

११ भक्ति

२० प्रार्थनोपदेश

८६ सप्तविध

१ हे प्रावरणावगुण्ठित !
२ उठ और लोगों को सावधान कर
३ और अपने प्रभु की महत्ता बोल
४ एवं अपने मन को शुद्ध रख
५ और अशुचिता से दूर रह,
६ अधिक प्रतिदान के उद्देश्य से उपकार न कर।
७ और अपने प्रभु के लिए धीरज रख।

७४.१–७

८७ प्रार्थना के लिए रात्रि का महत्त्व

१ हे चादर में लिपटनेवाले !
२ रात को उठकर उपासना कर, परन्तु थोड़ी देर
३ रात्रि के आधे समय अथवा उससे कुछ कम कर
४ अथवा उससे अधिक कर और सावधानी से कुरान का स्पष्ट पाठ कर।
५ निस्सन्देह हम तुझ पर एक भारी बात डालनेवाले हैं।
६ निस्संशय, रात को उठना वासनाओं को कुचलने में बहुत तेज है और वाणी को सरल करनेवाला है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७ इन्न लक फ़ि(अल्) न्नहारि सब्ह़न्(अ्) त़वीलन्(अ्) ०^तोय़

८ व(अ्)ज़्कुरि(अ्)स्म रब्बिक व तबत्तल् इलैहि तब्तीलन्(अ्) ०^तोय़

९ रब्बु(अ्)ल् मश्रिक़ि व(अ्)ल् मग़्रिबि ला इलाह इल्ला हुव फ़(अ्)त्तख़िज़्हु वकीलन्(अ्) ०

१० व(अ्)स्बिर् अ़ला(य्)मा यक़ूलून व(अ्)-ह्जुर्हुम् हज्रन्(अ्) जमीलन्(अ्) ०

७३.१-१०

88. १ व इज़ा क़ुरि (य्)अ(अ्)ल् क़ुर्आनु फ़(अ्)स्तमिअ़ू(अ्) लहू व अन्सितू(अ्) लअ़ल्लकुम् तुर्ह़मून ०

२ व(अ्)ज़्कु(र्)र्रब्बक फ़ी नफ़्सिक तज़र्रुअ़-(न् अ्)व्व ख़ीफ़त़(न्)व्व दून (अ्)ल् जह्रि मिन(अ्)ल् क़ौलि बि(अ्)ल् ग़ुदुव्वि व(अ्)ल् आस़ालि व ला तकु(न्)म्मिन(अ्)ल् ग़ाफ़िलीन ०

३ इन्न (अ्)ल्लज़ीन अ़िन्द रब्बिक ला यस्तक्बिरून अ़न् अ़िबादतिही व युसब्बिह़ूनहू व लहू यस्जुदून ०^अल्सज्द: ७.२०४-२०६

89. १ क़ुलि(अ्)द्अ़ु (व् अ्) (अ्)ल्लाह अवि(अ्)-द्अ़ु(व् अ्) (अ्ल्) र्रह़मान^तोय़ अय्य(न् अ्)-म्मा तद्अ़ू(अ्)फ़ लहु(अ्)ल् अस्मा अु-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७ निस्सन्देह दिन में तुझे बहुत काम रहता है।

८ अपने प्रभु का नाम लेता रह और सबसे अलग होकर उसीकी ओर प्रवृत्त हो।

९ वह पूर्व एवं पश्चिम का स्वामी है, उसके अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं। सो उसीको अपना सार-सँभाल करनेवाला बना ले।

१० और वे लोग जो कुछ कहते रहें, वह सहता रह तथा सुचारु रूप से उन्हें छोड़ दे।

७३.१–१०

८८ संयत वाणी से प्रार्थना करो

१ जब कुरान पढ़ा जाय, तो उसकी ओर कान लगाओ और मौन रहो, जिससे कि तुम पर कृपा की जाय

२ और अपने प्रभु का, अपने हृदय में, नम्रता एवं भय से, संयत वाणी से, प्रातः-सायं स्मरण करता रह और असावधानों में से न हो जा।

३ निस्सन्देह, जो तेरे प्रभु के निकट हैं, वे उसकी भक्ति करने में अहंकार नहीं रखते और उसका जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और उसको प्रणिपात करते हैं।

७.२०४–२०६

८९ अल्ला कहो या रहमान कहो

१ कह : अल्ला कहकर पुकारो या रहमान (दयामय) कहकर, जो भी कहकर पुकारोगे, सो सभी अच्छे नाम उसीके लिए हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(अ्)ल् हुस्ना (य्)ज. व ला तज्हर् बि सलातिक व ला तुख़ाफ़ित् बिहा व(अ्)ब्तग़ि बैन ज़ालिक सबीलन् (अ्) ०

१७. ११०

90. १ फ़(अ्)अ्लम् अन्नहू ला इलाह इल्ल(अ्)ल्लाहु व(अ्)स्तग़्फ़िर् लि ज(न्)म्बिक व लिल् मु(व्)अ्मिनीन व(अ्)ल् मु(व्)अ्मिनाति तोय. व(अ्)ल्लाहु यअ्लमु मुतक़ल्लबकुम् व मस्वाकुम् ०

४७. १९

91. १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनू (अ्)इज़ा नूदिय लि(ल्)स् सलाति मि(न्)य्यौमि(अ्)ल् जुमुअति फ़(अ्)स्औ (अ्)इला (य्)ज़िक्रि-(अ्)ल्लाहि व ज़रु (व्अ्अ्) ल् बैअ्तोय ज़ालिकुम् ख़ैरु(न्)ल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून ०

२ फ़ इज़ा क़ुद़ियति(अल्)स् सलातु फ़(अ्)न्-तशिरू(अ्) फ़ि(अ्)ल् अर्द़ि व(अ्)ब्तग़ू(अ्) मिन फ़द़्लि(अ्)ल्लाहि व(अ्)ज़्कुरु(व् अ्)-(अ्)ल्लाह कसीर(न् अ्)ल्लअ्ल्लकुम् तुफ़्लिहून ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और अपनी प्रार्थना उच्च स्वर से न पढ़ और न चुपके पढ़, उसके बीच का मार्ग स्वीकार कर।

१७.११०

९० क्षमापनम्

१ तू यह जान कि परमात्मा के अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं और अपने पापों के लिए और श्रद्धावानों एवं श्रद्धावतियों के लिए भी क्षमा माँग। परमात्मा तुम्हारे चलने-फिरने का स्थान और तुम्हारा अन्तिम स्थान जानता है।

४७.१९

९१ प्रार्थना, व्यापार तथा खेल

१ हे श्रद्धावानो ! जब प्रार्थना के लिए शुक्रवार को तुम्हें पुकारा जाय, तो ईश-स्मरण के लिए दौड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यदि तुम समझो, तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है।

२ फिर जब प्रार्थना पूरी की जाय, तो पृथ्वी में फैल जाओ और ईश्वर का कृपा-वैभव ढूँढ़ो तथा ईश्वर का बहुत स्मरण करो, जिससे कि तुम्हारा भला हो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व इज़ा रऔ(अ्)तिजारतन् औ लह्व(अ्)-
नि(अ्)न्फ़द्दू (अ्)इलैहा व तरकूक क़ाअि-
मन्(अ्) तोय़ क़ुल् मा अिन्द(अ्)ल्लाहि ख़ैरु(न्)-
म्मिन(अ्ल्)ल्लह्वि व मिन(अ्ल्)त्तिज़ारति तोय़
व(अ्)ल्लाहु ख़ैरु(अ्ल्)र्राज़िक़ीन o ऐन्

६२.९-११

92. १ अुत्लु मा ऊह़िय इलैक मिन(अ्)ल् किताबि व
अक़िमि(अ्ल्)स्सलात तोय़ इन्न(अ्ल्)स्सलात
तन्हा(य्)अनि(अ्)ल् फ़ह्शाअि व(अ्)ल्
मुन्करि तोय़ व ल जिक्रु(अ्)ल्लाहि
अक्बरु तोय़ व(अ्)ल्लाहु यअ्लमु मा तस्नअून o

२९.४५

93. १ ········अला बि जिक्रि (अ्)ल्लाहि
ततमअिन्नु(अ्)ल् क़ुलूबु o तोय़

१३.२८.

94. १ व युसब्बिहु(अ्ल्)र्रअ्दु बिह़म्दिही व(अ्)ल्
मलाअिकतु मिन् ख़ीफ़तिही········

१३.१३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ और वे लोग जब देखते हैं सौदा बिकता हुआ या तमाशा, तो उसे देखकर उसकी ओर दौड़े जाते हैं और तुझे खड़ा छोड़ जाते हैं । कह : जो ईश्वर के पास है, वह तमाशे से और व्यापार से उत्तमोत्तम है। और ईश्वर श्रेष्ठ जीविका पहुँचानेवाला है ।

६२.९–११

९२ प्रार्थना से स्मरण बड़ा

१ जो ग्रन्थ तेरी ओर उतरा, उसे पढ़ और नित्य-नियमित प्रार्थना कर। निस्सन्देह, प्रार्थना लज्जास्पद एवं अनुचित बातों से रोकती है और ईश्वर का स्मरण इन सबसे बड़ा है और ईश्वर जानता है, जो कुछ तुम करते हो ।

२९.४५

९३ ईश्वर-स्मरण से अन्तःसमाधान

१ ······भलीभाँति समझ लो कि ईश्वर के स्मरण से अन्तःकरण को समाधान मिलता है ।

१३.२८

२१ सृष्टिकृत प्रार्थना

९४ मेघ-गर्जना जप करती है

१ मेघ-गर्जना परमात्मा की स्तुति के साथ उसका जप करती है, जयजयकार करती है और सब देवदूत उसका आदर के साथ जप एवं स्तवन करते हैं ।

१३.१३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

95. १ अ लम् तर अन्न(अ्)ल्लाह युसब्बिहु लहु मन्
फ़ि(अ्ल्)स्समावाति व(अ्)ल् अर्ज़ि व(अ्ल्)-
त्तैरु सॉफ़्फ़ातिन्[तोय] कुल्लुन् क़द् अ़लिम सलातहु
व तस्बीहहु [तोय] व(अ्) ल्लाहु अ़लीमु (न्)-
म् बि मा यफ़्अ़लून ० २४.४१

96. १ तुसब्बिहु लहु (अ्ल्) स्समावातु (अ्ल्)-
स्सब्अ़ु व(अ्) ल् अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्न[तोय] व
इ (न्) म्मिन् शय्अिन् इल्ला युसब्बिहु
बिहम्दिहीं व लाकि (न्) ल्ला तफ़्क़हून
तस्बीहहुम्[तोय] इन्नहु कान हलीमन् ग़फ़ूरन् ०
१७.४४

97. १ व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़ि(अ्ल्)स्समावाति
व(अ्)ल् अर्ज़ि तौअ़(न्)ँव्व करह(न्)ँव्व
ज़िलालुहुम् बि (अ्)ल् ग़ुदुव्वि व(अ्)ल्
आसालि ०[अल्सज्दः]

१३.१५

98. १ अव लम् यरौ (अ्) इला(य्) मा ख़लक़-
(अ्)ल्लाहु मिन् शय्अि(न्)ँय्यतफ़य्य(व्) अु
ज़िलालुहु अ़नि (अ्)ल् यमीनि व (अ्ल्)-
श्शमाअिलि सुज्जद(न् अ्)लिल्लाहि व हुम्
दाख़िरून ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

९५ पक्षी स्तवन करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि आकाश एवं भूमि में जो पक्षी हैं, वे पंख पसारे परमात्मा का नाम-स्मरण करते हैं। प्रत्येक अपने ढंग की प्रार्थना एवं जप जानता है और परमात्मा जानता है, जो कुछ वे करते हैं।

२४.४१

९६ सृष्टि का जप अगम्य

१ सात आकाश एवं भूमि तथा जो कोई उनमें है, उसका जप करते हैं, जयजयकार करते हैं। ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो स्तवनपूर्वक (स्तुति के साथ) उसका जप नहीं करती, किन्तु तुम उनका नाम-स्मरण नहीं समझते। निस्सन्देह वह धृतिमान्, करुणावान् है।

१७.४४

९७ छाया का प्रणिपात

१ आकाशों एवं भूमि में जो कोई है, वह स्वेच्छया या अनिच्छया परमात्मा को प्रणिपात करते हैं और उनकी परछाइयाँ भी, प्रातः-सायं उसे प्रणिपात करती हैं।

१३.१५

९८ सृष्टि का प्रणिपात

१ क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि ईश्वर ने जो वस्तुएँ उत्पन्न की हैं, उनकी परछाइयाँ दाहिने और बायें ईश्वर को प्रणिपात करते हुए ढलती हैं और वे विनम्र हैं।

९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व लिल्ला-हि यस्जुदु मा फ़ि(अ्ल्) स्समावाति
व मा फ़ि(अ्)ल् अर्द्दि मिन् दाब्बत्नि(न्) व्व-
(अ्)ल् मलाअ्किकतु व हुम् ला यस्तक्बिरून ०
३ यखाफ़ून रब्बहु (म्) म्मिन् फ़ौक़िहिम् व
यफ़्अलून मा यु(व्)·अ्मरून ०अल्नसंज्द: १६.४८–५०

99. १ अ लम् तर अन्न(अ्)ल्लाह यस्जुदु लहू मन्
फ़ि(अ्ल्) स्समावाति व मन् फ़ि(अ्)ल्
अर्द्दि व(अ्ल्)श्शम्सु व (अ्)ल् क़मरु
व(अ्ल्)न्नुजूमु व(अ्)ल् जिबालु व(अ्ल्)-
श्शजरु व(अ्ल्)द्दवाब्बु व कसीरु(न्)म्मिन
(अ्ल)न्नासितोय...... २२.१८

100. १ क़ालति(अ्)ल् अअ्राबु आमन्ना तोय क़ु(ल्)ल्लम्
तु(व)·अ्मिनू व लाकिन् क़ूलू(अ्) अस्लम्ना
व लम्मा यद्खुलि(अ्)ल् ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम् तोय
व इन् तुतीअु (वअ्) (अ्) ल्लाह व रसूलहू ला
यलित्कु(म्)म्मिन् अअ्मालिकुम् शैअन् तोय
इन्न(अ्)ल्लाह ग़फ़ूरु(न्)र् रहीमुन् ०
२ इन्न म(अ्) (अ्)ल् मु(व्)·अ्मिनून(अ्)ल्लजीन
आमनू(अ्)बि(अ्)ल्लाहि व रसूलिही सुम्म
लम् यर्ताबू(अ्) व जाहदू(अ्)बि अम्वालिहिम्
व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलि(अ्) ल्लाहितोय
उ(व्)लाअ्किक हुमु(अ्ल्)स्सादिक़ून ०४९.१४–१५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ आकाशों एवं भूमि में जितने भी प्राणी हैं, वे एवं सभी देवदूत ईश्वर को प्रणिपात करते हैं। वे घमंड नहीं करते।

३ अपने प्रभु का, जो उनके सिर पर है, भय रखते हैं। जो आज्ञा पाते हैं, सो करते हैं।

१६.४८–५०

९९ सारी सृष्टि एवं कतिपय मनुष्य प्रणिपात करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि जो आकाशों एवं भूमि में है तथा सूर्य और चन्द्र और तारे और पर्वत और वृक्ष एवं पशु तथा मनुष्यों में से बहुत-से लोग परमात्मा को प्रणिपात करते हैं ?...

२२.१८

२२ निष्ठा

१०० शरणता एवं नैष्ठिकता

१ गँवार लोग कहते हैं कि हम श्रद्धा रखते हैं। कहो कि तुममें अभी श्रद्धा नहीं आयी। अपितु तुम यह कहो कि हमने शरणता स्वीकृत की है, अभी तुम्हारे मानस में श्रद्धा का प्रवेश नहीं हुआ। तथापि यदि तुम ईश्वर की और प्रेषित की आज्ञा मानो, तो ईश्वर तुम्हारे सत्कृत्यों का फल लेशमात्र भी न घटायेगा। निस्सन्देह ईश्वर क्षमावान् है, करुणावान् है।

२ श्रद्धावान् केवल वे ही हैं, जिन्होंने ईश्वर पर एवं उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखी और फिर सन्देह नहीं किया तथा तन-मन-धन से ईश्वर के मार्ग में जूझते रहे। ये ही लोग सच्चे हैं।

४९.१४-१५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

101. १ लैस अ़ल (य्) (अ्) ल्लजीन आमनू (अ्) व अ़मिलु-
(व्अ्) (अल्) स्सालिहा़ति जुनाहुन् फ़ी मा
तअ़िमू' (अ्) अ़िजा म (अ्) (अ्) त्तक़ौ (अ्) व्व
आमनू (अ्) व अ़मिलु (व्अ् अ् ल्) स्सालिहा़ति
सुम्म (अ्) त्तक़ौ (अ्) व्व आमनू सुम्म (अ्) त्तक़ौ-
(अ्) व्व अह़्सनू (अ्)$^{तोय}$ व (अ्) ल्लाहु युह़िब्बु-
(अ्) ल् मुह़्सिनीन o

५.९६

102. १ क़ुल् इन्न स़लाती व नुसुकी व मह़्याय व ममाती
लिल्लाहि रब्बि (अ्) ल् अ़ालमीन o$^{ला}$

६.१६२

103. १ स़िब्ग़त (अ्) ल्ला हि ^{ज} व मन् अह़्सनु मिन-
(अ) ल्लाहि स़िब्ग़त (न्)$^{ज़}$ व्व नह़्नु लहू
अ़ाबिदून o

२.१३८

104. १ यां अय्युह (अ् अ्) ल्लजीन आमनू (अ्) ला
तत्तख़िज़ू' (अ्) आबां·अकुम् व इख़्वानकुम्
औलियां·अ इनि (अ्) स्तह़ब्बु (व् अ् अ्) ल् कुफ़्र
अ़ल (य्) (अ्) ल् ईमानि$^{तोय}$ व म (न्) य्यत-
वल्लहु (म्) म्मिन्कुम् फ़ अु (व्) लां·अिक
हुमु (अल्) ज़्ज़ालिमून o

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१०१ साधना, श्रद्धा एवं सत्कृति का त्रिकोण

१ जिन लोगों ने श्रद्धा रखी और सत्कृत्य किये, उन्होंने जो आहार किया है, उसमें दोष नहीं, जब कि वे प्रभु-परायण रहें और श्रद्धा रखें और फिर प्रभु-परायण रहें और अनेक सत्कृत्य करें। ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों से प्रेम करता है।

५.९६

१०२ नारायणायेति समर्पयेत्तत्

१ कह : निस्सन्देह मेरी प्रार्थना, मेरी भक्ति, मेरा जीवन, मेरा मरण सब परमात्मा के ही लिए है, जो सारे विश्व का प्रभु है।

६.१६२

१०३ मन तो रँगा राम में

१ रँगा है हमको परमात्मा ने, और रँगने में परमात्मा से श्रेष्ठतर कौन है? हम उसीके भक्त हैं।

२.१३८

१०४ नाते नेह राम के मनियत

१ हे श्रद्धालुओ, अपने पिता को, अपने भाई को भी मित्र न बनाओ, यदि वे लोग श्रद्धाहीनता को श्रद्धा की अपेक्षा अधिक प्रिय मानें। तुममें से जो लोग उन्हें मित्र समझें, वही लोग दोषी हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ क़ुल् इन् कान आबा·उकुम् व अब्ना·उकुम् व
अिख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अशीरतुकुम्
व अम्वालु नि(अ्)क़्तरफ़्तुमूहा व तिजार-
तुन् तख़्शौन कसादहा व मसाकिनु तरज़ौनहा
अहूब्ब इलैकु(म्)म्मिन(अ्)ल्लाहि व रसूलिही
व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़ तरब्बसू हृत्ता
यअ्तिय(अ्)ल्लाहु बि अम्रिही^{तोय} व(अ्)ल्लाहु
ला यह्दि(य्) (अ्)ल् क़ौम(अ्)ल् फ़ासिक़ीन०
९.२३–२४

105. १ इन्न अक्रमकुम् अिन्द(अ्)ल्लाहि अत्क़ाकुम् ०^{तोय}
इन्न(अ्)ल्लाह अलीमुन् ख़बीरुन्०
४९.१३

106. १ व ला तक़ूलन्न लि श(अ्)य्अिन् इन्नी फ़ाअिलुन्
ज़ालिक ग़दन्(अ्) ०^{ला}
२ इल्ला अ(न्)य्यशा·अ (अ्)ल्लाहु.....
१८.२३–२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ कह : तुम्हारे पिता, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारा परिवार और वह धन, जो तुमने उपार्जित किया है तथा वह व्यापार, जिसकी मन्दी से तुम डरते हो और वे घर, जो तुम्हें भाते हैं, यदि ईश्वर से और उसके प्रेषित से और उसके मार्ग में जूझने से तुम्हें अधिक प्यारे हैं, तो तुम प्रतीक्षा करो, जब तक कि ईश्वर आज्ञा भेजे। ईश्वर अपनी अवज्ञा करनेवालों को अपना मार्ग नहीं दिखाता।

९.२३-२४

१०५ नम्रत्वेन उन्नमन्तः

१ निस्सन्देह परमात्मा के पास तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक विनम्र है। परमात्मा सर्वज्ञ है, सर्वस्पर्शी है।

४९.१३

१०६ ईश्वरेच्छा की शरण

१ किसी बात के सम्बन्ध में कदापि यह न कह कि मैं यह कल करूँगा।

२ परन्तु यह कि 'यदि ईश्वर चाहे तो' !....

१८.२३-२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

107. १ अ फ़ मन् अस्सस बुन्यानहू अ़ला (य्) तक़्वा (य्) मिन (अ्) ल्लाहि व रिद्वानिन् ख़ैरुन् अ (म्) म्मन् अस्सस बुन्यानहू अ़ला (य्) शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़ (अ्) न्हार बिही फ़ी नारि जहन्नम^तोय^.........

९.१०९

108. १ या अय्युह (अ्) ल्लजीन आमनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला (य्) तिजारतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़जाबिन् अलीमिन् O

२ तु (व्) अ्मिनून बि (अ्) ल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदून फ़ीसबीलि (अ्) ल्लाहि बि अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् ^तोय^ जालिकुम् ख़ैरु (न्)-ल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून O^ला^

६१.१०–११

109. १ अ जअ़ल्तुम् सिक़ायत (अ्) ल् हाज्जि व अ़िमारत (अ्) ल् मस्जिदि (अ्) ल् हरामि क मन् आमन बि (अ्) ल्लाहि व (अ्) ल् यौमि (अ्) ल् आख़िरि व जाहद फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि ^तोय^ ला यस्तवून अ़िन्द (अ्) ल्लाहि ^तोय^ व (अ्) ल्लाहु ला यह्दि (य्) (अ्) ल् क़ौम (अल्) ज़्ज़ालिमीन O^म^

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१०७ भवन चट्टान पर या धँसनेवाले कगार पर

१ भला जिसने अपने भवन की नींव ईश्वर के प्रति अपने धर्म पर एवं उसकी प्रसन्नता पर रखी हो, वह अधिक लाभकारी है या वह, जिसने अपने भवन की नींव एक खोखली घाटी के कगार पर रखी हो, जो गिरने को ही है कि फिर वह उसको लेकर नारकीय अग्नि में ढह पड़े ?......

९.१०९

२३ त्याग-समर्पण

१०८ उत्तम व्यापार

१ हे श्रद्धालुओ, मैं तुम्हें ऐसा व्यापार बतलाऊँ, जो तुम्हें दुःखद दण्ड से बचाये।

२ परमात्मा पर एवं उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखो, और अपने धन से एवं अपने प्राण से परमात्मा के मार्ग में जूझते रहो। यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम बुद्धि रखते हो।

६१.१०-११

१०९ श्रेष्ठ पुण्य

१ क्या तुमने यात्रियों को पानी पिलाने और पवित्र मसजिद बनाने को उस व्यक्ति के समान ठहराया, जिसने ईश्वर पर एवं पुनरुत्थान के दिन पर श्रद्धा रखी तथा ईश्वर के मार्ग में जूझता रहा ? ये ईश्वर के समीप समान नहीं हो सकते। ईश्वर अन्यायी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ अल्लजीन आमनू(अ्) व हाजरू(अ्)व जाहदू-
(अ्)फ़ी सबीलि(अ्)ल्लाहि बि अम्वालिहिम्
व अन्फ़ुसिहिम् ला अअ़्ज़मु दरजतन् अिन्द-
(अ्)ल्लाहि तोय व उ(व्)लाअिक हुमु(अ्)ल्
फ़ाअिज़ून ०

९.१९-२०

110. १ या अय्युह (अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)ला
तकूनू(अ्)क(अ्)ल्लजीन क़फ़रू(अ्)व क़ालू
(अ्)लि इख़्वानिहिम् इजा ज़रबू(अ्)फ़ि(अ्)
ल् अर्ज़ि औ कानू(अ्) ग़ुज़्ज़ (न् य्)ल्लौ
कानू अिन्दना मा मातू(अ्)व मा क़ुतिलू(अ्) तोय
लि यज्अल(अ्)ल्लाहु ज़ालिक हस्रतन् फ़ी
क़ुलूबिहिम् तोय व(अ्)ल्लाहु युह्यी व युमीतु तोय
व(अ्)ल्लाहु बि मा तअ़्मलून बसीरुन् ०
२ व लअिन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलि(अ्)ल्लाहि
औ मुत्तुम् ल मग़्फ़िरतु(न्)म्मिन(अ्)ल्लाहि
व रह्मतुन् ख़ैरु(न्)म्मिम्मा यज्मअ़ून ०
३ व ल अि(न्)म्मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल इ(अ्)ल-
(य्) (अ्)ल्लाहि तुह्शरून ०

३.१५६-१५८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ जिन्होंने श्रद्धा रखी एवं घर-द्वार छोड़ा तथा ईश्वर के मार्ग में तन-मन-धन से जूझे, वे ईश्वर की दृष्टि में बहुत श्रेष्ठ हैं और विजयी हैं ।

९.१९-२०

११० सर्वोत्तम सञ्चय

१ हे श्रद्धालुओ, तुम उन लोगों के जैसे मत बनो, जिन्होंने ईश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखलायी और अपने भाइयों के विषय में, जब कि वे परदेश में प्रवास को निकले हों या लड़ते हों, यह कहते रहें कि यदि वे हमारे पास रहते तो न मरते, न मारे जाते । (उनके इस कहने को) ईश्वर उनके लिए शोक का कारण बनायेगा । ईश्वर ही जिलाता है और ईश्वर ही मारता है और ईश्वर तुम्हारा सब काम देखता है ।

२ और यदि तुम ईश्वर के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ, तो क्या हुआ ? ईश्वर की क्षमा और कृपा उस धन से बहुत ही श्रेष्ठ है, जिसे वे सञ्चित करते हैं ।

३ और यदि तुम मर गये या मारे गये, तो अवश्यमेव ईश्वर के ही पास एकत्र किये जाओगे ।

३.१५६–१५८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

111. १ व म(न्)ँय्युहाजिर् फ़ी सबीलि(अ्)ल्लाहि यजिद् फ़ि(अ्)ल् अर्ज़ि मुराग़मन् कसीर(न्)-(अ्)ँव्वसअ़तन् तोय व म(न्)ँय्यख़्रुज मि(न्)-म्बैतिही मुहाजिरन्(अ्)इल(य् अ्)ल्लाहि व रसूलिही सुम्म युद्‌रिक्हु (अ्)ल् मौतु फ़ क़द् वक़अ़ अज्रुहू अ़ल(य्) (अ्)ल्लाहि तोय व कान (अ्)ल्लाहु ग़फ़ूर(न् अ्)र्रहीमन् (अ्)० ४.१००

112. १ ·······फ़(अ्)ल्लज़ीन हाजरू (अ्)व अुख़्-रिजू (अ्)मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू(अ्)फ़ी-सबीली व क़ातलू(अ्) व क़ुतिलू(अ्) ल अुकफ़्फ़िरन्न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल अुद्ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिह (अ्) (अ्)ल् अन्हारु तोय सवाब(न्) म्मिन् अ़िन्दि (अ्)ल्लाहि तोय व(अ्)ल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नु(अ्ल्) स्सवाबि ० ३.१९५

113. १ फ़ल् युक़ातिल् फ़ी सबीलि(अ्)ल्लाहि(अ्) ल्लज़ीन यश्रून (अ्)ल् हयां(व्)त (अ्ल्)-द्दुन्या बि(अ्)ल् आख़िरत्ति व म(न्)-ँय्युक़ातिल् फ़ी सबीलि(अ्)ल्लाहि फ़ युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़ सौफ़ नु(व्)अ्तीहि अज्रन्(अ्) अ़ज़ीमन् (अ्) ० ४.७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१११ सर्वत्र आश्रय

१ जो कोई ईश्वर के मार्ग में अपनी जन्मभूमि छोड़ेगा, वह इस विशाल भूमि में जाने के लिए बहुत स्थान एवं क्षेत्र पायेगा। तथा जो कोई अपने घर से प्रस्थान कर ईश्वर एवं प्रेषित की ओर चले और यदि उसे मृत्यु आ जाय, तो उसका प्रतिफल ईश्वर के अधीन है। ईश्वर महान्, क्षमावान् एवं महान् करुणावान् है।

४.१००

११२ सद्गति

१ ···जिन्होंने अपनी जन्मभूमि छोड़ी, जो अपने घरों से निकाले गये, मेरे मार्ग में त्रस्त किये गये और लड़े तथा मारे गये, उन लोगों के दोष मैं अवश्य दूर करूँगा और उनको स्वर्ग में प्रविष्ट करूँगा, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं। यह प्रतिफल है ईश्वर की ओर से और अच्छा प्रतिफल तो ईश्वर के ही पास है।

३.१९५

११३ उभय पक्ष में श्रेयस्कर

१ तो हाँ, ईश्वर के मार्ग में तो वे लोग लड़ें, जो ऐहिक जीवन का पारलौकिक जीवन से विनिमय करते हैं। जो कोई ईश्वर के मार्ग में लड़े और मारा जाय या विजय प्राप्त करे, तो उन दोनों स्थितियों में हम उसे महान् फल देंगे।

४.७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

114. १ अ हसिब(अल्)न्नासु अ(न्)य्युत्रकू(अ्) अ(न्) य्यक़ूलू(अ्)आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून ०

२ व ल क़द् फ़तन्न(अ् अ्)ल्लज़ीन मिन् क़ब्लिहिम् फ़ ल यअ्लमन्न(अ्) ल्लाहु(अ्) ल्लज़ीन स्रदक़ू(अ्) व ल यअ्लमन्न(अ्)ल् काज़िबीन ०

२९.२–३

115. १ व ल नब्लुवन्नकुम् हत्ता(य्)नअ्लम(अ्)ल् मुजाहिदीन मिन्कुम् व(अल्)स्साबिरीन ला व नब्लुव(अ्)अख़्बारकुम् ०

४७.३१

116. १ व लौ बसत(अ्) ल्लाहु(अल्)र् रिज़्क़ लि अिबादिही ल बग़ौ(अ्)फ़ि (अ्)ल् अर्ज़ि व लाकि(न्)य्युनज़्ज़िलु बि क़दरि(न्)म्मा यशाअु तोय इन्नहू बि अिबादिही ख़बीरु(न्)-म्बसीरुन् ०

४२.२७

117. १ व(अ्)ल्लज़ीन जाहदू(अ्)फ़ीना ल नह्दियन्नहुम् सुबुलना तोय व इन्न(अ्)ल्लाह ल मअ(अ्)ल् मुह्सिनीन ०

२९.६९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२४ कसौटी एवं आश्वासन

११४ कसौटी अवश्य होगी

१ क्या ये लोग ऐसा सोचते हैं कि वे इतना कहकर छूट जायँगे कि हम श्रद्धा रखते हैं और उनकी कसौटी न होगी ?

२ हमने उनसे पूर्व जो थे, उनकी अवश्य ही कसौटी की है। सो ईश्वर जान लेगा उन्हें, जो सच्चे लोग हैं और जान लेगा उन्हें, जो झूठे हैं।

२९.२-३

११५ परीक्षा होगी

१ हम निश्चय ही तुम्हारी कसौटी करेंगे, जिससे कि हम तुममें से जूझनेवालों और धीरज रखनेवालों को जान लें और तुम्हारी स्थिति जाँच लें।

४७.३१

११६ भक्तों को गरीबी का वरदान

१ यदि ईश्वर अपने दासों की जीविका अत्यधिक बढ़ा दे, तो वे दुनिया में ऊधम मचा दें। किन्तु वह जितनी चाहता है, मापकर उतारता है। निस्सन्देह वह अपने दासों का ध्यान रखनेवाला निरीक्षक है।

४२.२७

११७ साधना-मार्ग में ईश्वर मार्गदर्शक

१ जो हमारे लिए जूझते रहे, उन्हें हम अपने मार्ग अवश्य दिखा देंगे। निस्सन्देह ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों के साथ है।

२९.६९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

118\. १ व ल क़द् सबक़त् कलिमतुना लि झिबादिन (अ्)-
(अ्)ल् मुर्सलीन o ज़्स्वली
२ इन्नहुम् ल हुमु (व्अ्)ल् मन्सूरून o स्वात्
३७.१७१-१७२

119\. १ या अय्युह (अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू (अ्)
इन् तन्सुरु (व् अ्) (अ्)ल्लाह यन्सुर्कुम्
व युसब्बित् अक़्दामकुम् o
४७.७

120\. १ व इजा सअलक झिबादी अन्नी फ़ इन्नी क़रीबुन्^तोय
उजीबु दझ्वत (अ्ल्) द्दाझि इजा दझानि^ला
फ़ल् यस्तजीबू (अ्)ली वल् यु (व्) अ्मिनू (अ्)
बी लझल्लहुम् यर्शुदून o
२.१८६

121\. १ या अय्युह (अ्) (अ्) ल्लजीन आमनू इन्
तत्तक़ु (व्अ्) (अ्) ल्लाह यज्झ (ल्) ल्लकुम्
फ़ुर्क़ान (न्)ँव्व युकफ़्फ़िर् अन्कुम्
सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्^तोय व (अ्)-
ल्लाहु जु (व्) (अ्)ल् फ़द्लि (अ्)ल् अज़ीमि o
८.२९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

११८ भक्तों की सहायता : ईश्वर का विरुद

१ हमारे दासों, प्रेषितों के लिए हमारा यह अभिवचन पहले से ही पहुँच चुका है

२ कि निस्सन्देह उन्हें अवश्यमेव सहायता दी जायगी।

३७.१७१-१७२

११९ सहायकों को सहायता मिलेगी

१ हे श्रद्धालुओ! यदि तुम ईश्वर की सहायता करोगे, तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पाँव जमा देगा।

४७.७

१२० ईश्वर सन्निकट है

१ जब मेरे दास तुझे मेरे विषय में पूछें (तो तू कह कि) मैं सन्निकट हूँ। पुकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ, जब कि वह मुझे पुकारता है। सो उन्हें चाहिए कि वे मेरी आज्ञा मानें और मुझ पर श्रद्धा रखें, जिससे कि वे सन्मार्ग पर आयें।

२.१८६

१२१ ददामि बुद्धियोगम्

१ हे श्रद्धालुओ! यदि ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो, तो वह तुम्हें विवेक देगा, बुद्धि देगा और तुम्हारे दोष दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा। ईश्वर महान् वैभवशाली है।

८.२९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

122. १ हुव(अ्)ल्लज़ी अन्ज़ल(अ्ल्) स्सकीनत फ़ी क़ुलूबि(अ्)ल् मु(व्)अ्मिनीन लि यज़्दादू (अ्) ईमान(न्) (अ्)म्मअ ईमानिहिम्^तोय......

४८.४

123. १ सुम्म नुनज्जी रुसुलना व(अ्) ल्लज़ीन आमनू-(अ्)क ज़ालिक^ज़ हक़्क़न्(अ्)अलैना नुन्जि(अ्) -ल् मु(व्)अ्मिनीन ०

१०.१०३

124. १ ख़ुलिक़ (अ्) ल् इन्सानु मिन् अ़जलिन्^तोय सउ(व्)रीकुम् आयाती फ़ ला तस्तअ्जिलूनि०

२१.३७

125. १ तअ्रुजु (अ्)ल् मलाअिकतु व(अ्ल्) र्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् कान मिक़्दारुहू ख़म्सीन अल्फ़ सनतिन् ०^ज़

२ फ़(अ्)स्बिर् सब्रन्(अ्) जमीलन्(अ्)०

७०.४-५

126. १ फ़ ला अुक़्सिमु बि(अ्ल्)श्शफ़क़ि ०^ला

२ व(अ्)ल्लैलि व मा वसक़ ०^ला

३ व(अ्)ल् क़मरि इज (अ् अ्) त्तसक़ ०^ला

४ ल तर्कबुन्न तबक़न् अन् तबक़िन् ०^तोय

८४.१६-१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१२२ **सान्त्वना मिलती है**

१ वही है, जिसने श्रद्धावानों के हृदय में सान्त्वना उत्पन्न की, जिससे कि वे अपनी श्रद्धा के साथ श्रद्धा में और आगे बढ़ें··· । ४८.४

१२३ **मोक्षयिष्यामि**

१ फिर हम अपने प्रेषितों और उन लोगों को, जो श्रद्धायुत हुए, मोक्ष देंगे । इसी प्रकार हमारा उत्तरदायित्व है कि श्रद्धावानों को मुक्त करें । १०.१०३

२५ धीरज

१२४ **शीघ्रता न कर, संकेत दिखाऊँगा**

१ मनुष्य शीघ्रता का बना है। निकट भविष्य में तुम्हें प्रभु-संकेत दिखलाऊँगा । सो तुम मुझसे शीघ्रता करने को मत कहो । २१.३७

१२५ **धीरज रखो**

१ देवदूत और जीव उसकी ओर एक दिन में चढ़ते हैं, जिस दिन का परिमाण पचास हजार वर्ष है ।

२ सो धीरज रख, खूब धीरज रख ।

७०.४-५

१२६ **क्रम-क्रम से विकास**

१ शपथ खाता हूँ सन्ध्या की लालिमा की,

२ और रात्रि की और उनकी, जिनको वह समेट लेती है

३ और चन्द्रमा की, जब वह पूर्ण हो जाय

४ कि तुम अवश्य क्रम-क्रम से विकास करोगे ।

८४.१६-१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

127. १ व म(न्)ँय्युतिअि(अ्)ल्लाह व(अ्ल्)-
र्रसूल फ़ उ(व्)लांअिक मअ(अ्)ल्लजीन
अन्अम(अ्)ल्लाहु अलैहि(य्)म्मिन(अ्ल्)-
न्नबिय्यीन व(अ्ल्)स्सिद्दीक़ीन व(अ्ल्)-
श्शुहदांअि व(अ्ल्)स्सालिहीन^ज व हसुन
उ(व्)लांअिक रफ़ीक़न्(अ्) ०^तोय
२ जालिक(अ्)ल् फ़द्लु मिन(अ्)ल्लाहि ^य व
कफ़ा(य्)बि(अ्)ल्लाहि अलीमन्(अ्) ०
४.६९-७०

128. १ व(अ्)स्बिर् नफ़्सक मअ(अ्)ल्लजीन यद्अून
रब्बहुम् बि(अ्)ल् ग़दा(व्)ति व(अ्)ल्
अशिय्यि युरीदून वज्हहु व ला तअ्दु अैनाक
अन्हुम् ^ज तुरीदु ज़ीनत(अ्)ल् हया(व्)ति-
(अ्ल्) द्दुन्या^ज
१८.२८

129. १ फ़ वजदा अब्द(न्अ्)म्मिन् अिबादिना
आतैनाहु रह्मत(न्)म्मिन् अिन्दिना व
अल्लम्नाहु मि(न्)ल्लदुन्ना अिल्मन् (अ्)०
२ क़ाल लहु मूसा(य्)हल् अत्तबिअुक अला(य्)
अन् तुअल्लिमनि मिम्मा अुल्लिमत् रुशदन्(अ्)०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१२ सत्संगति

२६ सत्संग

१२७ महापुरुषों की संगति का लाभ

१ जो ईश्वर एवं उसके प्रेषित की आज्ञा माने, सो वह उन लोगों के साथ है, जिन पर ईश्वर ने दया की है, अर्थात् सन्देष्टा, सत्यभाषी, हुतात्मा, साक्षात्कारी तथा सन्त, सज्जन। ये लोग निश्चय ही अच्छे साथी हैं।

२ यह ईश्वर से प्राप्त कृपावैभव है और ईश्वर पूर्ण ज्ञानी है।

४.६९-७०

१२८ सत्संगति से चिपटे रहो

१ अपने-आपको उनके साथ चिपटा रख, जो अपने प्रभु को प्रातः-सायं पुकारते हैं और यह चाहते हैं कि वह उन पर प्रसन्न रहे। ऐहिक जीवन की जगमगाहट से तेरी आँखें उन लोगों से फिर न जायँ……।

१८.२८

१२९ गुरुप्रबोध-पद्धति

१ फिर हमारे दासों में से एक दास को (मूसा ने) पाया, जिस पर हमने अनुग्रह किया था और अपने पास से ज्ञान दिया था,

२ उससे मूसा ने कहा : क्या मैं तेरे साथ रहूँ, इसलिए कि जो भला मार्ग तुझे सिखाया गया है, वह तू मुझे सिखा दे ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ क़ाल इन्नक लन् तस्ततीअ मअिय सब्रन् (अ्)०

४ व कैफ़ तस्बिरु अला (य्) मा लम् तुहित् बिही खुब्रन् (अ्)०

५ क़ाल सतजिदुनी इन् शा'अ (अ्) ल्लाहु साबिरन् (अ्) व्व लां अअ्सी लक अम्रन् (अ्)०

६ क़ाल फ़ इनि (अ्) त्तबअ्तनी फ़ ला तस्अल्नी अन् शय्अिन् हत्ता (य्) उह्दिस लक मिन्हु जिक्रन् (अ्)०

१८. ६५–७०

130. १ व मा कान (अ्) ल् मु (व्) 'अ्मिनून लि यन्फ़िरू- (अ्) क़ाफ़्फ़तन् तोय फ़ लौ ला नफ़र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिन् (न्) म्मिन्हुम् ताअिफ़तु (न्) ल्लि यतफ़क़्क़हू (अ्) फ़ि (अल्) द्दीनि व लि युन्- जिरू (अ्) क़ौमहुम् इजा रजअू (अ्) इलैहिम् लअल्लहुम् यह्जरून ०

९.१२२

131. १ यां अय्युह (अ्) (अ्) ल्लजीन आमनु (व्अ्)- (अ्) त्तक़ु (व्) (अ्) (अ्) ल्लाह हक़्क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्न इल्ला व अन्तु (म्) म्मुस्लिमून०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ वह बोला : तू कदापि मेरे साथ धीरज न रख सकेगा।

४ और तू क्योंकर धीरज रखेगा ऐसी बात के सम्बन्ध में, जो तेरी समझ की परिधि में नहीं है।

५ मूसा ने कहा : यदि ईश्वर ने चाहा, तो तू अवश्य मुझे धीरज रखनेवाला पायेगा और मैं तेरी किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

६ वह बोला : फिर यदि तू मेरा अनुसरण करता है, तो मुझसे किसी बात के विषय में कोई प्रश्न न करना, जब तक मैं तेरे लिए उसके निर्देश का प्रारम्भ न करूँ।

१८.६५–७०

१३० स्वाध्याय के लिए कुछ लोग पीछे रहें

१ श्रद्धावानों के लिए उचित नहीं कि सब-के-सब कूच कर जायँ। उनके हर समुदाय में से एक भाग क्यों न कूच करे, जिससे कि शेष लोग धर्म का ज्ञान प्राप्त करें। जिससे कि ये लोग अपने समाज को, जब कि वह युद्ध से लौटकर आये, सावधान करें, जिससे कि वह समाज धर्म के विषय में सचेत रहे।

९.१२२

१३१ सज्जनों का समाज बनाओ

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो, जैसा कि करना चाहिए, और ऐसी ही स्थिति में मरो कि तुमने सम्पूर्णतया ईश्वर की शरण ली है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व(अ)अ़्तसिमू(अ)बि ह़ब्लि(अ)ल्लाहि
जमीअ़(न्)(अ)ँव्व ला तफ़र्रक़ू(अ) स्वात
व(अ)ज़्कुरू(अ)निअ़्मत(अ)ल्लाहि अ़लै-
कुम् इज् कुन्तुम् अअ़्दा‍अ़न् फ़ अल्लफ़ बैन
क़ुलूबिकुम् फ़ असूबह़्तुम् बिनिअ़्मतिही
इख़्वानन् ज व कुन्तुम् अ़ला(य्) शफ़ा हुफ़्रति-
(न्)म्मिन(अल्)न्नारि फ़ अन्क़जकु(म्)-
म्मिन्हा तोय क जालिक युबय्यिनु(अ)ल्लाहु
लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तह्तदून ०
३ वल् तकु(न्)म्मिन्कुम् उम्मतु(न्)ँय्यद्अ़ून
इल(य्)(अ)ल् ख़ैरि व यअ्मुरून बि(अ)-
ल् मअ़्रूफ़ि व यन्हौन अ़नि(अ)ल् मुन्करि तोय
व उ(व्)लाइक हुमु(अ)ल् मुफ़्लिहून ०

३.१०२–१०४

132. १ व मा मिन् दाब्बतिन् फ़ि(अ) ल् अर्ज़ि व ला
ताइरि(न्)ँय्यतीरु बि जनाहैहि इल्ला
उममुन् अम्सालुकुम् तोय......

६.३८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ और तुम सब मिलकर ईश्वर की रस्सी दृढ़ता से पकड़ो और बिखर न जाओ। तुम पर ईश्वर की जो दया है, उसे याद करो कि जब तुम परस्पर शत्रु थे, तो ईश्वर ने तुम्हारे हृदय में स्नेह डाला और अब तुम उसकी दया से भाई-भाई हो गये तथा तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे, सो तुमको ईश्वर ने उससे बचाया। इस प्रकार ईश्वर अपने संकेत तुम्हारे लिए वर्णन करता है, जिससे कि तुम मार्ग प्राप्त करो।

३ तुममें से एक समाज ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाता रहे और अच्छे कामों की आज्ञा करे और बुराई का निषेध करे। ये ही लोग हैं, जो साफल्य पानेवाले हैं।

३.१०२–१०४

१३२ **पशु-पक्षी-समाज मनुष्यवत्**

१ भूमि में चलनेवाले जो भी पशु हैं और अपने दोनों पंखों से उड़नेवाले जो भी पक्षी हैं, उनके तुम्हारे ही भाँति समाज है.....।

६.३८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

133. १ इन्नमा मसलु(अ्)ल् ह़्या (द्)त्ति(अल्)-
द्दुन्या क माअिन् अन्ज़ल्नाहु मिन (अल्)-
स्समाअि फ़(अ्)ख़्तलत बिही नबातु(अ्)ल्
अर्द़ि मिम्मा यअ्कुलु(अल्)न्नासु व(अ्)ल्
अन्आमु^{तोय} ह़त्ता (य्) इजा अख़जति(अ्)ल्
अर्ज़ु ज़ुख़्रुफ़हा व (अ्) ज़्ज़य्यनत् व ज़न्न
अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरून अ़लैहा^{ला} अताहा
अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़जअ़ल्नाहा
ह़सीदन्(अ्)क अ(न्)ल्लम् तग़्न बि(अ्)ल्
अम्सि^{तोय} क ज़ालिक नुफ़स्स़िलु (अ्)ल् आयाति
लि क़ौमि(न्)ँय्यतफ़क्करून ०

१०.२४

134. १ मसलु मा युन्फ़िक़ून फ़ी हाज़िहि (अ्)ल्
ह़्या(व)त्ति(अल्) द्दुन्या क मसलि रीह़िन्
फ़ीहा स़िर्रुन् अस़ाबत् ह़र्स क़ौमिन् ज़लमू (अ्)
अन्फ़ुसहुम् फ़अह्लकत्हु^{तोय} व मा ज़लमहुमु-
(अ्)ल्लाहु व लाकिन् अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून०

३.११७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१३ अनासक्ति

२७ संसार अनित्य

१३३ उजड़ा बगीचा

१ ऐहिक जीवन की स्थिति तो ऐसी है, मानो हमने आकाश से पानी बरसाया, फिर उससे भूमि की वनस्पति, जिसको मनुष्य और प्राणी खाते हैं, खूब घनी होकर निकली, यहाँ तक कि जब भूमि ने अपना श्रृंगार किया और प्रियदर्शिनी हुई तथा भूमिवालों ने यह विचार किया कि यह वैभव अब हमारे हाथ लगेगा, अचानक उस पर रात को या दिन को हमारी आज्ञा जा पहुँची और हमने उसे काटकर ढेर कर डाला, मानो कि कल वहाँ वह उपस्थित ही नहीं थी। इस प्रकार हम संकेतों को विस्तार से वर्णन करते हैं उन लोगों के लिए, जो विचार करते हैं।

१०.२४

१३४ फसल पर पाला

१ लोग इस ऐहिक जीवन में जो कुछ व्यय करते हैं, उसका दृष्टान्त ऐसा है, जैसे एक हवा हो, जिसमें पाला हो, वह हवा ऐसे लोगों की खेती को लग जाय, जिन्होंने अपने तईं बुरा किया था--सो उस हवा ने उसे चौपट कर डाला और ईश्वर ने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे स्वयं ही अपने पर अत्याचार करते हैं।

३.११७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

135. १ व(अ्)ड्रिब् लहु(म्)म्मसल(अ्)ल् ह्या(व)-त्नि(अल्)द्दुन्या क माअिन् अन्ज़लनाहु मिन-(अल्)स्समाअि फ़(अ्)ख़्तलत बिही नबातु-(अ्)ल् अर्द्रि फ़अस्बह् हशीमन्(अ्)तज़्रूहु-(अल्)र्रियाहु^तोय^व कान(अ्)ल्लाहु अला(य्) कुल्लि शय्अि(न्)म्मुक़्तदिरन्(अ्) o

२ अल् मालु व(अ्)ल् बनून ज़ीनतु(अ्)ल् ह्या(व्)त्नि (अल्)द्दुन्या^ज व(अ्)ल् बाक़ियातु(अल्) स्सालिहातु ख़ैरुन् अिन्द रब्बिक सवाब(न्)ँव्व ख़ैरुन् अमलन्(अ्)o

१८.४५-४६

136. १ इन्ना जअ्ल्ना मा अल (य्)(अ्)ल् अर्द्रि ज़ीनत(न्)ल्लहा लि नब्लुवहुम् अय्युहुम् अह्सनु अमलन्(अ्) o

१८.७

137. १ व मा जअल्ना लि बशरि(न्)म्मिन् क़ब्लिक (अ्)ल् खुल्द^तोय^ अ फ़(अ्)अि(न्)म्मित्त फ़ हुमु(अ्)ल् खालिदून o

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१३५ इह लोक क्षणभंगुर

१ ऐहिक जीवन का दृष्टान्त उनसे वर्णन कर जैसे हमने आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें से भूमि की वनस्पति खूब घनी हो गयी, फिर वह ऐसी चूर-चूर हो गयी कि हवाएँ उसे उड़ाये फिरती हैं। ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ सम्पत्ति और सन्तति ऐहिक जीवन की कसौटी है और शेष रहनेवाली हैं सत्कृतियाँ। तेरे प्रभु के निकट प्रतिफल में ये अधिक अच्छी हैं और आकांक्षा की दृष्टि से भी श्रेष्ठतर हैं।

१८.४५-४६

१३६ संसार की शोभा परीक्षा के लिए

१ निस्सन्देह जो कुछ भूमि के ऊपर है, उसे हमने भूमि का श्रृंगार बनाया है, जिससे कि हम लोगों की कसौटी करें कि उनमें कौन अच्छा काम करता है।

१८.७

१३७ अमर पट्टा किसीको भी नहीं

१ हमने तुझसे पूर्व किसी मनुष्य को अमरता प्रदान नहीं की, फिर क्या तू मर गया, तो क्या ये लोग सदा जीवित रहेंगे ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाअिक़तु(अ्)ल् मौति^तोय व
नब्लूकुम् बि(अ्ल्) श्शर्रि व(अ्) ल् ख़ैरि
फ़ित्नतन्^तोय व इलैना तुर्जअून O २१.३४-३५

138. १ अ तुत्रकून फ़ी मा हाहुना आमिनीन O^ला
२ फ़ी जन्नाति(न्)ँव्व अुयूनि(न्) O^ला
३ ँव्व ज़ुरूअि(न्)ँव्व नख़्लिन् तल्अुहा
हज़ीमुन् O^ज
४ व तन्हितून मिन(अ्)ल् जिबालि बुयूतन्(अ्)
फ़ारिहीन O^ज २६-१४६-१४९

139. १ व मा हाज़िहि(अ्)ल् हयातु(अ्ल्) द्दुन्या
इल्ला लह्वु(न्)ँव्व लअिबुन् ^तोय व इन्न(अ्ल्)-
द्दार(अ्)ल् आख़िरत ल हिय(अ्)ल् हयवानु^म
लौ कानू(अ्)यअ्लमून O २९.६४

140. १ ज़ुय्यिन लि(ल्)न्नासि हुब्बु(अ्ल्)श्शहवाति
मिन(अ्ल्)न्निसाअि व(अ्)ल् बनीन व(अ्)ल्
क़नातीरि(अ्)ल् मुक़न्तरति मिन(अ्ल्)-
ज़्ज़हबि व(अ्)ल् फ़िज़्ज़ति व(अ्)ल् ख़ैलि-
(अ्)ल् मुसव्वमति व (अ्)ल् अन्आमि व-
(अ्)ल् हर्सि ^तोय ज़ालिक मताअु(अ्)ल्
हयाति (अ्ल्) द्दुन्या^ज व(अ्)ल्लाहु
अिन्दहू हुस्नु(अ्)ल् मआबि O ३.१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ प्रत्येक जीव को मृत्यु चखनी है। और हम बुरी और भली स्थितियों द्वारा तुम्हारी खूब कसौटी करते हैं। फिर हमारे ही पास तुम लौटाये जाओगे।

२१.३४-३५

१३८ तू सुरक्षित है ?

१ क्या तुमको उन सबमें, जो यहाँ हैं, बेखटके छोड़ दिया जायगा ?

२ उद्यानों में, झरनों में

३ और खेतों में। खजूरों में, जिनके गुच्छे टूटे पड़ते हैं।

४ (यद्यपि तुम) पर्वतों में इतराते हुए घर तराशते (रहोगे)।

२६.१४६-१४९

१३९ ऐहिक संसार एक खेल

१ यह ऐहिक जीवन तो मनोरंजन एवं क्रीड़ा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और वास्तविकता यह है कि अन्तिम गृह ही जीवन है। अरे-अरे ! यदि ये लोग जानते !

२९.६४

१४० वासनाओं के विषय

१ वासनाओं को आकृष्ट करनेवाले विषयों के प्रेम ने लोगों को आसक्त किया है। जैसे, स्त्रियाँ, पुत्र, स्वर्ण-रजतराशि, अंकित अश्व, पशु तथा कृषि। यह ऐहिक जीवन का मूलधन है पर ईश्वर के पास ही अच्छा आश्रय है।

३.१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

141. १ व ला तमुद्दन्न अ़ैनैक इला(य्)मा मत्तअ़्ना बिही' अज़्वाज(न्अ्) स्मिन्हुम् ज़ह्रत(अ्)ल् ह़या(व्)त्ति(अ्ल्)द्दुन्या o ला लि नफ़्तिनहुम् फ़ीहि तोय व रिज़्क़ु रब्बिक ख़ैरु(न्) व्व अब्क़ा(य्) o

२०.१३१

142. १ अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव तोय व अ़ल(य्)-(अ्)ल्लाहि फ़ल् यतवक्कलि (अ्)ल् मु(व्)'अ्मिनून o

२ या अय्युह (अ्)(अ्) ल्लजीन आमनू' इन्न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्व(अ्)-ल्लकुम् फ़(अ्)ह्जरूहुम् ज व इन् तअ़्फ़ू(अ्) व तस़्फ़ह़ू(अ्) व तग़्फ़िरू(अ्) फ़ इन्न (अ्)ल्लाह ग़फ़ूरु(न्)र् रह़ीमुन् o

६४.१३-१४

143. १ इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ितनतुन् तोय व(अ्)ल्लाहु अ़िन्दहू अज्रुन्(अ्)अ़ज़ीमुन् o

२ फ़(अ्)त्तक़ु(अ्) (अ्)ल्लाह म(अ्)(अ्)स्ततअ़्तुम् व(अ्)स्मअ़ू(अ्)व अतीअ़ू(अ्)व अन्फ़िक़ू(अ्)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२८ वैराग्य

१४१ भोग-विलास की लालसा न रखो

१ और अपनी आँखें उन वस्तुओं की ओर न पसार, जो हमने उन युग्मों को ऐहिक जीवन की जगमगाहट के रूप में लाभ उठाने के लिए दे रखी हैं कि उन्हें उन वस्तुओं के द्वारा जाँचें। और तेरे प्रभु की देन अधिक हितावह एवं निरन्तर स्थायी रहनेवाली है।

२०.१३१

१४२ स्त्री-पुत्रों में शत्रु सम्भव

१ परमात्मा के अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं और श्रद्धावानों को चाहिए कि वे परमात्मा पर ही विश्वास करें।

२ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारी स्त्रियों और पुत्रों में तुम्हारे शत्रु सम्भव हैं। सो तुम उनसे बचो। और यदि तुम उनके दोषों को भूल जाओ, उनकी त्रुटियों की ओर ध्यान न दो एवं उन्हें क्षमा कर दो (तो) निस्सन्देह परमात्मा क्षमावान् करुणावान् है।

६४.१३-१४

१४३ निःस्वार्थी रहो

१ तुम्हारी सम्पत्ति एवं तुम्हारी सन्तति तुम्हारे लिए कसौटी है और ईश्वर के ही पास सर्वोत्तम पुरस्कार है।

२ तो यथासम्भव ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो और सुनो और मानो तथा उसके मार्ग में धन व्यय करो।

११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ख़ैर(न्) (अ्)ल्लि अन्फ़ुसिकुम् तोय व म(न्)-
य्यूक़ शुह्ह़ नफ़्सिही फ़ उ(व्) लाअिक
हुमु(अ्)ल् मुफ़्लिहून् o

६४.१५-१६

144. १ या अय्युह(अ्) (अ्)न्नासु इन्न वअ्द(अ्)ल्लाहि
ह़क़्क़ुन फ़ ला तग़ुर्रन्नकुमु(अ्)ल् ह़या(व्)तु-
(अ्ल्)द्दुन्या वक़्फ़: व ला यग़ुरन्नकुम् बि-
(अ्)ल्लाहि(अ्)ल् ग़रूरु o

२ इन्न(अ्ल्)श्शैतान लकुम् अ़दुव्वुन् फ़(अ्)त्तख़िज़ूहु
अ़दुव्वन्(अ्) तोय इन्नमा यद्अू(अ्) हिज़्बहू
लि यकूनू(अ्) मिन्अस्ह़ाबि(अ्ल्)स्सअ़ीरि o तोय

३५.५-६

145. १ मन् कान युरीदु ह़र्स(अ्)ल् आख़िरति नज़िद्
लहू फ़ी ह़र्सिही ज व मन् कान युरीदु ह़र्स-
(अ्ल्)द्दुन्या नु(व्)अ्तिही मिन्हा व मा
लहू फ़ि(अ्)ल् आख़िरति मि(न्)न्नसीबिन् o

४२.२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसमें तुम्हारा अपना भला है और जो लोग अपने लोभ से बचा लिये जायँ, वे ही लोग सफलता पानेवाले हैं।

६४.१५-१६

१४४ शैतान से सावधान !

१ हे लोगो, निश्चय ही ईश्वर का अभिवचन सच्चा है। सो तुम्हें ऐहिक जीवन धोखे में न डाले और कपटी शैतान ईश्वर के विषय में तुम्हें कदापि धोखा न दे।

२ निस्सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है, सो तुम भी उसे शत्रु समझो, वह अपनी टोली को इसलिए बुलाता है कि वे नारकीय आगवालों में से हो जायँ, (नरक के भागी बन जायँ)।

३५.५-६

१४५ लोक लाहु परलोक निबाहू

१ जो कोई परलोक की फसल चाहता है, हम उसे उसकी खेती में अधिक देते हैं और जो कोई इहलोक की फसल चाहता है, उसे हम इहलोक में से कुछ देते हैं। उसे परलोक में कोई भाग नहीं मिलता।

४२.२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ४

भक्त-अभक्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

146. १ इन्न(अ्)ल् मुस्लिमीन व(अ्)ल् मुस्लिमाति व(अ्)ल् मु(व्)·अ्मिनीन व(अ्)ल् मु(व्)·अ्मिनाति व(अ्)ल् क़ानितीन व(अ्)ल् क़ानिताति व(अ्ल्) स़्स़ादिक़ीन व (अ्ल्)-स़्स़ादिक़ाति व(अ्ल्)स़्स़ाबिरीन व(अ्ल्)-स़्स़ाबिराति व(अ्)ल् ख़ाशिअ़ीन व(अ्)ल् ख़ाशिआ़ति व(अ्)ल् मुतस़द्दिक़ीन व(अ्)ल् मुतस़द्दिक़ाति व(अ्ल्)स़्सा᳚ङ्म्िमीन व(अ्ल्)-स़्सा᳚ङ्म्िमाति व(अ्)ल् ह़ाफ़िज़ीन फ़ुरूजहुम् व(अ्)ल् ह़ाफ़िज़ाति व(अ्ल्) ज़्ज़ाकिरीन-(अ्)ल्लाह् कसीर(न्)(अ्)ँव्व (अ्ल्)-ज़्ज़ाकिरातिला अअ़द्द(अ्)ल्लाहु लहु(म्)-म्मग़्फ़िरत(न्)ँव्व अज्रन् अ़ज़ीमन्(अ्) ० ३३.३५

147. १ इन्न(अ्)ल् मुत्तक़ीन फ़ी जन्नाति(न्)ँव्व अ़ुयूनिन् ०ला
२ आख़िज़ीन मा आताहुम् रब्बुहुम् तोय इन्नहुम् कानू क़ब्ल ज़ालिक मुह़्सिनीन ०तोय
३ कानू क़लील(न्)म्मिन(अ्)ल्लैलि मा यह्जअ़ून ०
४ व बि(अ्)ल् अस्ह़ारिहुम् यस्तग़्फ़िरून ०
५ व फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्क़ु(न्)ल्लि(ल्)-स्सा᳚ङ्म्िलि व(अ्)ल् मह़्रूमि ० ५१.१५-१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१४ भक्त-लक्षण

२९ दशलक्षणी

१४६ दशलक्षण

१ शरणागत एवं शरणागता, श्रद्धावान् एवं श्रद्धावती, आज्ञापालक एवं आज्ञापालिका, सत्यभाषी एवं सत्यभाषिणी, धीर एवं धीरा, विनीत एवं विनीता, दाता एवं दात्री, उपवासी एवं उपवासिनी, शीलरक्षक एवं शीलरक्षिका तथा ईशस्मरणशील एवं ईश-स्मरणशीला—इनके लिए ईश्वर ने क्षमा एवं महान् पुण्यफल सन्नद्ध कर रखा है।

३३.३५

३० प्रार्थनावान्

१४७ जामिनि जार्गाहि योगी

१ निस्सन्देह ईश्वर-कर्म-परायण व्यक्ति स्वर्ग के उद्यानों एवं निर्झरों में निवास करेंगे।

२ उनका प्रभु उन्हें जो देगा, सो लेते रहेंगे। वे इससे पूर्व सदाचारी थे।

३ वे रात को बहुत थोड़ा सोते थे

४ और पिछली रात में अपने पापों के लिए क्षमा माँगते थे

५ और उनकी सम्पत्ति में भिक्षुकों एवं सर्वहाराओं का अधिकार था।

५१.१५–१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

148. १ इन्नमा यु(व्)अ्मिनु बि आयातिन(अ्) (अ्)-ल्लज़ीन इज़ा ज़ुक्किरू(अ्) बिहा ख़र्रू(अ्) सुज्जद(न् अ्)ँव्व सब्बहू(अ्) बि ह़म्दि रब्बि-हिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून ०[अल्सज्द:]

२ ततजाफ़ा(य्) जुनूबुहुम् अ़नि(अ्)ल् मज़ाजिअ़ि यद्अ़ून रब्बहुम् ख़ौफ़(न्)ँव्व तमअ़(न्)ँव्व मिम्मा रज़क्नाहुम् युन्फ़िक़ून ०

३ फ़ ला तअ़्लमु नफ़्सु(न्)म्मा उख़्फ़िय लहु(म्)-म्मिन् क़ुर्रति अअ़्युनिन् जज़ाअ(न्)म् बि मा कानू (अ्) यअ़्मलून ०

३२.१५-१७

149. १ तराहुम् रुक्कअ़न्(अ्) सुज्जद(न् अ्)-ँय्यब्तग़ून फ़ज़्ल(न् अ्)म्मिन(अ्)ल्लाहि व रिद़्वानन्(अ्) सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहि(म्)-म्मिन् असरि(अ्ल्)स्सुजूदि[तोय] ज़ालिक मसलु-हुम् फ़ि (अ्ल्)त्तौराति[जस्वली] व मसलुहुम् फ़ि(अ्)ल् इंजीलि[जक़ह] क ज़र्अ़िन् अख़रज शत्अहू फ़ आज़रहू फ़(अ्)स्तग़्लज फ़-(अ्)स्तवा (य्)अ़ला (य्) सूक़िहि युअ़्जिबु-(अ्ल्) ज़्ज़ुर्राअ़.......

४८.२९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१४८ बिस्तर से पीठ नहीं छूती

१ हमारे वचनों को वही मानते हैं कि जब उन्हें उन वचनों के द्वारा समझाया जाता है, तो वे प्रणिपात में गिर पड़ते हैं और अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसका स्मरण करते हैं और घमण्ड नहीं करते।

२ उनकी करवटें बिछौने से छूती नहीं। अपने प्रभु को भय एवं आशा के साथ पुकारते हैं और हमारा दिया हुआ हमारे मार्ग में व्यय करते हैं।

३ और कोई नहीं जानता कि उनके लिए उनको प्रसन्नता देनेवाली क्या-क्या वस्तुएँ छिपा रखी गयी हैं। यह प्रतिफल है उनकी कृतियों का।

३२.१५–१७

१४९ माथे पर घट्ठे

१ ……तू देखेगा उनको प्रणाम करते हुए, प्रणिपात करते हुए, ईश्वर का कृपा-वैभव एवं उसकी प्रसन्नता ढूँढ़ते हुए। उनकी पहचान उनके माथे पर प्रणिपात के घट्ठे हैं। यही है उनका दृष्टान्त तौरात में और यही है उनका दृष्टान्त बाइबिल में। जैसे कि खेती ने अपना अँखुआ निकाला, फिर उसको मजबूत किया, फिर मोटा हुआ और अपने तने पर ऐसा सीधा खड़ा हो गया कि किसानों को प्रसन्न करने लगा……।

४८.२९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

150. १ इन्नम(अ् अ्)ल् मु(व्)अ्र मिनून(अ्) ल्लजीन इजा जुकिर(अ्) ल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इजा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू जादत्हुम् ईमान (न्)(अ्)ँव्व अ़ला(य्)रब्बिहिम् यतवक्कलून O^जला ८.२

151. १ ....व बश्शिरिल् मुख़्बितीन O^ला
२ (अ्)ल्लजीन इजा जुकिर(अ्)ल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व (अ्ल्) स्साबिरीन अ़ला(य्) मा असाबहुम् व (अ्)ल् मुक़ीमि(य्) (अ्ल्)-स्सला(व्) त्रि^ला व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ूनO २२.३४-३५

152. १ तबारक(अ्)ल्लजी जअ़ल फ़ि(अ्ल्)स्समाअि बुरूज(न्)(अ्)ँव्व जअ़ल फ़ीहा सिराज(न्)ँव्व क़मर(न्)(अ्)म्मुनीरन्(अ्)O
२ व हुव(अ्)ल्लजी जअ़ल (अ्) ल्लैल व (अ्ल्)न्नहार ख़िल्फ़त्न(न्)ल्लि मन अराद अ(न्)ँय्यज़्जक्कर औ अराद शुकूरन्O
३ व अ़िबादु (अ्ल्)र् रह्मानि (अ्)ल्लजीन यम्शून अ़ल(य्) (अ्)ल् अर्ज़ि हौन(न्अ्)ँव्व इजा ख़ातबहुमु (अ्)ल् जाहिलून क़ालू (अ्) सलामन् (अ्)O

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१५० कम्पित-हृदय

१ श्रद्धावान् वे ही हैं कि जब ईश्वर का वर्णन किया जाता है, तो उनके हृदय कम्पित होते हैं और जब उनके सम्मुख उसके वचन पढ़े जाते हैं, तो वे वचन उनकी श्रद्धा बढ़ाते हैं और वे अपने प्रभु पर विश्वास रखते हैं।

८.२

१५१ विनम्र

१ ......शुभ सन्देश दे उन विनम्रों को।

२ कि जिनके हृदय कम्पित हो उठते हैं, जब ईश्वर का वर्णन किया जाता है। जो आ पड़नेवाले संकट में धीरज रखते हैं और जो नित्य-नियत प्रार्थना करते हैं और हमारे दिये में से हमारे मार्ग में व्यय करते हैं।

२२.३४-३५

१५२ कृपालु के दास

१ मंगलप्रद है वह, जिसने आकाश में राशि-चक्र बनाये और उसमें एक प्रचण्ड दीप एवं प्रकाशमान चन्द्र बनाया,

२ और वही है, जिसने अदलते-बदलते आगे-पीछे आनेवाले रात और दिन बनाये, ये सब उनके लिए संकेत हैं, जो सोचना चाहते हैं और कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं।

३ और कृपालु के दास वे हैं, जो भूमि पर नम्रता से चलते हैं और जब बेसमझ लोग उनसे बातें करते हैं, तो कहते हैं : 'भाई सलाम !'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ व (अ्)ल्लजीन यबीतून लि रब्बिहिम् सुज्जद (न्अ्)ँव्व क़ियामन्O

२५.६१-६४

153. १ व मिन (अ्ल्) न्नासि म (न्)ँय्यश्री नफ़्सहु (अ्)-ब्तिग़ाअ मर्ज़ाति (अ्) ल्लाहि^तोय व (अ्) ल्लाहु रऊफ़ु (न्) म् बिल् अ़िबादिO

२.२०७

154. १ इन्न (अ्) ल्लजीन आमनू व हाजरू (अ्) व जाहदू (अ्) बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि व (अ्) ल्लजीन आवौ (अ्) व्व नसरू (अ्) उ (व्) लाअिक बअ़्दुहुम् औलियाअु बअ़्दिन्^तोय......

८.७२

155. १ अला इन्न औलियाअ (अ्) ल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून O^ज्

२ अल्लजीन आमनू (अ्) व कानू (अ्) यत्तक़ून O^तोय

३ लहुमु (अ्) ल् बुश्रा (य्) फ़ि (अ्) ल् हयाति (व्) त्ति (अ्ल्) द्दुन्या व फ़ि (य्) (अ्) ल् आख़िरति^तोय ला तब्दील लि कलिमाति (अ्) ल्लाहि^तोय ज़ालिक हुव (अ्) ल् फ़ौज़ु (अ्) ल् अ़ज़ीमु O^तोय

१०.६२-६४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ जो लोग अपने प्रभु के समक्ष प्रणिपात में और खड़े-खड़े रात्रि बिताते हैं।

२५.६१–६४

३१ निष्ठावान्

१५३ मच्चित्ताः मद्गतप्राणाः

१ लोगों में ऐसे भी हैं, जो ईश्वर की प्रसन्नता के लिए अपने प्राणों को बेच डालते हैं। ईश्वर अपने दासों पर बहुत स्नेह करनेवाला है।

२.२०७

१५४ अन्योन्य मित्र

१ निस्सन्देह जो लोग श्रद्धा रखते हैं, जिन्होंने अपनी जन्मभूमि छोड़ी और तन-मन-धन से ईश्वर के मार्ग में जूझते रहे तथा जिन लोगों ने उन्हें आश्रय दिया और सहायता की, ये लोग अन्योन्य मित्र हैं……।

८.७२

१५५ परमात्मा के मित्र

१ स्मरण रखो, जो परमात्मा के मित्र हैं, उनको न भय है, न शोक।

२ ये वे लोग हैं, जो श्रद्धा रखते हैं और संयम से रहते हैं।

३ उनके लिए इहलोक के जीवन में और परलोक के जीवन में शुभ सन्देश है। परमात्मा की बातें परिवर्तित नहीं होतीं।

१०.६२–६४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

156. १ ला तजिदु क़ौम (न्)ँय्यु(व्)अ्मिनून बि
(अ्)ल्लाहि व (अ्)ल् यौमि(अ्)ल् आख़िरि
युवाद्दून मन् ह़ाद्द(अ्)ल्लाह व रसूलहू व लौ
कानू (अ्) आबाअहुम् औ अब्नाअहुम् औ
इख़्वानहुम् औ अ़शीरतहुम्^तोय उ(व्)लाअि क
कतब फ़ी क़ुलूबिहिमु(अ्)ल् ईमान व
अय्यदहुम् बि रूह़ि(न्)म्मिन्हु^तोय व युद्ख़िलुहुम्
जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिह(अ्) (अ्)ल्
अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा^तोय रद़िय(अ्)ल्लाहु
अ़न्हुम् व रद़ू(अ्)अ़न्हु^तोय उ(व्)लाअिक
ह़िज़्बु (अ्) ल्लाहि^तोय अला इन्न ह़िज़्ब-
(अ्)ल्लाहि हुमु(अ्)ल् मुफ़्लिहून०

५८.२२

157. १ या अय्युह(अ्)ल्लज़ीन आमनु(व्अ्) (अ्)स्त-
अ़ीनू(अ्) बि(अ्ल्)स़्स़ब्रि व (अ्ल्)-
स़्स़लाति^तोय इन्न (अ्)ल्लाह मअ़(अ्ल्)स़्स़ा-
बिरीन ०

२ व ला तक़ूलू(अ्)लि म(न्)ँय्युक़्तलु फ़ी
सबीलि(अ्) ल्लाहि अम्वातुन्^तोय बल् अह़्या-
अु(न्)ँव्व लाकि(न्)ल्ला तश्अ़ुरून ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१५६ ईश्वर की भक्त-मण्डली

१ तू न पायेगा ऐसे लोगों को, जो ईश्वर एवं अन्तिम दिन पर श्रद्धा रखते हुए उन लोगों से मित्रता रखते हों, जो ईश्वर एवं उसके प्रेषित के विरोधी हैं, फिर भले ही वे उनके पिता हों, पुत्र हों, भाई हों या उनके कुटुम्बी हों। ये ही लोग हैं, जिनके मन में ईश्वर ने श्रद्धा लिख दी है और अपने दातृत्व से जिनकी सहायता की है। वह उन्हें ऐसी वाटिकाओं में प्रविष्ट करेगा, जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी। वे उनमें नित्य रहेंगे। ईश्वर उनसे प्रसन्न और वे उससे प्रसन्न। यह ईश्वर की भक्त-मण्डली है, खूब सुन लो, ईश्वर की मण्डली ही सफलता प्राप्त करनेवाली है।

५८.२२

३२ धैर्यवान्

१५७ सहनशील

१ हे श्रद्धावानो ! धीरज से और प्रार्थना के साथ ईश्वर से सहायता चाहो, निस्सन्देह ईश्वर धीरज रखनेवालों के साथ है।

२ और जो ईश्वर के मार्ग में मारे जाते हैं, उनको मरा हुआ न कहो, अपितु वे जीवित हैं। पर तुम नहीं समझते।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व ल नब्लुवन्नकुम् बि शय्ञि(न्)म्मिन(अ्)ल्
ख़ौफ़ि व(अ्)ल् जूञि व नक़्सि(न्)म्मिन(अ्)-
ल् अम्वालि व(अ्)ल् अन्फ़ुसि व (अ्ल्)-
स्समराति^तोय^ व बश्शिरि(अ्ल्)स्साबिरीन०^ला^
४ (अ्)ल्लज़ीन इज़ा असाबत्हु(म्)म्मुसीबतुन्^ला^
क़ालू(अ्) इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि
राजिऊन ०^तोय^
५ उ(व्)लाञिक अ़लैहिम् सलवातु(न्)म्मि(न्)
र्रब्बिहिम् व रह्मतुन्^क़फ़^ व उ(व्)लाञिक
हुमु (अ्)ल् मुह्तदून ०

२.१५३–१५७

158. १ व सारिञू इला(य्)मग़्फ़िरति(न्)म्मि(न्)-
र्रब्बिकुम् व जन्नति(न्) अ़र्दुह(अ्ल्)-
स्समावातु व (अ्)ल् अर्दु^ला^ उञिद्दत् लिल्
मुत्तक़ीन ०^ला^
२ (अ्)ल्लज़ीन युन्फ़िक़ून फ़ि(अ्ल्)स्सर्राञि
व (अ्ल्)द्दर्राञि व(अ्)ल् काज़िमीन(अ्)ल्
ग़ैज़ व (अ्)ल् आफ़ीन अ़नि(अ्ल्)न्नासि^तोय^ व
(अ्)ल्लाहु युहिब्बु(अ्)ल् मुह्सिनीन ०^ज^

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ और हम तुम्हारी कसौटी अवश्य करेंगे, कुछ भय द्वारा, कुछ क्षुधा द्वारा और कुछ धन, प्राण और फलों की हानि द्वारा। शुभ सन्देश सुना दे धीरज रखनेवालों को––

४ कि जब उन्हें कुछ कष्ट पहुँचे, तो कहें कि हम तो ईश्वर के ही हैं, और हम उसीकी ओर लौटकर जानेवाले हैं।

५ ऐसे लोगों पर उनके प्रभु की ओर से दया है और कृपा है और ये ही लोग ठीक रास्ते पर हैं।

२.१५३–१५७

३३ अहिंसक

१५८ क्षमाशील

१ अपने प्रभु की क्षमा की ओर दौड़ो, तथा स्वर्ग की ओर, जिसकी व्यापकता में आकाश एवं भूमि समाविष्ट है, जो सन्नद्ध रखा गया है, पाप से बचनेवालों के लिए।

२ (वे) सम्पन्नता एवं विपन्नता में हमारे मार्ग में व्यय करते हैं, क्रोध पी जाते हैं और लोगों के दोषों की ओर ध्यान नहीं देते––और ईश्वर सत्कृति करनेवालों पर प्रेम करता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व (अ्)ल्लज़ीन इज़ा फ़अ़लू(अ्) फ़ाहि़शतन्
औ ज़लमू (अ्)अन्फ़ुसहुम् ज़करु(व्अ् अ्)ल्लाह
फ़(अ्)स्तग़्फ़रू (अ्)लि ज़ुनूबिहिम्स्वात् व म(न्)-
य्यग़्फ़िरु(अ्ल्)ज़्ज़ुनूब इल्ल(अ्)ल्लाहुस्वातक़ फ़
व लम् युस़िर्रू(अ्) अ़ला(य्)मा फ़अ़लू(अ्)
व हुम् यअ़्लमूनO
४ उ(व)लाइक जज़ा(व्)ऊहु(म्)म्मग़्फ़िरतु-
(न्)म्मि(न्)र्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन्
तह़्तिह(अ्)(अ्)ल् अन्हारु ख़ालिदीन
फ़ीहातौय़ व निअ़्म अज्रु(अ्)ल् अ़ामिलीनOतौय़
३.१३३–१३६

159. १ व युत्अ़िमून(अ्ल्)त्तअ़ाम अ़ला(य्)हुब्बिहीं
मिस्कीन(न्अ्)ँव्व यतीम (न्अ्)ँव्व असीरन्O
२ इन्न मा नुत्अ़िमुकुम् लि वज्हि(अ्)ल्लाहि ला
नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअ(न्)ँव्व ला शुकूरन्(अ्)O
३ इन्ना नख़ाफ़ु मि(न्)र्रब्बिना यौमन्(अ्)
अ़बूसन्(अ्) क़म्तरीरन्O
४ फ़ वक़ाहुमु(अ्)ल्लाहु शर्र ज़ालिक
(अ्)ल् यौमि व लक़्क़ाहुम् नद़्रत(न्)ँव्व
सुरूरन् (अ्) Oज

७६.८–११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ और उन लोगों पर, जो जब घृणास्पद कर्म करते हैं या अपने ऊपर अत्याचार करते हैं, तो उन्हें ईश्वर याद आता है, और (वे) अपने पापों की क्षमा माँगते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त कौन है, जो पापों को क्षमा करे और जान-बूझकर वे अपने किये पर हठ नहीं करते--

४ ये ही लोग हैं, जिनका प्रतिफल उनके प्रभु की ओर से क्षमा है और उद्यान हैं, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं। ये लोग नित्य उनमें रहेंगे। कर्मठ लोगों के लिए यह क्या ही उत्तम पुरस्कार है !

३.१३३–१३६

१५९ दातार

१ ईश्वर के प्रेम के लिए वे वञ्चितों, अनाथों तथा बन्दियों को भोजन कराते हैं।

२ केवल ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही वे खिलाते हैं, (कहते हैं) हम तुमसे न कोई प्रतिफल चाहते, न कृतज्ञता।

३ हम अपने प्रभु का भय रखते हैं और भय रखते हैं मुँह बनानेवाले और त्योरी चढ़ानेवाले दिन का।

४ अतः ईश्वर ने उन्हें उस दिन के संकट से बचा लिया और उन्हें स्फूर्ति एवं आनन्द देकर सहायता दी।

७६.८–११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

160. १ व(अ्)ल्लजीन यज्तनिबून कबाअिर(अ्)ल्
इस्मि व(अ्)ल् फ़वाहिश व इजा मा ग़द्बिू-
(अ्) हुम् यग़्फ़िरूनO[ज]

२ व(अ्)ल्लजीन(अ्)स्तजाबू(अ्)लि रब्बिहिम्
व अक़ामु(अ्) (अल्)स्सला (व्)त [स्वात्] व
अम्रुहुम् शूरा(य्) बैनहुम् [स्वात] व मिम्मा
रज़क्नाहुम् युन्फ़िक़ूनO[ज]

४२.३७-३८

161. १ व (अ्)ल्लजीन यसिलून मा अमर (अ्)ल्लाहु
बिही अ(न्)य्यूसल व यख़्शौन रब्बहुम् व
यख़ाफ़ून सू·अ(अ्)ल् हिसाबि O[जीय]

२ व (अ्)ल्लजीन सबरु(अ्) (अ्)ब्तिग़ा·अ
वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामु (अ्) (अल्)-
स्सला(व्) त व अन्फ़क़ू(अ्) मिम्मा रज़क्ना-
हुम् सिर्र(न्) (अ्)ँव्व अलानियत(न्)ँव्व
यद्र·ऊन बि(अ्)ल् हसनति(अल्)स्सय्यि·अत
उ(व्)ला·अिक लहुम् ·उक़्ब(य्) (अल्)-
द्दारि O[ला]

१३.२१–२२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

१६० अन्योन्य विमर्शकारी

१ जो लोग दोषों एवं घृणास्पद कर्मों से बचते हैं, जब उन्हें क्रोध आता है, तो क्षमा करते हैं।

२ और जिन लोगों ने अपने प्रभु की आज्ञा मानी तथा नित्य-नियमित प्रार्थना की, उनका कार्य परस्पर विमर्श से होता है और वे हमारे मार्ग में उसमें से व्यय करते हैं, जो हमने उन्हें दिया है।

४२.३७–३८

१६१ जोड़नेवाले

१ और वे लोग जो जोड़ते हैं उसको, जिसके जोड़ने की ईश्वर ने आज्ञा दी है और अपने प्रभु से डरते हैं और हानिकर लेखे-जोखे की चिन्ता रखते हैं।

२ और अपने प्रभु की प्रसन्नता चाहने के लिए धीरज रखते हैं तथा नित्य-नियमित प्रार्थना करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है, उसमें से हमारे मार्ग में प्रकट या अप्रकट व्यय करते हैं तथा अच्छाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। ये ही लोग हैं, जिनके लिए सद्गति है।

१३.२१-२२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

162. १ इन्न अ़िबादी लैस लक अ़लैहिम् सुलतानुन्(अ्) इल्ला मनि(अ्)त्तबअ़क मिन(अ्)ल् ग़ावीन ०

१५.४२

163. १ अल्लजीन यह़्मिलून(अ्)ल् अ़र्श व मन् ह़ौलहु युसब्बिहून बि ह़म्दि रब्बिहिम् व यु(व्)अ्मिनून बिह़ी व यस्तग़्फ़िरून लिल्लजीन आमनू(अ)ज रब्बना वसिअ़्त कुल्ल शय्अि(न्)र्रह़्मत-(न्)ँव्व अ़िल्मन् फ़(अ्) ग़्फ़िर् लिल्लजीन ताबू(अ्)व (अ्)त्तबअू(अ्)सबीलक वक़िहिम् अ़जाब(अ्)ल् जह़ीमि०

२ रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अ़द्नि-निल्लती वअ़(द्)त्तहुम् व मन् सलह़ मिन् आबाअिहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्याति-हिम्तोय इन्नक अन्त(अ्)ल् अ़ज़ीज़ु(अ्)ल् ह़कीमु ०ला

३ वक़िहिमु(अ्ल्)स्सय्यिआतितोय व मन् तक़ि-(अ्ल्)स्सय्यिआति यौमअिजिन् फ़ क़द् रह़िम्तहु तोय व जालिक हुव(अ्) ल्फ़ौज़ु(अ्)ल् अ़जीमु ०

४०.७–९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३४ भक्तों को आशीर्वाद

१६२ शैतान का बस भक्तों पर नहीं चलेगा

१ (हे शैतान !) निस्सन्देह जो मेरे दास हैं, उन पर तेरा कुछ भी बस नहीं चलेगा। (वह) उन भ्रमितों पर चलेगा जो तेरे मार्ग पर चलें।

१५.४२

१६३ देवदूतों की भक्तों के लिए प्रार्थना

१ जो देवदूत ईश्वर का सिंहासन उठा रहे हैं और जो उनके इर्द-गिर्द हैं, वे अपने प्रभु का जप करते हैं और उसका स्तवन करते हैं, और उस पर दृढ़ श्रद्धा रखते हैं और श्रद्धावानों के लिए प्रभु की क्षमा माँगते हैं कि हे प्रभो ! तेरी करुणा और तेरे ज्ञान ने प्रत्येक वस्तु को व्याप लिया है। तो जो लोग पश्चात्ताप करें तथा तेरे मार्ग पर चलें, उनको क्षमा कर और उन्हें नरक के दण्ड से बचा।

२ हे प्रभो ! उनको नित्य रहने के स्वर्ग में, जिनका तूने उन्हें वचन दिया है, प्रविष्ट कर और उनके पितरों, पत्नियों एवं सन्तति में से जो सत्कृतिवान् हों, उन्हें भी उसमें प्रविष्ट कर। निश्चय ही तू सर्वशक्तिमान्, सर्वविद् है।

३ और उन्हें दुष्कृत्यों से बचा। और जिसे तू दुष्कृत्यों से उस दिन बचा ले, उस पर तूने बहुत बड़ी कृपा की। और यही बड़ी विजय है।

४०.७–९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

164. १ सुम्म क़सत् क़ुलूबुकु (म्) म्मि (न्) म्बअ़्दि जालिक फ़ हिय क (अ्) ल् हि़जारत्नि औ अशद्दु क़स्वतु़न्तोय व इन्न मिनल् हि़जारत्नि ल मा यतफ़ज्जरु मिन्हु (अ्) ल् अन्हारु तोय व इन्न मिन्हा ल मा यश्शक़्क़क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हु (अ्) ल् मा·अुतोय व इन्न मिन्हा ल मा यह्बितु मिन् ख़श्यति-(अ्) ल्लाहितोय......

२.७४

165. १ व लौ फ़तह़्ना अ़लैहिम् बाब (न्) म्मिन (अ्ल्)-स्समाअ्इ फ़ ज़ल्लू (अ्) फ़ीहि यअ़्रुजून ० ला

२ ल क़ालू (अ्) इन्न मा सुक्किरत् अब्स़ारुना बल् नह़्नु क़ौमु (न्) म्मस्ह़ूरून ०

१५.१४–१५

166. १ इन्नहु फ़क्कर व क़द्दर ०ला

२ फ़ क़ुतिल कैफ़ क़द्दर ०ला

३ सुम्म क़ुतिल कैफ़ क़द्दर ०ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१५ अभक्त

३५ नास्तिकाः

१६४ पाषाण से भी कठोर

१ इस पर भी (ईश्वर के संकेत देखने के पश्चात् भी) फिर तुम्हारे मन पत्थर के समान अथवा उससे भी कठोर हो गये। वास्तव में पत्थरों में तो ऐसे भी हैं, जिनसे निर्झर फूट निकलते हैं और उनमें कुछ ऐसे हैं, जो फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलता है। और उनमें से ऐसे भी हैं कि ईश्वर के भय से गिर पड़ते हैं।........

२.७४

१६५ अविश्वास की परिसीमा

१ यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल दें और वे दिन-दहाड़े उसमें चढ़ने लगें।

२ तब भी यही कहेंगे कि हमारी दृष्टि बाँध दी गयी है। अपितु हम लोगों पर तो जादू कर दिया गया है।

१५.१४-१५

१६६ डाँवाडोल

१ उसने सोचा और अटकल दौड़ायी।

२ उसका नाश हो, कैसी अटकल दौड़ायी।

३ फिर उसका नाश हो--कैसी अटकल दौड़ायी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ सुम्म नज़र ०ला
५ सुम्म अ़बस व बसर ०ला
६ सुम्म अद्बर व (अ्) स्तक्बर ०ला
७ फ़ क़ाल इन् हाज़ा इल्ला सिह़्रु (न्)-ँय्यु (व्) ·अ्सरु ०ला

७४.१८–२४

167. १ वक़ालू (अ्) ल (न्) न्नु (व्) ·अ्मिन लक हत्ता (य्) तफ़्जुर लना मिन (अ्) ल् अरद़ि यंबूअ़न् (अ्) ०ला
२ औ तकून लक जन्नतु (म्) म्मि (न्) न्नख़ीलि (न्) ँव्व अ़िनबिन् फ़ तुफ़ज्जिर (अ्) ल् अन्हार ख़िलालहा तफ़्जीरन् (अ्) ०ला
३ औ तुस्क़ित (अ्ल्) स्समा·अ क मा ज़अ़म्त अ़लैना किसफ़न् औ तअ्तिय बि (अ्) ल्लाहि व (अ्) ल् मला·अिकति क़बीलन् ०ला
४ औ यकून लक बैतु (न्) म्मिन् ज़ुख़्रुफ़िन् औ तर्क़ा फ़ि (अ्ल्) स्समा·अितोय व ल (न्) न्नु·अ्मिनु लि रुक़िय्यिक हत्ता (य्) तुनज़्ज़िल अ़लैना किताब (न्) न्नक़्र (व्) ·अुहुतोय क़ुल् सुब्ह़ान रब्बी हल् कुन्तु इल्ला बशर (न्अ्) र्-रसूलन् (अ्) ०

१७.९०–९३

168. १ व मिन (अ्ल्) न्नासि म (न्) ँय्युजादिलु फ़ि-(अ्) ल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मि (न्) ँव्व ला हुद-(न्) (य्) ँव्व ला किताबि (न्) म्मुनीरिन् ०ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ फिर विचार किया ।
५ फिर त्यौरी चढ़ायी और मुँह बनाया ।
६ फिर पीठ फेरी और घमण्ड किया ।
७ फिर बोला : यह तो केवल जादू है, जो (पहले से) चला आता है ।

७४.१८–२४

१६७ चमत्कार दिखाओ

१ वे बोले : हम तेरा कहना कदापि न मानेंगे, जब तक तू हमारे लिए भूमि से एक स्रोत प्रवाहित न कर दे ।
२ या तेरा खजूरों का और अंगूरों का एक बाग हो । फिर उसके बीच-बीच में तू नदियाँ प्रवाहित कर दे ।
३ या तू हम पर आकाश टुकड़े-टुकड़े (कराके) गिरा दे, जैसे कि तू कहा करता है या ईश्वर को या देवदूतों को हमारे सामने ले आ ।
४ या तेरे लिए एक स्वर्ण-भवन हो या तू आकाश पर चढ़ जा, और तेरे चढ़ने का भी हम विश्वास न करेंगे, जब तक तू हम पर एक ग्रन्थ उतार न लाये, जिसे हम पढ़ें । तू कह : पवित्र है मेरा प्रभु, मैं एक मानव हूँ—सन्देश पहुँचानेवाला ।

१७.९०–९३

१६८ वितण्डवादी नास्तिक एवं तथाकथित आस्तिक

१ कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे परमात्मा के विषय में झगड़ते रहते हैं—बिना किसी ज्ञान के, बिना मार्ग-दर्शन के, या बिना किसी ऐसे ग्रन्थ के, जो प्रकाश दे—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ सानिय अितूफ़िहटी लि युद़िल्ल अन् सबीलि (अ्)ल्लाहितोय लहू फ़ि(य्)(अ्ल्) द्दुन्या खिज़्यु(न्)ँव्व नुज़ीक़ुहू यौम(अ्)ल् क़ियामति अज़ाब(अ्)ल् हूरीक़ि O

३ व मिन(अ्ल्)न्नासि म(न्)ँय्यअ़्बुदु(अ्)ल्लाह अ़ला (य्) हूर्फ़ि(न्)ज फ़ इन असाबहू खैरुनि(अ्)तूमअन्न बिहटी व इन् असाबत्हु फ़ित्नत्नुनि(अ्)न्क़लब अ़ला(य्)वज्हिहटीक़िफ़ ख़सिर(अ्ल्)द्दुन्या व(अ्)ल्आखिरत्नतोय ज़ालिक हुव (अ्)ल् खुस्रानु(अ्)ल् मुबीनु O

२२.८, ९, ११

169. १ मसलुहुम् क मस्लि(अ्)ल्लज़ि(य्) (अ्)स्तौक़द नारन्(अ्)ज फ़ लम्मा अद़ाअत् मा हौलहू जहब(अ्)ल्लाहु बि नूरिहिम् व तरकहुम् फ़ी ज़ुलुमाति(न्)ल्ला युब्सिरून O

२ सुम्मु(न्)म्बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिअ़ून Oला

३ औ क सय्यिबि(न्)म्मिन (अ्ल्)स्समाअि फ़ीहि ज़ुलुमातु (न्)ँव्व रअ़्दु(न्)ँ व्व बर्क़ुन् ज यज्अ़लून असाबिअहुम् फ़ी आज़ानिहि (म्)म्मिन (अ्ल्) स्सवाअिकि हूज़र(अ्)ल् मौतितोयव (अ्)ल्लाहु मुहीतु-(न्)म् बि(अ्)ल् काफ़िरीनO

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ ——घमण्ड के साथ, जिससे कि परमात्मा के मार्ग से लोगों को च्युत करें। ऐसे मनुष्य के लिए इस जगत् में अपकीर्ति है और हम उसे पुनरुत्थान के दिन जलती आग का दण्ड भुगतायेंगे।

....

३ और कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो सीमा-रेखा पर (रहकर) परमात्मा की भक्ति करते हैं। फिर यदि उन्हें लाभ पहुँचा, तो उस भक्ति पर स्थिर हुए और यदि उन पर कोई कसौटी आ पड़ी, तो उलटे फिर गये। उसने इहलोक एवं परलोक दोनों गँवाये। यही स्पष्ट हानि है।

२२.८,९,११

१६९ अविश्वासी की उपमा

१ उनका दृष्टान्त उस मनुष्य का-सा है, जिसने आग जलायी, फिर जब आग ने उसके परिसर को प्रज्वलित किया, तो ईश्वर उनका प्रकाश ले गया और उनको अँधेरे में छोड़ दिया कि वे कुछ नहीं देखते।

२ बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो वे नहीं पलटेंगे।

३ या उनका दृष्टान्त ऐसा है, जैसे आकाश से जोर की वर्षा हो रही है, उसमें अन्धकार है और मेघों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक है। वे कड़क के मारे मृत्यु के डर से अपने कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते हैं और ईश्वर श्रद्धाहीनों को घेरे हुए है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ यकादु(अ्)ल् बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सारहुम् तोय कुल्लमा अद्वाॳ लहु(म्)म्मशौ(अ्)फ़ीहि क़ूला व इजा अज़्लम् ॳलैहिम् क़ामू(अ्) तोय व लौ शाॳ(अ्)ल्लाहु लजहब बि सम्ॳिहिम् व अब्सारिहिम् तोय इन्न(अ्)ल्लाह ॳला(य्)कुल्लि शय्ॳिन् क़दीरुन् O

२.१७–२०

170. १ व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यत्नि(न्)म्मि(न्)-न्नजीरिन् इल्ला क़ाल मुत्रफ़ूहा ला इन्ना बि मा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरूनO

२ व क़ालू(अ्) नह्नु अक्सरु अम्वाल(न्)ँव्व औलाद (न्अ्) ला ँव्व मा नह्नु बि मुॳज्जबीनO

३४.३४–३५

171. १ व इजा क़ील लहुम् आमिनू(अ्)कमा आमन (अ्ल्)न्नासु क़ालू(अ्)अनु(व्)ॳमिनु क मा आमन(अ्ल्)स्सुफ़हाॳु तोय अला इन्नहुम् हुमु-(अ्ल्)स्सुफ़हाॳु व लाकि(न्)ल्ला यॳलमूनO

२.१३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ ऐसा लगता है कि विद्युत् उनकी दृष्टि छीन ले जाय। जब वह उन पर चमकती है, तो उसके प्रकाश में वे चलने लगते हैं और जब उन पर अन्धकार करती है, तो वे खड़े हो जाते हैं और यदि ईश्वर चाहे तो उनकी दर्शन-शक्ति एवं श्रवण-शक्ति ले जाय। निस्सन्देह ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२.१७–२०

३६ भ्रान्तचित्त

१७० श्रीमान् नहीं मानते

१ हमने किसी बस्ती में कोई सावधान करनेवाला भेजा, तो वहाँ के श्रीमानों ने यही कहा कि जिस वस्तु के साथ तुम भेजे गये हो, उसे हम नहीं मानते।

२ और उन्होंने कहा : हम सम्पत्ति एवं सन्तति में अधिक हैं और हमें कोई दण्ड नहीं होगा।

३४.३४-३५

१७१ "श्रद्धा रखना मूर्खों का काम !"

१ जब उनसे कहा जाता है कि श्रद्धा रखो, जिस प्रकार अन्य लोगों ने श्रद्धा रखी, तो कहते हैं : क्या हम श्रद्धा रखें, जिस प्रकार कि मूर्खों ने श्रद्धा रखी। समझ लो, वास्तव में वे ही मूर्ख हैं, किन्तु वे जानते नहीं।

२.१३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

172. १ अ फ़ र·अैत मनि (अ्) त्तख़ज इलाहहू हवाहु व अज़ल्लहु (अ्) ल्लाहु अ़ला (य्) अ़िल्मि (न्) ँव्व ख़तम अ़ला (य्) सम्अ़िही व क़ल्बिही व जअ़ल अ़ला (य्) बस़रिही ग़िशावतन् तोय फ़ म (न्)-ँय्यह्दीहि मि (न्) म्बअ़्दि (अ्) ल्लाहि तोय अ फ़ ला तजक्करून O

२ व क़ालू (अ्) मा हिय इल्ला ह़यातुन (अ्) द्दुन्या नमूतु व नह़्या व मा युह्लिकुना इल्ल (अ्) (अल्) दहरु ज ......

४५.२३-२४

173. १ व इजा क़ील लहुम् अन्फ़िक़ू (अ्) मिम्मा रज़क़-कुमु (अ्) ल्लाहु ला क़ाल (अ्) ल्लजीन कफ़रू (अ्) लिल्लजीन आमनू (अ्) अनुत्अ़िमु म (न्) ल्लौ यशा·अु (अ्) ल्लाहु अत्अ़महू क़स्वली इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालि (न्) म्मुबीनिन् O

३६.४७

174. १ इन्न (अ्) ल्लजीन फ़तनु (अ्) (अ्) ल् मु (व्)-·अ्मिनीन वल् मु (व्)·अ्मिनाति सुम्म लम् यतूबू (अ्) फ़ लहुम् अ़जाबु जहन्नम व लहुम् अ़जाबु (अ्) ल् ह़रीक़ि O तोय

८५.१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१७२ कामवादी एवं कालवादी

१ क्या तूने देखा उस व्यक्ति को, जिसने वासनाओं को अपना देवता बना रखा है। और परमात्मा ने उसे, सूझ-बूझ रहते हुए, भ्रमित कर दिया है और उसके कान और मन पर मुहर लगा दी है और उनकी आँख पर आवरण डाल दिया है। फिर उसे परमात्मा के अतिरिक्त कौन मार्ग पर लाये? तो क्या तुम नहीं सोचते?

२ और वे कहते हैं: हमारे इस ऐहिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हम मरते हैं और हम जीते हैं और काल के बिना हमें कोई नहीं मारता।

४५.२३-२४

१७३ "ईश्वर उन्हें नहीं देता, तो हम क्यों दें?"

१ और जब उनसे कहा जाता है कि परमात्मा ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से उसके मार्ग में व्यय करो, तो श्रद्धाहीन श्रद्धावानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसों को खिलायें कि जिन्हें ईश्वर चाहता तो खिला देता। तुम लोग तो स्पष्ट ही भ्रमित अवस्था में हो।

३६.४७

१७४ भक्तों को सतानेवाले

१ निस्सन्देह जिन्होंने श्रद्धावान् पुरुषों को एवं श्रद्धावती महिलाओं को सताया, फिर पश्चात्ताप नहीं किया, तो उनके लिए नरक का दण्ड है और उनके लिए जलने का दण्ड है।

८५.१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

175. १ व मिन् अह्लि (अ्) ल् किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बि क़िन्तारी (न्) य़ु (व्) अद्दिहीं इलैक^ज व मिन्हु (म्) स्मन् इन् तअ्मन्हु बिदीनारि (न्)- ल्ला यु (व्) अद्दिहीं इलैक इल्ला मा दुम्त अ़लैहि क़ाअ्रिमन् (अ्) ^तोय जालिक बि अन्न- हुम् क़ालू लैस अ़लैना फ़ि (य्) (अ्) ल् उम्मिईय्यीन सबीलुन्^ज व यक़ूलून अ़ल (य्) (अ्) ल्लाहि- (अ्) ल् कज़िब व हुम् यअ्लमून०

३.७५

176. १ मसलु (अ्) ल्लज़ीन कफ़रू (अ्) बि रब्बिहिम् अअ्मालुहुम् करमादि नि (अ्) श्तद्दत् बिहि- (अ्ल्) र्रीहु फ़ी यौमिन् आसिफ़िन्^तोय ला यक़्दिरून मिम्मा कसबू (अ्) अ़ला (य्) शय्- ञ्जिन्^तोय जालिक हुव (अ्ल्) ज़्ज़लालु (अ्) ल् बञ्रीदु०

१४.१८

177. १ व ल क़द् कज्ज़ब असूहाबु (अ्) ल् हि़ज्रि (अ्) ल् मुर्सलीन ०^ला

२ व आतैनाहुम् आयातिना फ़ कानू (अ्) अ़न्हा मुअ्रिज़ीन ०^ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१७५ अनजानों से दुर्व्यवहार उचित माननेवाले

१ ग्रन्थवानों में से कुछ लोग ऐसे हैं कि यदि तू उनके पास धन की राशि धरोहर रखे, तो वे तुझे वह लौटा देंगे और कुछ उसमें ऐसे हैं कि यदि तूने उनके पास एक दीनार भी धरोहर रखी, तो वे तुझे वापस न करेंगे, जब तक कि तू उनके सिर पर खड़ा न हो। यह इसलिए कि उनका कहना है कि "अनपढ़ लोगों के साथ किये जानेवाले व्यवहार में हम पर कोई दोष नहीं।" और वह ईश्वर के विषय में झूठ बोलते हैं और वे यह जानते हैं।

३.७५

३७ मोघकर्माणः

१७६ सर्वं हुतं भस्मनि

जो लोग अपने प्रभु से अश्रद्ध हुए, उनके कर्मों का दृष्टान्त उस राख का-सा है, जिसे एक तूफानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वे कुछ न पायेंगे उसमें से, जो उन्होंने कमाया। यही है दूर की भ्रान्ति।

१४.१८

१७७ खुदी हुई गुफाएँ व्यर्थ गयीं

१ निस्सन्देह हिज्रवालों ने प्रेषितों को अस्वीकार किया।
२ और हमने उन्हें अपने संकेत दिये, तो वे उनसे मुँह फेरे रहे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व कानू (अ्) यन्ह़ितून मिन (अ्) ल् जिबालि बुयूतन् (अ्) आमिनीन०

४ फ़ अख़जत् हुमु (अ्ल्) स़्सैह़तु मुस्बिह़ीन ०[क़ा]

५ फ़ मा अग़्ना (य्) अ़न्हु (म्) म्मा कानू (अ्) यक्सिबून ० [तोय]

१५.८०–८४

178. १ क़ुल् हल् नुनब्बिअुकुम् बि (अ्) ल् अख़्सरीन अअ़्मालन् (अ्) ०[तोय]

२ अल्लज़ीन द़ल्ल सअ़्युहुम् फ़ि (अ्) ल् ह़या (व्) ति-(अ्ल्) द्दुन्या व हुम् यह़्सबून अन्नहुम् युह़्सिनून सुन्अ़न् (अ्) ०

३ उ (व्) लाअिक (अ्) ल्लज़ीन कफ़रू (अ्) बि आयाति रब्बिहिम् व लिक़ाअिही फ़ ह़बित़त् अअ़्मालुहुम् फ़ ला नुक़ीमु लहुम् यौम (अ्) ल् क़ियामति वज़्नन् (अ्) ०

१८.१०३–१०५

179. १ मसलु (अ्) ल्लज़ीन हुम्मिलु (अ्ल्) त्तौरात सुम्म लम् यह़्मिलूहा क मसलि (अ्) ल् ह़िमारि यह़्मिलु अस्फ़ारन् (अ्) [तोय]......

६२.५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ और वे निश्चिन्त होकर पहाड़ों में घर कुरेदते रहे।

४ तो प्रातः होते ही एक बहुत बड़े धमाके ने उन्हें आ घेरा।

५ सो उनका कौशल उनके कुछ काम न आया !

१५.८०–८४

१७८ के मोघकर्माणः

१ कह : क्या हम तुम्हें उन लोगों की बात कहें, जो कर्मों की दृष्टि से बहुत घाटे में हैं ?

२ ये वे ही लोग हैं, जिनकी सारी दौड़धूप ऐहिक जीवन में खो गयी और वे इस कल्पना में हैं कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं ···।

३ यही लोग हैं, जिन्होंने अपने प्रभु के संकेतों को और उसके मिलने को अस्वीकार किया, सो उनका किया-धरा मटियामेट हो गया। सो हम उनके लिए पुनरुत्थान के दिन कोई वजन निर्धारित नहीं करेंगे।

१८.१०३–१०५

१७९ यथा खरो चन्दनभारवाही

१ जिन पर धर्मग्रन्थ, तौरात, लादा गया, पर उन्होंने उसे नहीं उठाया, उन लोगों का दृष्टान्त गधे जैसा है कि पीठ पर किताबें लादे हुए है।

६२.५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

180. १ वम(न्)ँय्युश्‌रिक बि(अ्)ल्लाहि फ़ क अन्न मा ख़र्र मिन(अ्ल्) स्समांअ्‌ि फ़तख़्तफ़ुहु (अ्ल्)-त्तैरु औ तह्वी बिहि (अ्ल्) र्‌रीहु फ़ी मकानिन् सह़ीक़िन्O २२.३१

181. १ व म(न्)ँय्यअ्शु अ्न् जिक्‌रि(अ्ल्) र्‌रह्‌मानि नुक़य्यिद्‌ लहू शैताना्(अ्) फ़ हुव लहू क़रीनुन् O

२ व इन्न हुम् ल यसुद्‌दूनहुम् अ्नि(अ्ल्)स्सबीलि व यह्‌सबून अन्नहु(म्)म्मुह्‌तदूनO

३ हत्तां(य्)इजा जांअ्‌ना क़ाल या लैत बैनी व बैनक बुअ्द(अ्)ल् मश्‌रिक़ैनि फ़ बिअ्स(अ्)ल् क़रीनु O

४३.३६–३८

182. १ हल् उनब्बिअुकुम् अ्ला(य्) मन् तनज़्ज़लु-(अ्ल्)श्शयातीनु Oतोय

२ तनज़्ज़लु अ्ला (य्) कुल्लि अफ्फ़ाकिन् असीमिन् Oला

३ ँय्युल्क़ून(अ्ल्) स्सम्अ व अक्‌सरुहुम् काजिबून Oतोय

४ व (अ्ल्)श्शुअ्‌रांअु यत्तबिअुहुमु(अ्)ल् ग़ावून Oतोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३८ नरकभाजः

१८० ऊँचाई से गिरना

१ ..... जिसने ईश्वर का भागीदार बनाया, वह मानो आकाश से गिर पड़ा, फिर उसको पक्षी उड़ा ले जाते हैं या हवा उसे किसी दूर स्थान पर फेंक देती है।

२२.३१

१८१ शैतान दुष्ट साथी

१ जो कोई ईश्वर के स्मरण से मुँह मोड़ता है, उसके लिए हम एक शैतान नियुक्त करते हैं, सो वह उसका साथी होता है।

२ और वे उसको मार्ग से रोकते रहते हैं और ये लोग इस कल्पना में रहते हैं कि हम मार्ग पर हैं।

३ यहाँ तक कि जब हमारे पास आयेगा तो (शैतान से) कहेगा : अरे-अरे, मेरे और तेरे बीच पूर्व-पश्चिम की दूरी होती ! कैसा दुष्ट साथी है !

४३.३६-३८

१८२ शैतान किस पर सवार होता है ?

१ क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतर आते हैं ?

२ वे उतर आते हैं प्रत्येक झूठे पापी पर।

३ जो (जहाँ तहाँ) कान लगाये रहते हैं, पर उनमें अधिकतर झूठे हैं।

४ और कवि ? तो उनका अनुसरण करते हैं भटके हुए लोग !

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ अलम् तर अन्न हुम् फ़ी कुल्लि वादि (न्)-
ँय्यहीमून O^ला

६ व अन्न हुम् यक़ूलून मा ला यफ़्अलून O^ला

२६.२२१–२२६

183. १ मा सलककुम् फ़ी सक़र O

२ क़ालू (अ्) लम् नकु मिन (अ्) ल् मुसल्लीन O^ला

३ व लम् नकु नुत्अिमु (अ्) ल् मिस्कीन O^ला

४ व कुन्ना नख़ूदु मअ़ (अ्) ल् ख़ाअिज़ीन O^ला

५ व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बि यौमि (अ्ल्) द्दीनि O^ला

६ हत्ता (य्) अतान (अ्) (अ्) ल् यक़ीनु ^तोय्

७४.४२–४७

184. १ वैलु (न्) ँय्यौम इज़ि (न्) ल्लिल् मुकज़्ज़िबीन O

२ अ लम् नुह्लिकि (अ्) ल् अव्वलीन O^तोय्

३ सुम्म नुत्बिअुहुमु (अ्) ल् आख़िरीन O

४ क जालिक नफ़्अलु बि (अ्) ल् मुज्रिमीन O

५ वैलु (न्) ँय्यौम इज़ि (न्) ल्लिल् मुकज़्ज़िबीन O

७७.१५–१९

185. १ इन्ना अन्ज़रनाकुम् अज़ाबन् (अ्) क़रीबन्^जस्वली
ँय्यौम यन्ज़ुरु (अ्) ल् मर्अु मा क़द्दमत् यदाहु
व यक़ूलु (अ्) ल् काफ़िरु या लैतनी कुन्तु
तुराबन् (अ्) O

७८.४०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ क्या तूने नहीं देखा कि वे प्रत्येक क्षेत्र में सिर मारते फिरते हैं।
६ और यह कि वे जो कुछ कहते हैं, वह करते नहीं।

२६.२२१–२२६

१८३ हमारी करतूत

१ (स्वर्गवासी नरकवासियों से पूछेंगे) क्या चीज तुम्हें नरक में ले गयी ?
२ वे कहेंगे : हम प्रार्थना नहीं करते थे
३ तथा हम वञ्चितों को खाना नहीं खिलाते थे।
४ बकवासियों के साथ हम बकवास करते थे
५ और हम अन्तिम न्याय के दिन का अस्वीकार करते थे।
६ यहाँ तक कि हमें मृत्यु आ गयी।

७४.४२–४७

१८४ नास्तिकों को धिक्कार

१ धिक्कार है, उस दिन ईश्वर का अस्वीकार करनेवालों के लिए।
२ क्या हमने पूर्वकालीनों को नष्ट नहीं किया,
३ फिर हम (इन) उत्तरकालीनों को भी उनके साथ कर देंगे।
४ हम पापियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।
५ धिक्कार है, उस दिन अस्वीकार करनेवालों के लिए।

७७.१५–१९

१८५ "अरे-अरे, यदि मैं धूल होता तो !"

१ निस्सन्देह हमने तुम्हें एक निकटवर्ती आपत्ति से सावधान कर दिया, जिस दिन प्रत्येक मनुष्य अपने कृत-कर्मों को देखेगा और श्रद्धाहीन कहेगा : "अरे-अरे, मैं धूल होता तो !"

७८.४०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ५

धर्म

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

186. १ लैस(अ्)ल् बिर्र अन् तुवल्लू(अ्) वुजूहकुम्
क़िबल (अ्)ल् मश्रिक़ि व (अ्)ल् मग़्रिबि
व लाकिन्न(अ्)ल् बिर्र मन् आमन बि(अ्)ल्लाहि
व (अ्)ल् यौमि(अ्)ल् आख़िरि व (अ्)ल्
मलाअ्किति व (अ्)ल् किताबि व (अल्)-
न्नबीय्यीन[ज] व आत(य्) (अ्)ल् माल अ़ला(य्)
हुब्बिही जवि(य्)ल् क़ुर्बा(य्) व (अ्)ल्
यतामा(य्) व (अ्)ल् मसाकीन व (अ्)ब्न-
(अल्)स्सबीलि[ला] व (अल्)स्साअ्इलीन व
फ़ि(य्) (अल्) र्रिक़ाबि[ज] व अक़ाम (अल्)-
स्सला(व्)त व आत(य्) (अल्)ज़्ज़का (व्)त[ज]
व(अ्)ल् मूफ़ून बिअ़ह्दिहिम् इजा आ़हदू(अ)[ज]
व (अल्)स्साबिरीन फ़ि(अ्)ल् बअ्साअि
व(अल्)द्दर्राअि व हीन(अ्)ल् बअ्सि[तोय]
उ(व्)लाअिक(अ्)ल्लजीन सदक़ू(अ्)[तोय] व उ(व्)-
लाअिक हुमु(अ्)ल् मुत्तक़ून ०

२.१७७

187. १ फ़(अ्)स्तक़िम् क मा अुमिर्त व मन् ताब
मअ़क व ला तत्ग़ौ(अ्)[तोय] इन्नहू बि मा तअ्मलून
बसीरुन्०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१६ धर्म-विचार

[३९ धर्म-निष्ठा]

१८६ धर्म-सार

१ धार्मिकता यह नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व की ओर करो या पश्चिम की ओर, अपितु धार्मिकता यह है कि कोई व्यक्ति श्रद्धा रखे ईश्वर पर, अन्तिम दिन पर, देवदूतों पर और ईश्वरीय ग्रन्थों पर और प्रेषितों पर तथा ईश्वर के प्रेम से धन दे, सगे सम्बन्धियों को, अनाथों को, वञ्चितों को, प्रवासियों को तथा याचकों को और किसी बन्दी की मुक्ति के लिए और नित्य-नियमित प्रार्थना करे, नियत दान दे। और वे जब अभिवचन दें, तो अभिवचन पूरा करें। और तंगी, कठिन समय, संकट एवं आपत्ति में धीरज रखें। ये हैं सत्य-प्रिय लोग और यही हैं ईश्वर-परायण।

२.१७७

१८७ धर्म-मर्यादा

१ सो, जिस प्रकार तुझे आज्ञा हुई है, दृढ़ रह और तेरे साथ वे भी दृढ़ रहें, जो पश्चात्तापयुक्त होकर मेरी ओर मुड़ें। और मर्यादा से न बढ़ो। निस्सन्देह तुम जो कुछ करते हो, उसे ईश्वर देखता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व ला तर्कनू(अ्) इल(य्) (अ्)ल्लजीन
जलमू(अ्) फ़ तमस्सकुमु(अ्ल्)न्नारु^ला व
मा लकु(म्)म्मिन् दूनि (अ्)ल्लाहि मिन्
औलियाअ सुम्म ला तुन्सरून ०

३ व अक़िमि (अ्ल्) स्सलात तरफ़यि (अ्ल्)-
न्नहारि व ज़ुलफ़(न्) (अ्)म्मिन(अ्) ल्लैलि^तोय
इन्न(अ्)ल् हसनाति युज़्हिब्न (अ्ल्)-
सय्यिआति^तोय जालिक जिक्रा(य्) लि(ल्)-
ज्जाकिरीन ०^ज

४ व(अ्)स्बिर् फ़ इन्न(अ्)ल्लाह ला युज़ीअु
अज्र(अ्)ल् मुह्सिनीन०

११.११२–११५

188. १ फ़अक़िम् वज्हक लि(ल्)द्दीनि हनीफ़न् (अ्)^तोय
फ़ित्रत (अ्)ल्लाहि (अ्)ल्लती फ़तर (अ्ल्)-
न्नास अलैहा^तोय ला तब्दील लि ख़ल्क़ि-
(अ्)ल्लाहि^तोय जालिक (अ्ल्)द्दीनु (अ्)ल्
क़य्यिमु^क़ला व लाकिन्न अक्सर (अ्ल्)न्नासि
ला यअ्लमून ०^क़ला

३०.३०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ और उन लोगों की ओर न झुकना, जिन्होंने अत याचार किये हैं। वरन् अग्नि की लपेट में आ जाओगे। ईश्वर के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र नहीं। फिर तुम्हारी सहायता न की जायगी।

३ और नियमित प्रार्थना करो, दिन के दोनों छोरों में और कुछ रात्रि व्यतीत होने पर। निस्सन्देह सत्कृत्य दुष्कृत्यों को दूर करते हैं। यह एक स्मरणदायिनी वस्तु है उन लोगों के लिए, जो स्मरण रखते हैं।

४ और धीरज रखो। निस्सन्देह सत्कृतिवानों का पारिश्रमिक नष्ट नहीं होता।

११.११२–११५

१८८ ईश्वर-निर्मित मानव-स्वभाव का अनुसरण ही धर्म

१ अपना ध्यान स्थिर कर लो धर्म के लिए एकाग्र होकर। ईश्वर-निर्मित स्वभाव को धारण करो, जिस पर उसने मनुष्य को निर्माण किया। ईश्वर के सृष्टि-नियमों में कोई परिवर्तन नहीं। यही सरल धर्म है। किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

३०.३०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

189. १ लिल्लाहि मा फ़ि(अ्ल्) स्समावाति व मा फ़ि (अ्)ल्अर्ज़ि^तोय^ व इन् तुब्दू (अ्)मा फ़ी अन्-फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहि (अ्) ल्लाहु^तोय^फ़ यग़्फ़िरु लि म(न्) यशाअु व युअ़ज़्जिबु म(न्) य्यशाअु ^तोय^ व(अ्)ल्लाहु अ़ला(य्) कुल्लि शय्अिन् क़दीरुन्O

२ आमन (अ्ल्)र्रसूलु बि मा अुन्ज़िल इलैहि मि(न्)र्रब्बिही व (अ्)ल् मु(व्)अ्मिनून^तोय^ कुल्लुन् आमन बि(अ्)ल्लाहि व मलाअिकति-ही व कुतुबिही व रुसुलिही ^क़फ़^ ला नुफ़र्रिक़ु बैन अहदि(न्)म्मि(न्) र्रुसुलिही ^क़फ़^ व क़ालू(अ्) समिअ़्ना व अतअ़्ना^क़ज़^ ग़ुफ़्रानक रब्बना व इलैक(अ्)ल् मसीरु O

३ ला युकल्लिफ़ु(अ्)ल्लाहु नफ़्सन् (अ्)इल्ला वुस्अ़हा ^तोय^ लहा मा कसबत् व अ़लैहा म(अ्)-(अ्)क्तसबत् ^तोय^ रब्बना ला तु(व्)आख़िज़ना इ(न्)न्नसीना औ अख़्तअ्ना ^ज^ रब्बना व ला तहमिल् अ़लैना इस्रन्(अ्) क मा हमल्तहु अ़ल(य्) (अ्)ल्लज़ीन मिन् क़ब्लिना ^ज^ रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़त लना-बिही^ज^ व(अ)अ़्फ़ु अ़न्ना ^वक़्फ़ः^ व(अ्)ग़्फ़िर्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१८९ इस्लाम की निष्ठा

१ जो कुछ आकाशों एवं भूमि में है, वह परमात्मा का ही है और तुम अपने मन की बात प्रकट करो या छिपाओ, ईश्वर तुमसे इसका लेखा लेगा, फिर जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे। ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ प्रेषित उस पर श्रद्धा रखता है, जो उस पर उसके प्रभु की ओर से उतरा और श्रद्धावान् भी श्रद्धा रखते हैं। प्रत्येक श्रद्धा रखता है ईश्वर पर, देवदूतों पर, ग्रन्थों पर और प्रेषितों पर। उनका कहना है कि हम प्रेषितों में से किसीमें कोई भेद नहीं करते। हमने सुना और हमने माना। हे प्रभो ! हम तेरी क्षमा के याचक हैं और हमें तेरी ओर लौटकर जाना है।

३ ईश्वर किसी प्राणी पर उसकी समाई से अधिक बोझ नहीं डालता। जिसने जो कुछ कमाया, उसका फल उसीको है और जिसने जो कुछ करनी की, वह उसीको भरनी है। "हे प्रभो ! यदि हमसे कोई भूल हो जाय या कोई दोष हो जाय, तो हमें न पकड़। हम पर ऐसा बोझ न डाल, जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे प्रभो, हम पर वह भार न डाल जिसकी हममें शक्ति नहीं और हमें माफ कर, क्षमा कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लना वक़्फ़ः व(अ्)र्ह़म्ना वक़्फ़ः अन्त मौलाना फ़(अ्)न्सुर्ना अ़ल(य्) (अ्)ल्क़ौमि-(अ्)ल् काफ़िरीन O ऐन् २.२८४–२८६

190. १ अ फ़ ग़ैर दीनि (अ्)ल्लाहि यब्ग़ून व लहू अस्लम मन् फ़ि(य्) (अ्ल्)स्समावाति व (अ्)ल् अर्द्धि तौअ़(न्)ँव्व कर्ह(न्)ँव्व इलैहि युर्जअ़ून O ३.८३

191. १ व म(न्)ँय्युस्लिम् वज्हहू इल(य्) (अ्)-ल्लाहि व हुव मुह़्सिनुन् फ़क़दि(अ्)स्तम्सक बि(अ्)ल् अ़ुर्वति(अ्)ल् वुस्क़ा(य्) तोय व इल(य्) (अ्)ल्लाहि अ़ाक़िबतु(अ्)ल् उमूरिO ३१.२२

192. १ ला इक्राह फ़ि(य्) (अ्ल्)द्दीनि क़फ़्ला क़(द्)-त्तबय्यन (अ्ल्)र्रुश्दु मिन(अ्)ल् ग़य्यि ज फ़म(न्)ँय्यक्फ़ुर् बि(अ्ल्)त्ताग़ूति व यु(व्)-अ़्मि(न्)म्बि(अ्)ल्लाहि फ़क़दि(अ्)स्तम्सक बि(अ्) ल् अ़ुर्वति (अ्)ल् वुस्क़ा(य्) क़ ल(अ्)(अ्) न् फ़िसाम लहा तोय व(अ्)ल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीमुन् O २.२५६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और हम पर कृपा कर। तू ही हमारा रक्षक है। श्रद्धाहीनों के विरोध में हमारी सहायता कर।

२.२८४–२८६

१९० ईश्वर-शरणता के अतिरिक्त कोई धर्म नहीं

१ क्या वे ईश्वरीय निष्ठा के अतिरिक्त और कुछ चाहते हैं? वस्तुतः आकाश एवं भूमि में जो कोई हैं, वे सब सम्मति से या असम्मति से ईश्वर की ही आज्ञा का पालन करते हैं और उसीकी ओर लौटाये जायेंगे।

३.८३

१९१ दृढ़ आधार

१ जो कोई अपना हेतु ईश्वर के अधीन करे और वह सत्कृतिवान् हो, तो निस्सन्देह उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। ईश्वर के अधीन प्रत्येक कार्य की पूर्ति है।

३१.२२

४० धर्म-सहिष्णुता

१९२ धर्म में जबरदस्ती को अवकाश नहीं

१ धर्म के विषय में जोर-जबरदस्ती नहीं। सच्चा मार्ग कुमार्ग से अलग और स्पष्ट हो गया है। जो कोई कुवासनाओं को तज दे और ईश्वर पर श्रद्धा रखे, तो उसने दृढ़ सहारा, आश्रय ग्रहण किया, जो कभी टूटनेवाला नहीं। ईश्वर सब सुननेवाला, सब जाननेवाला है।

२.६२५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

193. १ इन्न (अ्)ल्लज़ीन यक्फ़ुरून बि(अ्)ल्लाहि व रुसुलिही व युरीदून अ(न्)य्युफ़र्रिक़ू-(अ्)बैन (अ्)ल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलून नु(व्)अ्मिनु बि बअ्ज़िन् (न्)व्व नक्फ़ुरु बि बअ्ज़िन्ला व युरीदून अ(न्)य्यत्तख़िज़ू(अ्) बैन ज़ालिक सबीलन् ०ला

२ उ(व्)लाअिक हुमु(अ्)ल् काफ़िरून हक़्क़न् (अ्) व अअ्तदना लिल् काफ़िरीन अज़ाब (न्)-(अ्)म्मुहीनन् (अ्) ०

३ व(अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्) बि (अ्)ल्लाहि व रुसुलिही व लम् युफ़र्रिक़ू (अ्) बैन अहदि-(न्)म्मिन्हुम् उ(व्)लाअिक सौफ़ यु (व्)अ्तीहिम् उजूरहुम्तोय व कान(अ्)ल्लाहु ग़फ़ूर(न्अ्)र्रहीमन्(अ्) ०

४.१५०–१५२

194. १ व इन्न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मत(न्)-व्वाहिदत(न्)व्व अना रब्बुकुम् फ़(अ्)त्तक़ूनि ०

२ फ़ तक़त्तअ़्(अ्) अम्रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन् (अ्)तोय कुल्लु हिज़्बि(न्)म् बि मा लदैहिम् फ़रिहून०

२३.५२–५३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

१९३ सर्व प्रेषितों पर श्रद्धा

१ जो लोग ईश्वर एवं उसके प्रेषितों को मानते नहीं और ईश्वर एवं उसके प्रेषितों में भेद करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसीको मानेंगे और किसीको नहीं मानेंगे और श्रद्धा-हीनता एवं श्रद्धा के बीच एक रास्ता निकालना चाहते हैं,

२ वास्तव में यही लोग श्रद्धाहीन हैं और हमने श्रद्धाहीनों के लिए लज्जास्पद दण्ड तैयार रखा है।

३ किन्तु जो लोग ईश्वर एवं उसके प्रेषितों पर श्रद्धा रखते हैं और प्रेषितों में किसीमें भी भेद नहीं करते, उनको हम अवश्य उनके प्रतिफल प्रदान करेंगे। ईश्वर क्षमावान्, करुणावान् है।

४.१५०–१५२

१९४ भक्तों का समाज एक

१ निस्सन्देह तुम्हारा (भक्तों का) समाज एक समाज है और मैं तुम्हारा प्रभु हूँ, अतः मत्परायण हो जाओ।

२ फिर लोगों ने अपने (इस) धर्म को अपने बीच काटकर टुकड़े-टुकड़े कर लिया, और प्रत्येक सम्प्रदाय जो उसके पास है, उसी पर रीझ रहा है।

२३.५२–५३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

195. १ व ला ततूरुदि (अ्) ल्लजीन यद्ऊन रब्बहुम्
बि (अ्) ल् ग़दा (व) ति व (अ्) ल् अ़शिय्यि
युरीदून वज्हहू^तोय मा अ़लैक मिन् हि़साबि-
हि (म्) म्मिन् शय्अि (न्) ँव्व मा मिन् हि़साबिक
अ़लैहि (म्) म्मिन् शय्अिन् फ़ततूरुदहुम् फ़तकून
मिन (अ् ल्) ज़्ज़ालिमीन ○

६.५२

196. १ व ला तसुब्बु (अ्) (अ) ल्लजीन यद्ऊन मिन्
दूनि (अ्) ल्लाहि फ़ यसुब्बु (अ्) ल्लाह अ़द्व (न्)-
(अ्) म् वि ग़ैरि अि़लमिन्^तोय....

६.१०८

197. १ लि कुल्लिन् जअ़ल्ना मिन्कुम् शिर्अ़त (न्) ँव्व
मिन्हाजन् (अ्)^तोय व लौ शा'अ (अ्) ल्लाहु
ल जअ़लकुम् उम्मत (न्) ँव्वाहि़दत (न्) ँव्व
लाकिन् लिल यब्लुवकुम् फ़ी मा आताकुम्
फ़ (अ्) स्तबिक़ु (व्अ्) (अ्) ल् ख़ैराति^तोय इल-
(य्) (अ्) ल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न्-
(अ्) फ़ युनब्बिअ़ुकुम् बि मा कुन्तुम् फ़ीहि
तख़्तलिफ़ून○^ला

५.५१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१९५ भाविकों को दूर न करो

१ जो लोग अपने प्रभु को प्रातः-सायं पुकारते हैं और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं, उनको तू दूर न ढकेल। उनके लेखे में से तुझ पर कुछ नहीं है और न तेरे लेखे में से उन पर कुछ है कि तू उन्हें दूर हटा दे। ऐसा करने से दुष्टों में तेरी गिनती होगी।

६.५२

१९६ अन्य देवताओं की निन्दा न करो

१ ये लोग ईश्वर के अतिरिक्त जिसको पूजनीय मानते हैं, तुम उनको बुरा न कहो, जिससे कि वे मर्यादा का भंग कर बिना समझे ईश्वर को बुरा कहने लगें……

६.१०८

१९७ भलाई में होड़ करो

१ ….तुममें से हरएक के लिए हमने एक मार्ग बनाया एवं एक पद्धति बनायी और यदि ईश्वर चाहता, तो तुम सबको अवश्य एक समाज बना देता। किन्तु उसने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हें वह जाँचना चाहता है। इसलिए तुम सत्कृतियों में एक-दूसरों से बढ़ने का प्रयत्न करो। ईश्वर के ही पास तुम्हें पहुँचना है। फिर जिस बात में तुम विरोध करते थे, उस विषय में वह तुम्हें वास्तविकता बतायेगा।

५.५१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

198. १ व ला तुजादिलू (अ्)अह्ल(अ्)ल् किताबि इल्ला बि(अ्)ल्लती हिय अह्सनु क़स्वली इल्ल-(अ्)(अ्)ल्लजीन ज़लमू(अ्)मिन्हुम् व क़ूलू(अ्) आमन्ना बि(अ्)ल्लजी उन्ज़िल इलैना व उन्ज़िल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदु(न्)व्व नह्नु लहू मुस्लिमून ०

२९.४६

199. १ इन्न(अ्)ल्लाह हुव रब्बी व रब्बुकुम् फ़(अ्)-अ्बुदूहु तोय़ हाजा स़िरातु(न्)म्मुस्तक़ीमुन् ०

४३.६४

200. १ व लिल्लाहि (अ्)ल् मशरिक़ु व (अ्)ल् मग़्रिबुक़् फ़ अैन मा तुवल्लू(अ्) फ़स़म्म वज्हु(अ्)ल्लाहि तोय़ इन्न (अ्)ल्लाह वासिअुन् अ्लीमुन् ०

२.११५

201. १ व क़ालू(अ्)ल(न्)य्यद्ख़ुल(अ्)ल् जन्नत इल्ला मन् कान हूदन्(अ्) औ नस़ारा(य्) तोय़ तिल्क़ अमानिय्युहुम् तोय़ क़ुल हातू(अ्) बुर्हान-कुम् इन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१९८ सुसंवाद साधो

१ तुम ग्रन्थवानों से केवल इस रीति से चर्चा करो, जो सौजन्यपूर्ण हो––उन लोगों को छोड़कर, जो अत्याचारी हैं––और कहो : जो ग्रन्थ हम पर उतरा और तुम पर उतरा, उस पर हम श्रद्धा रखते हैं और हमारा भजनीय एवं तुम्हारा भजनीय एक ही है और हम उसीके शरण हैं।

२९.४६

१९९ तुम्हारा और मेरा प्रभु एक है

१ निस्सन्देह ईश्वर ही मेरा और तुम्हारा प्रभु है। सो उसकी भक्ति करो। यह सीधा मार्ग है।

४३.६४

२०० पूर्व-पश्चिम समान

१ पूर्व एवं पश्चिम सब ईश्वर की ही हैं। सो तुम जिस ओर मुख करो, उसी ओर ईश्वर सम्मुख है। निःसन्देह ईश्वर व्यापक और सर्वज्ञ है।

२.११५

२०१ स्वर्ग किसीकी बपौती नहीं

१ वे कहते हैं : यहूदी और ईसाई के अतिरिक्त और कोई कदापि स्वर्ग में नहीं जायँगे। अरे, ये तो उनके मनोरथ हैं। कह : यदि तुम सच्चे हो, तो अपना प्रमाण लाओ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ बला(य्) मन् अस्लम वज्हहू लिल्लाहि व हुवमुह्सिनुन् फ़लहू अज्रुहू अिन्द रब्बिही व ला खौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ०

२.१११–११२

202. १ व मा उमिरू (अ्) इल्ला लि यअ्बुदु (व्अ्)-(अ्)ल्लाह मुख़्लिसीन लहु (अ्ल्) द्दीन०ला हुनफ़ा·अ व युक़ीमु (अ्) (अ्ल्) स्सला (व्)त व यु(व्)·अ्तु (व्अ्) (अ्ल्) ज़्ज़का (व्)त व ज़ालिक दीनु (अ्)ल् क़य्यिमति ०तोय

९८.५

203. १ फ़(अ्)स्बिर अला(य्) मा यक़ूलून व सब्बिह् बि हम्दि रब्बिक क़ब्ल तुलूअि (अ्ल्) श्शम्सि व क़ब्ल ग़ुरूबिहा ज व मिन् आना(य्)·अि-(अ्)ल्लैलि फ़ सब्बिह् व अत्राफ़ (अ्ल्) न्नहारि लअ्ल्लक तर्ज़ा (य्)०

२०.१३०

204. १ फ़ कुलू (अ्) मिम्मा ज़ुकिर (अ्) स्मु (अ्) ल्लाहि अलैहि इन् कुन्तुम् बि आयातिही मु(व्)·अ्मिनीन ०

२ व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज्करिस्मु (अ्) ल्लाहि अलैहि व इन्नहु ल फ़िस्क़ुन्तोय

६.११८–१२१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ क्यों नहीं ? जिसने अपना व्यक्तित्व ईश्वर को सौंप दिया और वह सत्कृतिवान् है, तो उसके लिए उसका प्रतिफल उसके प्रभु के पास है। उनको कोई भय नहीं और न वे दुःखी होंगे।

२.१११–११२

४१ धर्म-विधि

२०२ विधि-त्रय

१ और उन्हें आज्ञा दी गयी कि ईश्वर की भक्ति करें और केवल उसीके लिए शुद्ध निष्ठा रखें, एकाग्र होकर। और नित्य-नियमित प्रार्थना करें एवं नियत दान दें। यही सीधा धर्म है।

९८.५

२०३ उपासना (पंच-नमाज)

१ वे जो कुछ कहते हैं, उसे सहन कर और अपने प्रभु के स्तवन के साथ उसका जप कर, जयजयकार कर। सूर्य निकलने से पहले और उसके अस्त होने के पहले और जप किया कर। रात की कुछ घड़ियों में और दिन के दोनों छोरों पर, जिससे कि प्रभु तुझे स्वीकार करे।

२०.१३०

२०४ प्रभु-स्मरणपूर्वक आहार-सेवन

१ यदि ईश्वर के संकेतों पर तुम श्रद्धा रखते हो, तो जिस अन्न पर ईश्वर-नाम-स्मरण किया गया हो, उसमें से खाओ·····

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

205. १ यां अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्) कुतिब अ़लैकुमु (अ्ल्) स़्स़ियामु क मा कुतिब अ़ल(य्) (अ्)ल्लजीन मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून ०[ला]

२ अय्याम(न्) (अ्)म्मअ़्दूदातिन्[तोय] फ़ मन् कान मिन्कु(म्)म्मरीद़न्(अ्)औ अ़ला (य्) सफ़रिन् फ़ अ़िद्द़तु(न्)म्मिन् अय्यामिन् अुख़र[तोय] व अ़ल(य्) (अ्)ल्लजीन युत़ीक़ूनहु फ़िद्यतुन् तअ़ामु मिस्कीनिन् [तोय] फ़ मन् ततत़व्वअ़ ख़ैरन् (अ्)फ़ हुव ख़ैरु(न्)ल्लहु[तोय] व अन् तसूमू(अ्) ख़ैरु(न्)ल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून ०

२.१८३-१८४

206. १ व अतिम्मु(अ्) (अ्)ल् ह़ज्ज व(अ्)ल् अ़ुम्रत़ लिल्लाहि[तोय] फ़ इन् उह़्सिर्तुम् फ़ म(अ्)-(अ्)स्तैसर मिन(अ्)ल् हद्यि[ज]....

२ ....फ़ ला रफ़स व ला फ़ुसूक़[ला] व ला जिदाल फ़ि (अ्)ल् ह़ज्जि[तोय]....

२.१९६-१९७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ ······और उसमें से न खाओ, जिस पर ईश्वर-नाम-स्मरण न किया गया हो, क्योंकि ऐसा करना आज्ञा-भंग है······।

६.११८–१२१

२०५ उपवास

१ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारे लिए उपवास की विधि है––जैसे उन लोगों के लिए विधि थी, जो तुमसे पूर्व थे––जिससे कि तुम संयमी हो जाओ।

२ कुछ गिनती के दिन उपवास करो। फिर तुममें से जो कोई बीमार हो या प्रवास में हो, तो दूसरे दिनों में वह गिनती पूरी करे। और जो लोग शक्ति रखते हैं, उनके लिए विधि है, एक अकिञ्चन को अन्न देना। फिर जो कोई अधिक सत्कर्म करे, तो वह उसके लिए अच्छा ही है। और यदि तुम उपवास करो, तो तुम्हारे लिए हितकर है, यह तुम जानो।

२.१८३–१८४

२०६ पुण्ययात्रा

१ पुण्ययात्रा एवं क्षेत्र-दर्शन को ईश्वर के लिए पूरा करो। फिर यदि तुम कहीं रोके जाओ, तो जो भेंट बन पड़े, वह भेज दो······।

२ ······यात्रा में कोई दुष्ट आचरण, कोई दुर्भाषण और कोई कलह न हो······।

२.१९६–१९७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ६

नीति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

207. १ व मा यस्तवि (यअ्) ल् अअ्मा (य्) व (अ्) ल्
बसीरु ०ला
२ व ल (अ्) (अ्ल्) ज़्ज़ुलुमातु व ल (अ्) (अ्ल्)-
न्नूरु ०ला
३ व ल (अ्) (अ्ल्) ज़्ज़िल्लु व ल (अ्) (अ्) ल्
हूरूरु ०ज़्
४ व मा यस्तवि (य्) (अ्) ल् अहूया‌अु व ल (अ्)-
(अ्) ल् अम्वातु^तोय^..........

३५.१९-२२

208. १ अन्ज़ल मिन (अ्ल्) स्समा‌अि मा‌अन् फ़ सालत्-
औदियतु (न्) म् बि क़दरिहा फ़ (अ्) हूतमल
-(अ्ल्) स्सैलु ज़बद (न् अ्) र्राबियन् (अ्)^तोय^
व मिम्मा यूक़िदून अलैहि फ़ि (य्) (अ्ल्) न्नारि-
(अ्) ब्तिग़ा‌अ हिल्यतिन् औ मताअिन् ज़बदु-
(न्) म्मिस्लुहु^तोय^ कज़ालिक यद्रिबु (अ्) ल्लाहु-
(अ्) ल् हक़्क़ व (अ्) ल् बातिल०^तोय^ फ़ अम्म (अ्)-
(अ्ल्) ज़्ज़बदु फ़ यज़्हबु जुफ़ा‌अन् ^ज़^ व
अम्मा मा यन्फ़अु (अ्ल्) न्नास फ़ यमकुसु
फ़ि (अ्) (अ्) ल् अर्द्दि ^तोय^ क जालिक युद्रिबु-
(अ्) ल्लाहु (अ्) ल् अम्साल ०^तोय^

१३.१७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१७ सत्य

४२ सत्यासत्य-विवेक

२०७ **ज्ञान-अज्ञान-भेद**

१ अन्धा और देखनेवाला समान नहीं
२ और न प्रकाश एवं अन्धकार
३ और न छाया एवं धूप
४ और न समान हैं जीवित एवं मृत……।

३५.१९–२२

२०८ **जल-फेन-न्याय**

१ उसने आकाश से पानी उतारा, फिर अपने माप के अनुसार नाले बहने लगे। फिर वह बाढ़ फूला हुआ झाग ऊपर ले आयी और उस चीज पर भी ऐसा ही झाग होता है, जिसको गहने या साजो-सामान के लिए आग में तपाते हैं, इसी प्रकार ईश्वर सत्यासत्य का दृष्टान्त देता है। तो, जो झाग है, वह सूखकर उड़ जाता है और उसमें से जो चीज लोगों के काम आती है, वह जमीन में शेष रह जाती है, इस प्रकार ईश्वर अपने दृष्टान्त देता है।

१३.१७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

209. १ व ला तल्बिसु (व्अ्) (अ्)ल् हक़्क़
बि(अ्)ल् बातिलि व तक्तुमु (व् अ्) (अ्)ल्
हक़्क़ व अन्तुम् तअ्लमूनO

२.४२

210. १ व लवि(अ्) त्तबअ (अ्)ल् हक़्क़ु अह्वांअ-
हुम् ल फ़सदति (अल्) स्समावातु व(अ्)ल्
अर्द्दु व मन् फ़ी हिन्नतोय..........

२३.७१

211. १ बल् नक़्जिफ़ु बि(अ)ल् हक़्क़ि अ्ल(य्) (अ्)ल्
बातिलि फ़ यद्मग़ुहू फ़ इजा हुव ज़ाहिक़ुन्तोय......

२१.१८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२०९ सत्यासत्य की मिलावट न करो

१ सत्य एवं असत्य की मिलावट न करो, और सत्य को जान-बूझकर मत छिपाओ ।

२.४२

२१० सत्य हमारी वासनाओं के अनुसार नहीं चलता

१ सत्य यदि लोगों की वासनाओं का अनुकरण करे, तो आकाश एवं भूमि में और जो कोई उनके बीच में है, सब बिगड़ जाय…।

२३.७१

२११ असत्य का मस्तक भंग

१ हम सत्य को असत्य पर फेंक मारते हैं। फिर वह उसका सिर फोड़ डालता है…।

२१.१८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

212. १ या अय्युह(अ्)(अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)लिम्
तक़ूलून मा ला तफ़्अ़लून O
२ कबुर मक़्तन्(अ्) अ़िन्द(अ्)ल्लाहि अन्
तक़ूलू(अ्) मा ला तफ़्अ़लून O
६१.२-३

213. १ अ तअ्मुरून(अ्ल्)न्नास बि(अ्)ल् बिर्रि
व तन्सौन अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लून(अ्)ल्
किताब तोय अ फ़ ला तअ्क़िलूनO
२.४४

214. १ व औफ़ू(अ्)बि अ़हृदि(अ्)ल्लाहि इजा आह
-(द्)त्तुम् व ला तन्क़ुद्रु(व् अ्)(अ्)ल् ऐमान
बअ़्द तौकीदिहा व क़द् जअ़ल्तुमु(अ्)ल्लाह
अ़लैकुम् कफ़ीलन्(अ्)तोय इन्न(अ्) ल्लाह
यअ़्लमु मा तफ़्अ़लून O
२ व ला तकूनू(अ्)क (अ्)ल्लती नक़द्दत् ग़ज़्लहा
मि(न्)म् बअ़्दि क़ुव्वतिन अन्कासन्(अ्)तोय......
१६.९१-९२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१८ वाक्शुद्धि

४३ सत्यसन्ध

२१२ कथनी वैसी करनी

१ हे श्रद्धावानो ! ऐसी बात क्यों कहते हो, जो करते नहीं ?

२ ईश्वर के निकट यह बात बहुत निन्द्य है कि वह बात कहो, जो करो नहीं।

६१.२–३

२१३ परोपदेशे पाण्डित्यम्

१ क्या तुम लोगों को सत्कार्य करने का आदेश देते हो और अपने-आपको भूल जाते हो, जब कि तुम ग्रन्थ-पारायण करते हो ! फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

२.४४

२१४ सूत तोड़नेवाली

१ ईश्वर को दिया हुआ अभिवचन पूरा करो जब कि तुमने अभिवचन दिया है। और शपथों को दृढ़ करने के पश्चात् तोड़ न डालो, जब कि तुम ईश्वर को अपने ऊपर साक्षी बना चुके हो। निश्चय ही ईश्वर जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

२ और उस स्त्री के जैसा न हो जाओ, जिसने अपने श्रम से काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े कर डाला !……

१६.९१–९२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

215. १ व(अ्)ल्लजी जा॑अ बि(अ्ल्) स्सिद्क़ि व सद्दक़ बिही॑ अु(व्)ला॑अिक हुमु(अ्)ल् मुत्तक़ून ०
२ लहुम् मा यशा॑अून अ़िन्द रब्बिहिम्^तौय जालिक जज़ा(व्)·अु(अ्)ल् मुहूसिनीन^जुख्ली०

३९.३३-३४

216. १ अलम् तर कैफ़ ज़रब(अ्)ल्लाहु मसलन्(अ्) कलिमतन् तय्यिबतन् क शजरतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहा साबितु(न्)ँ व्व फ़र्अुहा फ़ि-(अ्ल्)स्समा॑अि०^ला
२ तु(व्)·अ्ती॑ अुकुलहा कुल्ल ह़ीनि (न्)म्-बि इज्नि रब्बिहा^तौय व यज़्रिबु(अ्)ल्लाहु(अ्)ल् अम्साल लि(ल्)न्नासि लअ़ल्लहुम् यतजक्करून०
३ वमसलु कलिमतिन् ख़बीसतिन् क शजरतिन् ख़बीसति नि(अ्)ज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़ि(अ्)-ल् अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रारिन्०

१४.२४-२६

217. १ व क़ुल् लि अ़िबादी यक़ूलु(अ्) ल्लती हिय अह्सनु^तौय इन्न(अ्ल्)श्शैतान यन्ज़ग़ु बैनहुम्^तौय इन्न(अ्ल्) श्शैतान कान लिल् इन्सानि अ़दुव्व(न्)(अ्)म्मुबीनन्(अ्)० १७.५३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२१५ सत्य-निष्ठा

१ जो लोग सच्ची बात लेकर आये और जिन्होंने उसे सच माना, वे ही लोग धर्मपरायण हैं।

२ वे जो कुछ चाहेंगे, वह उनके प्रभु के पास है। सत्कृतिवानों का यह प्रतिफल है।

३९.३३–३४

४४ मंगल वाणी

२१६ सुवचन-कुवचन—उपमा

१ क्या तूने देखा नहीं कि ईश्वर ने सुवचन का कैसा दृष्टान्त दिया है। उसका दृष्टान्त एक अच्छे (जाति के) वृक्ष का है, जिसका मूल दृढ़ है और उसकी शाखाएँ आकाश में हैं।

२ प्रतिक्षण वह अपने प्रभु की आज्ञा से फल दे रहा है और ईश्वर लोगों के लिए दृष्टान्त देता है, जिससे कि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें।

३ और कुवचन का दृष्टान्त एक दुष्ट (जाति के) वृक्ष का है, जो भूमि के ऊपर ही ऊपर उखाड़ लिया जाता है। उसके लिए कोई स्थैर्य नहीं है।

१४.२४–२६

२१७ शिवं वद

१ मेरे दासों को कह कि वह बात कहें, जो बहुत अच्छी है। शैतान उनमें कलह के बीज डालता है। वास्तविकता यह है कि शैतान मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है।

१७.५३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

218. १ व मन् अह्सनु क़ौल(न्)म्मिम्मन् दआ इल(य्)-
(अ्) ल्लाहि व अमिल सालिह(न्अ्)ँव्व
क़ाल इन्ननी मिन(अ्)ल् मुस्लिमीन ○
४१.३३

219. १ या अय्युह(अ्)ल्लजीन आमनु(व्अ्)त्तक़ु(व्अ्)-
(अ्)ल्लाह व क़ूलू क़ौलन् सदीदन्(अ्)○ला
३३.७०

220. १ ला युहिव्बु(अ्)ल्लाहु(अ्)ल् जह्र बि(अ्ल्)
स्सू'अि मिन(अ्)ल्क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलिमतोय
व कान(अ्)ल्लाहु समीअन्(अ्)अलीमन्(अ्)
२ इन् तुब्दू(अ्) खैरन्(अ्)औ तुख़्फ़ूहु औ
तअ्फ़ू(अ्)अन् सू'अिन् फ़ इन्न(अ्)ल्लाह कान
अफ़ुव्वन्(अ्)क़दीरन्○
४.१४८-१४९

221. १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)ला
यस्ख़र् क़ौमु(न्)म्मिन् क़ौमिन् असा(य्)अ(न्)
ँय्यकूनू(अ्) खैर(न्अ्)म्मिन्हुम् व ला निसाअु-
(न्)म्मि(न्)न्निसाअिन् असा(य्)अ(न्)ँय्य-
कुन्न खैर(न्) (अ्)म्मिन्हुन्नज व ला तल्मिज़ू(अ्)
अन्फ़ुसकुम् व ला तनाबज़ू(अ्) बि(अ्)ल्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२१८ उत्तम वाणी

१ इससे उत्तम किसकी बात हो सकती है, जो ईश्वर की ओर बुलाये, और सत्कृत्य करे, और कहे कि निस्सन्देह मैं उन लोगों में हूँ, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व को ईश्वर की आज्ञा के अधीन किया।

४१.३३

२१९ सीधी बात

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर से डरो और सीधी बात कहो।

३३.७०

४५ अनिन्दा

२२० बुरी बात मुख से न निकालो

१ बुरी बात वाणी पर लाना ईश्वर को नहीं भाता, अतिरिक्त इस स्थिति के कि किसी पर अत्याचार हुआ हो। ईश्वर सुननेवाला है, जाननेवाला है।

२ यदि तुम भलाई प्रकट करो या अप्रकट रखो, या बुराई को क्षमा करो तो, निस्सन्देह ईश्वर क्षमावान्, सर्वशक्तिमान् है।

४.१४८–१४९

२२१ निन्दा न करो

१ हे श्रद्धावानो ! पुरुषों को पुरुषों की हँसी नहीं उड़ानी चाहिए कि कदाचित् वे उनसे अधिक अच्छे हों, और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ायें, कि कदाचित् वे उनसे अधिक अच्छी हों। एक-दूसरे को दोष न लगाओ और एक-दूसरों को विद्रूपित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अल्क़ाबि^तोय^ बिअ्स (अ्)ल् इस्मु (अ्)ल् फ़ुसूक़ु
बअ्द (अ्)ल् ईमानि^ज^ व म(न्)ल्लम् यतुब्
फ़ उ(व्)लाअिक हुमु (अ्ल्)ज़्ज़ालिमून ०

२ या अय्युह(अ्) (अ्) ल्लज़ीन आमनु(अ्)-
(अ्)ज्तनिबू(अ्)कसीर(न्अ्) म्मिन(अ्ल्)-
ज़्ज़न्नि^ज^ इन्न बअ्द़(अ्ल्)ज़्ज़न्नि इस्मु(न्)ँव्व
ला तजस्ससू(अ्) व ला यग़्त(ब्)ब्बअ्ज़ुकुम्
बअ्द़न्(अ्)^तोय^ अ युहिब्बु अहदुकुम् अ(न्)-
ँय्यअ्कुल लह्म अख़ीहि मैतन् (अ्) फ़
करिहतुमूहु^तोय^ व(अ्ल्) त्तक़ु(व्अ्)(अ्)-
ल्लाह ^तोय^इन्न(अ्)ल्लाह तव्वाबु(न्)र्रहीमुन्०
४९.११-१२

222. १ व इज़ा रएत(अ्)ल्लज़ीन यख़ूदून फ़ी आयाति-
ना फ़ अअ्रिद़् अन्हुम् हत्ता(य्) यख़ूदू(अ्)
फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही^तोय^ व इम्मा युन्सियन्नक(अ्ल्)
श्शैतानु फ़ ला तक़्अुद् बअ्द(अ्ल्)ज़्ज़िक्रा-
(य्)मअ(अ्)ल् क़ौमि(अ्ल्)ज़्ज़ालिमीन ०
६.६८

223. १ व इज़ा समिअु(व्अ्)(अ्ल्)ल्लग़्व अअ्रदू-
(अ्)अन्हु व क़ालू(अ्)लना अअ्मालुना
व लकुम् अअ्मालुकुम्^ज^ सलामुन् अलैकुम्^ज^
ला नब्तग़ि(य्)(अ्)ल् जाहिलीन० २८.५५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नामों से न पुकारो। श्रद्धायुक्त होने के पश्चात् पाप का नाम ही बुरा है, और जो इससे परावृत्त न हों, वे ही अत्याचारी हैं।

२ हे श्रद्धावानो ! बहुत संशय करने से बचे रहो। निस्सन्देह कुछ संशय पाप हैं। और किसीकी टोह में न लगो, और तुममें से कोई किसीकी चुगली न करे। भला तुममें से किसीको यह भायेगा कि अपने मरे हुए भाई का मांस खाये ? तुम्हें उससे घिन आयेगी। ईश्वर से डरते रहो। निस्सन्देह ईश्वर पश्चात्ताप को स्वीकार करनेवाला है, करुणावान् है।

४९.११-१२

२२२ विवाद टालो

१ जब तू उन लोगों को देखे कि वे हमारे वचनों पर टीका-टिप्पणियाँ कर रहे हैं तो तू उनके पास से हट जा। यहाँ तक कि वे उसके अतिरिक्त और किसी बात में लग जायँ। और शैतान तुझे भुलावे में डाल दे, तो स्मरण आ जाने के पश्चात् तू उन अत्याचारियों के साथ न बैठ।

६.६८

२२३ व्यर्थ बातें टालो

१ जब व्यर्थ बातें सुनते हैं, तो टाल जाते हैं और कहते हैं: हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। तुम्हें सलाम। हम बे-समझ लोगों से उलझना नहीं चाहते।

२८.५५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

224. १ व क़द् नज़्ज़ल अलैकुम् फ़ि(अ्) ल् किताबि
अन् इजा समिअ्तुम् आयाति(अ्)ल्लाहि
युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़अु बिहा फ़ ला तक़्अुदू-
(अ्) मअ़हुम् हत्ता(य्)यख़ूदू(अ्) फ़ी हदी-
सिन् ग़ैरिही ज़स्ली इन्न कुम् इज(न्अ्)-
म्मिस्लुहुम् तोय.........

४.१४०

225. १ वैलु(न्) लिल कुल्लि हुमज़ति(न्) ल्लुमज़ति-
नि O ला

२ (अ्)ल्लजी जमअ़ माल(न्) (अ्)व्वअ़द्दहू O ला
३ यह्सबु अन्न मालहू अख़्लदहू O ज
४ कल्ला ल युम्बजन्न फ़ि (अ्)ल् हुतमति ज़स्ली
५ व मा अदराक म(अ्) (अ्)ल् हुतमतु O तोय
६ नारु(अ्)ल्लाहि (अ्)ल् मूक़दतु O ला
७ (अ्) ल्लती तत्तलिअु अ़ल(य्) (अ्)ल्
अफ़्इदति O तोय
८ इन्नहा अ़लैहि(म्)म्मु (व्)अ्सदतुन् O ज
९ फ़ी अ़मदि(न्)म्मुमद्ददतिन् O ऐन

१०४.१-९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

धर्म-निन्दा नहीं सुननी चाहिए

१ ईश्वर इस ग्रन्थ में तुम पर आज्ञा उतार चुका है कि जब तुम ईश्वर के वचनों के विषय में सुनो कि उनका अस्वीकार किया जा रहा है और उसकी हँसी उड़ायी जा रही है, तो उन लोगों के पास न बैठो। जब तक कि वे इसके अतिरिक्त दूसरी बात में न लग जायँ, नहीं तो तुम भी उन्हीं जैसे होगे…।

४.१४०

२२५ निन्दकों की गति

१ दोष ढूँढ़नेवाले पिशुन एवं कटुभाषी के लिए धिक्कार,
२ जिसने धन इकट्ठा किया और उसे गिनता रहा,
३ वह इस गुमान में है कि धन उसको नित्य जीवित रखेगा।
४ कदापि नहीं, वह अवश्य फेंका जायगा उस जलानेवाली के भीतर।
५ और तू क्या जानता है कि वह जलानेवाली क्या है ?
६ वह है ईश्वर की सुलगायी हुई आग।
७ जो दिलों पर चढ़ आती है।
८ निश्चय ही वह आग उन पर बन्द कर दी जायगी।
९ लम्बे-लम्बे खम्भों (के रूप) में।

१०४.१-९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

226. १ ....कतब्ना अ़ला (य्) बनी इसरा'ईल अन्नहू
मन् क़तल नफ़्स (न्) म्बिग़ैरि नफ़्सिन् औ
फ़सादिन् फ़ि (अ्) ल् अर्द़ि फ़ क अन्नमा क़तल-
(अ्ल्) न्नास जमीअ़न् (अ्) व मन् अह़्याहा
फ़ क अन्नमा अह़्य (अ्) (अ्ल्) न्नास
जमीअ़न् (अ्) तोय............

५.३५

227. १ उद्अ़ू (अ्) रब्बकुम् तदर्रुअ़ (न्) (अ्) व्व
खुफ़्यतन् तोय इन्नहू ला युह़िब्बु (अ्) ल्
मुअ़्तदीन ० ज

२ व ला तुफ़्सिदू (अ्) फ़ि (य्) (अ्) ल् अर्द़ि
बअ़्द इस़्लाहिहा व (अ्) द्अ़ूहु ख़ौफ़ (न्)-
(अ्) व्व तमअ़न् (अ्) तोय इन्न रह़्मत (अ्)-
ल्लाहि क़रीबु (न्) म्मिन (अ्) ल् मुह़्सिनीन०

७.५५–५६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१९ अहिंसा

४६ न्याय-बुद्धि

२२६ एक मनुष्य बचाना अर्थात् जगत् को बचाना

१ हमने इस्रायल-पुत्रों को आदेश दिया कि जिसने किसी मनुष्य की किसी प्राण की हानि के बदले या पृथ्वी में युद्ध छेड़ने के कारण के अतिरिक्त अन्य कारण से--हत्या की, तो उसने मानो, अखिल मानव-जाति की हत्या कर दी। और जिसने किसी प्राण को बचाया, उसने मानो अखिल मानव-जाति को जीवन प्रदान किया··।

५.३५

२२७ कलह न फैलाओ

१ अपने प्रभु को पुकारो, गिड़गिड़ाते हुए और मौनपूर्वक निस्सन्देह वह मर्यादाओं का अतिक्रमण करनेवालों को पसंद नहीं करता।

२ इस जगत् में बखेड़ा न मचाओ, जब कि उस (जगत्) का सुधार हो चुका है। और उसी (प्रभु) को पुकारो भय एवं आशा के साथ। ईश्वर की करुणा सत्कृति करनेवालों के निकट है।

७.५५-५६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

228. १ या अय्युह (अ्)(अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्)
कूनू(अ्) क़व्वामीन लिल्लाहि शुहदाअ
बि(अ्)ल् क़िस्ति व ला यज्रिमन्नकुम् शनआनु
क़ौमिन् अला(य्) अल्ला तअ्दिलू (अ्) तोय
इअ्दिलू(अ्) हुव अक़्रबु लि(ल्)त्तक़्वा-
(य्) व (अ्)त्तक़ु(वअ्) (अ्)ल्लाह तोय इन्न-
(अ्)ल्लाह ख़बीरु (न्)म्बि मा तअ्मलून ० ५.९
229. १ व इन् जनहू (अ्) लि(ल्) स्सल्मि फ़ (अ्)-
ज्नह् लहा व तवक्कल् अल(य्) (अ्)ल्लाहि तोय
इन्नहू हुव(अल्) स्समीअु (अ्)ल् अलीमु०
२ व इ (न्)य्युरीदू (अ्)अ(न्) य्यख़्दअूक
फ़ इन्न हस्बक (अ्) ल्लाहु तोय हुव (अ्)-
ल्लज़ी अय्यदक बि नस्रिही व बि(अ्)ल्
मु(व्)अ्मिनीन० ला
३ व अल्लफ़ बैन क़ुलूबिहिम् तोय लौ अन्फ़क़्त
मा फ़ि(अ्)ल् अर्ज़ि जमीअ(न्अ्) म्मा
अल्लफ़्त बैन क़ुलूबिहिम् व लाकिन्न(अ्)ल्लाह
अल्लफ़ बैनहुम् तोय इन्नहू अज़ीज़ुन् हकीमुन्०
८.६१–६३
230. १ व इन् आक़ब्तुम् फ़ आक़िबू(अ्) बि मिस्लि
मा अूक़िब्तुम् बिही तोय व लइन् सबर्तुम् ल
हुव ख़ैरु(न्) लिल(ल्)स्साबिरीन०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२२८ द्वेष करनेवालों पर भी अन्याय न करो

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर के लिए सत्य पर स्थिर रहनेवाले तथा न्याय की साक्ष्य देनेवाले बनो। किसीका द्वेष तुम्हें इस प्रकार उत्तेजित न करे कि तुम न्याय न कर सको। न्याय करो। यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो। निस्सन्देह ईश्वर तुम्हारे कृत्यों से अवगत है।

५.९

२२९ मैत्री के लिए प्रस्तुत रहो

१ यदि वे सन्धि की ओर झुकें, तो तू भी उसके लिए झुक जा और ईश्वर पर भरोसा रख। निस्सन्देह वही सर्वश्रुत, सर्वज्ञ है।

२ और यदि वे तुझे धोखा देने की इच्छा रखते हों, तो तेरे लिए ईश्वर पर्याप्त है। उसीने तुझे अपनी सहायता से एवं श्रद्धावानों के द्वारा बल पहुँचाया।

३ और श्रद्धावानों के हृदय एक-दूसरे से जोड़ दिये। यदि तू पृथ्वी में जो कुछ है, सब व्यय कर डालता, तो भी उनके हृदयों को जोड़ न सकता। किन्तु ईश्वर ने उनके हृदय जोड़ दिये। निस्सन्देह वह सर्वजित्, सर्वविद् है।

८.६१–६३

४७ न्याय से क्षमा श्रेष्ठ

२३० सहन करना श्रेष्ठ

१ यदि बदला लो, तो उतना ही, जितना तुम्हें कष्ट दिया गया और यदि सहन करो, तो सहन करनेवालों के लिए सहन करना ही अच्छा है।

१६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व(अ्)स्बिर् व मा सब्रुक इल्ला बि(अ्)ल्लाहि
व ला तह्ज़न् अलैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़ि(न्)-
म्मिम्मा यम्कुरून ०

३ इन्न(अ्)ल्लाह मअ़(अ्)ल्लज़ीन(अ्)त्तक़ौ-
(अ्)व्व(अ्)ल्लज़ीन हु(म्)म्मुह्सिनून ०

१६.१२६–१२८

231. १ व(अ्)ल्लज़ीन इज़ा असाबहुमु(अ्)ल् बग़्यु-
हुम् यन्तसिरून ०

२ व जज़ा(व्)अु(अ्)सय्यिअतिन् सय्यिअतु-
(न्)म्मिस्लुहा ज॰ फ़ मन् अफ़ा व अस्लह फ़ अज्रुहू
अल (य्) (अ्) ल्लाहि तोय़ इन्नहू ला
युहिब्बु (अल्)ज़्ज़ालिमीन ०

४२.३९–४०

232. १ ख़ुज़ि(अ्)ल् अफ़्व वअ्मुर् बि (अ्)ल्
अुर्फ़ि व अअ्रिद् अनि(अ्) ल् जाहिलीन०

२ व इम्मा यन्ज़ग़न्नक मिन (अल्)श्शैतानि
नज़्ग़ुन् फ़(अ्)स्तअिज् बि(अ्)ल्लाहि ज॰
इन्नहू समीअुन् अलीमुन् ०

३ इन्न(अ्)ल्लज़ीन(अ्)त्तक़ौ(अ्) इज़ा मस्सहुम्
ताअिफ़ु(न्)म्मिन(अल्)श्शैतानि तज़क्करू(अ्)
फ़ इज़ा हु(म्)म्मुब्सिरून ०ज॰

७.१९९–२०१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ तू सहन कर। तेरा सहन करना ईश्वर की ही सहायता से है। उनके लिए दुःखी न हो और उनके कपटों से व्यथित न हो।

३ निस्सन्देह ईश्वर उन लोगों के साथ है, जो उससे डरते हैं और जो अच्छे काम करते हैं।

१६.१२६–१२८

२३१ क्षमा करना श्रेष्ठ

१ वे लोग जब उन पर बहुत अत्याचार होता है, तो जवाब देते हैं।

२ बुरे काम का बदला उतना ही बुरा है। फिर जो कोई क्षमा करे और संपरिवर्तन करे, उसका प्रतिफल ईश्वर के अधीन ही है। निस्सन्देह वह अत्याचारियों को पसंद नहीं करता।

४२.३९–४०

४८ अहिंसक निष्ठा

२३२ क्षमा एवं ईश्वराश्रय

१ क्षमा करने का अभ्यास कर, सत्कृति का आदेश देता जा; और गँवारों से टल।

२ यदि शैतान की छेड़ तुझे उकसाये, तो ईश्वर का आश्रय माँग। निस्सन्देह वह सर्वश्रुत है, सर्वज्ञ है।

३ निस्सन्देह जो लोग ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य करते हैं, उनको शैतान की ओर से कोई विकार छू भी जाता है, तो वे चौकन्ने हो जाते हैं। सो एकाएक उनकी आँखें खुल जाती हैं।

७.१९९–२०१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

233. १ इद्फ़अ् बि(अ्)ल्लती हिय अह्सनु (अ्ल्)-
सय्यिअत तोय नह्नु अअ्लमु बि मा यसिफ़ूनo
२ व क़ु(ल्)र्रब्बि अऊज़ु बिक मिन् हमज़ाति-
(अ्ल्) श्शयातीनिo ला
३ व अऊज़ु बिक रब्बि अ(न्)य्यहूदुरूनि o
२३.९६–९८

234. १ …वल् यअ्फ़ू(अ्)वल् यस्फ़हू(अ्) तोय अ ला
तुहिब्बून अ(न्)य्यग़्फ़िर(अ्)ल्लाहु लकुम् तोय
व(अ्)ल्लाहु ग़फ़ूरु(न्)र्रहीमुन्o
२४.२२

235. १ व ला तस्तवि (य्) (अ्)ल् हसनतु व ल-
(अ्) (अ्ल्)स्सय्यिअतु तोय इद्फ़अ् बि (अ्)-
ल्लती हिय अह्सनु फ़इज(अ्) (अ्)ल्लजी बैनक
व बैनहु अदावतुन् क अन्नहु वलिय्युन् हमीमुन्o
२ व मा युलक़्क़ाहा इल्ल(अ्) (अ्ल)ल्जीन
सबरू(अ्) ज व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन्
अज़ीमिन्o
४१.३४–३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२३३ बुराई का भलाई से प्रतिकार

१ बुराई का प्रतिकार ऐसे बर्ताव से करो, जो बहुत अच्छा हो। हम भलीभाँति जानते हैं, जो ये बोल रहे हैं।
२ और कह : हे प्रभो ! मैं तेरा आश्रय चाहता हूँ शैतान की कुप्रेरणाओं से बचने के लिए।
३ और हे प्रभो ! मैं तेरा आश्रय माँगता हूँ, शैतान मेरे पास न आये इसलिए।

२३.९६–९८

२३४ हम क्षमायाचक, हम क्षमा करें

१ ···लोगों को चाहिए कि वे क्षमा करें और भूल जायँ। क्या तुम नहीं चाहते कि ईश्वर तुमको क्षमा करे ? ईश्वर क्षमावान्, करुणावान् है।

२४.२२

२३५ शत्रु मित्र होंगे

१ सत्कर्म एवं दुष्कर्म समान नहीं हो सकते। दुष्टता को ऐसे बर्ताव से दूर कर, जो बहुत अच्छा हो। फिर एकाएक वह मनुष्य कि जिसके और तेरे बीच शत्रुता है, ऐसा होगा, मानो वह तेरा सुहृद् मित्र है।
२ और यह बात उसको प्राप्त होती है, जो दृढ़निश्चय है, और यह बात उसीको मिलती है, जो बड़ा भाग्यवान् है।

४१.३४–३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

236. १ इन्न(अ्)ल्लजीन आमनू (अ्) व अमिलु(व्अ्)-
(अ्ल्) स्सालिहाति स यज्अलु ल हुमु(अ्ल्)-
र्रह्मानु वुद्दन् (अ्)O

१९.९६

237. १ अरअैत(अ्)ल्लजी युकज्जिबु बि(अ्ल्)द्दीनिOतोय
२ फ़ जालिक(अ्)ल्लजी यदुअ्अु(अ्)ल् यतीमOला
३ व ला यहुद्दु अला (य्)तआमि(अ्)ल्
मिस्कीनिOतोय
४ फ़ वैलु(न्)लिल्ल् मुसल्लीनOला
५ (अ्)ल्लजीन हुम् अन् सलातिहिम्साहूनOला
६ (अ्)ल्लजीन हुम् युराअूनOला
७ व यम्नअून(अ्)ल् माअूनOऐन

१०७.१–७

238. १ अ लम् नज्अ(ल्)ल्लहू अैनैनिOला
२ व लिसान(न्)व्व शफ़तैनिOला
३ व हदैनाहु(अ्ल्)न्नज्दैनिOज
४ फ़ल(अ्) (अ्)क़्तहम(अ्)ल् अक़बतOज़सला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२३६ **प्रेम कैसे प्राप्त होगा ?**

१ निस्सन्देह जो श्रद्धा रखते हैं और जिन्होंने सत्कृत्य किये हैं, उनमें वह कृपालु प्रेम निर्माण करता है।

१९.९६

४९ सहयोग-वृत्ति

२३७ **पड़ोसी-धर्म**

१ क्या तूने उस मनुष्य को देखा, जो न्याय के दिन को नहीं मानता ?

२ तो यही वह व्यक्ति है, जो अनाथ को धक्के देता है।

३ और वंचितों को अन्न देने के लिए लोगों को उत्साहित नहीं करता ।

४ सो, उन प्रार्थना करनेवालों को धिक्कार,

५ जो अपनी प्रार्थना से असावधान हैं।

६ वे, जो मिथ्याचार करते हैं।

७ और पड़ोसियों को दैनन्दिन बरतने की छोटी चीजें भी नहीं देते ।

१०७.१-७

२३८ **संयम एवं दया का पारस्परिक बोध**

१ क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं ?

२ और जीभ और दो होंठ ?

३ और दिखला दिये उसको दोनों मार्ग।

४ तो वह घाटी नहीं चढ़ा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ व मा अद्राक म(अ्) (अ्)ल् अक़बतु०^तीय
६ फ़क्कु रक़बतिन्०^ला
७ औ इत्आमुन् फ़ी यौमिन् जी मस्ग़बतिन्०^ला
८ य्यतीमन्(अ्)जा मक़्रबतिन्०^ला
९ औ मिस्कीनन्(अ्)जा मत्रबतिन्०^तीय
१० सुम्म कान मिन(अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)व तवासौ(अ्)बि(अल्) स्सब्रि व तवासौ बि-(अ्) ल् मर्हमतिO^तीय

१०.८-१७

239. १ व(अ्)ल् अस्रिO^ला
२ इन्न (अ्)ल् इन्सान ल फ़ी खुस्रिन्O^ला
३ इल्ल(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्)व अमिलु-(अ्) (अल्)स्सालिहाति व तवासौ(अ्)बि-(अ्) ल् हक़्क़िO^ला व तवासौ बि(अल्)-स्सब्रिO^ऐन्

१०३.१-३

240. १ .....व तआवनू(अ्) अल(य्) (अ्)ल् बिर्रि व (अल्) त्तक़्वा(य्)^खात व ला तआवनू-(अ्) अल(य्) (अ्)ल् इस्मि व(अ्)ल् अुद्-वानि^खात

५.३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५ और तूने क्या जाना कि वह घाटी क्या है ?

६ वन्दी को मुक्त करना,

७ या भूख के दिन में खाना खिलाना

८ सगे-सम्बन्धी अनाथ को

९ तथा धूल में पड़े हुए अकिञ्चन को

१० फिर उन लोगों में सम्मिलित होना, जो श्रद्धा रखते हैं और परस्पर धीरज का बोध देते हैं और परस्पर करुणा का बोध देते हैं।

९०.८–१७

२३९ सत्य और धीरज का पारस्परिक बोध

१ शपथ है काल की।

२ निश्चय ही मनुष्य घाटे में है।

३ अतिरिक्त उन लोगों के, जो श्रद्धा रखते हैं और सत्कृत्य करते हैं और परस्पर सत्य का बोध देते हैं एवं परस्पर धृति का बोध देते हैं।

१०३.१–३

२४० पारस्परिक सहायता

१ ·· सत्कृति एवं संयम में एक-दूसरे की सहायता करो। पाप एवं अत्याचार में एक-दूसरे की सहायता न करो।

५.३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

241. १ व लि कुल्लिँव्विज्हतुन् हुव मुवल्लीहा फ़-
(अ्) स्तबिक़ु (अ्) (अ्)ल् ख़ैरातितोय ऐन मा
तकूनू (अ्) यअ्ति बि कुमु (अ्)ल्लाहु
जमीअन् (अ्) तोय इन्न (अ्) ल्लाह अला (य्)
कुल्लि शय्‌इन् क़दीरुन्०

२.१४८

242. १ फ़ ला तुतिअि (अ्)ल् मुकज़्जिबीन०
२ वद्दू (अ्)लौ तुद्हिनु फ़ युद्हिनून०
३ व ला तुतिअ् कुल्ल हल्लाफ़ि (न्) म्महीनिन्०ला
४ हम्माज़ि (न्) म्मश्शाअि (न्) म्बि नमीमि (न्)०ला
५ म्मन्नाअि (न्) ल्लिल् ख़ैरि मुअ्तदिन् असीमिन्०ला
६ अुतुल्लि (न्) म् बअ्द जालिक ज़नीमिन्०ला
७ अन् कान जा मालि (न्)ँव्व बनीन०तोय

६८.८-१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२४१ सत्कृतियों में होड़ करो, चाहे उद्दिष्ट विभिन्न हों

१ प्रत्येक के लिए दिशा है, जिसकी ओर वह मुड़ता है। सो तुम भलाइयों की ओर बढ़ो, दौड़ो। जहाँ कहीं तुम होगे, ईश्वर तुम सबको इकट्ठा कर लायेगा। निस्सन्देह ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२.१४८

५० असहयोग

२४२ दुर्जनों की न मानो

१ तो तू कहना न मान, ईश्वर को न माननेवालों का।

२ वे चाहते हैं कि यदि तू नरम पड़े, तो वे भी नरम पड़ें।

३ और तू कहा न मान बहुत-सी शपथें खानेवाले नीच का,

४ जो दोषैकदृष्टि, पिशुन है,

५ भले कार्य को रोकनेवाला, मर्यादा का अतिक्रमण करनेवाला पापी है,

६ जो क्रूर और इन सबसे अधिक यह कि पल-पल में रंग बदलनेवाला है।

७ और यह सब इस घमण्ड से कि वह सम्पत्तिवान्, सन्ततिवान् है।

६८.८-१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

243. १ उज़िन लिल्लज़ीन युक़ातलून बि अन्नहुम् ज़ुलिमू(अ्) तोय व इन्न(अ्)ल्लाह अला(य्) नस्रिहिम् ल क़दीरुनि०ला

२ (अ्)ल्लज़ीन उख़्रिजू (अ्)मिन् दियारिहिम् बि ग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अ(न्)य्यक़ूलू(अ्) रब्बुन(अ्) (अ्)ल्लाहुतोय व लौ ला दफ़्अु-(अ्) ल्लाहि (अल्) न्नास बअ्ज़हुम् बि बअ्ज़ि-(न्) ल्ल हुद्दिमत् सवामिअु व बियअु(न्) व्व सलवातु(न्) व्व मसाजिदु युज़्करु फ़ीह (अ्)-(अ्) स्मु (अ्)ल्लाहि कसीरन् (अ्)तोय....

२२.३९-४०

244. १ व(अ्) ल्लज़ीन हाजरू (अ्) फ़ी सबीलि-(अ्)ल्लाहि सुम्म क़ुतिलू (अ्)औ मातू(अ्) ल यर्ज़ुक़न्नहुमु (अ्) ल्लाहु रिज़्क़न् (अ्) ह़सनन्(अ्)तोय व इन्न(अ्)ल्लाह ल हुव ख़ैरु-(अल्) र्राज़िक़ीन०

२ ल युद्ख़िलन्नहु(म्)म्मुद्ख़ल(न्)य्यर्ज़ौनहु तोय व इन्न (अ्)ल्लाह ल अलीमुन् ह़लीमुन्०

३ ज़ालिकज व मन् आक़ब बि मिस्लि मा उक़िब बिही सुम्म बुग़िय अलैहि ल यन्सुरन्नहु (अ्)ल्लाहुतोय इन्न (अ्)ल्लाह ल अफ़ुव्वुन् ग़फ़ूरुन्०

२२.५८-६०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५१ अनिवार्य प्रतिकार

२४३ प्रतिकार के अभाव में धर्मस्थान उध्वस्त होते

१ उन लोगों को लड़ाई की अनुज्ञा दी जाती है, जिनसे लड़ाई की जा रही है और इस कारण भी कि उन पर बहुत अत्याचार ढाये गये। निस्सन्देह ईश्वर उनकी सहायता करने में समर्थ है।

२ उनको अन्याय से उनके घरों से निकाला गया, केवल उनके इस कहने पर कि हमारा प्रभु ईश्वर है। और यदि ईश्वर लोगों को एक को दूसरे से न हटाता रहता, तो साधुओं के एकान्त स्थल, क्रिश्चियनों के पूजा-स्थान, यहूदियों के उपासना-स्थान और मस्जिदें, जिनमें परमात्मा का नाम बहुत लिया जाता है, ढाये जाते। निस्सन्देह परमात्मा उसकी अवश्य सहायता करेगा, जो उसकी सहायता करेगा। निस्सन्देह परमात्मा बलशाली है, सर्वजित् है। २२.३९–४०

२४४ धर्मरक्षणार्थ मर्यादित प्रतिकार

१ जिन लोगों ने ईश्वर के मार्ग में घर-द्वार छोड़ा, फिर मारे गये या मर गये, उनको ईश्वर अवश्य अच्छी जीविका देगा। और निश्चय ही ईश्वर सबसे श्रेष्ठतर जीविका देनेवाला है।

२ वह उन लोगों को अवश्य ऐसे स्थान में प्रविष्ट करेगा, जिसे वे पसंद करेंगे। निस्सन्देह ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वसह है।

३ यह हुआ, और जो व्यक्ति बदला ले उतना ही, जितना कि उसे सताया गया है, उस व्यक्ति पर यदि फिर से अत्याचार हो, तो ईश्वर उसे अवश्य सहायता देगा। निस्सन्देह ईश्वर दोषों को भूल जानेवाला तथा क्षमा करनेवाला है। २२.५८–६०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

: २० :

245. १ व इज् क़ुल्तुम् या मूसा(य्) ल (न्)न्नस्बिर अला(य्) तआमि(न्)ँ व्वाहि़दिन् फ़(अ्)-दअु ल ना रब्बक युख़्रिज् ल ना मिम्मा तुम्बितु(अ्)ल् अर्दु मि(न्)म् बक़्लिहा व क़िस्साअिहा व फ़ूमिहा व अदसिहा व बस्लिहा क़ाल अतस्तब्दिलून(अ्) ल्लज़ी हुव अद्ना(य्) बि (अ्) ल्लज़ी हुव ख़ैरुन् इह्बित़ू(अ्) मिस्रन्(अ्) फ़ इन्न लकु (म्)-म्मा सअल्तुम व दुरिबत् अलैहिमु(अ्ल्)-ज़्ज़िल्लतु व (अ्)ल् मस्कनतु व बाअू बि गज़बि(न्)म्मिन(अ्)ल्लाहि......

२.६१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२० अस्वाद

५२ रसनाजय

२४५ एक अन्न से उकताना

१ जब तुमने कहा : हे मूसा, हम एक ही प्रकार के भोजन पर कदापि सन्तोष नहीं कर सकते, सो अपने प्रभु से हमारे लिए प्रार्थना कर कि हमारे लिए वह उस वस्तु का निर्माण करे, जिसे भूमि उगाती है, अर्थात् साग, सब्जी, गेहूँ, दाल और प्याज। मूसा ने कहा : क्या तुम श्रेष्ठ[1] (वस्तु) के स्थान पर कनिष्ठ[2] (श्रेणी की वस्तु) लेना चाहते हो ? तो किसी शहर में जा उतरो। जो कुछ तुम माँगते हो, वहाँ मिल जायगा। और फिर उन पर अपमान एवं परवशता थोप दी गयी और वे ईश्वर के प्रकोप के भाजन बन गये……।

२.६१

---

१ श्रेष्ठ—जो ईश्वर ने दिया। २ कनिष्ठ—जो वासनाओं ने माँगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

246. १ अलम् तर इल (य्) (अ्) ल्लजीन युज़क्कून अन्फ़ुसहुम्^तोय बलि (अ्) ल्लाहु युज़क्की म(न्)ँ य्यशाअु व ला युज़्लमून फ़तीलन्o

४.४९

247. १ या अय्युह (अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू(अ्) ला तत्तबिअ़(अ्) ख़ुतुवाति (अ्ल्)-श्शैतानि^तोय व म (न्) य्यत्तबिअ़ ख़ुतुवाति-(अ्ल्) श्शैतानि फ़ इन्नहू यअ्मुरु बि-(अ्) ल् फ़ह्शाअि व (अ्) ल् मुन्करि^तोय व लौ ला फ़द्लु(अ्)ल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू मा ज़का (य्) मिनकु (म्) म्मिन् अह्दिन् अबदन् (अ्)^ला ँव्व लाकिन्न (अ्) ल्लाह युज़क्की म(न्)ँ य्यशाअु^तोय व (अ्) ल्लाहु समीअुन् अलीमुन्o

२४.२१

248. १ अल्लजीन यज्तनिबून कबाअिर(अ्)ल् इस्मि व (अ्)ल् फ़वाहिश इल्ल(अ्) (अ्ल्)ल्लमम^तोय इन्न रब्बक वासिअु (अ्) ल् मग़्फ़िरति^तोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२१ ब्रह्मचर्य

५३ पावित्र्य

२४६ कहता है, मैं पवित्र हूँ

१ क्या तूने उन्हें देखा, जो अपने-आपको पवित्र कहते हैं। जब कि ईश्वर ही पवित्र बनाता है, जिसे चाहता है। (और इन पवित्रता की डींग मारनेवाले को जो दण्ड होगा) उसमें खजूर की गुठली पर की रेखा के बराबर भी अन्याय न होगा।

४.४९

२४७ पावित्र्य ईश्वर की कृपा

१ हे श्रद्धावानो! शैतान के पद-चिह्नों का अनुसरण न करना जो शैतान के पद-चिह्नों का अनुसरण करता है, तो निस्सन्देह शैतान निर्लज्ज एवं अनुचित काम करने की आज्ञा करता है। और यदि तुम पर ईश्वर की दया एवं करुणा न होती, तो तुममें से एक भी पवित्र न होता। किन्तु ईश्वर जिसे चाहता है, पवित्र करता है। और ईश्वर सर्वश्रुत एवं सर्वज्ञ है।

२४.२१

२४८ सूक्ष्म दोष ईश्वरीय कृपा से टलेंगे

१ जो बड़े पापों से और वैषयिक बातों से बचते हैं, सिवा सूक्ष्म दोषों के (तो उनके लिए) निस्सन्देह तेरा प्रभु व्यापक क्षमावान्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुव अअ़्लमु बिकुम् इज़् अन्शअकु(म्)म्मिन (अ्) ल् अर्ज़ि व इज़् अन्तुम् अजिन्नतुन् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम् ज फ़ ला तुज़क्कू (अ्) अन्फ़ुसकुम्तोय हुव अअ़्लमु बि मनि(अ्) त्तक़ा-(य्)O

५३.३२

249. १ व जरू(अ्)ज़ाहिर(अ्)ल् इस्मि व बातिनहूतोय इन्न (अ्) ल्लज़ीन यक्सिबून (अ्) ल् इस्म सयुज्ज़ौन बिमा कानू (अ्)यक़्तरिफ़ूनO

६.१२०

250. १ क़द् अफ़्लह् मन् तज़क्का (य्) Oला
२ व ज़कर (अ्)स्म रब्बिही फ़ सल्ला(य्)Oतोय

८७.१४–१५

251. १ व नफ़्सि (न्)ँव्व मा सव्वाहा स्वातला
२ फ़ अल्हमहा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा Oस्वात
३ क़द् अफ़्लह् मन् ज़क्काहा Oस्वातला
४ व क़द ख़ाब मन् दस्साहा Oतोय

९१.७–१०

252. १ या बनी आदम क़द् अन्ज़ल्ना अ़लैकुम् लिबास-(न्)(अ्)ँय्युवारी सौआतिकुम् व रीशन्-(अ्) तोय व लिबासु (अल्) त्तक़्वा (य्) ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। और तुम्हें उस समय से वह भलीभाँति जानता है, जब तुम्हें उसने भूमि से निर्माण किया और जब तुम अपनी माताओं के गर्भ में थे। सो तुम अपना पावित्र्य न जतलाओ। वह भलीभाँति जानता है कि कौन संयमी एवं ईश्वर-परायण है।

५३.३२

२४९ अन्तर्बाह्य पाप टालो

१ बाहरी और भीतरी पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं, उन्हें उनकी उस करतूत का फल अवश्य दिया जायगा।

६.१२०

२५० पवित्रता एवं प्रभु-स्मरण

१ निस्सन्देह, सफल हुआ वह व्यक्ति, जिसने पवित्रता धारण की।
२ अपने प्रभु का नाम लिया और प्रार्थना की।

८७.१४–१५

२५१ शुभाशुभ विवेक जाग्रत रखो

१ शपथ है जीव की और उसकी, जिसने उसको विकसित किया।
२ फिर उस जीव को शुभाशुभ विवेक की अन्त:प्रेरणा दी।
३ निश्चय ही वह मनुष्य साफल्य को पहुँचा, जिसने उसे विशुद्ध किया।
४ और असफल हुआ वह, जिसने उसका अवरोध किया।

९१.७–१०

२५२ शील-रक्षा

१ हे आदम-पुत्रो! निस्सन्देह हमने तुमको वस्त्र दिये हैं, जो तुम्हारी लज्जा ढाँकते हैं और जो शोभा भी हैं, पर संयम का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जालिक ख़ैरुन् तोय़ जालिक मिन् आयाति
(अ्)ल्लाहि लअ़ल्लहुम् यज़्जक्करून O
२ या बनी आदम ला यफ़्तिनन्नकुमु (अ्ल्)-
श्शैतानु क मा अख़्रज अबवैकु(म्) म्मिन-
(अ्) ल् जन्नति यन्ज़िअ़ु अ़न्हुमा लिबासहुमा
लि युरियहुमा सौआतिहिमा तोय़ इन्नहु यराकुम्
हुव व क़बीलुहु मिन् हैसु ला तरौनहुम् तोय़ इन्ना
जअ़ल्न (अ्ल्) श्शैयातीन औलियाअ
लिल्लजीन ला यु(व्)अ्मिनून O
३ व इजा फ़अ़लू (अ्) फ़ाहिशतन् क़ालू वजद्ना
अ़लैहा आबाअना व (अ्) ल्लाहु अमरना
बिहा तोय़ क़ुल् इन्न (अ्)ल्लाह ला यअ्मुरु
बि (अ्)ल् फ़ह्शाअि तोय़ अ तक़ूलून अ़ल-
(अ्)ल्लाहि मा ला तअ़्लमूनO ७.२६–२८
१ 253. सुम्म क़फ़्फ़ैना अ़ला (य्) आसारिहिम्
बि रुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि अ़ीस(य्) (अ्)ब्नि
मर्यम व आतैनाहु (अ्) ल् इन्जील०ला
व जअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबि (अ्) ल्लजीन (अ्)-
त्तबअ़ूहु रअ्फ़तन (न्) व्व रह्मतन्तोय़ व रह्बानिय्यतन
नि (अ्)ब्तदअ़ूहा मा कतब्नाहा अ़लैहिम्
इल्ल (अ्) (अ्) ब्तिग़ाअ रिद्वानि (अ्)-
ल्लाहि फ़ मा रअ़ौहा हक़्क रिआ़यतिहा ज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रावरण श्रेष्ठतम प्रावरण है। ये ईश्वर के संकेत हैं, जिससे कि ये लोग उपदेश प्राप्त करें।

२ हे आदम-पुत्रो ! तुम्हें शैतान चरित्र-भ्रष्ट करने के लिए न बहकाये, जैसा कि उसने तुम्हारे (सर्वप्रथम) माँ-बाप को स्वर्ग से निकलवाया, उनके कपड़े उनसे उतरवाये, जिससे कि उन्हें उनके लज्जा-स्थान दिखाई दें। शैतान और उसका परिवार तुम्हें इस तरह देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देख सकते। निस्सन्देह हमने शैतान को उन लोगों का मित्र बना दिया, जो श्रद्धा नहीं रखते।

३ और वे लोग जब कोई बुरा काम करते हैं, तो कहते हैं कि 'हमने अपने बाप-दादाओं को इसी पद्धति पर चलते पाया है, और ईश्वर ने ही हमें ऐसा करने की आज्ञा दी है।' निस्सन्देह ईश्वर बुरे काम की आज्ञा नहीं दिया करता। क्या तुम ईश्वर के विषय में ऐसी बात कहते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं ?

७.२६–२८

२५३ अनधिकृत संन्यास

१ फिर उन प्रेषितों के पश्चात् हमने क्रमशः प्रेषित भेजे और उनके पश्चात् हमने मरियम के पुत्र यीशु को भेजा और उसे एंजिल (न्यू टेस्टामेंट) प्रदान की। और यीशु के अनुयायियों के हृदयों में मृदुता एवं करुणा उत्पन्न कर दी और उन्होंने संन्यास एवं एकान्त जीवन अपनी ओर से चालू किया। उसे हमने उनके लिए आवश्यक नहीं किया था। परन्तु उन्होंने ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए वह किया। फिर उसे जैसा निभाना चाहिए था, वैसा नहीं निभाया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फ़आतैन (अ्) (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ्) म्मिन्हुम् अज्रहुम् ज व कसीरु (न्) म् मिन्हुम् फ़ासिक़ूनO ५७.२७

254. १ हुनालिक दआ ज़करीया रब्बहू ज क़ाल रब्बि हब् ली मि (न्) ल्लदुन्क ज़ुर्रीयतन् तय्यिबतन् ज इन्नक समीअ़ु (अ्ल्) द्दुआ़िअO

२ फ़ नादत्हु (अ्) ल् मलाइकतु व हुव क़ाइमु-(न्) य्युसल्ली फ़ि (य्) (अ्) ल् मिह्राबि ला अन्न (अ्) ल्लाह युबश्शिरुक बि यह्या (य्) मुसद्दिक़(न्) (अ्) म् बि कलिमति (न्) म्मिन-(अ्) ल्लाहि व सय्यिद (न् अ्) व्व हसूर-(न्अ्) व्व नबिय्य (न् अ्) म्मिन् (अ्ल्)-स्सालिहीन O ३.३८–३९

255. १ फ़ इज़ा जाअति (अ्ल्) ताम्मतु (अ्) ल् कुब्रा (य्) Oज़स्वली

२ यौम यतज़क्करु (अ्) ल् इन्सानु मा सआ (य्) Oला

३ व बुर्रिज़ति (अ्) ल् जहीमु लिम (न्) य्यरा (य्) O

४ फ़ अम्मा मन् तग़ा (य्) Oला

५ व आसर (अ्) ल् हया (व्) त (अ्ल्) द्दुन्या Oला

६ फ़ इन्न (अ्) ल् जहीम हिय (अ्) ल् मअ्वा (य्) Oतोय

७ व अम्मा मन् ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिही व नह (य्)-(अ्ल्) न्नफ़्स अनि (अ्) ल् हवा (य्) Oला

८ फ़ इन्न (अ्) (अ्) ल् जन्नत हिय (अ्) ल् मअ्वा (य्) Oतोय ७९.३४–४१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फिर हमने उनमें से जो श्रद्धावान् थे, उन्हें उनका फल दिया। पर अधिकतर उनमें दुराचारी थे।

५७.२७

२५४ ब्रह्मचारी जॉन (यह्या)

१ उस स्थान पर जक्रिया ने अपने प्रभु को पुकारा। कहा: हे प्रभो! मुझे अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर। निस्सन्देह तू ही प्रार्थना सुननेवाला है।

२ जब कि वह उपासना-स्थान में बैठकर उपासना कर रहा था, देवदूतों ने उसे पुकारकर कहा: "ईश्वर तुझे शुभ सन्देश देता है (कि) तुझे जॉन (यह्या) (नाम का पुत्र) होगा। वह ईश्वरीय वाणी को प्रमाणित करनेवाला, उदात्त, ब्रह्मचारी, सन्देष्टा और सत्कृतिवान् होगा।"

३.३८–३९

२५५ प्रभु का भान रखकर काम-नियमन

१ फिर जब आयेगी वह बड़ी विपत्ति

२ उस दिन मनुष्य स्मरण करेगा, जो प्रयत्न उसने किये थे।

३ और नरक उसके सम्मुख लाया जायगा कि वह उसे देखे।

४ तो जिसने प्रभु से विद्रोह किया होगा

५ और ऐहिक जीवन को अधिक मान्य किया होगा

६ तो नरक उसका ठिकाना है।

७ और जो अपने प्रभु के सम्मुख खड़े होने से डरा हो और उसने अपने मन को वासनाओं से रोका हो

८ तो निस्सन्देह उसका स्थान स्वर्ग है।

७९.३४–४१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

256. १ अल्लजीन यअ्कुलून(अ्ल्)र्रिबा (व्अ्) ला यक़ूमून इल्ला क मा यक़ूमु-(अ)ल्लजी यतख़ब्बतुहु (अ्ल्) श्शैतानु मिन-(अ्)ल् मस्सि तोय् जालिक बि अन्न हुम् क़ालू (अ्) इन्नम (अ्) (अ्) ल् बैअु मिस्ल्लु-(अ्ल्) र्रिबा (व् अ्) म व अहूल्ल-(अ्) ल्लाहु (अ्) ल् बैअ व हूर्रम (अ्ल्)-र्रिबा (व्अ्) तोय् फ़ मन् जाअहू मौअ़िजतु-(न्) म्मि (न्) र्रब्बिही फ़ (अ्)-न्तहा (य्) फ़ लहू मा सलफ़ तोय् व अम्रुहू इल (य्) (अ्) ल्लाहि तोय् व मन् आद फ़ उ (व) लाअिक अस्हाबु (अ्ल्) न्नारि ज हुम् फ़ीहा ख़ालिदून o

२ यम्हक़ु (अ्) ल्लाहु (अ्ल्) र्रिबा (व्अ्) व युर्बि (य्) (अ्ल्) स्सदकाति तोय् व (अ्) ल्लाहु ला युहिब्बु कुल्ल कफ़्फ़ारिन् असीमिन् o २.२७५–२७६

257. १ व मा आतैतु(म्) म्मि (न्) र्रिब (न् अ्)-ल्लि यर्बुव (अ्) फ़ी अम्वालि (अ्ल्)-न्नासि फ़ ला यर्बू (अ्) अिन्द (अ्) ल्लाहि ज व मा आतैतु(म्) म्मिन् ज़का(व्)तिन्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२२ शुद्ध जीविका

५४ अस्तेय

२५६ व्याज-निषेध

१ जो लोग व्याज खाते हैं, वे लोग उसी व्यक्ति की भाँति खड़े हो सकेंगे, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। ऐसा इसलिए कि वे कहते हैं कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि ईश्वर ने व्यापार वैध किया है और व्याज निषिद्ध। अतः जिस व्यक्ति को उसके प्रभु की ओर से उपदेश पहुँचे और वह व्याज से परावृत्त हो, तो जो कुछ पहले वसूल हो चुका, वह उसका है और उसका मामला ईश्वर के अधीन है। और जो कोई उसके पश्चात् फिर व्याज लेगा, तो वे ही हैं आग में झोंके जानेवाले, जिसमें वे हमेशा रहेंगे।

२ ईश्वर व्याज को विफल करता है और दान को सुफलित करता है। ईश्वर कृतघ्न दुराचारी को पसंद नहीं करता।

२.२७५–२७६

२५७ धन व्याज पर न दो, दान में दो

१ सो जो कुछ तुम व्याज पर देते हो, जिससे कि लोगों के धन में पहुँचकर वह बढ़े, तो (ध्यान रखो कि) ईश्वर के यहाँ वह नहीं बढ़ता। और जो कुछ पवित्र मन से नियमित रूप से दान देते हो––

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुरीदून वज्ह (अ) ल्लाहि फ़ उ (व्)लाॅअिक
हुमु (अ्)ल् मुद्अिफ़ूनO ३०.३९

258. १ व इला (य्) मद्यन अख़ाहुम् शुअैबन् (अ्)तोय
क़ाल या क़ौमि (अ्) अ़्बुदु (व्अ्) (अ्)-
ल्लाह् मा लकु (म्)म्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू तोय
व ला तन्क़ुसु (व्अ्) (अ्) ल् मिक्याल
व (अ्) ल् मीज़ान इन्नी अराकुम् बिख़ैरि-
(न्) व्व इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़जाब
यौमि (न्) म्मुहीतिन् O

२ व या क़ौमि औफ़ु (व्अ्) (अ्) ल् मिक्याल
व (अ्) ल् मीज़ान बि (अ्) ल् क़िस्ति व ला
तब्ख़सु (व्अ्) (अल्) न्नास अशयाअ-
हुम् व ला तअ़्सौ (व्) फ़ि (य्) (अ्) ल्
अर्द्दि मुफ़्सिदीन O

३ बक़ीयतु (अ्) ल्लाहि ख़ैरु (न्) ल्लकुम् इन्
कुन्तु (म्) म्मु(व)अमिनीन ०ज व मा अना
अ़लैकुम् बिहफ़ीजिन् O ११.८४–८६

259. १ वैलु (न्) लिलल् मुतफ़्फ़िफ़ीन O ला

२ (अ्) ल्लजीन इज (अ्) (अ्) क्तालू (अ्) अ़ल-
(य्) (अल्) न्नासि यस्तौफ़ून O

३ व इजा कालूहुम् औ व्वज़नूहुम युख़्सिरूनO तोय
८३.१–३

260. १ व ला ततमन्नौ (अ्) मा फ़द्दल (अ्) ल्लाहु
बिही बअ़्दकुम् अ़ला (य्) बअ़्दिन्तोय......
४.३२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के हेतु से-- तो ऐसे ही लोग ईश्वर के पास अपना दिया हुआ दुगुना करनेवाले हैं।

३०.३९

२५८ सही नाप और तौल

१ और मिदियन की ओर हमने उनके भाई शोयेब को भेजा। उसने कहा : भाइयो, ईश्वर की भक्ति करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई भजनीय नहीं और नाप-तौल कम न करो; मैं तुम्हें निश्चिन्त देखता हूँ और ऐसे दिन की विपदा से डरता हूँ, जो तुम सबको आ घेरेगी।

२ और, भाइयो, न्याय से पूरा नाप और तौल करो। लोगों को उनकी वस्तुओं में घाटा न दिया करो, और धरती पर कलह फैलाते न फिरो।

३ ईश्वर की दी हुई बचत तुम्हारे लिए अधिक हितावह है, यदि तुम श्रद्धावान् हो और मैं तुम पर कोई निरीक्षक नहीं हूँ।

११.८४–८६

२५९ धोखे की कमाई शैतान की कमाई

१ नाप-तौल कम करनेवालों के लिए धिक्कार।

२ कि जब लोगों से नाप लें, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

३ और जब उन्हें नापकर या तौलकर दें, तो घटाकर देते हैं।

८३.१–३

२६० मा गृधः

१ और लालच न करो उस चीज का कि जिसके द्वारा ईश्वर ने तुममें से एक को दूसरे पर विशिष्टता दी है......। ४.३२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

261. १ हा अन्तुम् हा (व्) उलाअि तुद्औन लितुन्फ़िक़ू-
(अ्) फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहिज फ़ मिन्कु (म्)-
म्म (न्) य्यब्ख़लुज व म (न्) य्यब्ख़ल्
फ़ इन्न मा यब्ख़लु अ (न्) न्नफ़्सिही तोय व
(अ्) ल्लाहु (अ्) ल् ग़निय्यु व अन्तुमु (अ्) ल्
फ़ुक़रा अुज व इन् ततवल्लौ (अ्) यस्तब्दिल्
क़ौमन् (अ्) ग़ैरकुम् ला सुम्म ला यकूनू (अ्)
अम्सालकुम् ० ४७.३८

262. १ व (अ्) अ्बुदु (वअ्) (अ्) ल्लाह व ला
तुश्रिकू (अ्) बिही शैअ (न्) व्व बि (अ्) ल्
वालिदैनि इह्सान (न् अ्) व्व बि ज़ि (अ्) ल्
क़ुर्बा (य्) व (अ्) ल् यतामा (य्) व-
(अ्) ल् मसाकीनि व (अ्) ल् जारि ज़ि (य्)-
(अ्) ल् क़ुर्बा (य्) व (अ्) ल् जारि (अ्)-
ल् जुनुबि व (अ्) स्साहिबि बि (अ्) ल्
ज (न्) म्बि व (अ्) ब्नि (अल्) स्सबीलिला
व मा मलकत् ऐमानुकुम् तोय इन्न-
(अ्) ल्लाह ला युहिब्बु मन् कान मुख़ताल-
न् (अ्) फ़ख़ूर (अ्) नि ०ला

२ (अ्) ल्लज़ीन यब्ख़लून व यअ्मुरून
(अल्) न्नास बि (अ्) ल् बुख़्लि व यक्तुमून
मा आताहुमु (अ्) ल्लाहु मिन् फ़द्लिही तोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

५५ असंग्रह

२६१ कृपणता में हानि

१ हाँ, तुम लोग ऐसे हो कि तुम्हें ईश्वरार्थ दान करने के लिए कहा जाता है, तो तुममें कोई ऐसा है, जो कंजूसी करता है। जो कोई कंजूसी करता है, वह स्वयं अपने लिए कंजूसी करता है। ईश्वर तो निरपेक्ष है और तुम दीन हो और यदि मुँह फेरोगे, तो ईश्वर तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को लायेगा। फिर वे तुम्हारे जैसे न होंगे।

४७.३८

२६२ कृपण द्वारा कृपणता का शिक्षण

१ तुम ईश्वर की भक्ति करो और उसके साथ किसीको भागीदार न बनाओ। और माता-पिता के साथ सुजनता का बर्ताव करो। और सगे-सम्बन्धियों, अनाथों, अकिञ्चनों, परिचित पड़ोसियों, अपरिचित पड़ोसियों, सह-प्रवासियों और प्रवासियों के साथ अच्छा बर्ताव करो। और उन (दास-दासियों) के साथ भी, जो तुम्हारे अधीन हैं। निस्सन्देह ईश्वर को इतरानेवाले आत्मश्लाघी नहीं भाते।

२ जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और ईश्वर ने अपनी दया से जो उनको दिया है, उसे छिपाते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व अअ्तदना लिल् काफ़िरीन अ़ज़ाब (न् अ्)-
म्मुहीनन् (अ्) O^ज़ ४.३६–३७

263. १ व ला यहूसबन्न (अ्) ल्लजीन यब्ख़लून
बिमा आताहुमु (अ्)ल्लाहु मिन् फ़द्लिही
हुव ख़ैर (न् अ्) ल्लहुम् ^तोय बल् हुव शर्रु (न्)-
ल्लहुम् ^तोय सयुतव्वक़ून मा बख़िलू (अ्)
बिही यौम (अ्)ल् क़ियामति ^तोय व लिल्ला-
हि मीरासु (अल्) स्समावाति व (अ्)ल्
अर्ज़ि ^तोय व (अ्) ल्लाहु बि मा तअ्मलून
ख़बीरुन् O ३.१८०

264. १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लजीन आमनू इन्न
कसीर(न् अ्)म् मिन (अ्) ल् अह्बारि व
(अल्) र्रुह्बानि ल यअ्कुलून अम्वाल-
(अल्) न्नासि बि (अ्)ल् बातिलि व यसुद्दून
अन् सबीलि (अ्) ल्लाहि ^तोय व (अ्) ल्लजीन
यक्निज़ून (अल्) ज़्जहब व (अ्)ल् फ़िद्दत
व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि ^तोय
फ़बश्शिर्हुम् बि अ़ज़ाबिन् अलीमि(न्)O^ला
२ य्यौम युह्मा (य्) अ़लैहा फ़ी नारि जहन्नम
फ़ तुक्वा (य्)बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व
ज़ुहूरुहुम् ^तोय हा ज़ा मा कनज़्तुम् लि अन्फ़ुसिकुम्
फ़ ज़ूक़ू (अ्) मा कुन्तुम् तक्निज़ून O ९.३४–३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हैं, ऐसे कृतघ्नों के लिए हमने अपमानजनक दण्ड तैयार रखा है।

४.३६–३७

२६३ कृपणों की दुर्गति

१ और वे लोग, जिन्हें ईश्वर ने वैभव दिया है, तो भी कंजूसी करते हैं, यह कल्पना न करें कि यह उनके लिए अच्छा है। नहीं, अपितु यह उनके लिए बुरा है। पुनरुत्थान के दिन वह धन, जिसमें उन्होंने कंजूसी की थी, हँसली बनाकर, उनके गले में डाला जायगा। आकाश एवं भूमि की विरासत ईश्वर के लिए ही है और ईश्वर तुम्हारे सब कामों की खबर रखता है।

३.१८०

२६४ सुवर्णसंग्राहक

१ श्रद्धावानो! बहुत-से विद्वान् और मठवासी लोग दूसरों का धन खोटी रीति से खा जाते हैं और उन्हें ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं। और जो लोग सोना-चाँदी संचित करके रखते हैं और उसे ईश्वर के मार्ग में व्यय नहीं करते, तो उन्हें खबर दो कि उन्हें एक बड़ा दुःखदायक दण्ड होगा।

२ जिस दिन उस धन पर नरक की आग दहकायी जायगी, फिर उसीसे उनके माथों, करवटों एवं पीठों को दागा जायगा। (और कहा जायगा) यह है, जो तुमने अपने लिए संचित कर रखा था। लो, अब अपने समेटे हुए धन का स्वाद चखो।

९.३४–३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

265. १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनू (अ्)
मा लकुम् इज़ा क़ील लकुमु(अ्)न्फ़िरू-
(अ्) फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि (अ्)-
स्साक़ल्तुम् इल (य्)ल् अर्ज़ि तोय अरज़ीतुम्
बि (अ्) ल् हयात (व्) त्नि (अल्) द्दुन्या
मिन (अ्) ल् आख़िरत्नि ज फ़ मा मताअु-
(अ्) ल् हयात(व्) त्नि (अल्) द्दुन्या फ़ि
(य्) (अ्)ल् आख़िरत्नि इल्ला क़लीलुन्० ९.३८

266. १ इन्न क़ारून कान मिन् क़ौमि मूसा (य्) फ़
बग़ा (य्) अ़लैहिम् स्वात व आतय्नाहु मिन-
(अ्)ल् कुनूज़ि मा इन्न मफ़ातिहहू ल तनूउ बि-
(अ्)ल् अुस्बत्नि उ(व्)लि(य्) (अ्)ल्
क़ुव्वत्नि तोय इज क़ाल लहू क़ौमुहू ला तफ़्रह्
इन्न(अ्)ल्लाह ला युहिब्बु (अ्)ल् फ़रिहीन ०

२ व(अ्)ब्तग़ि फ़ी मा आताक(अ्)ल्लाहु(अल्)-
द्दार (अ्)ल् आख़िरत्न व ला तन्स नसीबक
मिन(अल्)द्दुन्या व अहसिन् क मा अहसन-
(अ्)ल्लाहु इलैक व ला तब्ग़ि(अ्)ल्फ़साद फ़ि
(अ्)ल् अर्ज़ि तोय इन्न(अ्)ल्लाह ला युहिब्बु-
(अ्)ल् मुफ़्सिदीन०

३ क़ाल इन्न मा ऊतीतुहू अ़ला (य्) अ़िल्मिन्

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२६५ भूमि से चिपकनेवाले

१ हे श्रद्धावानो ! तुमको क्या हुआ है कि जब तुमसे कहा जाता है कि ईश्वर के मार्ग में जूझने चलो, तो तुम भूमि से चिपके रह जाते हो। क्या पारलौकिक को छोड़कर ऐहिक जीवन पर प्रसन्न हो गये हो ? तो ऐहिक जीवन की साधन-सामग्री पारलौकिक की तुलना में अत्यन्त क्षुद्र है।

९.३८

२६६ कारून की करुण कहानी

१ कारून मूसा की बिरादरी में से था। फिर उनके खिलाफ विद्रोह करने लगा। और हमने उसे इतने खजाने दिये थे कि उसकी तालियाँ उठाने से कई बलशाली व्यक्ति थक जाते। जब उसके लोगों ने उसे कहा : इतरा मत, निश्चय ही ईश्वर को इतरानेवाले नहीं भाते।

२ और जो तुझे ईश्वर ने दिया है, उसके द्वारा परलोक की गवेषणा कर और इहलोक से अपना भाग (वहाँ ले जाना है यह) न भूल और उपकार कर, जैसे ईश्वर ने तेरे साथ उपकार किया है और भूमि में कलह का इच्छुक न बन। ईश्वर को कलह करनेवाले नहीं भाते।

३ बोला : यह धन तो मुझे एक हुनर से मिला है, जो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अिन्दीतोय अव लम् यअ्लम् अन्न (अ्)ल्लाह
क़द् अह्लक मिन् क़ब्लिही मिन (अ्) ल्
क़ुरूनि मन् हुव अशद्दु मिन्हु क़ुव्वत (न्) ँव्व
अक्सरु जम्अन् (अ्) तोय व ला युस्अलु अन्
ज़ुनूबिहिमु (अ्) ल् मुज्रिमून O

४ फ़ ख़रज अला (य्) क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिहीतोय
क़ाल (अ्) ल्लज़ीन युरीदून (अ्) ल् ह़या (व) त-
(अल्) द्दुन्या या लैत लना मिस्ल मा ऊतिय
क़ारूनु ला इन्नहू ल ज़ू हज़्ज़िन् अज़ीमिन् O

५ व क़ाल (अ्) ल्लज़ीन ऊतु (व्अ्) (अ्)-
ल् अिल्म वैलकुम् सवाबु (अ्) ल्लाहि ख़ैरु-
(न्) लिल मन् आमन व अमिल सालिह़न्-
(अ्) ज व ला युलक़्क़ाहा इल्ल (अ्)-
(अल्) स्साबिरून O

६ फ़ ख़सफ़्ना बिही व बिदारिहि (अ्) ल् अर्द़क़ फ़
फ़ मा कान लहू मिन् फ़िअति (न्) ँय्यन्-
सुरूनहू मिन् दूनि (अ्) ल्लाहि क़् व मा कान
मिन (अ्) ल् मुन्तसिरीनO

७ व अस्बह़ (अ्) ल्लज़ीन तमन्नौ (अ्) मकानहू
बि (अ्) ल् अम्सि यक़ूलून वैक अन्न (अ्)-
ल्लाह यब्सुतु (अल्) र्रिज़्क़ लि म(न्)-
ँय्यशाअु मिन् अिबादिही व यक़्दिरु ज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मेरे पास है। क्या उसे ज्ञात नहीं कि ईश्वर ने उसके पूर्व कई जातियाँ नष्ट की हैं, जो उससे बहुत अधिक बलशाली थीं एवं संख्या में भी बहुत अधिक थीं ? और पापियों से उनके पाप पूछने पड़ते।

४ फिर वह एक बार अपने लोगों के सम्मुख ठाट से निकला। उसे देखकर उन्होंने, जो ऐहिक जीवन के इच्छुक थे, कहा : अरे-अरे ! हमको भी मिलता, जैसा कि कारून को मिला है। निस्सन्देह वह बहुत भाग्यवान् है।

५ और जिनको सूझ-बूझ मिली थी, वे बोले : तुम्हें धिक्कार ! ईश्वर का प्रतिफल हितकर है उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते हैं और सत्कृत्य करते हैं, और यह उन्हींको दिया जाता है, जो धीरजवाले हैं।

६ फिर हमने उसको और उसके घर को भूमि में धँसा दिया और ईश्वर के अतिरिक्त उसका फिर कोई ऐसा समूह नहीं हुआ, जो उसकी सहायता करता, न वह स्वयं सहायता प्राप्त कर सका।

७ और वे लोग, जो कल सायंकाल उसके जैसा होने की लालसा रखते थे, कहने लगे : अरे-अरे ! ईश्वर अपने दासों में से जिसके लिए चाहता है, रोजी बढ़ा देता है और (जिसके लिए चाहता है) सीमित कर देता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लौ लां अ (न्) म्मन्न (अ्) ल्लाहु अ़लैना
ल ख़सफ़ बिनातोय वैक अन्नहू ला युफ़्लिहु
(अ्) ल् काफ़िरून O ऐन् २८.७६–८२

267. १ इन्नहू कान ला यु(व्)·अ्मिनु बि(अ्) ल्लाहि
(अ्) ल् अ़ज़ीमिO
२ व ला यहुद्दु अ़ला (य्) तअ़ामि (अ्) ल्
मिस्कीनितोय
३ फ़ लैस लहु (अ्) ल् यौमहाहुना ह़मीमुन्O ला
६९.३३–३५

268. १ फ़ अम्म (अ्) ल् इन्सानु इज़ा म (अ्)-
(अ्) ब्तलाहु रब्बुहू फ़ अक्रमहू व नअ़्अ़महू०
फ़ यक़ूलु रब्बी' अक्रमनिO
२ व अम्मा इज़ा म (अ्) (अ्) ब्तलाहु फ़ क़दर
अ़लैहि रिज़्क़हू० ला फ़ यक़ूलु रब्बी' अहाननिO ज़
३ कल्ला बल्ला तुक्रिमून (अ्) ल् यतीम O ला
४ व ला तहाद्दून अ़ला (य्) तअ़ामि (अ्) ल्
मिस्कीनिO ला
५ व तअ्कुलून (अ्ल्) तुरास अक्ल (न्)-
(अ्) ल्लम्म (न् अ्)O ला
६ व तुहि़ब्बून (अ्) ल् माल हुब्बन् (अ्)
जम्मन् (अ्)O तोय ८९.१५–२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

और ईश्वर हम पर उपकार न करता, तो हमें भी भूमि में धँसा देता। अरे-अरे! श्रद्धा-हीन कभी सफल नहीं होते।

२८.७६–८२

२६७ उसे अब मित्र नहीं रहा

१ वह महान् ईश्वर पर श्रद्धा नहीं रखता था
२ और वंचित को खिलाने के लिए (किसीको) प्रोत्साहित नहीं करता था।
३ सो, आज उसका यहाँ कोई मित्र नहीं।

६९.३३–३५

२६८ कहता है, ईश्वर ने सम्मान दिया और ईश्वर ने मान-हानि की

१ देखो, मनुष्य को जब उसका प्रभु जाँचता है अर्थात् उसे सम्मान देता है और सुख देता है तो कहता है: "मेरे प्रभु ने मुझे सम्मान दिया।"
२ और जब वह उसे जाँचता है, और उसकी जीविका सीमित कर देता है, तो कहता है: "मेरे प्रभु ने मेरी मान-हानि की।"
३ कदापि नहीं। अपितु तुम अनाथ की ओर ध्यान नहीं देते।
४ और वंचित को खिलाने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित नहीं करते।
५ और दूसरों की विरासत का धन समेट-समेटकर खा जाते हो।
६ और धन को प्राण से भी अधिक प्यार करते हो।

८९.१५–२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

269. १ अल्हाकुमु (अल्) त्तकासुरु ○ला
२ ह़त्ता (य्) ज़ुर्तुमु (अ्) ल् मक़ाबिर ○तोय
३ कल्ला सौफ़ तअ़्लमून○ला
४ सुम्म कल्ला सौफ़ तअ़्लमून ○तोय
५ कल्ला लौ तअ़्लमून ञिल्म (अ्) ल् यक़ीनि○ला
६ ल तरवुन्न (अ्) ल् जह़ीम ○ला
७ सुम्म ल तरवुन्नहा अ़ैन (अ्) ल् यक़ीनि ○ला
८ सुम्म ल तुस्अलुन्न यौम ञिजिन् अ़नि (अल्)-
न्नअ़ीमि ○ऐन

१०२.१-८

270. १ मसलु (अ्) ल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम्
फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि कमसलि ह़ब्बतिन्
अ (न्)म्बतत् सब्अ़ सनाबिल फ़ी कुल्लि
सु(न्)म्बुलति(न्) म्मि (अ्)अतु ह़ब्बतिन्तोय
व (अ्)ल्लाहु युद़ाञिफ़ु लि म (न्)ँय्यशा-
अु तोय व (अ्) ल्लाहु वासिअुन् अ़लीमुन्○
२ अल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् फ़ी सबीलि-
(अ्) ल्लाहि सुम्म ला युत्बिअ़ून मा अन्फ़क़ू(अ्)
मन्न (न्)ँव्व ला अज (न् य्) ला
ल्लहुम् अज्रुहुम् ञिन्द रब्बिहिम् ज व ला
ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम यह़्ज़नून ○

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२६९ **लोभमूलक स्पर्धा**

१ विपुलता की तृष्णा ने तुम्हें भरमाया है,
२ यहाँ तक कि तुम कब्रों में जा मिलो ।
३ कदापि नहीं, अविलम्ब तुम जान ही लोगे,
४ अविलम्ब ही तुम्हें ज्ञात होगा ।
५ अरे-अरे, तुम्हें निश्चित ज्ञान होता
६ कि अवश्य तुम्हें नरक की अग्नि देखनी है ।
७ फिर उसे अवश्य निश्चित दृष्टि से देखोगे ।
८ फिर उस दिन तुमसे अवश्य पूछा जायगा ईश्वरीय देनों के विषय में । (कि तुमने उनके लिए कृतज्ञता व्यक्त की ?)

१०२.१–८

५६ दान

२७० **दान-प्रकरण**

१ जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे एक दाना कि उसमें से सात बालें उगीं । हर बाल में सौ दाने । ईश्वर जिसके लिए चाहता है, वृद्धि करता है । ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है ।

२ जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं और व्यय करके न उपकार जताते हैं और न कष्ट पहुँचाते हैं, उनके लिए उनका पारिश्रमिक उनके प्रभु के यहाँ है और उनको न डर है और न वे दुःखी होंगे ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ क़ौलु (न्) म्मअ़्रूफ़ु (न्) ँव्व मग़्फ़िरतुन्
ख़ैरु (न्) म्मिन् सदक़तिन् (न्) ँय्यत्बअ़ुहा
अज़न् (य्) तोय व (अ्) ल्लाहु ग़नीयुन् हलीमुन् ०

४ या अय्युह (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ्) ला
तुब्तिलू (अ्) सदक़ातिकुम् बि (अ्) ल्
मन्नि व (अ्) ल् अज़ा (य्) ला क (अ्) ल्लज़ी
युन्फ़िक़ु मालहू रिआ़अ (अ्ल्) न्नासि व
ला यु(व्)अ़्मिनु बि (अ्) ल्लाहि व
(अ्) ल् यौमि (अ्) ल् आख़िरि तोय फ़ मसलुहू
क मसलि सफ़्वानिन् अ़लैहि तुराबुन् फ़ असाबहू
वाबिलुन् फ़तरकहू सल्दन् (अ्) तोय ला यक़्दिरून
अ़ला (य्) शय्इन् (न्) म्मिम्मा कसबू (अ्) तोय
व (अ्) ल्लाहु ला यह्दि (अ्) ल् क़ौम
(अ्) ल् काफ़िरीन ०

५ व मसलु (अ्) ल्लज़ीन युन्फ़िक़ून अम्वाल-
हुमु (अ्) ब्तिग़ाअ मर्ज़ाति (अ्) ल्लाहि
व तस्बीत (न्) म्मिन् अन्फ़ुसिहिम् क मसलि
जन्नतिम् बिरब्वतिन् असाबहा वाबिलुन्
फ़ आतत् उकुलहा ज़िअ़्फ़ैनि ज फ़ इ (न्)-
ल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ़ तल्लुन् तोय
व (अ्) ल्लाहु बिमा तअ़्मलून बसीरुन् ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ एक भली बात एवं क्षमा करना उस दान से श्रेष्ठतर है कि जिसके पीछे पीड़न हो। ईश्वर निरपेक्ष है एवं अतीव सहिष्णु है।

४ हे श्रद्धावानो ! अपने दान उपकार जतलाकर या पीड़ा पहुँचाकर नष्ट न करो। उस व्यक्ति की भाँति, जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में केवल दिखलाने के लिए व्यय करता है, और ईश्वर एवं अन्तिम दिन पर श्रद्धा नहीं रखता। सो उसका उदाहरण ऐसा है, जैसे कि एक चट्टान, उस पर कुछ मिट्टी पड़ी है, फिर उस पर जोर की वर्षा हुई, तो उसने उस पत्थर को स्वच्छ कर दिया। ऐसे लोगों को उनका कमाया हुआ कुछ भी हाथ नहीं लगता और ईश्वर श्रद्धाहीनों को मार्ग नहीं दिखाता।

५ और जो ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और दृढ़ चित्त से अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे ऊँचाई पर एक बाग है, उस पर जोर की वर्षा हुई, तो वह बाग अपना फल दुगुना लाया और यदि उस पर वर्षा न हुई, तो हलकी फुहार भी पर्याप्त है। ईश्वर तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६ अ यवद्दु अहदुकुम् अन् तकून लहू जन्नतु (न्)-
म्मि (न्) न्नख़ीलि (न्) व्व अअ्नाबिन् तज्री मिन्
तह्तिह (अ्) (अ्) ल् अन्हारु ला लहू फ़ीहा
मिन् कुल्लि (अ्ल्) स्समराति ला व असाबहु
(अ्) ल् किबरु व लहू ज़ुर्रीयतुन् दुअ्फ़ा'अ् स्वातस्वली
फ़ असाबहा इअ्सारुन् फ़ीहि नारुन्
फ़ (अ्) ह्तरक़त् तोय क जालिक युबय्यिनु
(अ्) ल्लाहु लकुमु (अ्) ल् आयाति लअ्अल्लकुम्
ततफ़क्करून ० ऐन

२.२६१–२६६

271. १ या अय्युह (अ्) (अ्) ल्लज़ीन आमनू (अ्) अन्फ़ि-
क़ू (अ्) मिन् तय्यिबाति मा कसब्तुम् व मिम्मा
अख़्रज्ना ल कु (म्) म्मिन् (अ्) ल् अर्ज़ि व
ला तयम्ममु (अ्) (अ्) ल् ख़बीस मिन्हु
तुन्फ़िक़ून व लस्तुम् बि आख़िज़ीहि इल्ला अन्
तुग़्मिज़ू (अ्) फ़ीहि तोय व (अ्) अ्लमू (अ्)
अन्न (अ्) ल्लाह ग़निय्युन् हमीदुन् ०

२.२६७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६ क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा कि एक खजूर का या अंगूर का बाग हो, उसके नीचे नदियाँ बहती हों, उसके मालिक के लिए उस बाग में सब प्रकार के फल हों और वह बूढ़ा हो गया हो और सन्तति उसकी अत्यन्त अशक्त हो कि ऐसी स्थिति में उस बाग पर एक बवंडर आ पड़े, जिसमें आग हो, जिससे वह बाग झुलस जाय ? इस प्रकार ईश्वर तुमसे अपनी बातें वर्णन करता है, ताकि तुम समझो।

२.२६१–२६६

२७१ दान उत्तम वस्तु का

१ हे श्रद्धावानो ! जो तुमने कमाया है या जो कुछ तुम्हारे लिए हमने भूमि से उत्पन्न किया है, उसमें से उत्तमोत्तम वस्तु ईश्वर के मार्ग में दान करो और यह विचार न करो कि निकम्मी चीज ईश्वर के मार्ग में दान की जाय, जब कि तुम स्वयं वैसी वस्तु को लेनेवाले नहीं। सिवा इसके कि उसके लेने में तुम उपेक्षा बरतो। जान लो कि ईश्वर निरपेक्ष है तथा स्तुति-योग्य है।

२.२६७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

272. १ इन् तुब्दु (व्अ्) (अ्ल्) स़्स़दक़ाति फ़ निअ़िम्मा हियज़् व इन् तुख़्फ़ूहा व तु(व्)·अ़्तूह (अ्)-(अ्)ल् फ़ुक़रा·अ फ़हुव ख़ैरु (न्) ल्लकुम् तोय़ व युकफ़्फ़िरु अ़न् कु(म्) म्मिन् सय्यिआतिकुम्तोय़ व (अ्)ल्लाहु बिमा तअ़्मलून ख़बीरुन्O
२.२७१

273. १ लिल् फ़ुक़रा·अ़ि (अ्)ल्लजीन उह़्सिरू (अ्) फ़ी सबीलि (अ्) ल्लाहि ला यस्ततीअ़ून ज़रबन् फ़ि (अ्) ल् अर्ज़ि ज़् यह़्सबुहुमु (अ्) ल् जाहिलु अग़्निया·अ मिन (अ्ल्) त्तअ़फ़्फ़ुफ़ि ज़् तअ़्रिफ़ुहुम् बि सीमाहुम्ज़् ला यस्अलून-(अ्ल्) न्नास इल्ह़ाफ़न् (अ्) तोय़ व मा तुन्फ़िक़ू (अ्) मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्न (अ्)ल्लाह बिही अ़लीमुन्O

२ अल्लजीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् बि(अ्)ल्लैलि व (अ्ल्) न्नहारि सिर्र(न्) (अ्)व्व अ़ला-नियतन् फ़ लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्द रब्बिहिम्ज़् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नूनO
२.२७३–२७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२७२ अख्यापित दान

१ यदि तुम दान प्रकट दो, तो यह भी अच्छा है और यदि उसे छिपाकर गरीबों को दो, तो वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। वह तुमसे तुम्हारी कुछ बुराइयाँ दूर करेगा। ईश्वर तुम्हारे कर्मों से भलीभाँति अवगत है।

२.२७१

२७३ अयाचित दान

१ दान उन गरीबों के लिए हैं, जो ईश्वर के काम में इस भाँति घिर गये हैं कि पृथ्वी में दौड़-धूप नहीं कर सकते। उनके आत्मसम्मान के कारण अनजान मनुष्य उन्हें सम्पन्न समझते हैं। तुम उनके चेहरों से उन्हें पहचान सकते हो। वे लोगों के पीछे पड़कर कुछ नहीं माँगते। जो कुछ ईश्वर के मार्ग में खर्च करोगे, ईश्वर उसे जानता है।

२ जो लोग अपना धन छिपे और खुले रूप में ईश्वर के मार्ग में दान करते हैं, उनका प्रतिफल उनके प्रभु के पास है। उन्हें न कोई डर है, न वे दुःखी होंगे।

२.२७३–२७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

274. १ लन् तनालु (व् अ्) (अ्)ल् बिर्र हत्ता(य्) तुन्फ़िक़ू(अ्) मिम्मा तुहिब्बून ७तोय व मा तुन्फ़िक़ू(अ्) मिन् शय्अिन् फ़ इन्न(अ्) ल्लाह बिही अलीमुन् ०

३.९२

275. १ या अय्युह(अ्)ल्लजीन आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अन् जिक्रि-(अ्)ल्लाहि ज व म(न्) य्यफ़्अल जालिक फ़ उ(व्)लाअिक हुमु(अ्)ल् खासिरून ०
२ व अन्फ़िक़ू (अ्) मि (न्) म्मा रज़क़्नाकु(म्)-म्मिन् क़ब्लि अ(न्) य्याति य अहदकुमु(अ्)-ल् मौतु फ़ यक़ूल रब्बि लौ ला अख्खर्तनी इला (य्) अजलिन् क़रीबिन् ला फ़ अस्सद्दक़ व अकु (न्) म्मिन (अल्) स्सालिहीन ०
३ व ल(न्) य्यु(व्)अख्खिर (अ्)ल्लाहु नफ़्सन् (अ्)इजा जाअ अजलुहा तोय व (अ्)ल्लाहु खबीरु(न्) म्बिमा तअ्मलून ०

६३.९-११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२७४ प्रियतम वस्तु ईश्वर को

१ तुम नेकी को कदापि प्राप्त न कर सकोगे, जब तक कि तुम अपनी प्यारी चीज को ईश्वर के मार्ग में दान न करो। जो वस्तु तुम ईश्वर के मार्ग में दान करोगे, ईश्वर उसे भलीभाँति जानता है।

३.९२

२७५ प्राक् शरीरविमोक्षणात्

१ हे श्रद्धावानो! तुम्हारा धन एवं तुम्हारी सन्तति तुम्हें ईश्वर के विषय में असावधान न कर दे। और जो ऐसा करें, तो ऐसे ही लोग घाटे में हैं।

२ और हमने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से ईश्वर के मार्ग में खर्च करो, इसके पूर्व कि तुममें से किसीको मृत्यु आ जाय, तो वह कहने लगे कि हे प्रभो! तूने मुझे थोड़ी-सी मुहलत क्यों न दी कि मैं दान देता और नेक लोगों में शामिल हो जाता।

३ और ईश्वर किसी प्राणी को, जब उसकी मृत्यु आ जायगी, तो मुहलत नहीं देता। ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अवगत है।

६३.९-११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

: २३ :

276. १ क़ु(ल्)ल्ला यस्तवि (य्) (अ्)ल् ख़बीसु व (अ्ल्)त्तय्यिबु व लौ अअ्जबक कस्रतु(अ्)ल् ख़बीसिज फ़(अ्)त्तक़ु(अ्)ल्लाह या उ(व्)लि-(य्) (अ्)ल् अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ०
५.१०३

277. १ इन्न (अ्)ल्लाह यअ्मुरु बि(अ्)ल् अ़द्लि व(अ्)ल् इह्सानि व ईता(य्) ज़्अि ज़ि(य्)ल् क़ुर्बा(य्)व यन्हा(य्)अ़नि(अ्)ल् फ़ह्शाअि व(अ्)ल् मुन्करि व(अ्)ल् बग़्यिज यअ़िज़ुकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून ०

१६.९०

278. १ व क़द्दा(य्) रब्बुक अल्ला तअ़्बुदू (अ्)इल्ला इय्याहु व बि(अ्)ल् वालिदैनि इह्सानन्(अ्)ताय् इम्मा यब्लुग़न्न अ़िन्दक(अ्)ल् किबर अहदुहुमा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२३ नीति-बोध

५७ शिव-शक्ति

२७६ शुभाशुभ-विवेक

१ कह : अशुभ एवं शुभ समान नहीं होते, यद्यपि अशुभ की विपुलता तुम्हें कितने ही आश्चर्य में डालती हो। इसलिए बुद्धिमानो, ईश्वर से चिपके रहो, जिससे कि तुम सफल हो।

५.१०३

५८ नीति-निर्देश

२७७ नीति-सूत्र

१ निस्सन्देह ईश्वर आदेश देता है, न्याय करने का और भलाई करने का तथा सम्बन्धियों को सहायता देने का। और निषेध करता है निर्लज्ज एवं अनुचित कर्मों का तथा अत्याचारों का। ईश्वर तुम्हें समझाता है, जिससे कि तुम सावधानी रखो।

१६.९०

२७८ नीति-उपदेश

१ (१) प्रभु ने निर्णय कर दिया है कि उसके अतिरिक्त किसीकी भक्ति न करो और (२) माता-पिता के साथ सौजन्य का बर्ताव रखो। यदि तेरे पास इनमें से कोई एक या दोनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

औ किलाहुमा फ़ ला तक़ु(ल्)ल्लहुमा
उफ़्फ़ि(न्)व्व ला तन्हर्हुमा व क़ु(ल्)-
ल्लहुमा क़ौलन्(अ्) करीमन्(अ्)०
२ व(अ्)ख़्फ़िद् लहुमा जनाह (अल्)ज़्ज़ुल्लि
मिन(अल्)र्रह्मति व क़ु (ल्)र्रब्बि(अ्)र्हम्-
हुमा क मा रब्बयानी स़ग़ीरन्(अ्) ०[तोय]
३ रब्बुकुम् अअ्लमु बि मा फ़ी नुफ़ूसिकुम् [तोय] इन्
तकूनू (अ्) स़ालिह़ीन फ़ इन्नहू कान लिल्
अव्वाबीन ग़फ़ूरन्(अ्)०
४ व आति ज(अ्)(अ्)ल् क़ुर्बा (य्) हक़्क़हू
व (अ्)ल् मिस्कीन व(अ्)ब्न (अल्) सबीलि
व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरन् (अ्) ०
५ इन्न(अ्)ल् मुबज़्ज़िरीन कानू इख़्वान(अल्)-
श्शयातीनि[तोय] व कान(अल्)श्शैतानु लि रब्बिही
कफ़ूरन्(अ्)०
६ व इम्मा तुअ्रिज़न्न अन्हुमु(अ्)ब्ति ग़ा'अ रह़्मति
-(न्) म्मि(न्)र्रब्बिक तर्जूहा फ़ क़ु(ल्)-
ल्लहुम् क़ौल (न्)म्मैसूरन्(अ्)०
७ व ला तज्अल् यदक मग़्लूलतन् इला (य्)
अुनुक़िक व ला तब्सुत्हा कुल्ल(अ्)ल् बस्ति
फ़ तक़्अुद मलूम(न्) (अ्)म्मह़्सूर(न्अ्)०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बुढ़ापे को पहुँच जायँ, तो उनका तिरस्कार न कर और न उन्हें झिड़की दे। उनसे नम्रता से बात कर।

२ और उनके सामने नम्रता से और करुणा से झुककर रह और कह : हे प्रभो ! इन दोनों पर कृपा कर, जैसा कि उन्होंने मुझे बचपन में पाला।

३ तुम्हारा प्रभु भलीभाँति जानता है कि तुम्हारे मन में क्या है। यदि तुम भले हो, तो भक्ति की ओर लौट आनेवालों को वह क्षमा करनेवाला है।

४ (३) सगे-सम्बन्धी, वंचित एवं प्रवासी को उनका देय देते रहो। (४) और फिजूलखर्ची न करना।

५ निस्सन्देह फिजूलखर्च लोग शैतान के भाई हैं और शैतान अपने प्रभु का बड़ा कृतघ्न है।

६ (५) और यदि तू अपने प्रभु की कृपा ढूँढ़ने में, जिसकी तुझे आशा है, उनसे दूर हो जाय, तो उनसे नरमी से बात कर।

७ (६) और न तो तू अपना हाथ गले से बाँध रख (अर्थात् कंजूस बन)। और न तो सर्वथैव खुला फैला दे (अर्थात् अति व्यय कर) कि तू निन्दित एवं कंगाल बनकर बैठा रह।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८ इन्न रब्बक यब्सुतु (अ्ल्) र्रिज़्क लि म(न्)-
य्यशांअु व यक़्दिरु तोय. इन्नहु कान बि अिबादिहि
ख़बीर(न्) (अ्) म्बसीरन् (अ्)० ऐन
९ व ला तक़्तुलू (अ्) औलादकुम् ख़श्यत इम्-
लाक़िन् तोय नह्नु नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम् तोय
इन्न क़त्लहुम् कान ख़ित्अन् कबीरन् (अ्)०
१० व ला तक़्रबु(व्) (अ्) (अ्ल्) ज़्ज़िना(य्)
इन्नहु कान फ़ाहिशतन् तोय व सांअ सबीलन् (अ्) ०
११ व ला तक़्तुलु(व्) (अ्) (अ्ल्) न्नफ़्स(अ्) ल्लती
हर्रम (अ्) ल्लाहु इल्ला बि(अ्)ल् हक़्क़ि तोय
व मन् क़ुतिल मज़्लूमन् (अ्) फ़ क़द् जअ़ल्ना
लि वलिय्यिहि सुल्तानन् (अ्) फ़ ला युस्रि(फ़्)-
फ़्फ़ि(अ्)ल् क़त्लि तोय इन्नहू कान
मन्सूरन् (अ्)०
१२ व ला तक़्रबू(अ्) माल (अ्) ल् यतीमि इल्ला
बि(अ्) ल्लती हिय अह्सनु हत्ता (य्) यब्लुग़
अशुद्दहु स्वात. व औफ़ू(अ्) बि(अ्)ल् अह्दि ज. इन्न
(अ्)ल् अह्द कान मस्अूलन्(अ्)०
१३ व औफ़ु(व्) (अ्) (अ्)ल् कैल इज़ा किल्तुम्
वज़िनू(अ्) बि(अ्) ल् क़िस्तासि (अ्)ल्
मुस्तक़ीमि तोय ज़ालिक ख़ैरु (न्) व्व अह्सनु
तअ्वीलन्(अ्)०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८ निस्सन्देह तेरा प्रभु जिसके लिए चाहता है, जीविका बढ़ाता है और जिसके लिए चाहता है, सीमित कर देता है। निस्सन्देह वही अपने दासों से अवगत है एवं सर्वदृक् है।

९ (७) और अपनी सन्तति को दारिद्रय के डर से न मार डालो। हम उनको भी जीविका देते हैं और तुमको भी। वास्तव में उन्हें मार डालना महान् पाप है।

१० (८) और व्यभिचार के समीप भी न फटको। वह निश्चय ही निर्लज्जता है और बुरा मार्ग है।

११ (९) और उस जीव की हत्या न करो, जिसकी हत्या निषिद्ध की गयी है, सिवा न्याय के साथ। और जो अन्याय से मारा गया, तो उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दिया है। वह उस विषय में मर्यादा से बाहर निकल न जाय। निस्सन्देह उसकी सहायता की जाती है।

१२ (१०) और अनाथ के धन के निकट न जाओ। सिवा अच्छी नीयत से, यहाँ तक कि वह बालिग हो जाय। (११) और वचन को पूरा करो। निस्सन्देह वचन के विषय में पूछा जायगा।

१३ (१२) और जब नापकर दो, तो नाप पूरा भर दो और ठीक तराजू से तौलो। यह अच्छा है और उसका अन्त भी अच्छा है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१४ व ला तक़्फु मा लैस लक बिहीं अिल्मुन्^{तोय}
इन्न (अल्) स्समअ व (अ्)ल् बस़र व (अ्)ल्
फ़ु(व्)आद कुल्लु उ(व्)लाअिक कान अन्हु
मस्ऊलन् (अ्)०

१५ व ला तम्शि फ़ि (अ्)ल् अर्द्दि मरहन् (अ्)^ज
इन्नक लन् तख़्रिक़ (अ्)ल् अर्द्द व लन् तब्लुग़
-(अ्)ल् जिबाल तूलन् (अ्)०

१६ कुल्लु जालिक कान सय्यिअुहु अिन्द रब्बिक
मक्रूहन् (अ्)०

१७ जालिक मिम्मा औहा (य्) इलैक रब्बुक
मिन (अ्)ल् हिकमतितोय...... १७.२३-३९

279. १ व लक़द् आतैना लुक़्मान (अ्)ल् हिक्मत अनि
(अ्)श्कुर् लिल्लाहितोय व म(न्)ँय्यश्कुर्
फ़ इन्नमा यश्कुरु लि नफ़्सिहीज व मन् कफ़र
फ़ इन्न (अ्)ल्लाह ग़निय्युन् हमीदुन् ०

२ व इज क़ाल लुक़्मानु लि (अ्) ब्निहीं व हुव
यअिजुहु या बुनय्य ला तुश्रिक् बि (अ्)ल्लाहितोय
इन्न (अल्) श्शिर्क ल जुल्मुन् अजीमुन्०

३ व वस्सय्न (अ्) (अ्)ल् इन्सान बि वालिदैहिज
हमलत्हु उम्मुहु वह्नन् (अ्) अला (य्) वह्नि
(न्)ँव्व फ़िसालुहु फ़ी आमैनि अनि-
(अ्)श्कुर् ली व लि वालिदैकतोय इलय्य (अ्)ल्
मसीरु ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१४ (१३) और किसी ऐसी बात के पीछे न लग, जिसका तुझे ज्ञान नहीं। निस्सन्देह कान और आँख और मन सबको (उस दिन) प्रश्न पूछा जायगा ।

१५ (१४) और पृथ्वी पर इतराता हुआ न चल। न तू भूमि फाड़ सकता है और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकता है।

१६ इन आज्ञाओं में से प्रत्येक का बुरा स्वरूप तेरे प्रभु के समीप तिरस्करणीय है।

१७ यह उन विवेक की बातों में से है कि जो तेरे प्रभु ने तुझको प्रज्ञानरूप में भेजी।............

१७.२३–३९

२७९ लुकमान का पुत्र को बोध

१ हमने लुकमान को विद्या प्रदान की कि ईश्वर की कृतज्ञता व्यक्त करे। जो कोई कृतज्ञता व्यक्त करता है, वह अपने भले के लिए करता है और जो कृतघ्नता व्यक्त करता है, तो ईश्वर निरपेक्ष है तथा वही स्तुति के योग्य है।

२ लुकमान ने अपने पुत्र को सदुपदेश किया कि बेटा, ईश्वर के साथ किसीको भागीदार न ठहराना। निस्सन्देह वि-भक्ति बड़ा अत्याचार है।

३ और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के सम्बन्ध में आदेश दे दिया है——उसकी माँ ने उसे थक-थककर पेट में रखा और उसका दूध दो वर्ष में छूटता है——कि तू मेरी एवं अपने माता-पिता की कृतज्ञता प्रकट कर। मेरी ओर ही तुझे लौटकर आना है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ व इन् जाहदाक अला(य्)अन् तुश्‌रिक बी मा
लैस लक बिही अिल्मुन्^लाफ़ ला तुतिअ्हुमा व
साहिब्‌हुमा फ़ि(अल्)द्दुन्या मअ्‌रूफ़(न्अ्)^ज
व्व(अ्) त्तबिअ् सबील मन् अनाब इलय्य^ज
सुम्म इलय्य मर्जिअुकुम् फ़ उनब्बिअु-
कुम् बि मा कुन्तुम् तअ्मलून०
५ या बुनय्य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ाल हुब्बति(न्)
म्मिन् ख़र्दलिन् फ़ तकुन् फ़ी सख़्रतिन् औ
फ़ि(य्) (अल्)स्समावाति औ फ़ि(य्) (अ्)ल्
अर्द़ि यअ्ति बिह (अ्) (अ्) ल्लाहु^तोय इन्न
(अ्)ल्लाह लतीफ़ुन् ख़बीरुन्०
६ या बुनय्य अक़िमि (अल्)स्सलात वअ्मुर्
बि(अ्)ल् मअ्‌रूफ़ि व(अ्)न्ह अनि(अ्)ल्
मुन्करि व(अ्)स्बिर् अला(य्)मा असाबक^तोय
इन्न जालिक मिन् अज़्मि(अ्)ल् उमूरि ०^ज
७ व ला तुसअ्अिर् ख़द्दक लिन्नासि व ला तम्शि
फ़ि(अ्)ल् अर्द़ि मरहून्(अ्)^तोय इन्न(अ्)ल्लाह
ला युहिब्बु कुल्ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूरिन् ०^ज
८ व(अ्)क़्सिद् फ़ी मश्‌यिक व(अ्)ग़्दुद़् मिन्
सौतिक^तोय इन्न अन्कर(अ्)ल् अस्वाति ल
सौतु(अ्)ल् हमीरि ०^ऐन ३१.१२-१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४ और वे दोनों यदि तुझे इस बात पर बाध्य करें कि उस चीज को मेरा भागीदार मान कि जिसका तुझे कुछ ज्ञान नहीं, तो उन दोनों का यह कहना न मान। और दुनिया में उनका भलीभाँति साथ दे। और उस व्यक्ति का मार्ग स्वीकार कर, जो मेरी ओर प्रवृत्त हुआ। मेरी ओर ही तुम्हें लौटकर आना है। तब मैं तुम्हें वह सब कुछ बतला दूँगा, जो तुम करते थे।

५ बेटा! यदि कोई वस्तु राई के दाने के समान हो, चाहे वह किसी पत्थर में हो या आकाशों में या भूमि में, तो भी ईश्वर उसे निश्चय ही प्रस्तुत कर देगा। निस्सन्देह ईश्वर अतीव सूक्ष्मदर्शी एवं सर्वस्पर्शी है।

६ बेटा, प्रार्थना नित्य-नियमित करता रह तथा (लोगों को) भली बात का आदेश दे और बुराई से रोक और तुझ पर जो आ पड़े, उसको सहन कर। निस्संशय यह धैर्य का कार्य है।

७ और लोगों की अवहेलना में गाल मत फुला और भूमि पर इतराकर न चल। निस्सन्देह ईश्वर किसी श्रद्धाहीन आत्म-श्लाघी को पसंद नहीं करता।

८ और चाल में मध्यम गति अपना और अपनी ध्वनि को मृदु बना। निस्सन्देह ध्वनि में सबसे बुरी ध्वनि गधे की ध्वनि है।

३१.१२-१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

280. १ व वसूसैन(अ्)ल् इन्सान बि वालिदैहि
इह्सानन्(अ्)[तोय] हमलत्हु उम्मुहु कुर्ह(न्-
अ्)व्व वद्अत्हु कुरहन्(अ्)[तोय] व हम्लुहू व
फ़िसालुहू सलासून शहर(न्अ्)[तोय] हत्ता(य्)
इजा बलग़ अशुद्दहू व बलग़ अर्बईन सनतन्[ला]
क़ाल रब्बि औज़िअ्नी अन् अश्कुर् निअ्मतक
(अ्)ल्लती अनअ्म्त अलय्य व अला(य्)
वालिदय्य व अन् अअ्मल सालिहन्(अ्)
तर्ज़ाहु व अस्लिह् ली फ़ी जुर्रीयती[जतोय] इन्नी
तुब्तु इलैक व इन्नी मिन(अ्)ल् मुस्लिमीन ०
२ उ(व्)लाअिक (अ्)ल्लज़ीन नतक़ब्बलु
अन्हुम् अह्सन मा अमिलू(अ्) व नतजावज़ु
अन् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्हाबि (अ्)ल्
जन्नति[तोय] वअ्द (अल्)स्सिद्क़ि(अ्)ल्लज़ी
कानू(अ्) यूअ्दून०

४६.१५–१६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२८० सद्गृहस्थ

१ हमने मनुष्य को आदेश दिया कि अपने माता-पिता के साथ सौजन्य से बरते। उसकी माँ ने कष्ट से उसका बोझ उठाया और कष्ट से उसे जन्म दिया और उसका गर्भ-निवास और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में पूरा होता है। यहाँ तक कि जब वह युवावस्था को पहुँचता है और चालीस वर्ष का हो जाता है, तो कहने लगता है: प्रभो, मुझे बल दे कि मैं तेरी उन देनों के लिए कृतज्ञता प्रकट करूँ, जो तूने मुझे एवं मेरे माता-पिता को प्रदान कीं और मैं सत्कृति करूँ, जिससे तू प्रसन्न हो। मेरे लिए मेरी सन्तति में सुधार कर। निश्चय ही मैं तेरी ओर लौट आया हूँ और तेरा शरणागत हूँ।

२ ये वे लोग हैं कि हम उनके किये हुए उत्तम कार्य स्वीकृत करते हैं और उनकी बुराइयाँ क्षमा करते हैं। ये लोग स्वर्ग के अधिकारी हैं। और इन्हें जो अभिवचन दिया गया था, वह सच्चा अभिवचन था।

४६.१५–१६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

281. १ यस्अलूनक अनि(अ्)ल् ख़म्रि व(अ्)ल्
मैसिरि कुल् फ़ी हिमा इस्मुन् कबीरु(न्) व
मनाफ़िअु लिन्नासि व इस्मु हुमा अक्बरु
मि(न्)न्नफ़्अि हिमा....

२.२१९

282. १ व इजा हुय्यीतुम् बि तहीयतिन् फ़ हूय्यू(अ्)
बि अह्सन मिन्हा औ रुद्दूहा इन्न(अ्)ल्लाह
कान अला(य्) कुल्लि शय्अिन् हसीबन्(अ्)०

४.८६

283. १ या अय्युह(अ्)(अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्)ला
तद्खुलू(अ्) बुयूतन्(अ्) ग़ैर बुयूतिकुम्
हत्ता(य्) तस्तअ्निसू(अ्) व तुसल्लिमू(अ्)
अला(य्) अह्लिहा जालिकुम् खैरु(न्)-
ल्लकुम् लअल्लकुम् तजक्करून ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२४ शिष्टाचार

५९ सदाचार

२८१ मद्य-निषेध

१ लोग शराब और जुए के विषय में तुझसे पूछते हैं। कह : उन दोनों में महापाप है। और लोगों के लिए उनमें कुछ लाभ भी है, किन्तु उनका पाप उनके लाभों से बहुत अधिक है…………।

२.२१९

२८२ अधिक मंगलप्रद बोलो

१ जब तुम्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया जाय, तो तुम उसे उससे उत्तम रीति से उत्तर दो या वही कहो। निस्सन्देह ईश्वर प्रत्येक वस्तु का लेखा-जोखा लेनेवाला है।

४.८६

२८३ किसीके घर में प्रवेश करते हुए

१ हे श्रद्धावानो ! अपने घरों के अतिरिक्त किसी और घर में प्रवेश न करो, जब तक कि अनुमति न ले लो और घरवालों को प्रणाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है, ताकि तुम याद रखो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ फ़इ(न्)ल्लम् तजिदू(अ्) फ़ी हा अहदन्(अ्)
फ़ ला तद्ख़ुलूहा हत्ता(य्)यु(व्)·अ्जन
लकुम्ज व इन् क़ील लकुमु (अ्)र्जिअ़ू(अ्)
फ़(अ्)र्जिअ़ू(अ्) हुव अज़्का(य्) लकुम्तोय
व(अ्)ल्लाहु बि मा तअ़्मलून अ़लीमुन्O

२४.२७–२८

284. १ या अय्युह(अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनू इज़ा क़ील
लकुम् तफ़स्सहू (अ्)फ़ि(य्)ल् मजालिसि
फ़(अ्)फ़्सहू(अ्) यफ़्सहि (अ्)ल्लाहु लकुम्ज
व इज़ा क़ील(अ्)न्शुज़ू(अ्)फ़(अ्)न्शुज़ू(अ्)
यर्फ़अ़ि (अ्)ल्लाहु (अ्)ल्लज़ीन आमनू
(अ्)मिन्कुम्ला व(अ्)ल्लज़ीन ऊतु(व्-
अ्) (अ्)ल् अ़िल्म दरजातिन्तोय व(अ्)ल्लाहु
बि मा तअ़्मलून ख़बीरुन्O

५८.५१

285. १ म(न्)य्यश्फ़अ़् शफ़ाअ़तन् हसनत(न्)-
य्यकु(न्)ल्लहू नसीबु(न्)म्मिन्हाज व म(न्)-
य्यश्फ़अ़् शफ़ाअ़तन् सय्यि·अतै(न्)य्यकु(न्)-
ल्लहू किफ़्लु(न्)म्मिन्हातोय व कान(अ्)ल्लाहु
अ़ला(य्)कुल्लि शय्·अि(न्)म्मुक़ीतन्(अ्)O

४.८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ यदि घर में किसीको न पाओ, तो उसमें प्रवेश न करो, जब तक कि तुम्हें अनुमति न मिल जाय। और यदि तुमसे कहा जाय कि लौट जाओ, तो तुम लौट जाओ। वह तुम्हारे लिए बहुत पवित्रता की बात है। ईश्वर तुम्हारे सब कामों का ज्ञान रखता है।

२४.२७–२८

२८४ सभा-व्यवस्था

१ हे श्रद्धावानो! जब तुम्हें कहा जाता है कि सभाओं में दूसरों के लिए जगह कर दो तो जगह कर दो, ईश्वर तुम्हारे लिए बहुत गुंजाइश कर देगा। और जब तुमसे उठने के लिए कहा जाय, तो उठ जाओ। तुममें से जो श्रद्धा रखते हैं तथा ज्ञान रखते हैं, परमात्मा उनकी श्रेणियाँ उच्च कर देगा। जो कुछ तुम करते हो, ईश्वर उससे अवगत है।

५८.११

२८५ सिफारिश में जिम्मेदारी

१ जो कोई भली बात की सिफारिश करेगा, उसे उसमें से भाग मिलेगा और जो कोई बुरी बात की सिफारिश करेगा, वह उसमें भाग पायेगा। ईश्वर प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि रखने-वाला है।

४.८५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

286. १ यां अय्युह(अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनू(अ्)
इज़ा तनाजैतुम फ़ ला ततनाजौ(अ्) बि(अ्)ल्
इस्मि व(अ्)ल् अुद्वानि व मअ्सियति-
(अल्)र्रसूलि व तनाजौ(अ्) बि(अ्)ल्
बिर्रि व(अल्)त्तक़्वा(य्)^तोय वत्तक़ु(व्अ्)
(अ्)ल्लाह (अ्)ल्लज़ी इलैहि तुह्शरून ०

२ अलम् तर अन्न (अ्)ल्लाह यअ्लमु मा फ़ि
(अल्)स्समावाति व मा फ़ि(अ्)ल् अर्ज़ि^तोय
मा यकूनु मि(न्)न्नज्वा(य्)सलासतिन् इल्ला
हुव राबिअुहुम् व ला खम्सतिन् इल्ला हुव
सादिसुहुम् व ला अदना(य्) मिन् ज़ालिक
व लां अक्सर इल्ला हुव मअ्हुम् ऐन मा कानू(अ्)^ज
सुम्म युनब्बिअुहुम् बि मा अमिलू(अ्)
यौम(अ्)ल् क़ियामतिॅ^तोय इन्न(अ्)ल्लाह बि
कुल्लि शय्अिन् अलीमुन् ०

५८.१,७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२८६ मंत्रणाएँ

१ हे श्रद्धावानो ! जब तुम गुप्त मंत्रणाएँ करो, तो पाप एवं अत्याचार के लिए तथा प्रेषित की अवज्ञा के लिए गुप्त मंत्रणाएँ न करो, सत्कृत्य एवं धर्मपरता के लिए मंत्रणाएँ करो और ईश्वर से डरते रहो । उसीके पास तुम सब एकत्र किये जाओगे ।

२ क्या तूने देखा नहीं कि ईश्वर जानता है, जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ भूमि में है। कोई गुप्त सभा तीन मनुष्यों की ऐसी नहीं, जिसमें वह (ईश्वर) चौथा न हो और न पाँच मनुष्यों की गुप्त मंत्रणा, जिसमें छठा वह न हो और न इससे न्यून, न इससे अधिक। परन्तु वह उनके साथ है, चाहे वे कहीं भी हों। फिर वह उन्हें पुनरुत्थान के दिन उनके सब कर्मों का वृत्तान्त सुनायेगा। निस्सन्देह ईश्वर प्रत्येक वस्तु जानता है।

५८.१,७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ७

मानव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

287. १ व इज क़ाल रब्बुक लिल् मलाअिकति इन्नी जाअिलुन् फ़ि(अ्)ल् अर्ज़ि खलीफ़तन् तोय क़ालू (अ्) अ तज्अलु फ़ीहा म(न्) य्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकु(अ्ल्) द्दिमाअ्ज व नह्नु नुसब्बिहु बि हम्दिक व नुक़द्दिसु लक तोय क़ाल इन्नी अअ्लमु मा ला तअ्लमूनo

२ व अल्लम आदम(अ्)ल् अस्माअ कुल्लहा सुम्म अरज़हुम् अल(य्) (अ्)ल् मलाअिकति फ़ क़ाल अ(न्)म्बिअूनी बि अस्माअि हा(व्)अुलाअि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन o

३ क़ालू(अ्) सुब्हानक ला अिल्म लना इल्ला मा अल्लमतना तोय इन्नक अन्त(अ्)ल् अलीमु (अ्)ल् हकीमुo

४ क़ाल या आदमु अ(न्)म्बिअ्हुम् बि अस्माअिहिम्ज फ़ लम्मा अ(न्)म्बअहुम् बि अस्माअिहिम् ला क़ाल अ लम् अक़ु(ल्)ल्लकुम् इन्नी[1] अअ्लमु ग़ैब (अ्ल्) स्समावाति व(अ्)ल् अर्ज़िला व अअ्लमु मा तुब्दून व मा कुन्तुम् तक्तुमूनo

५ व इज़् क़ुल्ना लिल् मलाअिकति(अ्)स्जुदू(अ्) लि आदम फ़ सजदू(अ्) इल्ला इब्लीस तोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२५ मानवता

६० मानव का वैशिष्ट्य

२८७ विशिष्ट वाणी

१ जब तेरे प्रभु ने देवदूतों से कहा कि मैं एक नायब बनानेवाला हूँ, तो देवदूतों ने कहा : क्या तू पृथ्वी पर किसी ऐसे को नियुक्त करेगा, जो उसमें कलह उत्पन्न करे और रक्त बहाये ? यद्यपि हम तेरे स्तवन के साथ तेरा जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और पवित्रता का कीर्तन करते हैं। कहा : निस्सन्देह मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम नहीं जानते।

२ और ईश्वर ने आदम को सब वस्तुओं के नाम सिखा दिये। फिर उन वस्तुओं को देवदूतों के सम्मुख प्रस्तुत किया और कहा : उनके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे ज्ञानी हो।

३ उन्होंने कहा : पवित्र है तू, हमको तूने जो कुछ सिखाया, उसके अतिरिक्त हम कुछ नहीं जानते। निस्सन्देह तू ही सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

४ कहा : हे आदम ! देवदूतों को उन वस्तुओं के नाम बता दे। तो जब आदम ने उन्हें उनके नाम बता दिये, तो ईश्वर ने कहा : क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आकाशों एवं भूमि की गुप्त स्थितियाँ जानता हूँ। जो कुछ तुम प्रकट करते हो, उसे भी जानता हूँ और जो कुछ तुम छिपाते हो, उसे भी।

५ और जब हमने देवदूतों से कहा कि आदम को प्रणिपात करो, तो उन सबने प्रणिपात किया, केवल शैतान को छोड़कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अबा(य्) व (अ्)स्तक्बर व कान मिन-(अ्)ल् काफ़िरीन०

२.३०-३४

288. १ क़ाल यां इब्लीसु मा मनअक अन् तस्जुद लि मा ख़लक़्तु बि यदय्य[तोय]......

३८.७५

289. १ ल क़द् अर्सल्ना रुसुलना बि(अ्)ल् बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना मअहुमु (अ्)ल् किताब व(अ्)ल् मीज़ान लि यक़ूम (अ्ल्)न्नासु बि(अ्)ल् क़िस्ति[ज] व अन्ज़ल्न(अ्) (अ्)ल् हदीद फ़ीहि बअ्सुन् शदीदु(न्)व्व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि......

५७.२५

290. १ इन्ना अरद्न(अ्) (अ्)ल् अमानत अल(य्)-(अल्) स्समावाति व(अ्)ल् अर्ज़ि व(अ्)ल् जिबालि फ़ अबैन अ(न्)य्यह्मिल्नहा व अश्-फ़क़्न मिन्हा व हमलह(अ्) (अ्)ल् इन्सानु[तोय] इन्नहू कान ज़लूमन्(अ्) जहूलन्(अ्) ०[ला]

३३.७२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसने इनकार किया और अपनी बड़ाई के घमंड में पड़ गया और अश्रद्धालुओं में सम्मिलित हो गया।

२.३०–३४

२८८ मानव : दोनों हाथों की कृति

१ कहा : हे इब्लिस ! जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया, उसे प्रणिपात करने से तुझे क्या चीज निषेधक हुई ? क्या तू बड़ाई के घमंड में पड़ गया या तू उच्च श्रेणीवालों में से है ?

३८.७५

२८९ तीन ईश्वरीय देनें : ग्रन्थ, तुला, लोहा

१ हमने अपने प्रेषितों को खुली निशानियाँ देकर भेजा है और उनके साथ हमने ग्रन्थ उतारा है तथा तराजू उतारी है, जिससे कि लोग न्याय पर स्थिर रहें और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ा संकट है और लोगों के लिए कई लाभ भी हैं……।

५७.२५

२९० अमानत

१ हमने यह अमानत आकाशों एवं भूमि एवं पर्वतों के सम्मुख प्रस्तुत की। सबने उसे उठाने से इनकार किया। वे उससे डर गये और मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा निरंकुश और अज्ञानी है।

३३.७२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

291. १ ल क़द् ख़लक़्न (अ्) (अ्) ल् इन्सान फ़ी अह्सनि तक़वीमिन् Oज़
२ सुम्म रदद्नाहु अस्फ़ल साफ़िलीन Oला

९५.४–५

292. १......फ़ मिन्हुम् ज़ालिमु (न्) लिल नफ़्सिही[ज़] व मिन्हु (म्) म्मुक़्तसिदुन्[ज] व मिन्हुम् साबिक़ु (न्) म् बि (अ्) ल ख़ैराति बि इज़्नि (अ्) ल्लाहि[तोय] ज़ालिक हुव (अ्) ल् फ़ज़्लु (अ्) ल् कबीर् O[तोय]

३५.३२

293. १ व मा ख़लक़्तु (अ्) ल् जिन्न व (अ्) ल् इन्स इल्ला लि यअ्बुदूनिO
२ मा उरीदु मिन्हु (म्) म्मि (न्) र्रिज़्क़ि (न्) व्व मा उरीदु अ (न्) य्युत्अिमूनि O
३ इन्न (अ्) ल्लाह हुव (अल्) र्रज़्ज़ाक़ु ज़ु (व्)-(अ्) ल् क़ुव्वति (अ्) ल् मतीनु O

५१.५६–५८

294. १ लौ कान अरज़न् (अ्) क़रीब (न्अ्) व्व सफ़रन् (अ्)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२९१ दो सिरे

१ वस्तुतः हमने मनुष्य को सर्वोच्च बनाया।
२ फिर हमने उसे लौटा दिया नीचों में सबसे अधिक नीच बनाकर।

९५.४-५

२९२ तीन श्रेणियाँ : हीन, मध्यम, उत्तम

१ ······तो कुछ लोग ऐसे हैं, जो स्वयं पर अत्याचार करनेवाले हैं और कुछ उनमें से मध्यम गतिवाले हैं और कुछ उनमें ईश्वर की सत्कृतियों में सबसे आगे बढ़ जानेवाले हैं। यही महान् सौभाग्य है।

३५.३२

२९३ मनुष्य-जन्म का हेतु

१ मैंने जिन एवं मनुष्यों को इसीलिए उत्पन्न किया कि वे मेरी भक्ति करें।
२ मैं उनसे कोई जीविका नहीं चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें।
३ निस्सन्देह ईश्वर ही सबको जीविका देनेवाला, बलशाली, सर्वशक्तिमान् है।

५१.५६–५८

६१ मानव की दुर्बलता

२९४ अस्थिर

१ यदि लाभ निकट होता और उसके लिए प्रवास सुकर होता,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क़ासिद (न्अ्) ल्ल (अ्) त्तबअ़ूक व लाकि (न्)-
म्बअ़ुदत् अ़लैहिमु (अ्ल्) श्शुक़्क़तु^{तोय}......

९.४२

295. १ अव लम् यसीरू (अ्) फ़ि (अ्) ल् अर्ज़ि फ़ यन्-
ज़ुरू (अ्) कैफ़ कान आ़क़िबतु (अ्) ल्लज़ीन
मिन् क़ब्लिहिम्^{तोय} कानू (अ्) अशद्द मिन्हुम्
क़ुव्वत (न्) व्व असारु (व्अ्) (अ्) ल् अर्ज़
व अ़मरूहा अक्सर मिम्मा अ़मरूहा व जा'अत्-
हुम् रुसुलुहुम् बि (अ्) ल् बय्यिनाति^{तोय} फ़ मा
कान (अ्) ल्लाहु लियज़्लिमहुम् व लाकिन्
कानू (अ्) अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून ०^{तोय}

३०.९

296. १ व लइन् अज़क़्न (अ्) (अ्) ल् इन्सान मिन्ना
रह्मतन् सुम्म नज़अ़्नाहा मिन्हु इन्नहु
ल यऊसुन् कफ़ूरुन् ०

२ व लइन् अज़क़्नाहु नअ़्मा'अ बअ़्द ज़र्रा'अ
मस्सत्हु ल यक़ूलन्न ज़हब (अ्ल्) स्सय्यिआतु
अ़न्नी^{तोय} इन्नहु ल फ़रिहुन् फ़ख़ूरुन् ०^{ला}

११.९-१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तो ये मनुष्य अवश्य तेरे साथ हो लेते। परन्तु उनके लिए तो यह प्रवास बहुत कठिन हो गया......।

९.४२

२९५ अनुभव से पाठ नहीं लेते

१ क्या उन्होंने पृथ्वी का पर्यटन नहीं किया, जिससे कि वे देखते कि उनसे पहलेवालों का अन्त क्या हुआ ? वे उनसे बल में अधिक थे और उन लोगों ने भूमि को जोता-बोया था और जितना इन्होंने उसे आबाद किया है, उससे अधिक उन्होंने उसे आबाद किया था। उनके पास ईश्वर के प्रेषित उसकी खुली निशानियाँ लेकर आये थे। ईश्वर ने उन पर अन्याय नहीं किया, अपितु वे स्वयं अपने पर अत्याचार करते थे।

३०.९

२९६ दोलायमान

१ यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से कृपा का स्वाद चखा देते हैं, फिर उससे उसको हटा लेते हैं, तो वह निराश एवं कृतघ्न हो जाता है।

२ और यदि उस कष्ट के पश्चात् जो उसे मिले हैं, ईश्वरीय देन का स्वाद हम चखा दें, तो वह कहने लगता है : मेरे सारे दुख-दर्द दूर हो गये ! (ईश्वर ने दूर किये ऐसा नहीं कहता) निस्सन्देह वह बड़ा इतरनेवाला आत्मश्लाघी है।

११.९–१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

297. १ व जअल्तु लहू माल(न्) म्ममदूदन्(अ्)० ला
२ व बनीन शुहूदन्(अ्) ०ला
३ व महहद्(द्)त्तु लहू तम्हीदन्(अ्)० ला
४ सुम्म यत्मअु अन् अज़ीद ०काला

७४.१२–१५

298. १ इन्न(अ्)ल् इन्सान खुलिक़ हलूअन् ०ला
२ इजा मस्सहु(अ्ल्)श्शर्रु जज़ूअन्(अ्)०ला
३ व इजा मस्सहु(अ्)ल् ख़ैरु मनूअन् (अ्)०ला

७०.१९–२१

299. १ अव ला यरौन अन्न हुम् युफ़्तनून फ़ी कुल्लि आमि(न्)म्मर्रतन् औ मर्रतैनि सुम्म ला यतूबून व ला हुम् यज्जक्करून ०

९.१२६

300. १.....लिम तस्तअ्जिलून बि (अ्ल्)स्सय्यिअति क़ब्ल(अ्)ल् हसनति ज लौ ला तस्तग्फ़िरून-(अ्)ल्लाह लअल्लकुम् तुर्हमून ०

२७.४६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२९७ लालची

१ मने उसे विपुल धन दिया
२ और साथ रहनेवाले पुत्र दिये
३ और उसके लिए सब प्रकार के साधन जुटाये,
४ फिर भी मनुष्य लोभ रखता है कि मैं उसे और अधिक दूँ।

७४.१२–१५

२९८ विषादी एवं दीर्घसूत्री

१ निस्सन्देह मनुष्य अधीर उत्पन्न किया गया है।
२ जब उसे कष्ट पहुँचता है, तो घबरा जाता है
३ और जब उसे सम्पदा प्राप्त होती है, तो (देने में) कंजूसी करता है।

७०.१९–२१

२९९ संवेदनहीन

१ क्या ये लोग देखते नहीं कि वे प्रतिवर्ष एक बार कसौटी में डाले जाते हैं, फिर भी वे न तो पछतावा करते हैं और न कोई पाठ लेते हैं।

९.१२६

३०० बुराई की ओर शीघ्र बढ़नेवाला

१ ······लोगो ! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों उतावली करते हो ? ईश्वर से क्षमा क्यों नहीं माँगते, जिससे कि तुम पर कृपा की जाय ?

२७.४६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

301. १ व मा अुबर्रि(य्)ःअु नफ़्सीॼ इन्न(अल्)-न्नफ़्स ल अम्मारतु(न्)म् बि(अल्)स्सूःअि इल्ला मा रहिम रब्बीतोय इन्न रब्बी ग़फ़ूरु(न्)-र्रहीमुन् ०

१२.५३

302. १ व लौ यु(व्)ःआख़िज़ु(अ्)ल्लाहु (अल्)न्नास बि मा कसबू(अ्)मा तरक अ़ला(य्)जहूरिहा मिन् दाब्बतिन्....

३५.४५

303. १ मा असाबक मिन् हसनतिन् फ़ मिन(अ्)ल्लाहिॼ व मा असाबक मिन् सय्यिःअतिन् फ़ मि(न्)-न्नफ़्सिकतोय...

४.७९

304. १ या अय्युह(अ्)(अ्)ल् इन्सानु मा ग़र्रक बि रब्बिक(अ्)ल् करीमि ०ला

२ (अ्)ल्लज़ी ख़लक़क फ़ सव्वाक फ़ अ़दलक ०ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६२ पापाभिमुखता

३०१ जीव दोषप्रवृत्त

१ मैं (हज़रत यूसुफ) अपने-आपको दोषमुक्त नहीं मानता। निस्सन्देह मानवी मन तो बुराई की ओर प्रवृत्त करता है, सिवा उस स्थिति के कि किसी पर मेरे प्रभु की कृपा हो। निस्सन्देह मेरा प्रभु क्षमावान् है।

१२.५३

३०२ यदि ईश्वर दण्डन करता

१ यदि ईश्वर लोगों को उनके कृत्यों के लिए पकड़ता, तो इस भूमि पर एक प्राणी न छोड़ता……।

३५.४५

३०३ भलाई ईश्वर की, बुराई हमारी

१ तेरा जो कल्याण होता है, वह ईश्वर की ओर से होता है और जो कष्ट तुझे पहुँचता है, वह तेरी वासना की ओर से पहुँचता है……।

४.७९

६३ कृतघ्नता

३०४ हे मनुष्य ! तू कृतघ्न क्यों हुआ ?

१ हे मनुष्य ! तुझे किस चीज ने तेरे उदार प्रभु से बहका दिया

२ जिसने तुझे उत्पन्न किया, फिर तुझे ठीक किया एवं तुझे समत्वयुक्त बनाया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ फ़ी अय्यि सूरति(न्)म्मा शाअ रक्कबक Oतोय

८२.६–८

305. १ इन्न(अ्)ल् इन्सान लि रब्बिहर्ती ल कनूदुन् Oला
२ व इन्नहू अला(य्) जालिक ल शहीदुन् Oज
३ व इन्नहू लि हुब्बि(अ्)ल् ख़ैरि ल शदीदुन् Oतोय
४ अ फ़ ला यअ्लमु इजा बुअ्सिर मा फ़ि(य्)
(अ्)ल् क़ुबूरिOला
५ व हुस्सिल मा फ़ि(अ्ल्)स्सुदूरि Oला
६ इन्न् रब्बहुम् बि हिम् यौम ’इजि(न्)ल्ल
ख़बीरुन् O

१००.६–११

306. १ व इजा मस्स(अ्)ल् इन्सान(अ्ल्) द्दुर्रु
दआना लि जम्बिहर्ती औ क़ाअिदन्(अ्) औ
क़ाअिमन्(अ्)ज फ़लम्मा कशफ़्ना अनहु दुर्रहू
मर्र क अ(न्)ल्लम् यद्अुना इला(य्) दुर्रि(न्)-
म्मस्सहूतोय क जालिक ज़ुय्यिन लिल् मुस्रिफ़ीन
मा कानू यअ्मलून O

१०.१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ और जिस रूप में उसने चाहा, उस रूप से तेरा योग साधा।

८२.६–८

३०५ कृतघ्न मनुष्य

१ निश्चय ही मनुष्य अपने प्रभु का बड़ा कृतघ्न है।

२ और निस्सन्देह वह इस बात का साक्षी भी है।

३ और वह धन के प्रेम में बहुत पक्का है।

४ क्या वह नहीं जानता वह समय, जब उठाया जायगा, जो कुछ कब्रों में है।

५ और प्राप्त किया जायगा, जो कुछ वक्षों में है।

६ निस्सन्देह उनका प्रभु उस दिन उनकी स्थिति से सम्पूर्ण अवगत है।

१००.६–११

३०६ दुःख में स्मरण एवं सुख में विस्मरण

१ जब मनुष्य को कष्ट पहुँचता है, तो वह लेटे, बैठे या खड़े हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे वह कष्ट हटा देते हैं, तो वह ऐसा चल निकलता है, मानो कष्ट के पहुँचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादा का अतिक्रमण करनेवालों के लिए उनकी करतूतें उन्हें सुन्दर लगें, ऐसा हमने किया है।

१०.१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

307. १ हुव(अ्)ल्लजी युसय्यिरुकुम् फ़ि(अ्)ल् बर्रि व(अ्)ल् बह्रि तोय हत्ता(य्) इजा कुन्तुम् फ़ि(अ्)ल् फ़ुल्कि ज व जरैन बि हिम् बि रीहिन् तय्यिबतिन्(न्) व्व फ़रिहू(अ्) बिहा जा·अत्हा रीहुन् आसिफ़ु(न्) व्व जाअहुमु(अ्)ल् मौजु मिन् कुल्लि मकानि(न्) व्व जन्नू(अ्) अन्न हुम् उहीत बिहिम्ला दअवु(अ्) (अ्)ल्लाह मुख़्लिसीन लहु(अल्)द्दीन०ज लअिन् अन्जैतना मिन् हाजिहद्दी लनकूनन्न मिन(अल्) श्शाकिरीन०

२ फ़ लम्मा अन्जाहुम् इजा हुम् यब्ग़ून फ़ि(अ्)ल् अर्ज़ि बि ग़ैरि(अ्)ल् हक़्क़ितोय या अय्युह(अल्) न्नासु इन्न मा बग़्युकुम् अला(य्) अन्फ़ुसिकु(म्)ला म्मताअ(अ्)ल् हया(व्)ति (अल्)द्दुन्याज्ञ सुम्म इलैना मर्जिअुकुम् फ़ नुनब्बि·अुकुम् बि मा कुन्तुम् तअ्मलून०

१०.२२–२३

308. १ ला यस्·अमु(अ्)ल् इन्सानु मिन् दुआ·अि(अ्)ल् ख़ैरि व इ(न्)म्मस्सहु(अल्)श्शर्रु फ़ य·ऊसुन् क़नूतुन्०

२ व लअिन् अजक़्नाहु रह्मतन्(न्)म्मिन्ना मि(न्)म्बअ्दि ज़र्रा·अ मस्सत्हु ल यक़ूलन्न हाजा लीला........

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३०७ समुद्र एवं तट का दृष्टान्त

१ वह ईश्वर ही है, जो तुम्हें थल-जल में घुमाता है। जब तुम नौकाओं में होते हो और वह नौका लोगों को लेकर वायु से चलती है और लोग उससे खुश होते हैं कि यकायक उन नौकाओं पर झंझावात आता है और उन पर सब ओर से लहरें उठी चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि वे घिर गये हैं। तो वे निष्ठा को ईश्वर ही के लिए विशुद्ध करके उससे प्रार्थना करने लगते हैं कि यदि तूने हमको इससे बचा लिया, तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जायँगे।

२ फिर जब ईश्वर उन्हें बचा लेता है, तो वे शीघ्र ही भूमि पर अन्यायपूर्ण विद्रोह करते हैं। लोगो ! तुम्हारा यह विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध है। थोड़े दिनों के ऐहिक जीवन का लाभ उठा लो, फिर हमारे ही पास तुम्हें लौटकर आना है। तो हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या करते थे ?

१०.२२–२३

३०८ अस्माकं अयं महिमा

१ मनुष्य लाभ एवं सुभीता के लिए प्रार्थना करने में थकता नहीं और यदि उसे कष्ट पहुँचता है, तो वह बहुत हताश, निराश हो जाता है।

२ और किसी कष्ट के पश्चात् जो उसको पहुँचता है, हम उसे अपनी कृपा का स्वाद चखा दें, तो वह अवश्य कहेगा : 'यह मेरे कारण है।'......

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ व इज़ा अन्अ़म्ना अ़ल(य्)(अ्)ल् इन्सानि
अअ़्रज़ व नआ बि जानिबिह्ई^ज व इज़ा मस्सहु
-(अल्)श्शर्रु फ़ ज़ू दुआ़ॅाअ़िन् अ़रीज़िन्O

४१.४९-,५१

309. १ व(अ्)ल्लैलि इज़ा यग़्शा(य्) O^ला
२ व (अल्)न्नहारि इजा तजल्ला(य्) O^ला
३ व मा ख़लक़ (अल्)ज़्ज़कर व (अ्)ल् अुन-
सा(य्) O^ला
४ इन्न सअ़्यकुम् ल शत्ता(य्) O^तोय
५ फ़ अम्मा मन् अअ़्ता(य्) व (अ्)त्तक़ा(य्)O^ला
६ व सद्दक़ बि(अ्)ल् हुस्ना(य्) O^ला
७ फ़ सनुयस्सिरुहू लिल् युस्रा(य्) O^तोय
८ व अम्मा म(न्)म् बख़िल व(अ्)स्तग़्ना(य्)O^ला
९ व कज़्ज़ब बि(अ्)ल् हुस्ना (य्) O^ला
१० फ़ सनुयस्सिरुहू लिल् अुस्रा(य्) O^तोय
११ व मा युग़्नी अ़नहु मालुहू इज़ा तरद्दा(य्) O^तोय
१२ इन्न अ़लैना लल् हुदा(य्) O^जस्वली
१३ व इन्न लना लल् आख़िरत व(अ्)ल् ऊला(य्)O
१४ फ़ अन्ज़र्तुकुम् नारन्(अ्) तलज़्ज़ा(य्)O^ज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

३ और जब हम मनुष्य को सुख के साधन भेजते हैं, तो वह हमसे मुँह फेर लेता है और अलग हो जाता है। और जब उसे कष्ट पहुँचता है, तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करनेवाला हो जाता है।

४१.४९–५१

६४ आस्तिकनास्तिकता

३०९ भलाई पर विश्वास रखनेवाला तथा न रखनेवाला

१ शपथ है रात्रि की, जब वह फैल जाय
२ और दिन की, जब वह प्रकाशित हो जाय
३ और उसकी, जिसने नर-नारी निर्माण किये।
४ निस्सन्देह तुम्हारा प्रयत्न अस्त-व्यस्त है।
५ सो जिसने ईश्वर के मार्ग में दान किया एवं ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया
६ और भलाई में विश्वास रखा,
७ तो हम उसके लिए सुख-सुविधाएँ पहुँचायेंगे।
८ और जिसने कंजूसी की और बेपरवाही बरती
९ और भलाई में विश्वास न रखा,
१० तो हम उसे कष्ट में डालेंगे।
११ और उसका धन उसके काम न आयेगा, जब वह गड़हे में गिरेगा।
१२ निस्सन्देह मार्ग-दर्शन हमारे जिम्मे है।
१३ और निस्सन्देह इहलोक तथा परलोक दोनों हमारे ही हैं।
१४ तो हमने तुम्हें एक भड़कती हुई आग से सावधान करा दिया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१५ ला यस्लाहा इल्ल(अ्) (अ्)ल् अश्क़(य्) O ला
१६ (अ्)ल्लजी कज्जब व तवल्ला(य्) O तोय्
१७ व सयुजन्नबुह(अ्) (अ्)ल् अत्क़(य्) O ला
१८ (अ्) ल्लजी यु(व्) अ्ती मा—लहू यत-
ज़क्का(य्)O ज़
१९ व मा लि अहदिन् ʿइन्दहू मि(न्)न्निअ्मतिन्
तुज्ज़ा(य्) O ला
२० इल्ल(अ्) (अ्)ब्तिग़ा॰अ वज्हि रब्बिहि(अ्)ल्
अअ्ला(य्) O ज़
२१ व ल सौफ़ यर्द्वा(य्) O ऐन्

९२.१–२१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१५ उसमें वही गिरेगा, जो अभागा है

१६ जिसने (ईश्वर का) अस्वीकार किया और मुँह फेरा

१७ और उसे आग से वह बचाया जायगा, जो बहुत धर्म-परायण है

१८ जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में देता है, जिससे कि वह विशुद्ध हो जाय

१९ और उस पर किसीका ऐसा उपकार नहीं है कि जिसे वह इस प्रकार लौटा रहा है।

२० अतिरिक्त इससे कि उसे अपने परम-प्रभु की प्रसन्नता इष्ट है।

२१ और निश्चय ही वह प्रसन्न हो जायगा।

९२.१–२१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ८

प्रेषित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

: २६ :

310. १ व मा अर्सल्ना मि(न्)र्रसूलिन् इल्ला बि लिसानि क़ौमिही लि युबय्यिन लहुम्....तोय
१४.४

311. १ व लि कुल्लि उम्मतिन(न्)र्रसूलुन्ज फ़ इज़ा जाअ रसूलुहुम् क़ुद्दिय बैनहुम् बि(अ्)ल् क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून०
१०.४७

312. १ व मा अर्सल्ना क़ब्लक इल्ला रिजाल(न्)नूही इलैहिम् फ़ स्अलू (अ्) अह्ल (अल्)ज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ्लमून०
२ व मा जअल्नाहुम् जसद(न्अ्)ल्ला यअ्कुलून (अल्) त्तआम व मा कानू(अ्) ख़ालिदीन०
२१.७–८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२६ पूर्व-प्रेषित

६५ प्रेषित–सर्वजनहिताय

३१० प्रेषित मातृभाषा में बोलते हैं

१ हमने कोई प्रेषित भी भेजा, तो उसके समाज की भाषा में (बोलनेवाला) भेजा, जिससे कि वह उन्हें भलीभाँति स्पष्ट रूप से समझा दे……।

१४.४

३११ प्रत्येक समाज के लिए प्रेषित

१ प्रत्येक समाज का एक प्रेषित है। जब उनका प्रेषित आता है, तो उनके बीच न्याय से निर्णय होता है तथा उन पर अन्याय नहीं होता।

१०.४७

६६ प्रेषित मनुष्य ही

३१२ पहले के प्रेषित मनुष्य ही थे

१ हमने तुझसे पूर्व केवल मनुष्यों को ही प्रेषित बनाकर भेजा है। उन (प्रेषितों) को हमने प्रज्ञान दिया। यदि तुम्हें यह ज्ञात न हो, तो ग्रन्थवानों से पूछ लो।

२ और हमने उनके शरीर ऐसे नहीं बनाये थे कि वे भोजन न करते हों और न वे नित्य रहनेवाले थे।

२१.७-८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

313. १ व लक़द् अर्सल्ना रुसुल(न्अ्)म् मिन् क़ब्लिक व जअ़ल्ना लहुम् अज़्वाज(न्अ्)ँव्व ज़ुर्रिय्यतन्^तोय व मा कान लि रसूलिन् अ(न्अ्)-ँय्यअ्तिय बि आयतिन् इल्ला बि इज़्नि (अ्)ल्लाहि^तोय लि कुल्लि अजलिन् किताबुन्O
१३.३८

314. १ व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लिक मि(न्) र्रसूलि (न्)ँव्व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा तमन्ना-(य्)अल्क़(य्) श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिह^ज फ़ यन्सख़ु (अ्) ल्लाहु मा युल्क़ि (य्)-(अल्) श्शैतानु सुम्म युह्किमु(अ्)ल्लाहु आयातिह^तोय व (अ्)ल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीमुन्O^ला
२२.५२

315. १ व मा मनअ़ (अल्) न्नास अ(न्)ँय्यु(व्)-अ्मिनू (अ्) इज़् जाअहुमु (अ्)ल् हुदा (य्) इल्ला अन् क़ालू (अ्) अ बअ़स (अ्)ल्लाहु बशर(न्) (अ्) र्रसूलन् (अ्)O
२ क़ु (ल्) ल्लौ कान फ़ि (य्) (अ्) ल् अर्ज़ि मलाअिकतु(न्)ँय्यम्शून मुत्मअिन्नीन ल नज़्ज़लना अ़लैहि(म्)म्मिन (अल्)स्समाअि मलक(न् अ्) र्रसूलन्(अ्)O
१७.९४–९५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३१३ बाल-बच्चों में रहनेवाले

१ तुझसे पूर्व भी हम बहुत से प्रेषित भेज चुके हैं और हमने उन्हें स्त्री-पुत्र दिये थे। और किसी प्रेषित के लिए यह सम्भव नहीं कि वह ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई प्रभु-संकेत ले आये हरएक अवधि लिखी हुई है।

१३.३८

३१४ सब प्रेषितों को शैतान का अनुभव

१ तुझसे पूर्व किसी ऐसे प्रेषित तथा सन्देष्टा को नहीं भेजा कि जब भी उसने ग्रन्थ-पाठ किया, तो शैतान ने उसके पठन में दखल न दिया हो। तब ईश्वर शैतान की व्यंजना को मिटा देता है और अपने वचनों को प्रतिष्ठित करता है। और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

२२.५२

३१५ प्रेषित मनुष्य ही क्यों ?

१ लोगों के पास जब कभी धर्मोपदेश आया, तो उन्हें उस पर श्रद्धा रखने से किसीने नहीं रोका, सिवा उनके यह कहने के कि क्या ईश्वर ने मनुष्य को प्रेषित बनाकर भेज दिया है ?

२ कह : यदि भूमि में देवदूत शान्ति से चल-फिर रहे होते, तो हम अवश्य किसी देवदूत को प्रेषित बनाकर आकाश से उतारते।

१७.९४–९५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

316. १ क़ालत् रुसुलुहुम् अ फ़ि (य्) (अ्)ल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरि (अल्) स्समावाति व (अ्)ल् अर्ज़ि तोय यद्अूकुम् लि यग़्फ़िर लकु (म्)-म्मिन् जुनूबिकुम् व यु(व्)अख़्ख़िरकुम् इला (य्) अजलि (न्) म्मुसम्मन् (य्) तोय क़ालू (अ्) इन् अन्तुम् इल्ला बशरु (न्) म् मिस्-लुना तोय तुरीदून अन् तसुद्दूना अम्मा कान यअ्बुदु आबा (व्)अुना फ़अ्तूना बि सुल्तानि-(न्) म्मुबीनिन् ०

२ क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इ (न्) न्नह्नु इल्ला बशरु (न्) म्मिस्लुकुम् व लाकिन्न (अ्) ल्लाह यमुन्नु अला (य्) म (न्) य्यशाअु मिन् अिबादिही तोय व मा कान लना अ (न्)-न्नअ्तियकुम् बि सुल्तानिन् इल्ला बि इज़्नि-(अ्)ल्लाहि तोय व अल (य्) (अ्)ल्लाहि फ़ल् यतवक्कलि (अ्) ल् मु (व्)अमिनून ०

३ व मा लना अल्ला नतवक्कल अल (य्)-(अ)ल्लाहि व क़द् हदाना सुबुलना तोय व ल नस्-बिरन्न अला मा आज़ैतुमूना तोय व अल (अ्य्)-(अ्)ल्लाहि फ़ल् यतवक्कलि (अ्)ल् मुत-वक्किलून० ऐन्

१४.१०—१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३१६ प्रेषित मनुष्य ही हैं, पर ईश्वर के कृपापात्र हैं

१ उनके प्रेषित बोले : क्या ईश्वर के विषय में तुम्हें सन्देह है, जो आकाशों एवं भूमि का बनानेवाला है। वह तुम्हें बुला रहा है, ताकि वह तुम्हारे दोष क्षमा करे तथा तुम्हें एक निश्चित अवधि तक मुहलत दे। उन्होंने कहा : तुम तो हम जैसे ही मनुष्य हो। हमें उनकी भक्ति से रोकना चाहते हो, जिनकी भक्ति हमारे बाप-दादा करते रहे हैं। तो तुम हमारे पास कोई प्रमाण ले आओ।

२ उनके प्रेषितों ने उनसे कहा : हम तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, परन्तु ईश्वर अपने मनुष्यों में से जिन पर चाहता है, उपकार करता है। यह हमारे अधिकार में नहीं है कि बिना ईश्वर की आज्ञा के तुम्हारे पास कोई प्रमाण ला सकें। ईश्वर पर ही श्रद्धावानों को भरोसा करना चाहिए।

३ और हमको क्या हुआ कि हम ईश्वर पर भरोसा न करें, जब कि उसने हमको अपने मार्ग दिखा दिये और जो कष्ट तुम हमें पहुँचा रहे हो, उसे हम अवश्य सहन करेंगे। भरोसा करने-वालों को ईश्वर पर ही भरोसा करना चाहिए।

१४.१०–१२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

317. १ व कअय्यि (न्) म्मि(न्) न्नबीयिन् क़ातल^ला
मअ़हू रिब्बीयून कसीरुन्^ज फ़ मा वहनू(अ्)
लि मा असाबहुम् फ़ी सबीलि (अ्)ल्लाहि व
मा ज़अुफ़ू(अ्)व म(अ्) (अ्)स्तकानू (अ्)^तोय
व (अ्)ल्लाहु युहिब्बु (अ्ल्) स्साबिरीन०
२ व मा कान क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू (अ्)
रब्बन (अ्) (अ्) ग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व
इस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना
व(अ्)न्सुर्ना अ़ल (य्) (अ्) ल् क़ौमि
(अ्) ल् काफ़िरीन०
३ फ़ आताहुमु (अ्)ल्लाहु सवाब (अ्ल्)द्दुन्या
व हुस्न सवाबि (अ्) ल् आख़िरति ^तोय व
(अ्)ल्लाहु युहिब्बु (अ्)ल् मुह्सिनीन ०

३.१४६–१४८

318. १ व ल क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलु(न्) म्मिन् क़ब्लिक
फ़ सबरू (अ्) अ़ला (य्)मा कुज़्ज़िबू (अ्)
व ऊज़ू हत्ता (य्) अताहुम् नस्रुना^ज व ला
मुबद्दिल लि कलिमाति(अ्)ल्लाहि ^ज व ल क़द्
जाअक मि(न्) न्नबइ(य्) (अ्)ल् मुर्सलीन०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६७ गुणविशिष्ट

३१७ दृढ़-निश्चय

१ कितने ही ऐसे सन्देष्टा हैं, जिनसे सहयोग कर बहुत-से ईश्वर-निष्ठ जूझे। ईश्वर के मार्ग में जो कष्ट उन पर पड़े, उनसे न वे डिगे, न निर्बल हुए और न दबे। ईश्वर दृढ़निश्चयी लोगों से प्रेम करता है।

२ वे बोले तो केवल यह बोले : हे प्रभो ! हमारे पापों को और हमारे कामों में जो ज्यादतियाँ हुईं उन्हें, माफ कर। हमारे पाँव जमा और अश्रद्धावानों के विरोध में हमें मदद दे।

३ फिर ईश्वर ने उन्हें ऐहिक फल भी दिया तथा पारलौकिक श्रेष्ठ फल भी दिया। ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों को चाहता है।

३.१४६–१४८

३१८ सहनशील

१ तुझसे पूर्व भी बहुत-से प्रेषित अस्वीकृत किये जा चुके हैं। तो उन्होंने अस्वीकृत होने पर और कष्ट दिये जाने पर सहन किया। यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गयी। ईश्वर की बातों को बदलनेवाला कोई नहीं। निस्सन्देह तेरे पास प्रेषितों के वृत्तान्त आ चुके हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व इन् कान कबुर अलैक इअ्राद्दुहुम् फ़ इनि-
(अ्)स्ततअ्त् अन् तब्तग़िय नफ़क़न् फ़ि(अ्)-
ल् अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़ि (अ्ल्) स्समाअि
फ़तअ्तियहुम् बिआयतिन्^{तोय} व लौ शाअ(अ्)-
ल्लाहु ल जमअहुम् अल(य्) (अ्)ल् हुदा(य्)
फ़ ला तकूनन्न मिन (अ्) ल् जाहिलीन ०

६.३४–३५

319. १ व इज़् क़ालत् अुम्मतु (न्)म्मिन्हुम् लिम
तअिज़ून क़ौम नि ला (अ्)ल्लाहु मुह्लिकु-
हुम् औ मुअज़्जिबुहुम् अज़ाबन्(अ्)
शदीदन् (अ्)तोय क़ालू (अ्) मअ्जिरतन्
इला (य्) रब्बिकुम् व लअल्लहुम् यत्तक़ून ०

७.१६४

320. १ व कुल्ल (न्) (अ्) न्नक़ुस्सु अलैक मिन्
अ(न्)म्बाअि (अ्ल्) र्रुसुलि मा नुसब्बितु
बिही फ़ु(व्)आदक ज व जाअक फ़ी हाज़िहि
(अ्) ल् हक़्क़ु व मौअिज़तु(न्) ँव्व
ज़िक्रा(य्) लिल् मु(व्)अ्मिनीन ०

११.१२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ और यदि उन लोगों की विमुखता तुझे दुःख देती हो, तो यदि तुझसे हो सके तो तू भूमि में कोई सुरंग ढूँढ़ या आकाश में सीढ़ी ढूँढ़। फिर उनके पास कोई निशानी ले आ। अरे, यदि ईश्वर चाहता, तो उन सबको अवश्य मार्ग पर इकट्ठा कर देता। अतः तू अज्ञान न बन।

६.३४–३५

३१९ विपरीत परिस्थिति में बोध देनेवाले

१ जब उनमें से एक समूह ने कहा : तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश करते हो, जिन्हें ईश्वर नष्ट करनेवाला है या कठोर दण्ड देनेवाला है ? तब उन (भक्तों) ने उत्तर दिया : तुम्हारे प्रभु के सम्मुख हम दोष-मुक्त हों, इसलिए और इसलिए भी कि कदाचित् वे बच जायँ।

७.१६४

६८ कथा कथनहेतु

३२० प्रेषितों की कहानियाँ क्यों कहीं ?

१ ये प्रेषितों की कहानियाँ, जो हम तुझे सुनाते हैं, ये वे बातें हैं, जिनके द्वारा हम तेरे मन को दृढ़ करते हैं। और इनमें तेरे पास सत्य वस्तु आयी है तथा श्रद्धावानों के लिए उपदेश एवं चेतावनी।

११.१२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

321. १ व लक़द् नादाना नूहुन् फ़ल निअ्म(अ्)ल् मुजीबून O ज़ुस्वली
२ व नज्जय्नाहु व अह्लहू मिन(अ्)ल् कर्बि (अ्) ल् अज़ीमि O ज़ुस्वली

३७.७५–७६

322. १ व नादा(य्) नूहु(न्) र्रब्बहू फ़ क़ाल रब्बि इन्न (अ्)ब्नी मिन् अह्ली व इन्न वअ्दक (अ्) ल् हक़्क़ु व अन्त अह्कमु (अ्) ल् हाकिमीन O
२ क़ाल या नूहु इन्नहू लैस मिन् अह्लिक ज़ इन्नहू अमलुन् ग़ैरु सालिहिन् ज़क़स्वली फ़ ला तस्अल्नि मा लैस लक बिही अिल्मुन् तोय इन्नी अअिज़ुक अन् तकून मिन (अ्) ल् जाहिलीन O

११.४५–४६

323. १ क़ालअ फ़ तअ्बुदून मिन् दूनि(अ्)ल्लाहि मा लायन्फ़अुकुम् शैअ(न) व्व ला यदुर्रुकुम् O तोय
२ अुफ़्फ़ि (न्) ल्लकुम् व लिमा तअ्बुदून मिन् दूनि (अ्)ल्लाहि तोय अ फ़ ला तअ्क़िलून O

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

६९ नूह*

३२१ नूह का उद्धार

१ नूह ने हमें पुकारा था। सो पुकार का उत्तर देने में हम बहुत अनुकम्पाशील हैं।

२ हमने उसको और उसके घरवालों को बड़े भारी दुःख से मुक्ति दी। ३७.७५–७६

३२२ श्रद्धाहीन है, तो वह पुत्र पुत्र नहीं

१ नूह ने अपने प्रभु को पुकारा, कहा : हे प्रभो ! मेरा बेटा मेरे परिवारवालों में से है और निस्सन्देह तेरा अभिवचन सच्चा है और तू सब नियन्ताओं से बड़ा और श्रेष्ठतर नियन्ता है।

२ ईश्वर ने कहा : हे नूह ! वह तेरे परिवारवालों में से नहीं है। वह एक बिगड़ा हुआ काम है। अतः उस बात की माँग तू मुझसे न कर, जिसका तुझे ज्ञान नहीं। मैं तुझे सावधान करता हूँ कि तू गँवारों में से न हो। ११.४५–४६

७० इब्राहीम

३२३ इब्राहीम के लिए अग्नि ठंढी

१ (इब्राहीम ने) कहा : क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त ऐसे की भक्ति करते हो, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सकता है, न कुछ बुरा कर सकता है ?

२ धिक्कार है तुम पर और उन चीजों पर, जिसकी तुम ईश्वर के अतिरिक्त भक्ति करते हो। क्या तुम समझते नहीं ?

* पूर्व-प्रेषितों के नामों के साथ अलैहिस्सलाम कहने की परिपाटी है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ क़ालू (अ्) ह़र्रिक़ूहु व (अ्) न्सुरू (अ्) आलिहतकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन O

४ क़ुल्ना या नारु कूनी बर्द(न् अ्)व्व सलामन्(अ्) अला (य्) इब्राहीम O^ला

२१.६६–६९

324. १ क़ाल अफ़र-अैतु(म्)म्मा कुन्तुम् तअ्बुदून O^ला

२ अन्तुम् व आबा(व्) अुकुमु (अ्)ल् अक़्दमून O^ज़्स्वली

३ फ़ इन्न हुम् अदुव्वु (न्) ल्ली इल्ला रब्ब (अ्)ल् आलमीन O^ला

४ (अ्) ल्लजी ख़लक़नी फ़ हुव यह्दीनि O^ला

५ व(अ्)ल्लजी हुव युत्अिमुनी व यस्क़ीनि O^ला

६ व इजा मरिद्तु फ़ हुव यश्फ़ीनि O^स्वातला

७ व(अ्)ल्लजी युमीतुनी सुम्म युह़्यीनि O^ला

८ व(अ्) ल्लजी अत्मअु अ(न)य्यग़्फ़िर ली ख़ती-अती यौम (अल्) द्दीनि O^तोय

९ रब्बि हब् ली हुकुम(न्) (अ्)व्व अल्हिक़्नी बि (अल्)स्सालिहीन O^ला

१० व(अ्)जअ्ल्(ल्)ली लिसान सिद्क़िन् फ़ि(अ्)ल् आख़िरीन O^ला

११ व(अ्)ज्अल्नी मि(न्) व्वरसत्नि जन्नत्नि (अल्) न्नअीमि O^ला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३ वे लोग बोले : यदि तुम कुछ करनेवाले हो, तो इसको जला दो और अपने भजनीयों की सहायता करो।

४ हमने कहा : हे अग्नि ! इब्राहीम के लिए तू शीतल एवं शान्त हो जा।

२१.६६–६९

३२४ इब्राहीम की ईश्वरनिष्ठा

१ इब्राहीम ने कहा : भला देखते हो, जिसकी तुम भक्ति करते हो।

२ तुम तथा तुम्हारे बाप-दादा।

३ वे निश्चय ही मेरे शत्रु हैं, सिवा विश्व-प्रभु के

४ कि जिसने मुझे उत्पन्न किया और वही मेरा मार्ग-दर्शन करता है।

५ और वही है, जो खिलाता और पिलाता है।

६ और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही आरोग्य देता है।

७ और वही है, जो मुझे मारेगा, फिर जिलायेगा।

८ और जिससे मैं आशा करता हूँ कि पुनरुत्थान के दिन मेरे दोष क्षमा करेगा।

९ हे प्रभो ! मुझे विद्या दे एवं मुझे सत्कृतिवानों में प्रविष्ट कर।

१० आनेवाली पीढ़ियों में मेरे बारे में सच्ची जानकारी प्रदान कर।

११ मुझे आनन्दमय स्वर्ग के भागियों में प्रविष्ट कर।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१२ व(अ्)ग़्फ़िर् लि अबी' इन्नहू कान मिन
(अल्) द्दाल्लीन O^ला

१३ व ला तुख़्ज़िनी यौम युब्अ़सून O^ला

१४ यौम ला यन्फ़अ़ु मालु(न्)" व्व ला बनूनO^ला

१५ इल्ला मन् अत (य्) (अ्)ल्लाह बि क़ल्बिन्
सलीमिन् O^तोय् २६.७५–८९

325. १ ⋯इन्नहू कान सिद्दीक़(न् अ्) न्नबिय्यन् O

२ इज क़ाल लि अबीहि यां अबति लिम तअ़्बुदु
मा ला यस्मअ़ु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी
अ़न्क शय्अन्(अ्)O

३ यां अबति इन्नी क़द् जांअनी मिन (अ्) ल्
अ़िल्मि मा लम् यअ्तिक फ़ (अ्)त्तबिअ़्नी'
अह्दिक सिरातन् (अ्) सविय्यन् (अ्)O

४ यां अबति ला तअ़्बुदि (अल्) श्शैतान^तोय्
इन्न (अल्) श्शैतान कान लि(ल्) र्रह्मानि
अ़सिय्यन् (अ्)O

५ यां अबति इन्नी' अख़ाफ़ु अ(न्)" य्यमस्सक
अ़जाबु(न्) म्मिन (अल्) र्रह्मानि फ़ तकून
लि (ल्) श्शैतानि वलिय्यन् O

६ क़ाल अ राग़िबुन् अन्त अ़न् आलिहती यां
इब्राहीमु ^ज ल ‌‌इं(न्)ल्लम् तन्तहि ल अर्जु-
मन्नक व(अ्) ह्जुर्नी मलिय्यन् (अ्)O

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१२ मेरे पिता को क्षमा कर कि वह भ्रमितों में से है।

१३ और जिस दिन लोग उठाये जायँगे, उस दिन मुझे नीचा न दिखा।

१४ जिस दिन कि सम्पत्ति तथा सन्तति काम नहीं आयेगी।

१५ केवल यही काम आयेगा कि ईश्वर के सम्मुख शुद्ध, स्वस्थ हृदय लेकर आये।

२६.७५–८९

३२५ पिता-पुत्र-संवाद

१ ……निस्सन्देह वह बहुत सच्चा सन्देष्टा था।

२ जब उसने अपने पिता से कहा कि हे पिता ! तू उसकी भक्ति क्यों करता है, जो न सुनता है, न देखता है और न तेरे कुछ काम आता है ?

३ हे पिता ! मेरे पास वह ज्ञान आया है, जो तेरे पास नहीं आया। तो तू मेरे कहने पर चल। मैं तुझे सीधा मार्ग दिखा दूँगा।

४ हे पिता ! शैतान की भक्ति न कर। निस्सन्देह शैतान उस कृपालु का विद्रोही है।

५ हे पिता ! मैं डरता हूँ कि उस कृपालु की ओर से तुझ पर कोई आपत्ति आ जाय, तो तू शैतान का साथी हो जाय।

६ इब्राहीम के पिता ने कहा : हे इब्राहीम ! क्या तू मेरे भजनीयों से फिरा हुआ है ? यदि तू इससे परावृत्त न हुआ, तो मैं तुझे अवश्य ही पत्थर मार-मारकर मार डालूँगा। मेरे पास से सदा के लिए दूर हो जा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७ क़ाल सलामुन् अलैक सअस्तग़्फ़िरु लक रब्बी तोय
इन्नहु कान बी हफ़िय्यन् (अ्) ०
८ वअ(अ्)अ़्तज़िलुकुम व मा तद्ऊन मिन् दूनि-
(अ्)ल्लाहि व अद्ऊ (अ्)रब्बी ज़्स्वली
अ़सा (य्) अल्ला अकून बि दुआ़अि रब्बी
शक़िय्यन् (अ्) ०

१९.४१–४८

326. १ व मा कान (अ्)स्तिग़्फ़ारु इब्राहीम लि अबीहि
इल्ला अ़न (न्) म्मौअ़िदति (न्)व्वअ़दहा
इय्याहु ज़् फ़ लम्मा तबय्यन लहु अन्नहु अ़दुव्वु (न्)
ल्लिल्लाहि तबर्रअ मिन्हु तोय इन्न इब्राहीम ल
अव्वाहुन् हलीमुन् ०

९.११४

327. १ फ़ लम्मा बलग़ मअ़हु (अ्ल्)स्सअ़्य क़ाल या
बुनय्य इन्नी अरा (य्) फ़ि (अ्)ल् मनामि
अन्नी अज़्बहुक फ़(अ्)न्ज़ुर् मा जा तरा (य्) तोय
क़ाल या अबति (अ्)फ़्अ़ल् मा तु(व्) ·अ्मरु ज़्
सतजिदुनी इन् शा अ (अ्)ल्लाहु मिन
(अ्ल्) स्साबिरीन ०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

७ इब्राहीम ने कहा : सलाम हो तुझ पर (ईश्वर तुझे शान्ति तथा शरणता दे) मैं अपने प्रभु से तेरे लिए क्षमा माँगूँगा। निस्सन्देह वह मुझ पर बहुत कृपालु है।

८ और मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम ईश्वर के अतिरिक्त भक्ति करते हो, उनसे दूर हट जाता हूँ। मैं अपने प्रभु की भक्ति करूँगा। मुझे आशा है कि अपने प्रभु की भक्ति करके मैं अभागा नहीं रहूँगा।

१९.४१–४८

३२६ कोमल-हृदय इब्राहीम

१ इब्राहीम का अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना करना केवल इसी अभिवचन के कारण था, जो उसने उसे दिया था। फिर जब उस पर प्रकट हो गया कि वह ईश्वर का शत्रु है, तो उसने उसका त्याग किया। निस्सन्देह इब्राहीम अतीव कोमल-हृदय तथा सहनशील था।

९.११४

३२७ इब्राहीम का सुपुत्र–इस्माईल

१ जब वह (इस्माईल) उसके (इब्राहीम के) साथ दौड़ सकने (की आयु) को पहुँचा, तो इब्राहीम ने कहा : बेटा ! मैं स्वप्न में क्या देखता हूँ कि तुझे ज़ब्ह कर रहा हूँ (बलि चढ़ा रहा हूँ) । तो देख, तेरी क्या राय है। बोला : हे पिता ! तुझे जो आज्ञा की जाती है, वह कर। यदि ईश्वर ने चाहा, तो तू मुझे अवश्य सहन करनेवाला पायेगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ फ़ लम्मा असलमा व तल्लहू लिल् जबीनि ०ज

३ व नादैय्नाहु अ(न्) य्यां इब्राहीमु ०ला

४ क़द् सद्दक़्त (अल्) र्रुअ्या ज इन्ना क जालिक नज्ज़ि(अ्)ल् मुह्सिनीन०

५ इन्न हाजा लहुव(अ्)ल् बलां (व्)अु (अ्)ल् मुबीनु ०

३७.१०२–१०६

328. १ क़ाल रब्बि (अ्) श्रह् ली सद्री ०ला

२ व यस्सिर् ली अम्री ०ला

३ व(अ्)ह्लुल् अुक़्दत (न्)म् मि(न्) ल्लिसानी ०ला

४ यफ़्क़हू (अ्) क़ौली ०स्वात

५ व (अ्) ज् अ(ल्) ल्ली वज़ीर (न्) (अ्)म्मिन् अह्ली ०ला

६ हारून अख़ि (य्)०ला

७ (अ्)श्दुद् बिही अज़्री ०ला

८ व अश्रिक्हु फ़ी अम्री ०ला

९ कय् नुसब्बिहक कसीरन् (अ्)०ला

१० व्व नज़्कुरक कसीरन् ०तोय

११ इन्नक कुन्त बिना बसीरन् (अ्)०

१२ क़ाल कद् ऊतीत सु(व्)अ्लक या मूसा (य्)०

२०.२५–३६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ फिर जब दोनों ईश्वर-शरण हुए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल लिटाया,
३ तो हमने पुकारा : हे इब्राहीम !
४ निस्सन्देह तूने स्वप्न को सच कर दिखाया। निस्सन्देह हम सत्कृत्य करनेवालों को इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।
५ निस्सन्देह यह बड़ी स्पष्ट कसौटी थी।

३७.१०२-१०६

७१ मूसा

३२८ मूसा की प्रार्थना स्वीकृत

१ हे प्रभो ! मेरे लिए मेरा वक्ष खोल दे
२ और मेरे लिए मेरा कार्य सरल कर।
३ और मेरी वाणी की ग्रन्थि खोल दे
४ कि लोग मेरी बात समझें
५ और मेरे लिए मेरे परिवार से एक सहयोगी नियुक्त कर।
६ मेरे भाई, हारून को।
७ उससे मेरी शक्ति मजबूत कर
८ और उसे मेरे काम का सहभागी कर,
९ जिससे कि हम तेरी पवित्रता का सतत बखान करें।
१० और तुझे हम बहुत याद करें।
११ निस्सन्देह तू हमें देखनेवाला है।
१२ ईश्वर ने कहा : हे मूसा ! तूने जो माँगा, तुझे दिया गया।

२०.२५-३६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

329. १ क़ाल इन्नी अब्दु(अ्)ल्लाहि क़क़तोय आतानिय (अ्) ल् किताब व जअलनी नबिय्य(न्)० ला
२ व जअलनी मुबारकन् अैन मा कुन्तु स्वात व औसानी बि(अल्) स्सलाति व (अल्)-ज़्ज़का(व्)ति मा दुम्तु ह्य्य(न्अ्)० स्वात्स्वली
३ व बर्र(न् अ्)म् बि वालिदती व लम् यज्अल्नी जब्बारन् (अ्) शक़िय्यन् (अ्) ०
४ व(अल्) स्सलामु अलय्य यौम वुलिद्तु व यौम अमूतु व यौम अुब्असु ह्यन् (अ्)०
५ जालिक अीस(य्) (अ्) ब्नु मर्यम ज़...

१९.३०–३४

330. १ व क़ौलिहिम् इन्ना क़तल्न (अ्) (अ्)ल् मसीह् अीस(य्) ब्न मर्यम रसूल-(अ्)ल्लाहि ज व मा क़तलूहु व मा सलबूहु व लाकिन् शुब्बिह लहुम् तोय व इन्न (अ्) ल्-लजीन (अ्) ख़्तलफ़ू (अ्) फ़ीहि ल फ़ी शक्कि (न्) म्मिन्हु तोय मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिन् इल्ल (अ्) (अ्)त्तिबाअ (अल्) ज़्ज़न्नि ज व मा क़तलूहु यक़ीन(न्)(अ्) ० ला
२ ब(ल्) र्रफ़अहु(अ्) ल्लाहु इलैहि तोय व कान (अ्) ल्लाहु अज़ीज़न्(अ्) ह्कीमन्(अ्)

४.१५७–१५८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७२ यीशु ख्रीष्ट

३२९ यीशु की धन्योक्ति

१ (यीशु) बोला निस्सन्देह मैं ईश्वर का दास हूँ। उसने मुझे ग्रन्थ दिया है और मुझे सन्देष्टा बनाया है।

२ और मुझे धन्य बनाया है चाहे मैं कहीं रहूँ। और मुझे प्रार्थना एवं नियत दान का आदेश किया है, जब तक मैं जीता रहूँ।

३ और मुझे अपनी माता के प्रति कर्तव्य-परायण बनाया और मुझे उद्धत एवं अभागी नहीं बनाया।

४ और धन्य है मुझे, जिस दिन मैं उत्पन्न हुआ और जिस दिन मैं मरूँगा एवं जिस दिन मैं जीवित होकर उठाया जाऊँगा......।

५ यह है यीशु मरियम का बेटा।

१९.३०–३४

३३० यीशु को सूली पर चढ़ाना–एक भास ही

१ उनके इस कहने पर कि हमने मरियम के बेटे यीशु ख्रीष्ट (ईसामसीह), ईश्वर के प्रेषित, को मार डाला, (हमारा यह कहना है) कि उन्होंने न तो उसे मारा, न उसे सूली दी, किन्तु उन्हें भास ही हुआ और जो लोग इस विषय में विरोध करते हैं, वे इस विषय में अवश्य सन्देह में हैं। उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल कल्पना पर चल रहे हैं और निश्चय ही उन्होंने उसे मारा नहीं।

२ अपितु ईश्वर ने उसे अपनी ओर उठा लिया। और ईश्वर सर्वजित् सर्वविद् है।

४.१५७–१५८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

331. १ या यह्या (य्) खुजि (अ्) ल् किताब बि क़ुव्व-
त्तिन्^तोय व आतयनाहु (अ्) ल् हुक्म स्नबि-
य्य(त्) (अ्) ०^ला
२ व्व ह़नान (न् अ्) म् मि (न्) ल्लदुन्ना व
ज़का (व्) त्तन्^तोय व कान तक़िय्य(त्) (अ्) ०^ला
३ व्व बर्र(त्) (अ्) म्बि वालिदय्हि व लम् यकुन्
जब्बारन् (अ्) अ़सिय्यन् (अ्) ०
४ व सलामुन् अ़लैहि यौम वुलिद व यौम यमूतु
व यौम युब्अ़सु ह़य्यन् (अ्) ० १९.१२–१५

332. १ ...व ल तजिदन्न अक़्रबहु (म्) म्मवद्दत्न (न्)
ल्लिल्लज़ीन आमनु (व्अ्) (अ्) ल्लज़ीन क़ालू
(अ्) इन्ना नसारा (य्)^तोय जालिक बि अन्न
मिन्हुम् क़िस्सीसीन व रुह्बान (न् अ्) व्व
अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून०
२ व इज़ा समिअ़ू (अ्) मा उन्ज़िल इल
(य्) (अल्) र्रसूलि तरा (य्) अअ़्युनहुम्
तफ़ीदु मिन (अल्) द्दम्अ़ि मिम्मा अ़रफ़ू
(अ्) मिन (अ्) ल् हक़्क़ि^ज यक़ूलून रब्बना
आमन्ना फ़ (अ्) क्तुब्ना मअ़ (अल्)-
श्शाहिदीन ० ५.८५–८६

333. १ व ल क़द् अर्सल्ना रुसुल (न्) (अ्) म्मिन्
क़ब्लिक मिन्हु (म्) म्मन् क़सस्ना अ़लैक व
मिन्हु (म्) म्म (न्) ल्लम् नक़्सुस् अ़लैक^तोय......
४०.७८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३३१ यीशु का गुरु—पवित्र जॉन

१ हमने कहा : हे जॉन ! ग्रन्थ को दृढ़ता से थाम लो और हमने उसे प्रलयकाल में विद्या प्रदान की ।

२ और अपने पास से हृदय का मार्दव दिया और पवित्रता दी और वह ईश्वर-परायण था।

३ और अपने माता-पिता के प्रति सुजनता का बर्ताव करनेवाला था, अहंकारी तथा विद्रोही न था।

४ और धन्य है उसे, जिस दिन वह उत्पन्न हुआ, जिस दिन वह मरेगा तथा जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायगा।

१९.१२–१५

३३२ यीशु के अनुयायी

१ ···श्रद्धावानों की मैत्री में तुम उन लोगों को निकटतम पाओगे, जो कहते हैं कि हम क्रिश्चियन हैं । यह इसलिए कि कुछ इनमें विद्वान् हैं और भक्ति करनेवाले मठवासी साधु हैं। वे घमण्ड नहीं करते ।

२ और जब वे उस वचन को सुनते हैं, जो प्रेषित पर उतारा गया है, तो तू देखेगा कि उनकी आँखें आँसुओं से उमड़ती हैं, इस कारण से कि उन्होंने सत्य को पहचाना है। वे कहते हैं कि हे प्रभो ! हम श्रद्धायुक्त हुए हैं, हमें साक्षियों के साथ लिख दे। ५.८५–८६

७३ अकथित प्रेषित

३३३ प्रेषित, जिनका निर्देश नहीं हुआ

१ हमने तुझसे पूर्व बहुत से प्रेषित भेजे, जिनमें से कुछ प्रेषितों का निर्देश हमने तुझसे किया है और कुछ वे हैं, जिनका निर्देश तुझसे नहीं किया···। ४०.७८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

334. १ इक़्रअ् बि (अ्)स्मि रब्बिक (अ्) ल्लज़ी ख़लक़ ० ज
२ ख़लक़ (अ्) ल् इन्सान मिन् अलक़िन् ० ज
३ इक़्रअ् व रब्बुक (अ्) ल् अक्रमु ० ला
४ (अ्) ल्लज़ी अल्लम बि (अ्) ल् क़लमि ० ला
५ अल्लम (अ्) ल् इन्सान मा लम् यअ्लम् ० तोय

९६.१–५

335. १ सुब्हान (अ्) ल्लज़ी असरा (य्) बि अब्दिही लैल (न्) (अ्) म्मिन (अ्) ल् मस्जिदि- (अ्) ल् ह़रामि इल (य्) (अ्) ल् मस्जिदि- (अ्) ल् अक़्सा (अ्) (अ्) ल्लज़ी बारक्ना ह़ौलहू लि नुरियहू मिन् आयातिना तोय इन्नहू हुव (अल्) स्समीअु (अ्) ल् बसीरु ०

१७.१

336. १ व मा साह़िबुकुम् बि मज्नूनिन् ० ज
२ व ल क़द् रआहु बि (अ्) ल् उफ़ुक़ि- (अ्) ल् मुबीनि ० ज
३ व मा हुव अल (य्) (अ्) ल् ग़ैबि बि ज़नीनिन् ०

८१.२२–२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२७ मुहम्मद पैगंबर *

७४ साक्षात्कार

३३४ प्रथम साक्षात्कार

१ पढ़, अपने प्रभु के नाम से, जिसने निर्माण किया।
२ निर्माण किया, मनुष्य को, जमे हुए रक्त से
३ पढ़, और तेरा प्रभु सबसे अधिक उदार है,
४ जिसने ज्ञान सिखाया लेखनी से,
५ सिखाया मनुष्य को, जो वह नहीं जानता था। ९६.१–५

३३५ दिव्य-अनुभव

१ पवित्र है वह, जो ले गया एक रात अपने दास को पवित्र मसजिद से दूरस्थ मसजिद तक, जिसके परिसर को हमने मांगल्य का आशीर्वाद दिया है, जिससे कि उसे अपनी निशानियों का दर्शन कराये। निस्सन्देह वह सुननेवाला, देखनेवाला है। १७.१

३३६ निस्संशय साक्षात्कारी

१ और यह तुम्हारा साथी पागल नहीं
२ और वस्तुतः उसने उसे खुले आकाश के क्षितिज पर देखा
३ और वह अव्यक्त की बात बताने में कंजूस नहीं है। ८१.२२–२४

* पैगंबर मुहम्मद के नाम के साथ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने की परिपाटी है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

337. १ अक़िमि (अ्ल्) स्सला (व्) त लि दुलूकि-
(अ्ल्) श्शम्सि इला (य्) ग़सक़ि (अ्) ल्लैलि
व क़ुर्आन (अ्) ल् फ़ज्रि^तोय इन्न क़ुर्आन-
(अ्) ल् फ़ज्रि कान मश्हूदन् (अ्)०
२ व मिन (अ्) ल्लैलि फ़ तहज्जद् बिहीं नाफ़िलत-
(न्) ल्लक ^क़स्वली अ़सा (य्) अ (न्) य्यब्अ़सक
रब्बुक मक़ाम (न्) म्महमूदन् (अ्)०
३ व क़ु (ल्) र्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्ख़ल सिद्क़ि
(न्) व्व अख़्रिज्नी मुख़्रज सिद्क़ि (न्) व्व
(अ्) ज्अ़ (ल्) ल्ली मि (न्) ल्लदुन्क
सुल्तान (न्अ्) न्नसीरन् (अ्) ०
४ व क़ुल् जा‌अ (अ्) ल् हक़्क़ु व ज़हक़ (अ्) ल्
बातिलु ^तोय इन्न (अ्) ल् बातिल कान
ज़हूक़न् (अ्) ० १७.७८–८१
338. १ व इ (न्) म्मा नुरियन्नक बअ़्ज़ (अ्) ल्लज़ी
नअ़िदुहुम् औ नतवफ़्फ़यन्नक फ़ इन्न मा
अ़लैक (अ्) ल् बलाग़ु व अ़लै न (अ्) (अ्) ल्
हिसाबु० १३.४०
339. १ इन्नक ला तुस्मिअ़ु (अ्) ल् मौता (य्) व ला
तुस्मिअ़ु (अ्ल्) स्सुम्म (अ्ल्) द्दुआ‌अ
इज़ा वल्लौ (अ्) मुद्बिरीन०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७५ ईश्वरदत्त आदेश

३३७ विशेष प्रार्थना का आदेश

१ नित्य-नियमित प्रार्थना कर, सूर्य ढलने से रात के अँधेरे तक, प्रतिदिन उषःकाल के समय कुरान पढ़। निश्चय ही उषःकाल का कुरान पढ़ना देखा जाता है।

२ और रात को कुरान के साथ विशेष प्रार्थना कर। यह तेरे लिए अतिरिक्त प्रार्थना है। आशा है कि तुझे तेरा प्रभु स्तवनीय स्थान पर पहुँचा देगा

३ और कह : हे प्रभु ! मुझे जहाँ भी ले जा, भलाई के साथ ले जा और जहाँ से भी निकाल, भलाई के साथ निकाल और अपने पास से ऐसा अधिकार दे, जो (तेरी) सहायता देनेवाला हो

४ और कह : सत्य आ गया है और असत्य मिट गया है। निस्सन्देह असत्य मिटनेवाला ही है।

१७.७८–८१

३३८ केवल सन्देशवाहक

१ चाहे कोई अभिवचन जो हमने उन्हें दिया है, हम तुझे दिखला दें, चाहे हम तुझे उठा लें सो तेरा जिम्मा केवल (सन्देश) पहुँचा देना है, हिसाब लेना हमारा काम है।

१३.४०

३३९ प्रबोधन तेरा काम नहीं

१ निस्सन्देह तू प्रेतों को सुना नहीं सकता तथा बहरों को अपनी पुकार सुना नहीं सकता, जब कि वे पीठ फेरकर चल दें।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ व मा अन्त बिहादि (य्) (अ्)ल् अुम्यि अन्-
द़लालतिहिम्^तोय इन् तुस्मिअु इल्ला म (न्)-
य्यु(व्)अ्मिनु बि आयातिना फ़ हु(म्)-
म्मुस्लिमून O २७.८०-८१

340. १ अबस व तवल्ला (य्) O^ला
२ अन् जा अहु (अ्) ल् अअ्मा (य्) O^तोय
३ व मा युद्रीक लअल्लहू यज़्ज़क्का (य्) O^ला
४ औ यज़्जक्करु फ़ तन्फ़अहु (अ् ल्)-
ज़्जिक्रा (य्) O ^तोय
५ अम्मा मनि (अ्) स्तग़्ना (य्) O^ला
६ फ़ अन्त लहू तसद्दा (य्)
७ व मा अलैक अल्ला यज़्ज़क्का (य्) O ^तोय
८ व अम्मा मन् जा अक यस्आ (य्) O^ला
९ व हुव यख़्शा (य्) O^ला
१० फ़ अन्त अनहु तलह्हा (य्) O^ज
८०.१-१०

341. १ या अय्युह (अ्) (अ्ल्) रसूलु बल्लिग़् मा
अुन्ज़िल इलैक मि(न्)र्रब्बिक ^तोय व इ(न्)-
ल्लम् तफ़्अल् फ़ मा बल्लग़्त रिसालतहू ^तोय
व (अ्) ल्लाहु यअ्सिमुक मिन (अ्ल्) न्नासि^तोय...
५.७०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ और तू अन्धों को, उनके भटकने से (बचाकर) मार्गदर्शन करनेवाला भी नहीं। तू तो केवल उन्हींको सुना सकता है, जो हमारी निशानियों पर श्रद्धा रखते हैं, फिर वे शरणागत भी हैं।]

२७.८०–८१

३४० मुहम्मद और अन्धा–]

"कौन जानता है कि करुणा किस पर होगी।"

१ रसूल ने त्योरी चढ़ायी और मुँह फेरा
२ कि उसके पास एक अन्धा (अचानक) आ गया
३ और तुझे क्या पता, कदाचित् वह पवित्र हो जाता।
४ या ध्यान देता तो उपदेश देना उसे लाभ पहुँचाता।
५ तो वह जो परवाह नहीं करता
६ उसका तो तू ख्याल करता है,
७ यद्यपि तुझ पर कोई दोष नहीं कि वह नहीं सुधरता।
८ और वह जो तेरे पास दौड़ता हुआ आया
९ और वह डरता है
१० तो तू उसकी ओर से ध्यान हटा लेता है।

८०.१–१०

३४१ निर्भयता से सन्देश पहुँचाओ

१ हे सन्देष्टा, तुझ पर तेरे प्रभु की ओर से जो कुछ उतारा गया है, उसे (लोगों के पास) पहुँचा दे और यदि तू न करे, तो तूने उसका सन्देश नहीं पहुँचाया। और ईश्वर तुझे (विरोधी) लोगों से बचा लेगा।

५.७०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

342. १ व लक़द् नअ्लमु अन्नक यद़ीक़ु स़द्रुक बिमा यक़ूलून०ला
२ फ़ सब्बिह् बि ह़म्दि रब्बिक व कु(न्)म्मिन (अ्ल्) स्साजिदीन०ला
३ व (अ्) अ्बुद् रब्बक ह़त्ता (य्) यअ्तियक-(अ्)ल् यक़ीनु ०

१५.९७–९९

343. १ फ़ बिमा रह़्मति (न्) म्मिन (अ्) ल्लाहि लिन्त लहुम् ज व लौ कुन्त फ़ज़्ज़न् (अ्) ग़लीज़ (अ्) ल् क़ल्बि ल (अ्) न्फ़द़्द़ू (अ्) मिन् ह़ौलिकस्वात फ़(अ्)अ्फ़ु अ़न्हुम् व-(अ्)स्तग़्फ़िर् लहुम् व शाविर्हुम् फ़ि(अ्)ल् अम्रि ज फ़इज़ा अ़ज़म्त फ़ तवक्कल् अ़ल-(य्) (अ्) ल्लाहितोय इन्न (अ्) ल्लाह युह़िब्बु-(अ्) ल् मुतवक्किलीन० ३.१५९

344. १ अलम् नश्रह़् लक स़द्रक०ला
२ व वद़अ्ना अ़न्क विज़्रक ०ला
३ (अ्) ल्लज़ी अन्क़द़ ज़ह्रक ०ला
४ व रफ़अ्ना लक ज़िक्रक ०तोय
५ फ़ इन्न मअ़ (अ्) ल् अुस्रि युस्रन् (अ्) ०ला
६ इन्न मअ़ (अ्) ल् अुस्रि युस्रन् (अ्)०तोय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३४२ कोई कुछ कहे, तू मरने तक भक्ति कर

१ निश्चय ही हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं, उससे तेरा मन दुःखी हो जाता है।

२ तो तू अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन कर और प्रणिपात कर।

३ और अपने प्रभु की भक्ति करता रह, यहाँ तक कि तेरी मृत्यु आ जाय।

१५.९७–९९

३४३ निश्चय होने तक ही परामर्श कर

१ यह ईश्वर की कृपा है कि उन लोगों के भले के लिए तू कोमल हृदय है। यदि तू कर्कश एवं कठोर हृदय होता, तो वे तेरे इर्द-गिर्द से छँट जाते। तो तू उन्हें माफ कर और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना कर और काम में उनसे परामर्श ले। फिर जब तू निश्चय करे, तो फिर ईश्वर पर विश्वास रख। निस्सन्देह ईश्वर भरोसा करनेवालों को चाहता है।

३.१५९

३४४ माम् अनुस्मर युद्धच च

१ क्या हमने तेरे लिए तेरा वक्ष विशाल नहीं किया ?

२ और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया

३ जिस बोझ ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

४ और हमने तेरे लिए तेरी कीर्ति बढ़ायी।

५ तो निस्सन्देह कष्टों के साथ सुख है।

६ निस्सन्देह कष्टों के साथ सुख है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७ फ़ इज़ा फ़रग़्त फ़ (अ्)न्सब् O^{ला}
८ व इला रब्बिक फ़ (अ्) रग़ब् O ऐन्   ९४.१-८

345. १ व (अल्) द्दुहा (य्) O^{ला}
२ व (अ्) ल्लैलि इज़ा सजा (य्) O^{ला}
३ मा वद्दअ़क रब्बुक व मा क़ला (य्) O^{तोय्}
४ व लल् आख़िरतु खै़रु(न्)ल्लक मिन (अ्)-
ल् ऊला (अ्) O^{स्वात्}
५ व ल सौफ़ युअ़्तीक रब्बुक फ़ तर्ज़ा (य्) O^{तोय्}
६ अ लम् यजिद्क यतीमन्(अ्)फ़ आवा(य्) O^{स्वात्}
७ व वजदक् ज़ाल्लन् फ़ हदा (य्) O^{स्वात्}
८ व वजदक आ़इलन्(अ्)फ़ अग़्ना (य्)^{तोय्}
९ फ़ अम्म (अ्) ल् यतीम फ़ ला तक़्हर् O^{तोय्}
१० व अम्म(अ्) (अल्)स्सा़इल फ़ ला तन्हर् O^{तोय्}
११ व अम्मा बि निअ़्मति रब्बिक फ़ हृद्दिस् O^{ऐन्}
९३.१-११

346. १ क़ुल् इन्न मा अअ़िज़ुकुम् बि वाहिदतिन् ज. अन् तक़ूमू (अ्) लिल्लाहि मस्ना (य्) व फ़ुरादा-(य्) सुम्म ततफ़क्करू (अ्)^{क़िफ़} मा बि साहिबिकु (म्) म्मिन् जिन्नतिन् तोय इन् हुव इल्ला नज़ीरु (न्) ल्लकुम् बैन यदय् अज़ाबिन् शदीदिन् O

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

७ फिर जब तू कार्य-मुक्त हो जाय, तो फिर प्रयत्न कर
८ और अपने प्रभु की ओर ध्यान लगा।

९४.१–८

३४५ आत्मौपम्य बोध

१ शपथ है चढ़ते दिन की
२ और रात की जब कि छा जाय।
३ तेरे प्रभु ने न तो तुझे छोड़ा और न तुझ पर अप्रसन्न हुआ,
४ और निश्चय ही तेरा उत्तर-जीवन तेरे पूर्व-जीवन से अधिक उत्तम है
५ और तेरा प्रभु तुझे अवश्य देगा, फिर तू सन्तुष्ट हो जायगा।
६ क्या उसने तुझे अनाथ नहीं पाया, और आश्रय दिया ?
७ और उसने तुझे भटकता हुआ पाया, तो मार्ग दिखाया
८ और दरिद्र पाया, तो सम्पन्न बना दिया
९ अतः जो अनाथ है, उसे न सता
१० और जो माँगने आये, उसे मत झिड़क
११ और अपने प्रभु की देनों का बखान कर।

९३.१–११

७६ घोषणा

३४६ पंच आदेश

१ कहः मैं तो केवल एक बात समझाता हूँ कि तुम ईश्वर के लिए दो-दो एक-एक खड़े हो जाओ। फिर सोचो कि तुम्हारे इस साथी को कुछ पागलपन नहीं, वह तो केवल होशियार करनेवाला है एक बड़ी आपत्ति आने से पूर्व।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ क़ुल् मा सअल्तु कु (म्) म्मिन् अज्रिन् फ़ हुव लकुम् तोय इन् अज्रिय इल्ला अल (य्) ल्लाहि ज़ व हुव अला (य्) कुल्लि शय्अिन् शहीदुन्O

३ क़ुल् इन्न रब्बी यक़्जिफ़ु बि (अ्) ल् हक़्क़ि ज़ अल्लामु (अ्) ल् ग़ुयूबिO

४ क़ुल् जाअ (अ्) ल् हक़्क़ु व मा युब्दि (य्) अु- (अ्) ल् बातिलु व मा युअीदुO

५ क़ुल् इन् ज़लल्तु फ़ इन्न मा अज़िल्लु अला (य्) नफ़्सी ज़ व इनि (अ्) ह्तदैतु फ़ बि मा यूह़ी इलय्य रब्बी तोय इन्नहु समीअुन् क़रीबुन्O

३४.४६–५०

347. १ इन्न रब्बक यअ्लमु अन्नक तक़ूमु अद्ना (य्) मिन् सुलुसयि (अ्) ल्लैलि व निस्फ़हु व सुलुसहु व ताअिफ़तु (न्) म्मिन (अ्) ल्लजीन मअक तोय......

७३.२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२ कह : मैंने तुमसे जो कुछ मुआवजा माँगा हो, तो वह तुम ही रखो, मेरा प्रतिफल तो केवल ईश्वर के जिम्मे है और वह सर्व-द्रष्टा है ।

३ कह : निस्सन्देह मेरा प्रभु सत्य का आविष्कार करता है, वह अव्यक्त का ज्ञाता है ।

४ कह : सत्य आया और असत्य न निर्माण करता है, न लौटकर लाता है ।

५ कह : यदि मैं भ्रान्त हो जाऊँ, तो केवल अपने ही आपके लिए भ्रमित हो जाऊँगा और यदि मैं बोध पाऊँ, तो वह इसी कारण से कि मेरे प्रभु ने मुझ पर प्रज्ञान भेजा है । निस्सन्देह वह सुननेवाला है, निकट है ।

३४.४६–५०

७७ गुण-सम्पदा

३४७ प्रार्थनामयता

१ निस्सन्देह तेरा प्रभु जानता है कि तू और तेरे साथियों में से कुछ लोग (प्रार्थना में) खड़े रहते हैं, दो-तिहाई रात के लगभग और आधी रात और तिहाई रात·····।

७३.२०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

348. १ इल्ला तन्सुरूहु फ़क़द् नसरहु (अ्) ल्लाहु इज् अख़्रजहु (अ्) ल्लजीन कफ़रू (अ्) सानिय-(अ्) स्नैनि इज् हुमा फ़ि (अ्) ल् ग़ारि इज् यक़ूलु लि साहिबिही ला तह्ज़न् इन्न-(अ्) ल्लाह मअ़ना[अ] फ़अन्ज़ल (अ्) ल्लाहु सकीनतहू अ़लैहि व अय्यदहू बि जुनूदि (न्) ल्लम् तरौहा व जअ़ल कलिमत (अ्) ल्लजीन क़फ़रु (व्अ्) (अल्) स्सुफ़्ला (य्) व कलिमतु-(अ्) ल्लाहि हिय (अ्) ल् अ़ुल्या[तोय] व (अ्) ल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीमुन् ०

९.४०

349. १ ल क़द् कान लकुम् फ़ी रसूलि (अ्) ल्लाहि उस्वतुन् हसनतु (न्) लिल मन् कान यर्जु (व्अ्)-(अ्) ल्लाह व (अ्) ल् यौम (अ्) ल् आख़िर व जकर (अ्) ल्लाह कसीरन् (अ्) ०[तोय]

३३.२१

350. १ अ (ल्) न्नबिय्यु औला (य्) बि (अ्) ल् मु (व्) 'अ्मिनीन मिन् अन्फ़ुसिहिम्.....

३३.६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३४८ ईश्वर का सतत सान्निध्य

१ यदि तुम सन्देष्टा की सहायता न करोगे, तो निश्चय जानो, परमात्मा ने उसकी सहायता उस समय की है, जिस समय श्रद्धाहीनों ने उसे निकाल दिया था, जब कि वह दो में का दूसरा था। जब वे दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था : दुःख न कर, निश्चय ही परमात्मा हमारे साथ है, उस समय परमात्मा ने उसे अपनी ओर से चित्त की शान्ति दी और उसकी ऐसी सेनाओं से सहायता की कि जो तुम्हें दिखाई नहीं पड़ती थीं। और श्रद्धाहीनों का बोल नीचा किया और परमात्मा का बोल ऊँचा रहा। परमात्मा सर्वजित् है, सर्वविद् है।

९.४०

३४९ ईश्वर-भक्ति का आदर्श उदाहरण

१ निस्सन्देह तुम्हारे लिए अर्थात् उस व्यक्ति के लिए, जो ईश्वर की और अन्तिम दिन की आशा रखता है और ईश्वर को बहुत स्मरण करता है, ईश्वर के प्रेषित में एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

३३.२१

३५० प्रेषित और श्रद्धावान् का सम्बन्ध

१ श्रद्धावानों को अपने प्राण से अधिक सन्देष्टा से लगाव है....।

३३.६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

351. १ क़ुल् ल्लौ शा॰अ (अ्) ल्लाहु मा तलौतुहू अलैकुम्
व लां अद्राकुम् बिही ज़स्वली फ़क़द् ल बिसतु
फ़ी कुम् अुमुर (न्) (अ्) म्मिन् क़ब्लिही तोय
अ फ़ ला तअ्क़िलूनo

१०.१६

352. १ क़ुल् यां अय्युह (अ्) (अल्) न्नासु इन्नी रसूलु
(अ्) ल्लाहि इलैकुम् जमीअ (अ्)
नि (अ्) ल्लजी लहू मुल्कु (अल्) स्समावाति
व (अ्) ल् अर्ज़ि ज ला इलाह इल्ला हुव
युह्यी व युमीतु स्वात फ़ आमिनू (अ्) बि
(अ्) ल्लाहि व रसूलिहि (अल्) न्नबिय्यि (अ्) ल्
उम्मिय्यि (अ्) ल्लजी यु (व्) ॰अ्मिनु बि
(अ्) ल्लाहि व कलिमातिही व (अ्) त्तबिअूहु
लअ्अल्लकुम् तह्तदूनo

७.१५८

353. १ व इन् कादू (अ्) ल यफ़्तिनूनक अनि (अ्)-
ल्लजी औहैनां इलैक लि तफ़्तरिय ॰अलैना
ग़ैरहू क़् स्वली व इज (नअ्) ल्ल (अ्) त्तख़जूक
ख़लीलन् (अ्)o

२ व लौ लां अन् सब्बत्नाक ल क़द् किद्त्त
तर्कनु इलैहिम् शय्॰अन् (अ्) क़लीलन् (अ्) o क़ला

१७.७३–७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३५१ पूर्व-जीवन से प्रामाणिकता सिद्ध

१ कह : यदि परमात्मा चाहता, तो मैं इस वाणी को तुम्हारे सम्मुख न पढ़ता और न वह तुम्हें इससे अवगत करता। वास्तविकता यह है कि इसके पूर्व-जीवन का एक भाग मैं तुममें व्यतीत कर चुका हूँ, फिर क्या तुम इतना नहीं समझते ?

१०.१६

३५२ अनपढ़ ईश्वरनिष्ठ

१ कह : ऐ लोगो, मैं तुम सबकी ओर उस परमात्मा का भेजा हुआ हूँ, जिसका आकाशों एवं भूमि में आधिपत्य है। उसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नहीं। वही जिलाता है, वही मारता है। सो श्रद्धा रखो परमात्मा पर और उसके भेजे हुए अनपढ़ सन्देष्टा पर, जो परमात्मा पर और उसकी वाणी पर श्रद्धा रखता है और तुम उसका अनुसरण करो, जिससे कि तुम्हें मार्ग प्राप्त हो।

७.१५८

३५३ ईश्वर ने मुहम्मद को दृढ़ किया

१ और वे लोग तो चाहते थे कि तुझे उस वस्तु से विचला दें, जो हमने तेरी ओर प्रज्ञान के रूप में भेजी, जिससे कि तू उसके अतिरिक्त कुछ और हमारे नाम से गढ़ ले और तब वे तुझे अवश्य मित्र बना लेते।

२ और यदि हम तुझे सँभाले न रखते, तो तू अवश्य उनकी ओर कुछ-न-कुछ झुकने लग जाता।

१७.७३–७४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

354. १ व मिन् हुमु (अ्) ल्लजीन यु(व्)ॳ्जून (अ्ल्) न्नबिय्य व यक़ूलून हुव अुजुनुन्^तोय् क़ुल् अुजुनु ख़ैरि (न्) ल्ल कुम् यु(व्)ॳ्मिनु बि (अ्)- ल्लाहि व यु(व्)ॳ्मिनु लिल् मु(व्)ॳ्मिनीन व रह़्मतु (न्) लिल्लजीन आमनू (अ्) मिन्कुम्^तोय्........ ९.६१

355. १ व इन् तुतिॳ् अक्सर मन् फ़ि (अ्) ल् अर्द्वि युद्विल्लूक अन् सबीलि (अ्) ल्लाहि^तोय् इ (न्) य्यत्तिबिॳून इल्ल(अ्) (अ्ल्) ज़्ज़न्न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून० ६.११६

356. १ व मा अर्सल्नाक इल्ला रह़्मत (न्) लिल्ल् ॳालमीन० २१.१०७

357. १ या अय्युह (अ्) (अ्ल्) न्नबिय्यु इन्ना अर्सल् नाक शाहिद (न्) व्व मुबश्शिर (न्) (अ्) व्व नज़ीरन् (अ्)०^ला

२ व्व दाॳियन् (अ्) इल (य्) (अ् ल्लाहि बि इज़्निही व सिराज(न्) (अ्)म् मुनीरन् (अ्)० ३३.४५–४६

358. १ इन्न (अ्) ल्लाह व मलाॳिकतहु युसल्लून ॳल (य्) (अ्ल्) न्नबिय्यि^तोय् या अय्युह(अ्)- (अ्)ल्लजीन आमनू (अ्) सल्लू (अ्) ॳलैहि व सल्लिमू(अ्) तस्लीमन्० ३३.५६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३५४ **सबकी सुननेवाला**

१ उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो सन्देष्टा को दुःख देते हैं और कहते हैं कि वह तो कान है (अर्थात् सबकी सुनता है)। कह: कान है तुम्हारे भले के लिए। परमात्मा पर श्रद्धा रखता है और श्रद्धावानों का विश्वास करता है और तुममें से जो श्रद्धा रखते हैं, उनके लिए वह करुणा-रूप है........। ९.६१

३५५ **बहुमत से अप्रभावित**

१ संसार में अधिक लोग ऐसे हैं कि यदि तू उनका कहना मानने लगे, तो वे तुझे इश्वर के मार्ग से भटका देंगे। वे केवल कल्पनाओं पर चलते हैं और केवल अटकलबाजियाँ किया करते हैं।

६.११६

७८ मिशन

३५६ **करुणा का दूत**

१ और हमने तुझे भेजा है, संसार की जनता के लिए करुणा-रूप बनाकर। २१.१०७

३५७ **पंचविध कार्य**

१ हे सन्देष्टा, निस्सन्देह हमने तुझे भेजा है, बतानेवाला, शुभ वार्ता देनेवाला, सावधान करनेवाला बनाकर

२ और परमात्मा की ओर उसकी आज्ञा से, आवाहन करनेवाला तथा प्रकाश देनेवाला दीपक बनाकर। ३३.४५–४६

७९ आशीर्वाद-पात्र

३५८ **मुहम्मद के लिए आशीर्वाद की याचना करो**

१ निस्सन्देह परमात्मा एवं उसके देवदूत सन्देष्टा पर आशीर्वाद भेजते हैं। हे श्रद्धावानो ! तुम भी आशीर्वाद भेजो उस पर और सलाम (शान्ति) भेजो सलाम (शान्ति) कहकर।

३३.५६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खण्ड ९

गूढ़-शोधन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

359. १ व मा ख़लक़्न (अ्) (अ्ल्) स्समा॑अ व (अ्) ल् अर्द्ज़ व मा बैनहुमा लाअ़िबीन०
२ लौ अर्दना अ (न्) नत्तख़िज लह्व(न्अ्) ल्ल (अ्) त्तख़ज़्नाहु मि (न्) ल्लदुन्ना क़स्वली इन्कुन्ना फ़ाअ़िलीन ०

२१.१६–१७

360. १ अल्लज़ीन यज़्कुरून (अ्) ल्लाह क़ियाम (न्) व्व क़ुअ़ूद (न्) (अ्) व्व अ़ला (य्) जुनूबिहिम् व यतफ़क्करून फ़ी ख़ल्क़ि (अ्ल्)-स्समावाति व (अ्)ल् अर्द्ज़ि ज रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिलन् (अ्) ज.....

३.१९१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२८ तत्त्वज्ञान

८० जगत्

३५९ सृष्टि का गम्भीर हेतु

१ हमने आकाश, भूमि एवं जो कुछ उसमें है, उसे व्यर्थ नहीं बनाया।

२ यदि हम कोई कौतुक ही करना चाहते, तो उसे अपने पास ही से कर लेते, यदि हमें यह करना होता।

२१.१६-१७

३६० सृष्टि-रचना निरर्थक नहीं

१ वे, जो परमात्मा को स्मरण करते हैं, उठते-बैठते तथा लेटते और आकाश और भूमि की रचना में चिन्तन करते हैं (कहते हैं) हे प्रभो! तूने यह सब कुछ व्यर्थ और निरुद्देश नहीं बनाया।

३.१९१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

361. १ अ फ़ ह़सिब्तुम् अन्न मा ख़लक़्नाकुम् अ़बसन्(त्)
(अ्) ँव्व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअ़ून ०
२३.११५

362. १ व हुव (अ्) ल्लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम् बि (अ्)-
ल्लैलि व यअ़्लमु मा जरह़्तुम् बि (अ्ल्)
न्नहारि सुम्म यब्अ़सुकुम् फ़ीहि लि युक़्ज़ा
(य्) अजलु (न्) म्मुसम्मन् (य्)ज॰ सुम्म
इलैहि मर्जिअ़ुकुम् सुम्म युनब्बिअुकुम् बि मा
कुन्तुम् तअ़्मलून ०
६.६०

363. १ अल्लाहु यतवफ़्फ़ (य्) (अ्) ल् अन्फ़ुस
ह़ीन मौतिहा व (अ्) ल्लती लम् तमुत् फ़ी
मनामिहा ज॰ फ़ युम्सिकु (अ्) ल्लती क़ज़ा
(य्) अ़लैह (अ्) (अ्) ल् मौत व युर्सिलु
(अ्) ल् उख़्रा (य्) इला (य्) अजलि (न्)
म्मुसम्मन् (य्)तोय़ इन्न फ़ी ज़ालिक ल आयाति
(न्) ल्लि क़ौमि (न्) ँय्यतफ़क्करून ०
३९.४२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८१ जीव

३६१ जीवनिर्मिति सोद्देश्य

१ क्या तुमने यह कल्पना कर ली है कि हमने तुम्हें व्यर्थ निर्माण किया है ? और यह कि तुम हमारी ओर नहीं लौटाये जाओगे ? २३.११५

३६२ निद्रा : मृत्यु का पूर्व-प्रयोग

१ वही है, जो रात को तुम्हारा जीव खींच लेता है और दिन में तुम जो कुछ करते हो, जानता है। फिर इस दुनिया में तुम्हें उठाता है कि नियत अवधि पूरी हो, फिर उसीकी ओर तुम्हें लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो। ६.६०

३६३ निद्रा और मृत्यु

१ ईश्वर खींच लेता है जीवों को उनकी मृत्यु के समय और जिन्हें मृत्यु नहीं आयी, उन्हें निद्रा की स्थिति में खींच लेता है। फिर जिन पर मृत्यु निश्चित हो चुकी है, उन्हें रोक लेता है और शेष को बिदा कर देता है एक निश्चित अवधि के लिए। इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो सोच-विचार के अभ्यासी हैं। ३९.४२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

364. १ व यस्‌अलूनक अनि (अल्) र्रूहि तोय कुलि-
(अल्) र्रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतु (म्)-
म्मिन (अ्) ल् अिल्मि इल्ला क़लीलन् (अ्)०
२ व ल अिन् शिअ्ना ल नज्हबन्न बि (अ्)-
ल्लजी औहैना इलैक......

१७.८५–८६

365. १ क़ु (ल्) ल्ला अक़ूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ाअिनु-
(अ्) ल्लाहि व ला अअ्लमु (अ्) ल् ग़ैब व
ला अक़ूलु लकुम् इन्नी मलकुन् ज इन् अत्तबिअ्
इल्ला मा यूहा (य्) इलय्य तोय......

६.५०

366. १ क़ु (ल्) ल्ला अम्लिकु लि नफ़्सी नफ़्अ (न्)-
(अ्) व्व ला द़र्रन् (अ्) इल्ला मा शाअ-
(अ्) ल्लाहु तोय व लौ कुन्तु अअ्लमु (अ्) ल् ग़ैब ल
(अ्) स्तक्सरतु मिन् (अ्) ल् ख़ैरि ज व मा
मस्सनिय (अल्) स्सूअु ० ज

७.१८८

367. १ या अय्युह (अ्) ल्लजीन आमनू (अ्) ला
तस्‌अलू (अ्) अन् अश्याअ इन् तुब्द लकुम्
तसु (व्) अकुम् ० ज.....

५.१०४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३६४ जीवविषयक प्रश्न

१ ये लोग तुझसे पूछते हैं जीव के विषय में। कह: जीव मेरे प्रभु की आज्ञा से है। तुम लोगों ने ज्ञान से कम ही भाग पाया है।

२ और यदि हम चाहें, तो वह वस्तु ले जायँ, जो हमने तेरी ओर प्रज्ञान के रूप में भेजी है······। १७.८५-८६

३६५ अव्यक्त का ज्ञान नहीं

१ कह : मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास ईश्वर के खजाने हैं और न मैं अव्यक्त का ज्ञान रखता हूँ और न तुमसे यह कहता हूँ कि मैं देवदूत हूँ। मैं केवल उस प्रज्ञान का अनुसरण करता हूँ, जो मेरी ओर भेजा गया है·····। ६.५०

३६६ यदि अव्यक्त का ज्ञान होता !

१ कह : मैं अपने-आपके लिए लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता ईश्वरेच्छा के अतिरिक्त। और यदि मैं अव्यक्त जानता होता, तो मैं भलाई से बहुत लेता और मुझे बुराई लगती नहीं····। ७.१८८

३६७ अनावश्यक प्रश्न न करो

१ हे श्रद्धावानो, ऐसी बातें न पूछा करो कि यदि (उसके उत्तर) तुम पर प्रकट कर दिये जायँ, तो तुम्हें संकटापन्न कर दें·····। ५.१०४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

368. १ रफ़ीअ़ु (अल्) द्दरजाति ज़ु (व्) (अ)ल्
अ़र्शि ज युल्क़ि (य्) (अल्) र्रूह़ मिन्
अम्रिही अ़ला (य्) म (न्) य्यशाउ मिन्
अ़िबादिही लि युन्ज़िर यौम (अल्) त्तलाक़ि० ला
४०.१५

369. १ या अय्युह (अ्) (अ्)ल्लज़ीन आमनु (व्अ्)
(अ्) स्तजीबू (अ्) लिल्लाहि व लि (ल्)-
र्रसूलि इज़ा दअ़ाकुम् लि मा युह़्यीकुम् ज
व (अ्) अ़्लमू (अ्) अन्न (अ्) ल्लाह
यहूलु बैन (अ्)ल् मर्इ़ व क़ल्बिही व अन्नहू
इलैहि तुह़्शरून०
८.२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८२ अन्तर्यामी

३६८ जिसे चाहता है, उसे प्रज्ञान देता है

१ उच्चप्रतिष्ठ सिंहासनाधिष्ठित वह अपने दासों में से जिसको चाहता है, अपनी आज्ञा से प्रज्ञान देता है, जिससे कि (वह) मुलाकात के दिन के विषय में सावधान करे। ४०.१५

३६९ जीवान्तर्यामी

१ हे श्रद्धावानो ! तुम ईश्वर एवं प्रेषित की आज्ञा का पालन करो। वह तुम्हें इसलिए बुलाता है कि तुम्हें जीवन प्रदान करे और यह जान लो कि ईश्वर मनुष्य और उसके हृदय के बीच में (विराजमान) है और यह कि उसीके पास तुम जमा किये जाओगे। ८.२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

370. १ अल्ला तज़्रु वाज़िरतु (न्) ँव्विज़्र अुख़्रा (य्) O[ला]

२ व अ (न्) ल्लैस लिल् इन्सानि इल्ला मा सञा (य्) O[ला]

३ व अन्न सञ्यहु सौफ़ युरा (य्) O[स्वात]

४ सुम्म युज्ज़ाहु (अ्) ल् जज़ाअ (अ्) ल् औफ़ा (य्) O[ला]

५ व अन्न इला (य्) रब्बिक (अ्) ल् मुन्तहा (य्) O[ला]

६ व अन्नहु हुव अद्हक व अब्का (य्) O[ला]

७ व अन्नहु हुव अमात व अह्याO

८ व अन्नहु ख़लक़ (अ्ल्) ज़्ज़ौजैनि (अ्ल्)-ज़्जकर व (अ्) ल् उन्सा (य्) O[ला]

९ मि (न्) न्नुत्फ़तिन् इजा तुम्ना (य्) O[स्वात]

१० व अन्न अलैहि (अ्ल्) न्नश्अत (अ्) ल् उख़्रा (य्) O[ला]

११ व अन्नहु हुव अग़्ना (य्) व अक़्ना (य्) O[ला]

१२ व अन्नहु हुव रब्बु (अ्ल्) श्शिअ्रा (य्) O[ला]

५३.३८–४९

371. १ या अय्युह (अ्) (अ्) ल्लजीन् आमनू (अ्) अलैकुम् अन्फ़ुसकुम् [ज] ला यदुर्रुकु (म्) [तोड़] म्मन् दल्ल इज (अ्) (अ्) ह्तदैतुम् [तोड़]

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२९ कर्मविपाक

८३ कर्मविपाकविषयक मूलभूत श्रद्धा

३७० ग्यारह सूत्र

१ कोई बोझ ढोनेवाला किसी और का बोझ ढो नहीं सकता।
२ और मनुष्य ने प्रयत्न किया है, वही उसके लिए है
३ और उसका प्रयत्न अवश्य देखा जायगा।
४ और फिर उसे पूरा-पूरा प्रतिफल मिलेगा।
५ और तेरे प्रभु तक सबको पहुँचना है।
६ और वही हँसाता है, वही रुलाता है।
७ और वही मारता है, वही जिलाता है।
८ और उसीने नर और नारी का जोड़ा बनाया है,
९ एक बूँद से, जो टपकायी जाती है।
१० और उसके जिम्मे है दो बार पैदा करना
११ और वही समृद्ध करता है और वही परितृप्ति देता है
१२ और वही लुब्धक तारे का प्रभु है।

५३.३८–४९

८४ कर्मविपाक अपरिहार्य

३७१ स्वात्मना कर्तव्यम्

१ हे श्रद्धावानो ! अपनी चिन्ता करो। दूसरे के भटकने से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता, जब कि तुम मार्ग पर हो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इल (अ्) (अ्) ल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन्-
(अ्)फ़ युनब्बिअुकुम् बि मा कुन्तुम् तअ्मलूनo

५.१०८

372. १ मनि (अ्) ह्तदा (य्) फ़ इन्नमा यह्तदी (य्)
लि नफ़्सिहद्वी ज व मन् ड़ल्ल फ़ इन्न मा यड़िल्लु
अलैहा तोय व ला तजि़रु वाज़िरतुन् (न्) व्विज़्र
उख़्रा (य्) तोय ......

१७.१५

373. १......इन्न (अ्) ल्लाह ला युग़य्यिरु मा बि क़ौमिन्
ह्त्ता (य्) युग़य्यिरू (अ्) मा बि अन्फ़ुसि-
हिम् तोय व इजा अराद (अ्) ल्लाहु बि क़ौमिन्
सू अन् (अ्) फ़ला मरद्द लहू ज व मा लहुम् मिन्
दूनिहद्वी मि (न्) व्वालिन्o

१३.११

374. १ व मा असाब कु (म्) म्मि (न्) म् मुसीबतिन्
फ़ बि मा कसबत् ऐदीकुम् व यअ्फ़ू (अ्) अन्
कसीरिन्o तोय

४२.३०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ईश्वर की ही ओर तुम सबको लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो।

५.१०८

३७२ उत्तरदायित्व तुम्हारा

१ जो मार्ग पर चलता है, वह अपने ही कल्याण के लिए चलता है और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह अपने ही अकल्याण के लिए पथभ्रष्ट हुआ। कोई बोझ ढोनेवाला दूसरे का बोझ नहीं ढोता······।

१७.१५

३७३ मनुष्य के बदलने पर ईश्वर बदला करता है

१ वास्तविकता यह है कि ईश्वर किसी समाज की स्थिति नहीं बदलता, जब तक कि उस समाज के लोग, जो उनके मन में है, उसे नहीं बदलते। ईश्वर जब किसी समाज पर आपत्ति डालना चाहता है, तो वह टलती नहीं और ईश्वर के अतिरिक्त उनका कोई सहायक नहीं।

१३.११

३७४ आत्मैव रिपुरात्मनः

१ तुमको जो कष्ट पहुँचता है, वह तुम्हारे हाथों ने जो कमाया, उसके कारण है। बहुत से पाप तो वह क्षमा ही करता है।

४२.३०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

375. १ मन् जा॑अ बि (अ्) ल् ह़सनति फ़ लहू अश्रु अम्सालिहा^ज़ व मन् जा॑अ बि (अ्ल्) स्सय्-यिअति फ़ ला युज्ज़ा (य्) इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून O

६.१६०

376. १ हल् जज़ा॑अु (अ्) ल् इह्सानि इल्ल (अ्) ल् इह्सानु O^ज़

५५.६०

377. १ क़ुल् या अिबादि (अ्) ल्लज़ीन आमनु (व्अ्)-(अ्) त्तक़ू (अ्) रब्बकुम् ^तोय लिल्लज़ीन अह्सनू-(अ्) फ़ी हाज़िहि (अ्ल्) द्दुन्या ह़सनतुन् ^तोय व अर्ज़ु (अ्) ल्लाहि वासिअतुन् ^तोय इन्नमा युवफ़्फ़ (य्) (अ्ल्) स्साबिरून अज्रहुम् बिग़ैरि ह़िसाबिन् O ३९.१०

378. १ मन् कान युरीदु (अ्) ल् इज़्ज़त फ़ लिल्लाहि (अ्) ल् अिज़्ज़तु जमीअन् (अ्) ^तोय इलैहि यस्अदु (अ्) ल् कलिमु (अ्ल्) त्तय्यिबु व (अ्) ल् अमलु (अ्ल्) स्सालिहु यर्फ़अुहू ^तोय व (अ्) ल्लज़ीन यम्कुरून (अ्ल्) स्सय्यि-आति लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् ^तोय व मक्रु उ (व्) ला॑अिक हुव यबूरु O

३५.१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३७५ पुण्य का फल दसगुना

१ जो पुण्य लेकर आये, उसके लिए उसका दसगुना है और जो बुराई लेकर आये, तो उसे उसीके समान प्रतिफल दिया जायगा और उन पर अन्याय न होगा।

६.१६०

३७६ कर भला तो हो भला

१ भलाई का बदला भलाई ही है।

५५.६०

३७७ विपुला च पृथ्वी

१ कहः मेरे श्रद्धावान् दासो ! ईश्वर-परायणता धारण करो। जो लोग इस जगत् में भलाई करते हैं, उनके लिए अच्छा प्रतिफल है और ईश्वर की भूमि विशाल है। तितिक्षा करनेवालों को ही उनका प्रतिफल अगणित मिलता है।

३९.१०

३७८ सद्वचन और सत्कृति की प्रतिष्ठा

१ जो प्रतिष्ठा चाहता है, तो (वह समझ ले) कि सारी प्रतिष्ठा ईश्वर के ही लिए है। सद्वचन उसी तक पहुँचते हैं और सत्कृत्यों को वह उच्चता प्रदान करता है। और जो लोग बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए कठोर दण्ड है और उनका कपट नष्ट होगा।

३५.१०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

379. १ व मन् कान फ़ी हाज़िही अअ्मा (य्) फ़ हुव फ़ि (अ्) ल् आख़िरति अअ्मा (य्) व अज़ल्लु सबीलन् (अ्) ○

१७.७२

380. १ व नज़अु (अ्) ल् मवाज़ीन (अ्) ल् क़िस्त लि यौमि (अ्) ल् क़ियामति फ़ ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शय्अन् (अ्) तोय व इन् कान मिस्क़ाल हब्बति (न्) म्मिन् ख़र्दलिन् अतैना बिहा तोय व क़फ़ा (य्) बिना हासिबीन○

२१.४७

381. १ इज़ा ज़ुल्ज़िलति (अ्) ल् अर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा○ला
२ व अख़्रजति (अ्) ल् अर्ज़ु अस्क़ालहा○ला
३ व क़ाल (अ्) ल् इन्सानु मा लहा○ज
४ यौम इज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा○ला
५ बि अन्न रब्बक औहा (य्) लहा ○तोय
६ यौम इज़ि (न्) य्यस्दुरु (अ्ल्) न्नासु अश्तात (न् अ्) लिल युरौ (अ्) अअ्मालहुम्○तोय
७ फ़ म (न्) य्यअ्मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् ख़ैर (न्) य्यरहू○तोय
८ व म (न्) य्यअ्मल् मिस्क़ाल ज़र्रतिन् शर्र (न्) (अ्) य्यरहू○ऐन

९९.१–८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८५ मृत्यु के बाद भी कर्म नहीं टलता

३७९ यहाँ अन्धा, सो वहाँ अन्धा

१ जो कोई इहलोक में (ईश्वर के विषय में) अंधा रहा, वह अन्तिम दिन भी (उसी प्रकार) अंधा रहेगा और मार्ग से बहुत भटका होगा।

१७.७२

३८० ईश्वर की तुला

१ पुनरुत्थान के दिन हम न्याय की तराज़ू रखेंगे। किसी प्राणी पर कोई अन्याय नहीं किया जायगा और यदि कोई राई के दाने के बराबर भी कम होगा, तो हम उसे भी लाकर उपस्थित करेंगे और हम लेखा-जोखा करनेवाले पर्याप्त हैं।

२१.४७

३८१ धरती काँपती है

१ जब धरती (अन्तिम) भूकम्प से हिलायी जायगी
२ और भूमि अपने बोझे बाहर निकाल फेंकेगी
३ और मनुष्य कहेगा कि इसको क्या हुआ ?
४ उस दिन वह अपनी बातें बतायेगी
५ इसलिए कि तेरे प्रभु ने उसे यही आज्ञा भेजी।
६ उस दिन लोग निकलेंगे बिखरे हुए
७ ताकि वे अपने कृत्यों को देखें। सो जो कणभर भलाई करेगा, वह उसे देखेगा
८ और जो कणभर बुराई करेगा, वह उसे देखेगा।

९९.१-८

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

382. १ अल् क़ारिअतु ०ला
२ म (अ्) (अ्) ल् क़ारिअतु ०ज
३ व मा अद्राक म (अ्) (अ्) ल् क़ारिअतु ०तोय
४ यौम यकूनु (अल्) न्नासु क (अ्) ल् फ़राशि (अ्) ल् मब्सूसि ०ला
५ व तकूनु (अ्) ल् जिबालु क (अ्) ल् अिहूनि (अ्) ल् मन्फ़ूशि ०तोय
६ फ़ अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू ०ला
७ फ़ हुव फ़ी ओशत्नि (न्) र्राद्रियत्नि ०तोय
८ व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू ०ला
९ फ़ उम्मुहू हावियतुन् ०तोय
१० व मा अद्राक माहियह् ०तोय
११ नारुन् ह़ामियतुन् ०ऐन

१०१. १-११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३८२ हलका पल्ला भारी पल्ला

१ वह खड़खड़ा डालनेवाली,
२ क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली ?
३ और तूने क्या समझा कि क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली ?
(वह है अन्तिम दिन की स्थिति) ।
४ जिस दिन होंगे लोग जैसे बिखरे हुए पतंगे ।
५ और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की भाँति हो जायँगे,
६ तो जिसका पल्ला भारी होगा,
७ तो वह वहाँ सुखी जीवन जियेगा ।
८ और जिसका पल्ला हलका होगा,
९ तो उसका स्थान गर्त है ।
१० और तूने क्या सोचा कि वह (गर्त) क्या है ?
११ (वह है) आग दहकती हुई ।

१०१.१–११

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

383. १ व क़ालू (अ्)·अ इजा कुन्ना अिज़ाम(न्) (अ्)-
ँव्व रुफ़ातन् (अ्) ·अ इन्ना ल मब्अूसून
ख़ल्क़न् (अ्) जदीदन् (अ्) ०
२ क़ुल् कूनू (अ्) हिजारतन औ हदीदन् (अ्) ०[ला]
३ औ ख़ल्क़ (न्) (अ्) म्मिम्मा यक्बुरु फ़ी
सुदूरिकुम् [ज] फ़ सयक़ूलून म (न्) ँय्युअीदुना [तोय]
क़ुलि (अ्) ल्लज़ी फ़तरकुम् अव्वल मर्रतिन् [ज]......
१७.४९–५१

384. १ ला अुक़्सिमु बि यौमि (अ्) ल् क़ियामति ०[ला]
२ व ला अुक़्सिमु बि (अ्ल्) न्नफ़्सि (अ्ल्)
ल्लव्वामति ०[तोय]
३ अ यह्सबु (अ्) ल् इन्सानु अल्ल (न्) न्नज्मअ
·अिज़ामहू ०[तोय]
४ बला (य्) क़ादिरीन अ़ला (य्) अ (न्)-
न्नुसव्विय बनानहू ०
७५.१–४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३० साम्पराय (मरणोत्तर जीवन)

८६ पुनरुत्थान अटल

३८३ पत्थर हो जाओ या लोहा

१ कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा-चूरा हो जायँगे तो क्या फिर हम उठाये जायँगे ?

२ कह : तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज, जो तुम्हारे मन में बड़ी लगे।

३ फिर वे कहेंगे : फिर हमें कौन लौटाकर लायेगा, कह : वही, जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया....।

१७.४९–५१

३८४ सालनेवाले मन की साक्ष

१ मैं शपथ खाता हूँ पुनरुत्थान के दिन की,

२ और शपथ खाता हूँ उस मन की, जो बुराई की निन्दा करे।

३ क्या मनुष्य यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी नहीं करेंगे ?

४ क्यों नहीं ? हम समर्थ हैं कि उसकी उँगलियों की पोर-पोर दुरुस्त करें।

७५.१–४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

385. १ व (अल्)ज़्ज़ारियाति ज़र्वन् (अ्) ०ला
२ फ़ (अ्) ल् हामिलाति विक़्रन् (अ्) ० ला
३ फ़ (अ्) ल् जारियाति युस्रन् (अ्) ०ला
४ फ़ (अ्) ल् मुक़स्सिमाति अम्रन् (अ्) ०ला
५ इन्न मा तू (व) अ़दून ल स़ादिक़ु(न्)ला
६ व इन्न (अल्) द्दीन ल वाक़िअ़ुन् ०तोय

५१.१–६

386. १ फ़ इजा जा'अति (अल्) स़्स़ाख़्ख़तु ० ज़
२ यौम यफ़िर्रु (अ्) ल् मर्अु मिन् अख़ीहि ०ला
३ व उम्मिही व अबीहि ०ला
४ व स़ाहिबतिही व बनीहि ०तोय
५ लि कुल्लि (अ्) म्रि (य्) म्निहुम्
यौम इज़िन् शअ्नु (न्) य्युग़्नीहि ०तोय

८०.३३–३७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८७ पुनरुत्थान का दिन

३८५ पुनरुत्थान एक वास्तविकता है

१ शपथ है उन (हवाओं) की, जो उड़ाकर बिखेरनेवाली हैं,

२ फिर शपथ है उनकी, जो बोझ उठानेवाली हैं,

३ फिर नम्रता से चलनेवाली हैं,

४ फिर आज्ञा से बाँटनेवाली हैं,

५ निस्सन्देह तुम्हें जिस चीज का अभिवचन दिया गया है, वह अवश्य सत्य है।

६ और निस्सन्देह न्याय अवश्य होनेवाला है।

५१.१–६

३८६ छूट चले सब संगी-साथी

१ फिर जब आयेगी कान (को) फोड़ देनेवाली (आवाज),

२ उस दिन मनुष्य भागेगा अपने भाई से।

३ और अपनी माँ और अपने बाप से।

४ और अपनी जीवन-संगिनी से और अपनी सन्तति से।

५ उस दिन उनमें से प्रत्येक मनुष्य की ऐसी हालत होगी, जो उसके लिए ही पर्याप्त होगी।

८०.३३–३७

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

387. १ व (अ्) त्तक़ू (अ्) यौम(न् अ्)ल्ला तज्ज़ी
नफ़्सुन् अ़ (न्) न्नफ़्सिन् शैअ (न्)ँव्व ला
युक़्बलु मिन्हा अ़द्लुँव्व ला तन्फ़अ़ुहा
शफ़ाअ़तु (न्)ँव्व ला हुम् युन्स़रून. o

२.१२३

388. १ व इज (अ्) (अ्ल्) श्शम्सु कुव्विरत् oस्वात्ला
२ व इज (अ्) (अ्ल्) न्नुजूमु (अ्) न् कदरत् oस्वात्ला
३ व इज (अ्) (अ्)ल् जिबालु सुय्यिरत् oस्वात्ला
४ व इज (अ्) (अ्)ल् अ़िशारु अ़ुत्तिलत् oस्वात्ला
५ व इज (अ्) (अ्) ल् वुहूशु हुशिरत् oस्वात्ला
६ व इज (अ्) (अ्)ल् बिहारु सुज्जिरत् oस्वात्ला
७ व इज (अ्) (अ्ल्) न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् oस्वात्ला
८ व इज (अ्) (अ्)ल् मौअ़ूदतु सुअ़िलत् oस्वात्ला
९ बि अय्यि ज (न्)म्बिन् क़ुतिलत् oज
१० व इज (अ्) (अ्ल्) स्सुहुफ़ु नुशिरत् oस्वात्ला
११ व इज (अ्) (अ्ल्) स्समाअु कुशितत् oस्वात्ला
१२ व इज़ (अ्) (अ्) ल जहीमु सुअ़्अ़िरत् oस्वात्ला
१३ व इज (अ) (अ्)ल् जन्नतु उज़्लिफ़त् oस्वात्ला
१४ अ़िमलत् नफ़्सु (न्) म्मा अहूदरत् oतोय

८१.१–१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३८७ कोई सिफारिश न चलेगी

१ और डरो उस दिन से, जब कोई किसीके काम नहीं आयेगा। और न किसीकी ओर से कोई मुआवजा स्वीकार किया जायगा। और न किसीकी ओर से कोई सिफारिश मंजूर की जायगी। और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

२.१२३

३८८ बारह निशानियाँ

१ जिस दिन सूर्य उलट दिया जायगा।
२ और तारे झड़ जायँगे।
३ और पहाड़ चलाये जायँगे।
४ और जब आसन्नप्रसवा (दस मास की गाभिन) ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी।
५ और जब वन्य पशु इकट्ठे किये जायँगे।
६ और समुद्र भड़काये जायँगे।
७ और जब प्राण मिलाये जायँगे।
८ और जीवित गाड़ी हुई (लड़की) से पूछा जायगा
९ कि किस दोष से वह मारी गयी।
१० और जब कर्म-पत्र खोले जायँगे।
११ और जब आकाश की खाल उतारी जायगी।
१२ और जब नारकीय अग्नि दहकायी जायगी।
१३ और जब स्वर्ग समीप लाया जायगा।
१४ और प्रत्येक जीव जान लेगा कि उसने क्या किया है।

८१.१-१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

389. १ इन्ना अअ्तदना लिल् काफ़िरीन सलासिल (अ्) व अग़्लाल (न्) व्व सअ़ीरन् (अ्)०
७६.४

390. १ व यौम युह्शरु अअ्दाअु (अ्) ल्लाहि इल- (य्) (अल्) न्नारि फ़ हुम् यूज़अ़ून ०

२ हत्ता (य्) इजा मा जाअूहा शहिद अ़लैहिम् सम्अुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बि मा कानू यअ्मलून ०

३ व क़ालू (अ्) लि जुलूदि हिम् लिम शहि(द्)- त्तुम् अ़लैना तोय क़ालू (अ्) अन्तक़न (अ्)- (अ्) ल्लाहु (अ्) ल्लजी अन्तक़ कुल्ल शय्अि- (न्) व्व हुव खलक़कुम् अव्वल मर्रति- (न्) व्व इलैहि तुर्जअ़ून ०

४ व मा कुन्तुम् तस्ततिरून अ (न्) य्यश्हद अ़लैकुम् सम्अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् जनन्तुम् अन्न (अ्)- ल्लाह ला यअ्लमु कसीर (न्) (अ्) म्मिम्मा तअ्मलून ०
४१.१९–२२

391. १ तिल्क (अल्) दारु (अ्)ल् आखिरतु नज्- अ़लुहा लिल्लजीन ला युरीदून अुलुव्वन् (अ्) फ़ि (अ्) ल् अर्ज़ि व ला फ़सादन् (अ्) तोय व (अ्) ल् आ़क़िबतु लिल् मुत्तक़ीन ० २८.८३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

८८ स्वर्ग, नरक आदि की व्यवस्था

३८९ बेड़ियाँ, तौक और दहकती आग

१ हमने श्रद्धाहीनों के लिए जंजीरें, तौक और दहकती आग तैयार रखी है। ७६.४

३९० कान, आँख और खाल भी गवाही देगी

१ जिस दिन ईश्वर के शत्रु आग की ओर इकट्ठे किये जायँगे, तो उनकी टोलियाँ बनायी जायँगी।

२ यहाँ तक कि जब उस आग के पास आ जायँगे, तो उनके कान, उनकी आँखें एवं उनकी खालें उनके विरुद्ध उनकी करतूतों की गवाही देंगी।

३ वे अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी? वे उत्तर देंगे : हमें उसी ईश्वर ने कहलवाया, जिसने हर चीज को वाणी दी। उसीने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसीकी ओर तुम लौटाये जा रहे हो।

४ और तुम (पाप करते समय) छिपाते थे (तो) इस विचार से नहीं कि (कल) तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगी, अपितु तुम्हारी यह कल्पना थी कि तुम्हारी बहुत-सी करतूतों को ईश्वर नहीं जानता। ४१.१९–२२

३९१ पुण्यवानों का स्थान

१ परलोक का वह घर हम उन लोगों के लिए नियत करते हैं, जो धरती पर न बड़ा बनने का विचार करते हैं, न कलह करने का। और ईश्वर-परायणों के लिए सद्गति है। २८.८३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

392. १ मसलु (अ्) ल् जन्नति (अ्) ल्लती वुअिद-
(अ्) ल् मुत्तक़ून तोय फ़ी हा अन्हारु (न्) म्-
मि(न्)म्मांअिन् ग़ैरि आसिनिन् ज व अन्हारु-
(न्) म्मि (न्) ल्लबनि (न्) ल्लम् यतग़य्यर्
तअ्मुहू ज व अन्हारु (न्) म्मिन् ख़म्रि (न्)-
ल्लज़्ज़ति (न्) ल्लि (ल्) श्शारिबीन ०ज
व अन्हारु (न्) म्मिन् असलि (न्) म्मुस़
फ़्फ़न् (य्) तोय व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लि
(अल्) स्समराति व मग़्फ़िरतु (न्)म् मि
(न्) र्रब्बिहिम् तोय...... ४७.१५

393. १ व बैनहुमा हिजाबुन् ज व अल (य्) (अ्) ल्
अअ्राफ़ि रिजालु (न्) य्यअ्रिफ़ून कुल्ल-
(न्) (अ्) म् बि सीमाहुम् ज व नादौ (अ्)
अस़्हाब (अ्) ल् जन्नति अन् सलामुन्
अलैकुम् कफ़ लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअ्ऊन०
२ व इजा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ाअ
अस़्हाबि (अल्) न्नारि ला क़ालू (अ्) रब्बना
ला तज्अल्ना मअ (अ्) ल् क़ौमि (अल्)
ज़्ज़ालिमीन० ७.४६–४७

394. १ व मन् अराद (अ्) ल् आख़िरत व सआ (य्)
लहा सअ्यहा व हुव मु(व्)अ्मिनुन् फ़
उ(व्)लांअिक कान सअ्युहु (म्)
म्मशकूरन् (अ्)० १७.१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३९२ क्षीरं मधुरं मधूदकम्

१ ईश्वर-परायणों से जिस स्वर्ग का अभिवचन दिया गया है, उसकी स्थिति यह है कि उसमें पानी की नदियाँ हैं, जो (पानी) बिगड़नेवाला नहीं और दूध की नदियाँ हैं, जिस (दूध) का स्वाद बदला हुआ नहीं होगा और ऐसे शर्बत की नदियाँ हैं, जो (शर्बत) पीनेवालों को स्वाद देनेवाली होगी और मधु की नदियाँ हैं, जो (मधु) स्वच्छ किया हुआ होगा। और उन ईश्वर-परायणों के लिए वहाँ भाँति-भाँति के फल हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है......। ४७.१५

३९३ ऊँचा स्थान

१ और उन दोनों (स्वर्ग और नरक) के बीच एक सीमा-रेखा होगी और ऊँचे स्थान के ऊपर कुछ लोग होंगे कि प्रत्येक को उसके चिह्न से पहचान लेंगे और स्वर्गवानों से पुकारकर कहेंगे कि तुमको सलाम हो, वे अभी स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं हुए किन्तु उसके प्रत्याशी हैं।

२ और जब उनकी दृष्टि नरकवालों की ओर फिरेगी, तो वे कहेंगे : हे प्रभो ! हमें उन पापियों में सम्मिलित न कर।

७.४६–४७

३९४ इच्छा + श्रद्धा + प्रयत्न = साफल्य

१ जो परलोक की इच्छा रखता है, और उसके लिए प्रयत्न करता है, जैसा कि उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए और वह श्रद्धावान् हो, तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न सफल होगा। १७.१९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

395. १ व कुन्तुम् अज़्वाजन् (अ्) सलासतन्O[तोय]
२ फ़ असूहाबु (अ्) ल् मयूमनति[O ला] मा
असूहाबु (अ्) ल् मयूमनतिO[तोय]
३ व असूहाबु (अ्) ल् मश्अमति[O ला] मा
असूहाबु (अ्) ल् मश्अमतिO[तोय]
४ व (अल्) स्साबिक़ून (अल्) स्साबिक़ूनO[जला]
५ अु (व्) लांअिक (अ्) ल् मुक़र्रबूनO[ज]
५६.७–११

396. १ यां अय्युह (अ्) ल् इन्सानु इन्नक कादिहुन्
इला (य्) रब्बिक कद्हन् (अ्) फ़ मुलाक़ीहि O
२ फ़ अम्मा मन् अूतिय किताबहू बि यमीनिहीO[ला]
३ फ़ सौफ़ युहासबु हिसाब (न् अ्) य्यसीरन्-
(अ्)O[ला]
४ व्व यन्क़लिबु इलां (य्) अह्लिही
मस्रूरन् (अ्)O[तोय]
५ व अम्मा मन् ऊतिय किताबहू वरां़अ
ज़ह्रिहीO[ला]
६ फ़ सौफ़ यद्अू (अ्) सुबूरन् (अ्)O[ला]
७ व्व यस्ला (य्) सअीरन् (अ्)O[तोय]
८ इनहू कान फ़ीं अह्लिहीमस्रूरन् (अ्)O[तोय]
९ इन्नहू ज़न्न अ (न्) ल्ल (न्) य्यहूरO[ज]
८४.६–१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३९५ दाहिनेवाले, बायेंवाले एवं समीपवाले

१ तुम हो जाओगे तीन प्रकार के :
२ दाहिनेवाले, कैसे अच्छे हैं दाहिनेवाले।
३ और बायेंवाले, कैसे बुरे हैं बायेंवाले।
४ और आगे निकल जानेवाले सबसे आगे हैं।
५ वे लोग समीपस्थ हैं।

५६.७–११

३९६ अन्त में मधुर या आदि में मधुर

१ हे मनुष्य, तुझे परिश्रम करना चाहिए अपने प्रभु के समीप पहुँचने के लिए। खूब परिश्रम कर, फिर तू उससे मिलनेवाला है।
२ तो जब उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया,
३ तो उससे हिसाब लिया जायगा, सरल हिसाब।
४ और वह अपने लोगों की ओर आनन्दित होकर लौटेगा।
५ और जिसको अपना कर्म-पत्र पीठ के पीछे से दिया गया,
६ वह पुकारेगा : मृत्यु ! मृत्यु !
७ और वह नारकीय अग्नि में प्रविष्ट होगा।
८ निस्सन्देह वह अपने बाल-बच्चों में खुश था।
९ निश्चय ही उसने कल्पना की थी कि वह कदापि नही लौटेगा।

८४.६–१४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

397. १ फ़अम्म (अ्)ल्लज़ीन शक़ू (अ्)फ़फ़ि (अ्ल्)-न्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरु (न्) व्व शही़क़ुन्०ला
२ ख़ालिदीन फ़ीहा मा दामति (अ्ल्) स्समावातु व (अ्) ल् अर्ज़ु इल्ला मा शा·अ रब्बुक तोय़ इन्न रब्बक फ़अ्अ़ालु (न्) ल्लि मा युरीदु०
३ व अम्म (अ्) ल्लज़ीन सुअ़िदू फ़ फ़ि (अ्) ल् जन्नति ख़ालिदीन फ़ीहा मा दामति (अ्ल्) स्समावातु व (अ्) ल् अर्ज़ु इल्ला मा शा·अ रब्बुक तोय़ अ़ता·अन् ग़ैर मज्ज़ूज़िन्०

११.१०६–१०८

398. १ या अय्यतुह (अ्) (अ्ल्) न्नफ़्सु (अ्) ल् मुत्मअ्इन्नतु०क़स्वली
२ (अ्) र्जिअ़ी इला (य्) रब्बिकि राज़ियत (न्) म्मर्ज़ीयतन्ज
३ फ़(अ्)द्ख़ुली फ़ी ·अ़िबादी०ला
४ व (अ्)द्ख़ुली जन्नती०

८९.२७–३०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३९७ यावत् ईश्वरेच्छा

१ जो अभागे होंगे वे आग में होंगे, वहाँ वे चीखेंगे और धाड़ें मारकर रोयेंगे।

२ वे उसमें सदा रहेंगे, जब तक कि आकाश और भूमि रहेंगे, सिवा इसके कि तेरा प्रभु चाहे। तेरा प्रभु जो चाहता है, उसे कर डालता है।

३ और वे लोग, जो भाग्यवान् होंगे वे स्वर्ग में होंगे। वहाँ वे सदा रहेंगे, जब तक आकाश और भूमि रहें, सिवा इसके कि तेरा प्रभु चाहे। यह अखण्ड उपहार है।

११.१०६–१०८

८९ शान्ति-मन्त्र

३९८ शान्त जीव

१ हे शान्त जीव !

२ लौट चल अपने प्रभु की ओर। तू उससे प्रसन्न और वह तुझसे प्रसन्न।

३ सो मेरे (अल्लाह के) दासों में सम्मिलित हो जा।

४ और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा।

८९.२७–३०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

399. १ वअ़द (अ्)ल्लाहु (अ्)ल् मु(व्)अ्मिनीन व (अ्) ल् मु(व्)अ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिह (अ्) (अ्) ल् अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा व मसाकिन तय्यिबतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्[तोय] व रिद्वानु(न्) म्मिन (अ्) ल्लाहि अक्बरु[तोय] जालिक हुव (अ्)ल् फौज़ु(अ्)ल् अ़ज़ीमु O

९.७२

400. १ व उज़्लिफ़ति (अ्) ल् जन्नतु लिल् मुत्तक़ीन ग़ैर बअ़ीदिन्O

२ हा जा मा तूअ़दून लि कुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीजिन् O[ज]

३ मन् ख़शिय (अ्ल्) र्रह्मान बि (अ्) ल् ग़ैबि व जाअ बि क़ल्बि(न्) म् मुनीबि निO[ला]

४ (अ्)द्ख़ुलूहा बि सलामिन्[तोय] जालिक यौमु-(अ्) ल् ख़ुलूदिO

५ लहु (म्) म्मा यशा·ऊन फ़ीहा व लदैना मज़ीदुनO

५०.३१-३५

•

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

९० ईश्वर-प्रसाद

३९९ ईश्वर की प्रसन्नता सबसे श्रेष्ठ

१ ईश्वर ने श्रद्धावानों और श्रद्धावतियों को ऐसे स्वर्गोद्यानों का अभिवचन दिया है, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, वे उनमें नित्य रहेंगे। और इन सदाबहार उद्यानों में पवित्र गृहों का भी अभिवचन है और सबसे बढ़कर ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होगी। यही बड़ी सफलता है।

९.७२

४०० स्वर्ग से मेरे पास अधिक

१ ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूर्ण करनेवालों के लिए स्वर्ग समीप लाया जायगा, दूर न होगा।

२ (कहा जायगा) यह है जिसका अभिवचन प्रत्येक पश्चात्ताप करनेवाले एवं सावधानी से आज्ञा-पालन करनेवाले के लिए तुमसे किया गया,

३ जो डरता है कृपालु से बिना देखे और ईश्वर-प्रवृत्त मन के साथ आता है।

४ उसमें शान्ति से समर्पित होकर प्रविष्ट हो जाओ। यह नित्य निवास का स्थान है।

५ वह जो कुछ चाहेंगे, वहाँ उनके लिए उपलब्ध है और हमारे पास और भी अधिक है।

५०.३१–३५

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पाठ और उच्चारण के लिए कुछ नियम

कुरानसार में जो अरबी मूल दिया गया है उसे कैसा पढ़ा जाय इस विषय में कुछ जानकारी यहाँ दी जा रही है। इसमें कुछ जानकारी कुरान शरीफ पढ़ने के विषय में नियम बताने वाली पुस्तकों से ली गयी है।

१–कोष्ठक के अन्दर जो शब्द हैं, उन्हें आयत पढ़ते समय पढ़ा न जाय। संधि, समास के ज्ञान के लिए वे दिये गये हैं। अनुवाद करते समय उनका अस्तित्व उपयुक्त है। जैसे इह्दि न (अ्) (अ्ल्) स्सिरात (अ्)ल् मुस्तक़ीम को पढ़ेंगे इह्दि नस्सिरातल् मुस्तक़ीम। उसका अनुवाद होगा। इह्दि-दिखा। ना–हमें। अल्-वह सिरात–मार्ग। अल् मुस्तक़ीम–वह सीधा।

२–अरबी भाषा में मूलाक्षर २८ हैं। उनका अकारान्त स्वरूप निम्न प्रकार है:

अ, ब, त, स, ज, ह़, ख़, द, ज, र, ज़, स, श, स़, ड़, त़, ज, अ़, ग़, फ़, क़, के, ल, म, न, ह, व, य।

संधि-नियमों के कारण ह का त़ बन जाता है। इसलिए त़ को मूलाक्षर नहीं पर एक विशेष अक्षर मानना होगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अरबी भाषा में मूलाक्षर को चिह्न देकर ही उसे हल् बनाते हैं और चिह्न देकर ही उन्हें भिन्न-भिन्न स्वर-युक्त अक्षर बनाते हैं। अर्थात् मूलाक्षर न हल् माना जाता है न स्वर युक्त। वह केवल मूल अक्षर ही है। जैसे ب इसे नागरी में हम (ब्) इस प्रकार दिखाते हैं। ह व और य को छोड़कर बाकी अक्षरों के लिए हिन्दी की भाँति बारहखड़ी बनती है। ह की अलबत्ता चौदह खड़ी और व और य की तेरह खड़ी होती है। हॏ, हु और वु, यॏ ये अधिक रूप अरबी में पाये जाते हैं।

व्याकरण के नियमों के अनुसार अ के दो रूप होते हैं। अ और ॳ। इन दोनों का उच्चारण-स्थान एक ही है, क्योंकि एक ही के ये भिन्न रूप हैं। यहाँ हम सभी अक्षरों के उच्चारण दे रहे हैं। पर यहाँ ध्यान में रखना चाहिए कि नुक्ते लगाकर जो नये अक्षर हमने बनाये हैं उनके सिवा शेष अक्षरों के जो उच्चारण हिन्दी में रूढ़ हैं, वे ही उनके उच्चारण अरबी भाषा में भी हैं। ज़ का उच्चारण तेलुगु और मराठी भाषाओं में हजारों वर्षों से प्रचलित है, और अरबी-फारसी भाषाओं का भारतीय भाषाओं से संपर्क आने के बाद तो सभी भारतीय भाषाओं में उसका उच्चारण ज्ञात है। यहाँ हम सभी अक्षरों के उच्चारण-स्थान दिखा रहे हैं, पर उसके पूर्व हमने अक्षरों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

के जो नये रूप बनाये हैं, उनके विषय में कुछ कहना आवश्यक होगा। स और ज ये अक्षर नज़दीक हैं। और त ज और स ढ़ वर्ण भी एक दूसरे के बहुत निकट हैं। ज और ढ़ ये परस्पर जितने निकट हैं उतने द और ढ़ नहीं। पर हैं ये सभी दन्त्य ही। इन सभी के उच्चारण में दाँतों का प्रयोग करना होता है। ढ़ इन सबमें अधिक दन्त्य है, इसलिए हमने उसे द को नुक्ता देकर बनाया। ज और ज को भी हम इसी तरह अलग-अलग नुक्ते देकर बना सकते थे, पर भारत में उनका उच्चारण ज़ के करीब-करीब होने की रीति पड़ी है। इसलिए दृष्टि को बहुत फरक न हो इसलिए उन्हें वैसा ही रहने दिया, पर ये भान रहे कि उनका उच्चारण उसी प्रकार करना है, जैसे कि नीचे अरबी व्याकरण के अनुसार बताया जा रहा है।

यहाँ ही और एक बात भी उच्चारण की दृष्टि से स्पष्ट कर देनी आवश्यक होगी। भारत में ईरान के अनुकरण से जेर और पेश वाले अक्षरों का उच्चारण एकारान्त और ओकारान्त करने की पद्धति है जो अरबस्तान में नहीं है। हम यह उचित समझते हैं कि अरबी भाषा का उच्चारण अरबी पद्धति से ही हो। उ० मालिकि यौमिद्दीन। इय्याक नअ्बुदु। यही हमने सही उच्चारण समझा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वर्णों के उच्चारण-स्थान

इमाम खलील ने उच्चारण-स्थान सत्रह माने हैं। ये सब स्थान मनुष्य के मुख में हैं।

१—मुँह के बीच दीर्घ स्वरों का उच्चारण-स्थान है। उसको हवाई भी कहते हैं।

२—कंठ-मूल—अ, ‘अ, ह ३ कण्ठ मध्य-अ़, ह़ ४ कण्ठ का प्रारम्भ—ग़, ख़, ५ घाटी और कव्वा अर्थात् जिव्हा-मूल और उसके सम्मुख के तालु के साथ-क़ाफ और ६ घाटी और कव्वे के पास अर्थात् क़ के स्थान से नीचे की ओर क का उच्चारण स्थान है।

७—जिव्हा के मध्य उसके सम्मुख तालु के साथ से निकलते हैं : ज, श, य, (कुछ लोग मानते हैं श का स्थान ज से पहले है, वे श ज य ऐसा क्रम मानते हैं) ८—जिव्हा का किनारा ड़ाढ़ से सटाकर द्व का उच्चारण होता है ९—जिह्वा का किनारा ऊपर के तालु के साथ (जहाँ से द्व निकलता है उसके निकट) लगायें तो ल का उच्चारण होता है। १०—इस ल के स्थान के नीचे स्थान है न का, पर इसमें नासिका-मूल का सहयोग भी सम्मिलित है। इस न का उच्चारण अनुस्वार जैसा नहीं, पर संपूर्ण होता है। (अनुस्वार का उच्चारण आगे दिया जा रहा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है) ११–उसके नीचे उच्चारण-स्थान है र का। १२–जिह्वा का किनारा ऊपर के अगले दो दाँतों के मूल के साथ लगाकर त, द, त उच्चारित होते हैं। १३–जिह्वा का किनारा अगले नीचे के दाँतों के किनारे के साथ लगाकर स़, ज़, स बोले जाते हैं। और १४–जिह्वा का किनारा अगले ऊपर के दाँतों के किनारे के साथ सटाकर ज, ज, स का उच्चारण होता है। १५–नीचे के होंठ का पेट ऊपर के अगले दो दाँतों के किनारे के साथ मिलकर फ़ का स्थान बनता है और १६–दोनों होंठ व, ब और म का उच्चारण-स्थान है। (म के उच्चारण में नासिका मूल का सहयोग है) १७–नथने (नासिका मूल) उस न् या म् का उच्चारण-स्थान है, जो अनुनासिक बनते हैं या अनुस्वार का रूप लेते हैं।

––न् और म् के भिन्न भिन्न वर्णों के साथ मिलकर जो अनुनासिक, अनुस्वार या अन्य रूप होते हैं, उस विषय में नियम निम्न अनुसार हैं।

न्––न् के बाद र या ल आये तो न् का क्रमशः र या ल बन जाता है। और इस संधि में न् का अनुनासिकत्व लुप्त हो जाता है। उ० मिन्+रब्बि मिर्रब्बि। हुदन्+लिल = हुदल्लिल।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

न् के बाद यदि य या व आये तो न् का अनुस्वार बन जाता है और य और व को द्वित्व हो जाता है। उ० मन्+यशाअु = मँय्यशाअु । तिजारतुन्+व = तिजारतु ँव्व ।

न् के बाद न या म आये तो न्, न में मिल जाता है और म में मिलाते हुए न् का म् में परिवर्तन हो जाता है। इस संधि में न् और म् का उच्चारण अनुस्वार की भाँति होता है। जैसे—मिन्+नूरिन् = मिन्नूरिन् ।

मौजुन्+मिन् = मौजुम्मिन (यह नियम न् के अन्तिम अक्षर होने की स्थिति में ही लागू होता है। न् बीच में हो तो नहीं होता। उ० दुन्या, सिन्वानुन् वगैरह)। न् के बाद ब आये तो न् का म् बन जाता है और इन दोनों को मिलाकर लिखते या पढ़ते हैं। यहाँ म् का उच्चारण अनुस्वार जैसा होता है। म् के बाद म आये तो भी यही स्थिति है।

उ० ज़ुल्मातुन्+बअ़्दुहा ज़ुलमातुम्बअ़्दुहा ।

न् के बाद अ, ह़, अ़, ग़, ह़, ख़ आये तो न् का उच्चारण स्पष्ट अनुनासिक है। इसके सिवा दूसरे अक्षर आये तो उनका उच्चारण अस्पष्ट अनुनासिक है, दूसरे कोई भी अक्षर हों तो म् का उच्चारण स्पष्ट है।

उ० रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़्न । अ़लैहिम् वलद्दॅ्ाल्लीन ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

संधि——समान वर्णों या उन वर्णों का जिनका उच्चारण स्थान पास-पास होते हैं संधि होता है।

जैसे त् और त, त् और द, द् और त, ज़् और ज, ल् और र, ब् और म, स् और ज़ (न् और र तथा न् और ल का उल्लेख ऊपर आ ही गया है)।

वर्णों के प्रकार——उच्चारण करने की रीति से भी वर्णों के कई प्रकार किये गये हैं, उनमें से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं।

१–दबी आवाज से बोले जाने वाले अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण करते हुए उच्चारण स्थान पर ठहरा नहीं जाता, बल्कि साँस जारी रहती है——ऐसे वर्ण दस हैं : त, स, ह़, ख़, श, स़, स, फ़, क, ह।

२–ऊँची आवाज से बोले जाने वाले अर्थात् जहाँ उच्चारण-स्थान पर ठहरा जा सकता है और साँस ठहरती है ऐसे वर्ण १८ हैं।

अ, (अ) ब, ज, द, ज, र, ज़, ज़, त, ज, अ़, ग़, क़, ल, म, न, व, य।

इसी प्रकार कड़े और नरम और बीच वाले इस प्रकार भी तीन भेद किये जाते हैं। कड़े वे हैं जिनके उच्चारण करते समय ज़ोर लगता है और उनकी कुव्वत के कारण आवाज जारी नहीं रहती बल्कि ठहर जाती है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१–ये कड़े-वर्ण ८ हैं : अ़, ब, त, ज, द, त़, क़, क।

२–नरम वर्ण १५ हैं : ह़, ख़, स ज, ज़, स, श, स़, द़, ज़, ग़, फ़, व, ह, य।

३–बीच वाले र, अ़, ल, म, न।

बड़ी और भारी आवाज और बारीक आवाज की भिन्नता से भी दो प्रकार किये हैं। बड़ी और भारी आवाज-वाले शब्द हैं – स़, द़, त़, ज़। र और ल कब भारी और कब बारीक पढ़े जाते हैं, उस विषय में नियम इस प्रकार हैं :

र् का रूप र, या रु होने पर उसका उच्चारण बड़ा और भारी होता है, और रि की स्थिति में उच्चारण बारीक होता है। उ० रब्बि। रुसुलुही। रिजालुन्। र यदि हलन्त हो तो उसका पूर्व का वर्ण अकार या उकार युक्त होने पर र् का उच्चारण बड़ा और भारी होगा। र् के पूर्व का वर्ण इकार युक्त होगा तो र् का उच्चारण बारीक होगा।

अलबत्ता यदि पूर्व का इकार मूल अक्षर का न हो या दूसरे शब्द में हो तो वह र् बड़ा और भारी पढ़ा जायगा जैसे––इर्जअ़ू रब्बिर्जिअ़्नि। उसी तरह र् के बाद यदि स़, द़, त़, ज़ आये तो भी र् का उच्चारण भारी ही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होगा । पढ़ते समय जहाँ विराम चिन्ह होते हैं, उस स्थान के अन्तिम अक्षर को हलन्त पढ़ा जाता है । इस प्रकार जो र विराम के कारण र् हो जाय उसके पूर्व यदि य् हो या ऐ की मात्राएँ हों तो वह र् बारीक पढ़ा जायगा । जैसे, ख़ैरिन्, सैरिन् । और यदि और कोई दूसरा अक्षर हो तो उस पूर्व के पूर्व अक्षर को देखा जायगा । वह यदि अकार या उकार युक्त हो तो र् बड़ा और भारी पढ़ा जायगा । जैसे क़द् कुफ़िर् अन्यथा बारीक। जैसे सिह्र् ।

पर यस्सिर् और वल्फ़ज्र में र बारीक ही पढ़ा जायगा, और मिस्र् में बड़ा और भारी।

ल्—ल सब जगह बारीक ही पढ़ा जाता है, सिवाय अल्लाह् शब्द में । उसमें भी ल् के पूर्व का शब्द यदि अकार या उकार युक्त हो तो ही वह भारी बोला जाता है; यदि वह इकार युक्त हो तो ल बारीक ही पढ़ा जाता है । उ० अबदुल्लाहि । क़ालल्लाहु । बिल्लाहि, बिस्मिल्लाहि वग़ैर: ।

ह के,—जो सम्बन्धी सर्वनाम है—रूप हि और हु संबंधित नामों के साथ संलग्न कर लिखे जाते हैं । जिससे ये संलग्न होते हैं उन शब्दों का अन्तिम अक्षर यदि स्वरयुक्त हो तो उपर्युक्त हि और हु का दीर्घ उच्चारण करना आव-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्यक है। दूसरे दीर्घ से इनका यह स्वरूप अलग दिखाने की दृष्टि से उनके लिए अलग चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। हमने इनके लिए ॗ, ॖ चिह्न बनाये हैं। ॖ का प्रयोग कभी-कभी व के साथ होता है। जैसे वॖ और ॗ का य के साथ। जैसे—यॗ। वॖ और यॗ के साथ इनका प्रयोग दिखाता है कि एक व् या य् का वहाँ लोप हो गया है।

प्लुत या अति दीर्घ स्वर—दीर्घ स्वर या दीर्घ स्वरयुक्त अक्षर का परिचय तो सबको ही है, पर इस प्लुत या दीर्घ स्वर का परिचय कर लेना आवश्यक है। इसे कुरानसार में ' चिह्न से दिखाया गया है।

दीर्घ स्वर या दीर्घ स्वरयुक्त अक्षर के बाद यदि दीर्घ स्वर आये तो पहला स्वर या स्वरयुक्त अक्षर प्लुत अर्थात् अति दीर्घ हो जाता है। दीर्घ या अति दीर्घ होने के कारण, ह्रस्व का एक अंक मानकर, इसे चार ह्रस्व के बराबर मानना चाहिए। और उस प्रकार दीर्घ खींचकर उच्चारण करना चाहिए।

उ० शा'अ में—शा = श्+अ+अ+अ+अ।

क़ालू' आमन्ना में लू = ल्+उ+उ+उ+उ

फ़ी' उम्मिहा में फ़ी = फ्+इ+इ+इ+इ

२—स्वर या स्वरयुक्त व्यंजन के बाद यदि कोई युक्ताक्षर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आये, तो प्रथम स्वर या स्वरयुक्त व्यंजन दीर्घ होता है। पर यह दीर्घता १–में वर्णित दीर्घता से कुछ कम होती है। उ० वलद्दाल्लीन, इसमें द्द् द्दा=द्द+अ+अ+अ। इकार और उकार के विषय में यही नियम है।

इसी प्रकार तीन स्वरों तक खींचे जाने के अक्षर हैं, अलिफ्, लाम्, मीम् में लां, मी। इसके दीर्घ होने का कारण यह है कि यहाँ यह आदेश है कि इन शब्दों के अन्तिम वर्ण, म्, म् उसके बाद आनेवाले शब्दों के साथ मिलाकर नहीं पढ़ने चाहिए, बल्कि अलग-अलग पढ़ने चाहिए, क्योंकि वे स्वतंत्र अक्षर हैं। यहाँ, लां=ल्+अ+अ+अ; मी=म्+इ+इ+इ समझा जाय।

विराम और अविराम चिह्नों का विवरण

कुरान शरीफ पढ़ते समय कहाँ ठहरा जाय और कहाँ न ठहरा जाय, इसके लिए चिह्न दिये गये हैं। उन चिह्नों का और उनके आदेशों का विवरण यहाँ दिया जा रहा है। आयतों पर एक या एक से अधिक चिह्न होते हैं। एक से अधिक होने पर आगे के चिह्न का आदेश मानना चाहिए।

o यह चिह्न यह आदेश देता है कि यहाँ आयत समाप्त हुई है, यहाँ ठहरना चाहिए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

० कूफ़ी लोगों के अनुसार जहाँ आयत समाप्त है, वहाँ यह चिह्न देते हैं । दूसरे लोग यहाँ आयत की समाप्ति नहीं मानते । फिर भी यह संकेत दिया जाता है ताकि कूफियों का मत मालूम हो ।

ला--जिस आयत की समाप्ति पर यह संकेत है, वहाँ ठहरा जाय या न ठहरकर अगली आयत से मिलकर पढ़ा जाय इस विषय में मतभेद हैं । पर मिलाकर पढ़ना चाहिए यह मत अधिक प्रभावी है । आयत के अन्दर यह संकेत हो तो मिलाकर ही पढ़ना चाहिए । ला का अर्थ है ना अर्थात् ला का आदेश है, न ठहरो तो अच्छा ।

तोय्--(इस चिह्न के लिए त लिखा जा सकता था पर समयाभाव के कारण त, स्र दस पाइंट मोनो में उपलब्ध न हो सके इसलिए उन अक्षरों का प्रयोग वहाँ नहीं किया गया ।) आयत की समाप्ति में या अन्दर तोय् हो तो वहाँ ठहरना ही चाहिए । तोय् मुत्लक़ का प्रतिनिधि है । मुत्लक़ यानी नितान्त, नितान्त आवश्यक ।

म्--ठहरो । म् लाज़िम् का प्रतिनिधि है ।

ज्--ठहर सकते हैं । ज जायज़ के लिए आया है ।

ज़्--यदि मिलकर पढ़ा जाय तो बेहतर है । ज़् मुजव्वज़ का प्रतिनिधि है । मुजव्वज़ है यानी निषिद्ध नहीं है, ठहर सकते हैं, पर न ठहरना बेहतर है ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वात्--चाहिए तो यही कि मिलाकर पढ़ते चले जायँ, पर ठहरने की रुख़सत (अवकाश) है। मुरख़्ख़स का प्रतिनिधि है--मुरख़्ख़स यानी रुख़्सत् दिया हुआ।

स़्ल्ै--न ठहरना उत्तम है। वस्ल अवली का प्रतिनिधि है। जिसका अर्थ है मिलाकर पढ़ना श्रेष्ठ है।

क़्--न ठहरना अच्छा। कुछ लोग कहते हैं ठहरो और कुछ कहते हैं न ठहरो। क़ क़ील के लिए आया है। क़ील यानी दुर्बल। ठहरने की आज्ञा दुर्बल है।

क़िफ़्--ठहर जाओ। जहाँ पढ़नेवाले के न ठहरने का अंदेशा होता है, ऐसी जगह यह संकेत होता है। क़िफ़् यानी ठहरो। वक़्फ़ः--ठहरो।

स्--थोड़ा ठहरे, पर साँस न तोड़े। स सकतह् का प्रतिनिधि है।

∴ तीनों आयतों में से किन्हीं दो को मिलाकर पढ़ा जा सकता है, वहाँ दो स्थानों पर यह चिह्न दिया जाता है।

सल्--मिलाओ।

क्--पूर्व आयत पर ठहरने का जो चिह्न हो, उसी तरह यहाँ भी मानो। क जालिक (यानी इसी तरह) का यह प्रतिनिधि है।

अल् सज्दः--यह आयत पढ़ते ही सज्दः–प्रणिपात–करो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१. इन आदेशों के अनुसार जहाँ ठहरा जाता है वहाँ के शब्द का अन्तिम अक्षर स्वरयुक्त हो तो भी उसे हलन्त पढ़ना चाहिए।

२. अन्तिम अक्षर न् हो तो उसे पढ़ा न जाय और उसके पूर्व का अक्षर इकार या उकार युक्त हो तो उस अक्षर को हलन्त पढ़ा जाय और अकार हो तो उसे अकारयुक्त पढ़ा जाय। त्निन् या त्नुन् में त्न को हलन्त पढ़ना होगा। त्न का हलन्त ह् हुआ करता है इसलिए उसे ह् पढ़ा जाय।

३. जहाँ ठहरना नहीं है वहाँ दो या अधिक अक्षरों के शब्द के अन्तिम अ का उच्चारण दाक्षिणात्य या उड़िया भाषा-भाषियों की भाँति सस्वर किया जाय, हलन्त नहीं। इतना ही नहीं, कविता के अन्त में आये हुए शब्द के अन्तिम अकारान्त अक्षर की तरह उसे कुछ दीर्घ पढ़ा जाय।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अरबी वर्णमाला

क़ुरान शरीफ़ (अरबी लिपि में) पढ़ने के लिए कुछ सूचनाएँ

अरबी के मूल वर्ण २८ हैं :

ا	अलिफ़्	ض	ज़ाद
ب	बा	ط	ता
ت	ता	ظ	जा
ث	सा	ع	अ़ैन्
ج	जीम्	غ	ग़ैन्
ح	ह़ा	ف	फ़ा
خ	ख़ा	ق	क़ाफ़्
د	दाल्	ك	काफ़्
ذ	ज़ाल्	ل	लाम्
ر	रा	م	मीम्
ز	ज़ा	ن	नून्
س	सीन्	ه	हा
ش	शीन्	و	वाव्
ص	स़ाद्	ى	या

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साद्, ज़ाद, ता, ज़ा को पढ़ते समय उसमें व् मिलाकर स्वाद आदि पढ़ने की रीति सही नहीं मानी जाती। इनके उच्चारण-स्थान और उच्चारणों के विषय में पहले लिखा ही जा चुका है।

संधि के कारण ० का ॐ ता बन जाता है। और अ का एक और रूप अ भी है। पर ये अलग वर्ण नहीं हैं, यह स्पष्ट है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बाराहखड़ी और संयुक्ताक्षर

अरबी अक्षर न स्वरान्त माने जाते हैं न हलन्त, वे केवल मूल अक्षर हैं। उनको चिह्न लगाकर आवश्यक अक्षर बनाये जाते हैं। अकार युक्त अक्षर बनाने के लिए जो चिह्न लगाया जाता है, उसे ज़बर कहते हैं। वह अक्षर के ऊपर लगता है। वह चिह्न َ ऐसा है। इकार युक्त अक्षर बनाने के लिए जो चिह्न नीचे लगाया जाता है उसे ज़ेर कहते हैं, वह ِ ऐसा है। उकार युक्त अक्षर बनाने के लिए जिस चिह्न का उपयोग करते हैं, उसे पेश कहते हैं वह ऊपर ُ इस तरह लगाया जाता है। इकार, और उकार को दीर्घ करने के लिए अर्थात् ईकार या ऊकार युक्त अक्षर बनाने के लिए उपर्युक्त चिह्नों के बाद ی या और و वाव अक्षर जोड़ते हैं। अकार दीर्घ करने अर्थात् आकार युक्त अक्षर बनाने के लिए ا अलिफ जोड़ा जाता है। इससे बने हुए अक्षर इस प्रकार होंगे।

بَ، بَا، بِ، بِی، بُ، بُو

ब, बा, बि, बी, बु, बू

बे और बो अरबी में हैं नहीं। ज़बर और या लगाकर बै पढ़ा जाता है। और ज़बर और वाव् लगाकर बौ पढ़ा जाता है।

• इन अक्षरों का रूप स्थानों के अनुसार भिन्न-भिन्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

होता है, इसे ध्यान में रखना आवश्यक है। ब अन्त में होगा तो ب इस भाँति रहेगा। बीच में या शुरू में होगा तो उसका छोटा सा हिस्सा नुक़्ते के साथ रहेगा जैसे ﺑ। *कुछ अक्षर जोड़े जाने के बाद केवल नुक़्ते से ही पहचाने जाते हैं जैसे या के लिए नीचे दो नुक़्ते और ता के लिए ऊपर दो। सा के लिए ऊपर तीन और नून के लिए ऊपर एक और बा के लिए नीचे एक। दूसरे अक्षरों की शक्ल थोड़ी कटती है, पर उन्हें पहचानना कठिन नहीं। या अन्तिम हो तो उसे नुक्ते लगाने की रीति नहीं है। हा प्रारम्भ में ﮪ और मध्य में ﮬ और अन्त में ﻪ का स्वरूप लेता है। अक्षर एक दूसरे के सामने या ऊपर और नीचे भी जोडे जाते हैं। दूसरा अक्षर बाद मे होगा या नीचे। इसके सिवा कुछ और चिह्नों का भी उपयोग होता है। वे इस प्रकार हैं:

सुकून ْ यह हलन्त का काम करता है जैसे ब् بْ

तन्वीन (नकरण) अक्षरो पर दो जबर, दो पेश या अक्षरों के नीचे दो जेर देकर जो अक्षर बनाते हैं उसके उच्चारण में अन्त में न् बढता है। जबर के बाद अलिफ अथवा या होना है। जैसे मरद्दन् مَرَدًّا हुदन् هُدًى सवा-अुन् سَوَاءٌ अजीमुन् عَظِيمٌ जुल्मातिन् ظُلُمَاتٍ

* बीच में हा ﮬ इस तरह भी लिखा जाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शद्द : ~ यह अक्षर को द्वित्व देता है जैसे इय्याक إِيَّاكَ

हम्ज़ : ء यह अ का एक प्रकार है यह अलिफ, या और वाव पर आता है। यह हलन्त हो तो थोड़े से झटके के साथ उच्चारित होता है।

मद्द : ~ वैसे तो हर दीर्घ स्वर को मद्द कहते हैं, पर दीर्घ जब अति दीर्घ बन जाता है, तब इस चिह्न का उपयोग होता है, जैसे : मा, उन्ज़िल। مَآ اُنْزِلَ

कुरान शरीफ मे अलिफ् पर अलिफ् लिखकर भी आ बनाते हैं, जैसे : अल् आखिरत اَلْاٰخِرَةُ

अलिफ् पर अलिफ् लगाकर बननेवाले इस आ का उच्चारण हिन्दी आ के समान ही है। अति दीर्घ स्वर के उच्चारण के विषय में पीछे विस्तार से लिखा जा चुका है।

किसी स्वरयुक्त अक्षर के बाद यदि सुकून्वाला (हलन्त) अक्षर आये या शद्द: वाला (द्वित्वयुक्त) अक्षर आये और उस स्वर युक्त अक्षर और सुकून वाले या शद्द: वाले अक्षर के बीच में कुछ अक्षर भी हों तो उन्हें नहीं पढ़ना चाहिए। उन्हें छोड़कर सीधे सुकूनवाले या शद्द: वाले अक्षर पर पहुँचकर पढ़ना चाहिए। इन छोड़े जाने वाले अक्षरों की निशानी यह है कि उन पर कोई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चिह्न नहीं होता, वे मूल स्वरूप में ही लिखे जाते हैं। जैसे यौमिद्दीनि يَوْمِ الدِّيْنِ यौमिल् आखिरि يَوْمِ الْآخِرِ ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि। غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

यदि यह पहला अक्षर तन्वीन् वाला अर्थात् दो ज़बर् दो ज़ेर् या दो पेश्वाला हो तो ऊपर की हालत में ज़बर् ज़ेर् या पेश का ही उच्चारण करना चाहिए न् का उच्चारण नहीं। और शद्द वाले अक्षर में मिलाकर पढ़ना चाहिए। बीच में कोई अक्षर हों तो उनका उच्चारण नहीं होता। (उन अक्षरों पर कोई चिह्न नहीं होगा, यह ऊपर कहा ही गया है) जैसे हुद (न् य्) ल्लिल् मुत्तक़ीन هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ वग़ैरा।

इस तन्वीन के बाद यदि इ से प्रारंभ होने वाला अक्षर आये तो उसके दो चिह्नों में से एक को रखकर दूसरे की जगह छोटा सा नून ن लिख देते हैं और उसे ज़ेर देते हैं। अर्थात् उसे नि पढ़कर आगे का मिलाकर वहाँ पढ़ना होता है।

न् या तन्वीन् के न् के बाद दूसरे अक्षर आने पर उनके उच्चारण कैसे होते हैं, इसकी जानकारी के लिए "न्" के उच्चारण के बारे में पीछे जो लिखा गया है वह देखा जाय। जहाँ न् का संधि नियम के कारण म् होता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वहाँ कुरान शरीफ में छोटा सा मीम् नून् पर लिख दिया जाता है, जिससे आप यह समझें कि यहाँ न् का उच्चारण म् करना है। वक्फ: यानी ठहरने और वस्ल यानी मिलाकर पढ़ने के विषय में इसके पूर्व सूचनाएँ दी गयी हैं। ये चिह्न ऊपर लिखे जाते हैं और वे छोटे अक्षर होते हैं। हमने नागरी रूपान्तर में जिसे म कहा है वह कुरान शरीफ में मीम् ؞ होगा यह तो स्पष्ट ही है।

अगले पन्ने पर एक आयत अरबी लिपि में और नागरी लिपि में दी गयी है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

١- اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ ۵

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ

یَعْلَمُ

مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ

وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ

وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ

اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ

وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ

وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝ س ٢

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अल्लाहु लां इलाह इल्ला हुव ज॰ अल् ह़य्यु (अ्) ल् क़य्यूमु ज॰
ला तअ्ख़ुज़ुहू सिनतु (न्) ँव्व ला नौमुन् तोय
लहू मा फ़ि (अ्ल्) स्समावाति व मा फ़ि (अ्) ल् अर्ज़ि तोय
मन् ज (अ्अ्) ल्लज़ी यश्फ़अु अ़िन्दहू इल्ला बिइज़्निही तोय
यअ़्लमु
मा बैन ऐदीहिम्
व मा ख़ल्फ़हुम् ज
व ला युह़ीतून बिशय्अि (न्) म्मिन् अ़िल्मिही
इल्ला बि मा शां·अ ज॰
वसिअ़ कुर्सीयुहु (अ्ल्) स्समावाति व (अ्) ल् अर्ज़ ज॰
व ला य (व्) ·ऊदुहू ह़िफ़्ज़ुहुमा
व हुव (अ्) ल् ·अ़लीयु (अ्) ल्अ़ज़ीमु O

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुछ शब्दार्थ

कुरान-सार में प्रयुक्त कुछ शब्दों के मूल अरबी शब्द देकर 'कुरान-कोशों' के अनुसार यहाँ उनके अर्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इससे मूल अर्थग्रहण में सुविधा होगी।

१. अन्तिम दिन, अन्तिम न्याय का दिन—**आखिरत**—परलोक, शाश्वत जीवन, पुनर्जीवन, दूसरी जिन्दगी।

२. इब्लीस—**इब्लीस**—शैतान, ईश्वर की कृपा के विषय में हताश।

३. शैतान—**शैतान**—आज्ञा न पालनेवाला, नेकी से दूर, जलनेवाला, निस्सार।

४. कृपावान्—**रह्मान**—बहुत मेहरबान, ऐसा कृपावान्, जो माँगने पर देता ही है।

५. करुणावान्—**रहीम**—अतीव करुणाशील, ऐसा कि उससे न माँगा जाय तो नाराज हो जाय।

६. ग्रंथवान्—हज़रत मुहम्मद के पूर्ववर्ती प्रेषितों को ईश्वर से प्राप्त हुए ग्रन्थों के अनुयायी।

७. जप, जयजयकार—**तस्बीह**—ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करना। ईश्वर-भक्ति में तन्मय होना।

८. जीविका, रोजी—**रिज़्क**—इहलोक एवं परलोक की देनें, आन्तरिक एवं बाह्य प्रभु-प्रसाद।

९. दान—**इन्फ़ाक़**—ईश्वर के कार्यों में धन का व्यय।

नियमित—नियत—दान—**ज़कात**—ज़कात का धात्वर्थ है शुद्धता, स्वच्छता। चित्त-शुद्धि के लिए सत्कार्य में धन का नियमित तथा नियत व्यय।

१०. निर्लज्जता—लज्जाहीनता। लज्जा—**हया**। उसका स्वरूप निम्न प्रकार कहा गया है। सिर और सिर में जो चिंतन एवं विचार हैं, उनकी देखभाल करना पेट की और उसमें जो कुछ भरा है उन सब पर नजर रखना और मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जो जीवन होगा, उसका स्मरण रखना।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

११. पश्चात्ताप—**तोबा**—बुराई से परावृत्त होकर भलाई की ओर मुड़ना। (१) बुरे कामों को बुरा समझकर छोड़ देना। (२) हाथ से कोई बुरा कार्य होने पर परिताप करना। (३) पुनः गलती न करने का इरादा करना। (४) जिस काम की आदत डालने से दुष्कृत्यों का प्रतिबंध होता है, ऐसे कामों की आदत डालना। ये चारों बातें करने से पश्चात्ताप की शर्तें पूरी होती हैं।

१२. प्रज्ञान—**वह्य**—इशारे से बताना, इशारे से बात करना, वह ईश्वरीय शब्द, जो प्रेषितों को स्फुरित होता है।

१३. प्रणिपात—**सज्दः**—भूमि पर माथा रखना, नमाज पढ़ना, ईश्वर के सम्मुख नम्र होना।

१४. विभक्ति—**शिर्क**—साझी बनाना, अनन्यनिष्ठ न होना। ईश्वर ने जो चीजें अपने लिए खास की हैं, अपने दासों के जिम्मे दास्यत्व के निशान ठहराये हैं, वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य देहधारी व्यक्ति, जीव या वस्तु के लिए करना।

१५. विभक्त—**मुश्रिक**—विभक्ति का शिकार।

१६. शरणता—**इस्लाम**—आज्ञा पालना, ईश्वर के सुपुर्द होना, अपने तईं ईश्वर को सौंपना, ईश्वरीय प्रसाद प्राप्त करना।

१७. शांतजीव—**नफ़्से मुत्मअिना**—समाधान, वह विश्राम, जो कष्ट एवं प्रयासों के पश्चात् प्राप्त हो। अन्तःसमाधान, जिसके कारण कोई विकार या सन्देह नहीं उठता। इस अवस्था को सूफी लोग 'ऐनुल् यक़ीन'—प्रत्यक्ष साक्षात्कार कहते हैं, ऐसा कहा जाय तो गलत न होगा।

१८. टोकनेवाला मन—**नफ़्से लव्वामा**—टोकनेवाला, अपने दोषों का सूचन करनेवाला मन। मनुष्य को उसकी बुराई पर टोकनेवाला मन कि क्यों उसने बुराई की और भलाई करने पर पूछनेवाला कि उसने उससे अधिक भलाई क्यों नहीं की।

१९. दोषप्रवृत्त मन—**नफ़्से अम्मारा**—बुरी आज्ञा करनेवाला मन।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

२०. विकार–**वस्वसा**—बुरा विचार, मन को भगा ले जानेवाला, शैतान, कुत्ते और शिकारी की हलकी आवाज। वृक्ष की छोटी सरसराहट।

२१. सुजनता, सत्कृति—**इहसान**—भला काम इस प्रकार करना, मानो तुम ईश्वर को देख रहे हो। यदि ऐसा न हो सके, तो फिर यह समझते रहना कि वह तुम्हें देख रहा है।

२२. श्रद्धा—**ईमान**—निश्चय, आस्तिकता, निष्ठा।

२३. श्रद्धावान् भक्त—**मोमिन**।

२४. श्रद्धाहीन, अभक्त, नास्तिक—**काफ़िर, मुल्हिद**।

२५. सन्देष्टा–**नबी**—ईश्वर के सन्देश को स्पष्टतया विवरण करनेवाला।

२६. प्रेषित, पैगंबर—**रसूल**—ईश्वर का सन्देश पहुँचानेवाला, ईश्वर का भेजा हुआ, क़ासिद, ईश्वर के सन्देश को लोगों के हृदय में प्रविष्ट करनेवाला।

२७. संयम, डर, ईश्वरपरायणता, धर्मपरायणता, कल्याण–**तक़्वा**—ईश्वर का भय, ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करना, अपने अंतर को उस प्रत्येक वस्तु से सुरक्षित रखना, जो हमें ईश्वर के अतिरिक्त अन्य विषयों में व्यस्त रखे।

× × ×

१. ख्रीष्ट, मसीह—**मसीह**, ईसा का गुणगौरव-परक अभिधान। मंगल। वह मनुष्य, जिसकी असत्य की आँख मिटी हुई है। पदयात्रा में जीवन बितानेवाला। सच्ची बात बतानेवाला।

(ईसा और उसके पूर्व के प्रेषितों के नाम के साथ उन्हें ईश्वर शांति दे, ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है।)

२. मुहम्मद—**मुहम्मद**—ईश्वर के प्रेषित का नाम। वह व्यक्ति, जिसमें विपुल सद्गुण, सत्वृत्ति एवं सदाचार मौजूद हों।

(मुहम्मद (पैगंबर) शब्द के साथ, उन पर ईश्वर का आशीर्वाद हो और ईश्वर की ओर से उन्हें शांति प्राप्त हो, ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

३. १. प्रावरणावगुंठित / २. चादर ओढ़नेवाला } प्रेषित मुहम्मद। यहाँ एक घटना की ओर इशारा है। जब हजरत मुहम्मद को वह्य (प्रज्ञान) आयी, तब प्रारम्भ में वे डर-से गये, दूसरी और तीसरी बार वह्य आयी, तब भी उनकी वैसी ही स्थिति रही। उन्हें उस समय सर्दी महसूस हुई, और उन्होंने कपड़ा ओढ़ लिया। इस प्रकार कुरान में दो बार "कपड़ा ओढ़नेवाले" ऐसा उल्लेख आया है। उसके बाद मुहम्मद को संबोधित करते समय, प्रत्येक बार, प्रेषित (रसूल) या सन्देष्टा (नबी) शब्द ही प्रयुक्त हुआ है।

४. **यह्या**—एक मुहम्मद-पूर्व प्रेषित का नाम। कुरान-शरीफ में उनके ब्रह्मचारी होने का आदरपूर्वक ज़िक्र किया गया है। इस शब्द का धात्वर्थ है जीवित रहो, चिरंजीव रहो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

४.०

४.०

२.०

२.५

२.५

४.५

१२.०

प्रेस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान-सार

(विविध भाषाओं में)

दि एसेंस आफ कुरान (अंग्रेजी)	४.००
रूहुल् कुर्आन (उर्दू)	४.००
रूहुल् कुर्आन (उर्दू, नागरी लिपि)	२.००
कुरान-सार (हिन्दी)	२.५०
कुरान-सार (मराठी)	२.५०
कुरान-सार (बंगला)	४.५०
रूहुल् कुर्आन (अरबी)	१२.००
रूहुल् कुर्आन (अरबी उर्दू)	प्रेस में
दि एसेंस ऑफ कुरान (अरबी अंग्रेजी)	,,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative